स्वमा क्या मृत्रामध्युष्ठ" एवन पूर्वम धर्म् बानव श्रम्पत्र थात्र । प्रशासन स्मान्त्र छेर। छेखात कतिएक स्रेशास्त्र। प्रशासन निमान्त्र मिकान, जारात छेनत निमान्त्र भागानित मित्राम् । बारा अस्याप्त मूर्व मिका थ मागानित मित्राम् छेत्रा । बरे छेन्नजि बन्न मित्राम् अस्याप्त स्मान्त्र भागानित स्मान्त्र स्मान्त स्मान्त्र स्मान्त स्मान्त्र स्मान्त स्मान्त स्मान्त स्मान्त्र स्मान्त स्मान्त स्मान्त्र स्मान्त्र स्मान्त्र स्मान्त स्मान्त्र स्मान

शत्राम् जामृं ।

প্রথম পরিচ্ছেদ।

গুভসংযোগ।

रिवर्गाच मान, প্রাতঃকাল, নিলাবের ভালমান তরল মেবাস্তরাল ভেল করিয়া তরুণ সুর্য্যের অরুণ কান্তি ভন্মাচ্ছাদিত বহির ন্যায় মৃত্ মৃত্ প্রকাশ পাইতেছে। উপবনের ফুটত ফুলের পাছগুলিকে ইতত্তত: আন্দোলিত করিয়া, বুসর বর্ণের খনাবলীকে সবেগে উড়াইরা প্রভাত সমীরণ বছিরা ৰাইতেছে, এবং সম্যাবিক্ষিত স্বৰ্ণ চম্পাকের সুতীত্র পরিমল রাশি সেই বায়ু-পृष्ठि भारताव्यक्तिक आकाम भरत विष्ठत्व कतिराष्ट्र । क्रुक नीरणास्कृत কুড কুড টুন্ টুনি পকার। ফুলে ফুলে মধু ধাইয়া ফিরিভেছে। আয়ে কান-নের গহন নিকুঞ্জে লুকাইয়া কোকিলকুল ভূষ্য নিনাদে বন্ধার করিছেছে, এবং পাপিয়ার দল ডাকিয়া ডাকিয়া বৃক্ষ হইতে বৃক্ষান্তরে বসিতেছে, আবার आकारभत्र এक ब्याप्त रहेरछ चनत्र ब्यारक के जित्रा रिकारेरछह । सम्बन्ध महुमक्रोकात ७३८न. विरक्षत कृत्रत्न, कृत्रुत्मत खाद्याएन, वित्रन खाउः-সমীরণে দশলিক্ আমোলিত, অকৃতির মুখমতল শাভিরসে পরিপূর্ণ এবং নবরাবে স্বাঞ্জ। সেই মধুমর সময়ে একটা চতুর্দশ বর্ষীয়া কিশোর বালিকা ফুলের সাজি হত্তে প্রযুক্ত কেবে উৎফুল্ললোচনে চঞ্চল পাদ্বি-ক্ষেপে উচ্যানমধ্যে প্রবেশ করিল। ভাতার বিক্ষারিত নয়ন্যুগল বিক-निषठ क्ष्मावनीत अवस्था अमिन निभास, रह अना दहान नहार्य वा साक् उवाइ चार्ट कि ना छाहा कानिनाइ चरमद हिन ना। (कन ना, कुन्नूय-কোষণ সেই শ্বচাক গোচনদর চারিছিকে কেবল ফুলের লোভাই ভর্ন

দেখিতেছিল। প্রাতঃস্থের ছেমজ্যোতিবিভাসিত বিচিত্র বর্ণের কুত্ম-সৌন্ধা এটা, নরনলিগ্ধকর নবপদ্ধবিত তক্ষণাধার হবিৎ কান্তি, তাহার মধ্যে নববালিকার অমল কোমল ফুল্ফর মূর্ত্তি থানি অবতীর্ণ হইরা উপবনের উত্তিক সমূহকে অতিয়াত্র সমৃজ্ঞ্জলিত এবং স্থানাভিত করিয়াছিল।

बाणिकात चलाव चिंह थीन क्षेत्राच, चर्यात श्रीत चलित क्षेत्र, बेयर देशाय-भीन ; हास्कर कृष्टि अञ्चर्डको अवर अस्वान नृर्व ; अछि यद अवर जिन्न मन कारत दवन, महिका, हारमनी, नवताक कुन छनि छनिता छनिता (म मानिटड भाषारेहा दाबिए नांत्रिन । य मकन चर्छ-विक्रिए (नानान नवद्विद कित्रत **धनीश** हरेत्रा झेरकामा मृत्य कुमच शवनहिरद्वात्न क्लोड़ा कतिरडिहन, बानिक। जाशास्त्र श्राप्त कार्य विकास श्रीवात, श्रामित्य द्वाहत स्म कान हारित्र। बर्षिन, बदर ठारिका ठारिका नामातरक छाहारम्ब मना मकतम शान करिका। আপনিও মুক টিপিরা একটু একটু হাসিল। কাহারে। কাহারে। সঙ্গে ইলিতে কিছু কিছু আলাপও করিল। উভরের মধ্যে কি ভাবের কথা বার্তা হইল, ভাষা ডোমার আমার জানিবার কোন সভাবনা নাই। কুমুমকলিকা নবীনা ৰাশিকার উভিন্ন বৌৰনরসাভিবিক্ত প্রকৃতির সহিত সহাস। আস্য তুলবা-नानर्पत्र वक्षुणांव नचक 'रम्परार्पत्रथ व्यव्याहतः वखाः छेन्। त्य বিভাবে গোলাপ বৃক্ষ সকল প্রস্কৃটিত কুমুমপুঞ্জে ভালোকিত হইরাছিল **षादारमञ्जात ठाहित्य था। (यन भावन दहेशकिर्द्ध) (यं भी उने नाम भावन** লোহিত নাম। বৰ্ণের সহল সহল দিশি বিলাতি গোলাপে সে দিক্ট। বেন ্ৰ ধৰাত্তে ছাইয়া ৱাৰিয়াছিল। বড় বড় কুটক গোলাণ ওল সৌক্ৰায়সে ध्येष भूत्र किसाद समस हरेता शक्त वस्त (महे भूमा इत्र वहार नीत भारत ্ চাহিন্ন চাহিন্ন। স্পষ্টাক্ষরে কি ধেন বলিতে লাগিল। কিন্তু ভাহাদের হাস্য কৌতুক অকভদা রস রহা দর্শনে বালিকা সে দিকে আর বড় ভাকাইতে পারিল मा, खाहात नत्रनकम्म (यन महस्रदा वांशिया श्रीकृत, (एट मन शाव विष्ठंकन এবং গডিখভি রহিত হইল; ফুণ্লল বেন ভাহাকে আত্মবিস্তুত করিয়। स्मिन। छाशास्त्र विभूत स्त्रोसर्ग श्राचाद स्त्र निष्ठास्तरे अक्कारत विवित्रवान करेंद्रा निष्ण । वनविक्षावित मोमधानर्सिका कूल्यकामिनी-शर्यक्र स्त्राह्म विकारमासूच श्रविमन (कीमात नावना धवर मधुव शामाझाछ

অবলোকনে তাহাছিবকে সে আর তবন বৃস্কচাত করিতে সাহনী হইন
না। সভাবে সভাবে মিশিলে বে একটা প্রবাঢ় সহাস্কৃতি অবে, তাহাই
এবানে ঘটায়াছিল। বালিকা বোলাণ বেবিতে বেবিতে মনে করিতে
লাগিল, বেন সে আপনিও উহাবের স্বনের মধ্যে এক অন হইরা বিরাহে।
কিন্ত তাহার তরল চিতে সে ভাব অধিক ক্ষণ স্থান শাইল না। ভাবের
আবেশে বিমনা হইরা অলিওপ্লনের সহিত গুন্গুন্ স্বরে এই রীডিটী
রাইতে লাগিল;—

শক্টভ কুলের মাঝে দেখ রে মারের ছাসি।
কিবা মৃত্যক, অধাগর, করে তাহে রাশি রাশি।
আহা কি রূপের ছটা, বিচিত্র বরণ্টা,
ঘোরালো রসালো, করে দিকু আলো,
শোভা হেরে মন উদাসী।

কুম্মে প্রাণ পাগল করে, পরশে ত্রিভাপ হরে,
মা হাসে কুলের ভিতরে, ডাই ফুল এত ভাল বাসি।
তরুকুঞ্ব পূপা বনে, নিরবিরে নিরপ্তনে,
হাসে বোগানন্দে, ভাসে প্রেমানন্দে,
বোগী ধবি ডগোবনবাসী।

দীত গাইতে গাইতে অজ্ঞাতসারে সে চুই একটা আৰহুটত গালভরা হাসি গোলাপ তুলিয়া সাজিব শোভা বৃদ্ধি করিল। পরে মোহ ভালিয়া থেকে কিহ্না কাটিয়া "আহা হা কি কর্লাম!" বিশিয়া একটু চুংবঙ অকাশ করিয়াছিল।

ভূলের সজে ব্রীফাতির প্রকৃতিগত একটা অভি নিস্চু সম্পর্ক আছে।
কাংরর সম্বেই বা না আছে ? তুমি আমি নীরস গলাবির বিষয়ী বাধ,
আমানেরও কি ভূল দেবিতে, ভূল ত কিতে ইচ্ছা হয় না ? পূলিত
কানন হঠাৎ চচ্ছের সমূধে পড়িলে কার প্রাণ না সচ্কিত হয় ? ভা হবে
না কেন, হয় বৈ কি; কিত তরুণ বালিকার ক্ষিত্তনময় প্রকাশন ক্ষরে
উহা বেমন প্রীতিরস উৎসারিত করে, উহারা উভয়, উভরের প্রকৃতিতে
বেমন অস্থাবিই হয়, অপরের সম্বে তেমনী হইবায়ু সভাবনা নাই।

कृत्मत्र (जीत्रदक क्ष्यर (जीव्यर्गारणीत्रद्य क्रमच्छी त्रम्बीत व्याव शामन इहेन्र উঠে। সে ফুল দেখিরা ফুলের মত রূপবতী এবং স্থশর কোমলকান্থি ছইতে চার। ফুল ভাহার বড় লোভের দামগ্রী; আত্ম পর জ্ঞান থাকে না ফুটভাফুল বেখিলেই তার পানে সে ছুটির। যার। এই জন্য অসভ भौक्षणा कानव्यभी स्प्रका बावूब बाबार्स कारवम करत, छ। हात छत्र ६ नारे, नव्या । नारे। कृतन शांत्र शिंदित (म शांत्रिय़ा (करत. ७वर छात्राव সঙ্গে कथा कब, नथी मरवाधरन ভारादक चानत करत ; चनराय जारादक অংকর সন্ধী করিয়া লর। কুশুমিত তরু লতা দেখিলে কিশোরবয়ন্ত। বালিকার চিত্ত আরও উন্মাদনৎ হইরা উঠে। কলিকা হইতে ফুটত্ত ফুল-গুলি সমস্ত শাধা পল্লবের সহিত কিছে করিতে না পারিলে আরে তাহার क्षम पित्रकृश रह ना। देशास्त्र त्रक्ष राष्ट्रिका औशीन रहेक, खात हेम्प्रान-भाषीत समात राजा नाउक, चात राशहे रहेक, जाश म जावित्ज नात न। (प्रकृत नहेश्रा (शापाय अमित्त, कात्न पत्रित्त, এवर पदाहेत्त; मात्क चॅक्टिव बेवर चंकारेटव ; हूल वैशिटव, माला गोथिया ननाय धारन कृतित, पत्र माबारेति, धरे छात्र कास । कृत्नत मान छारात काता कछ বিধ সম্পর্ক আছে তাহা কৈ বলিতে পারে ? কিন্ত হিলুর মেরে বাল্যকাল হইতে ফুলের প্রতি একটু আকর ও প্রতা করিতেও নিধে। কেবপ্রার উপ্ৰর^{্শ}কুসুমরাশিকে সে পবিত্র ভাবে আহরণ করিতে ভানে।

বালিকা অন্যান্য তৃল সংগ্রহ করিয়া শেব চালাগাছ তলে আদিল।
বৈশাবী চালা স্বৰ্ণ লাবল্যে গাছ আলো করিয়া হাসিতেছে সংস্ক আৰাশ প্লাবিত করিয়া তুলিরাছে, তাহা দেবিয়া ভাহার প্রাণ হাকুলি বিকুলি করিতে লাগিল। উচ্চ গাছের সরু তালে তৃল সকল ফুটিয়া আছে, হাতে বরিতে পারা বার না। নানা রক্ষে সে চেট্টা করিল, কিছুত্বেই কৃতকার্য্য হইল না। এক একবার বাতাসের ভবে নীচের চুই একটা তাল তাহার হাতের কাছে আসিয়াছিল বটে, কিন্তু ভাল করিয়া বরিতে না বরিতে আবার তাহারা উপরে উঠিয়া গেল। প্রভাল তের ক্ল সমীরণ সচরাচর কিছু ক্ল লোক হয়। সে মুক্তবাতারন পথে প্রবেশ করিয়া বিশ্বে ভারতে নিউ্কের বালালী বাসুকে আটটা বেল। পर्वाष्ठ (मात्राहेश तार्थ, चानमात्राहर जाशत बरनत वचनरक निर्वित कतिया रमत्र, विनामीमित्तत अञ्चत्व विनाम तम डेमोशन करत, मुख्तार छात्राहक আমরা ভত্তলোক আর কিরুপে বলিতে পারি। সে ঐ সমর স্থানা পাইরা সরলা বালার সঙ্গে একটু আমোদ কৌতুক আরম্ভ করিল। কুতুর-সুরা পানে বিভার হইর। ভাহার নাসাপথে প্রবেশপূর্মক মন্তিককৈ পদা-মোদে মাতাইরা শেষ কানের ভিতর দিরা বাহির ছইতে লাগিল। কার সাধ্য . जाहात अमनाअमत्मत पथ वस करद १ तामशामा हरेर प्रतिस्त पर्वकृतित, মলিন চুর্ক্তমার স্থান হইতে পুস্পবাসিত উপবন, কোবাও আর ভারার व्यवसा चान नाहे। সমরে সমরে ত্রী পুরুষ সকলকেই সে বড় লক্ষিত ও वित्रक कतित्रा (जाता। अहै। काति व्यनगात किन्न, ना इहेरन हरन ना विन-प्रारे कि अन्नभ ष्रष्ठस वावहात है हिए हन १ (म क्यन वालिकात मनाह-সংলগ অপ্রিকু মুছাইরা, ডাহার অলকদাম ঈষ্ৎ কম্পিত করিয়া লক্ষমান কেশগুচ্ছের ভিতর প্রবেশের উদ্যোগ করিতেভিল ; কথন বা গ্রন্থভার সহিত চুলগুলি উড়াইয়া পার ছ কণ্টক বৃক্ষশাখার সঙ্গে অড়াইবার চেষ্টা পাইতে-ছিল। কিন্তু ভাষা পারিয়া উঠিল না। কারণ, বালিকা প্রাতঃমানের পর বাগানে ফুল তুলিতে আসিয়াছিল, তখন তাহার চল গুকার নাই, তৈল এবং সলিলবোরে ভাহার। সকলে एन বাঁধিয়া দাঁড়েইয়া ছিল, কাজেই মকুৎ ভার। पनवरनत ভরে এখানে আর বেশী কিছু অনিষ্ট করিতে সক্ষম ছইলেন না। অবলেবে কুমুমুখবাসিত তৈলচচিত সেই নিবিভ কুল্পলের সৌপ-কের সহিত পুস্পরক মিশাইর। তিনি অনাত্ত প্রস্থান করিলেন।

চাপাত্ল না লইয়া বালিকা বাড়ী ফিরিবে না, মানী ঠাকুরাণীর বৈশাণী চাপার বত আছে, চাপার বিশেষ প্রবেষ্ট্রন। অনন্তর এনিক ওনিক খুরির। আকুশির অহসকানে প্রবৃত্ত হইল। ব্যাকৃল মনে অনন্যচিতে আঁছেশি খুলিতে খুলিতে হঠাৎ দেখিল, চামেলী-কুঞ্জ-রবো লোহার বেকের উপর বনকুত্মর সভূশ এক প্রিয়দর্শন মুবক বসিরা রহিয়াছে। এই দর্শনিটী সাধারণ দর্শন নহে, শুভবোপের দর্শন। পুস্চরনকারিণী বালার অন্তরাত্মা চক্ষুর্বার বিরা মুবকের পছে খোবনলাবণ্যপ্রভা ভেদ করিয়া একবারে ভাহার আজাপুরুবকে দেখিরা ফেলিরাছিল। দেবিবার্যাত্ম ভাহার ক্ষরভাভতের

শ্বেষর সঞ্চার হয়। প্রথমে ভাষা সে বুঝিতে পারে নাই; কেন না, প্রেমের স্ক্রপ লব্দণ নাম ধাম প্রভাব প্রকৃতি তথন সে কিছুই অবগত নহে; কেবল প্রাণ বেন কেমন করিয়া উঠিল, একটা কি রকম বেন গোল মাল হইয়া পেল। পূর্ব্বেও দে প্র যুবাকে চুই এক বার বাড়ীতে দেখিয়াছিল, কিছু অল্যকার দেখার মত নহে। সকল কার্য্যেরই শুভ ঘোল আছে। দেখিয়া আর ভাষাকে সে বাহিরে রাখিল না, অলৌকিক নিয়মে আআছ করিয়া কেলিল। যেন গণিত উত্তপ্ত স্বর্ণের উপর একটা স্পষ্ট রেখা। বিদ্যা পেল।

যুবক এক থানি প্রস্থের কিছু অংশ পাঠ করিয়া পত্তের মধ্যে অসূলী স্থাপনপূর্ব্বক অধীত বিষয়, অথবা প্রাকৃতিক সোভার বিষয় চিস্তা করিতে-हिल्लन। जिनि तक, निवान काथाय, वालिकात मक्ष जाँहात मथकरे वा কি, সে সকল পরিচয় ক্রেমে জানা যাইবে। এক্সণে বালিক। আপনার चांछ **धाः সংসিদ্ধ क**दिया न छैक । **छम्न** छत्र यूर्यकत्र সाहारग সে कछक धनि চাঁপাফুল সংগ্রহ করিয়া ছরিত পদে অন্ত:পূরে প্রন্থান করিল। প্রন্থান कतिन बटे, किन्छ ब्याद्यत होन हुकू हांभाशाष्ट्र उटन दाशिया (शन। य रुख ভাষাকে ফুল পাড়িয়া দিয়াছিল, চম্পুককলিকা সম সেই করপল্লব ভাবিতে ভাবিতে, যুবকের মধুর সম্বোধন কর্বকুররে আলোচনা করিতে করিতে विভাষ ভিতে গৃহপ্রবেশ করিল। একটা অদুশ্য অনমুভবনীয় চুর্জয় অবচ স্থমিষ্ট শক্তি তথন ভাষার ভরল হালরে কার্যা আরম্ভ করিয়াছিল। কেহ (कह हेहारक शूर्ववात बरलन, (कह बरलन नवाश्वात, आश्रव। हुई।रक वित ७७ रवार्थव प्रभाम । मृज्य हरक मृत्रम चारलारक सवकीरव मृज्य बाबूद इर्गन । (र इर्गन्न लान ठकन, हिन्द ভाराष्ट्रिक बदर मन डेहाहेन एइ, (मरे पर्मन। (अवदारकात प्रवन्तारा जुल् निइस्म रेश प्रविधायास्त्र। हेशात माहारमा लाटक व्यापनात मन्तर माह्यरक हिनिता नव। विद्योर्प खरबाखरत, निविष् लाकात्रना मर्पा प्रिति प्रतिष्ठ रेप्तनिर्सर् नवज्ञ-**षरात्र मिर्फ नातीस्थरात्र मिनन एत्र। अनुष्ठे एक जाराष्ट्रियर मिनारेग्रा** (एव, चवर अवागिक पढेक व्हेबा चागनांत (चर्ट्ड भूख कनारक चांगाचिक अनक ध्यमवद्यान खलिक करवन ।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

নির্দ্দিষ্ট নিয়তি।

ভাগীরণী তীবে নক্ষন প্রামে বনমালী চট্টোপাধ্যার নামে একটী ভল্প গৃংস্থ বাস করিভেন, বাস্থারাম নামে উছার এক মাত্র প্র সভান ছিল। বনমালী বাবু অভি স্চরিত্র ভল্স সভাব ব্যক্তি, প্রামন্থ সকলের প্রকা এবং প্রাভির পাত্র। তিনি অল্প বরসে বিষর কার্য্য পরিভ্যাগপূর্ব্বক পেনাপিয়ান প্রথম করেন। নিরাপদে নিরাই ভল্ত লোকের মত সংসারে থাকিয়া সভ্তাই পাঠ, ধর্মাচিন্তা, পরসেবার জীবন বাপন করিবেন এই উছার নইল্প ছিল। সেই ভাবেই জীবন অভিযাহিত করিতেন। পুত্র বাস্থারাম পিভার বড় বাধ্য অনুগত সন্থান। এই স্লক্ষণাক্রান্ত ব্বার উপর সংসার সম্বন্ধীয় ভবিবাতের বাবতীয় আবা। ভরসা নান্ত রাধিয়া বনমালী মনে মনে এক প্রকার নিশ্চিন্ত ছিলেন। স্ত্রী পুত্র লইয়। বেশ স্থা সচ্ছেক্ষে কালহরণ করি-ভেন। স্ত্রীও বড় সভী সাংলী ধর্মাণরারণা, তিনি সামাকে দেবভার ন্যায় আনিয়া ভরীর পদ্ধ সেবার পরমানক্ষ অভূত্ব করিভেন।

আমাদের বাল্লারাম চেলেবেলা হইতেই একটু কেমন বেল অন্যমনত্ব রকম। এই দেখিলাম ব্যাস বালকদিপের সত্বে বেড়াইডেছে, দেখিতে দেখিতে কোথার উবাউ হইয়া চলিয়া বিয়াছে, আর ব্লিয়া পাওয়া বার না। হর তো গ্রামের বহির্ভাগে পুদূর প্রান্তবের মারখানে একা এক গাছের ভলায় চুল করিয়া আকাশের পানে চাহিয়া বসিয়া আছে, না ব্যাম নাল নভার খাবে বসিয়া অলের খেলা দেখিতেছে। অসীম নাল নভারতারে ইতত্বতঃ বিজিপ্ত মেবখণ্ড অস্তাচলগামা স্থেটার কিরণমালায় কেমন বিচিত্র শোভা ধারণ করে, তাহা দেখিবার অক্ত বাল্লারামের বড়ই একটা দিপাসা ছিল। সে মাঠে কিয়া নদীর খাবে বিয়া এই সকল দেখিত, আর আদন মনে হাসিত। নির্কান কলাশরে মাচ দেখিলে বাবরের মন বেমন ব্যাকুল হর, মুগরাপ্রির ব্যাক্ত অরণ্যমধ্যে মুগরুধ কর্পনে লোভবশত্তা

र्वमन बाक्ष हरेत्र लएफ, जुननजानमाकी विकार मनः स्कात किय देखी-बाला (माडिए :बाएविनो एउदिनो, किया अपूक यूनोल शतन एपिएल बरे फक्रनवत्रक मुबद्ध मन (छमनि देखना खदर विष्ठक परेड । (वदारन कूटने वानान. विवादन नशीव अवाह. (ववादन वृक्तवाकी अवर शाबीव नान, त्मेर (मरे शारन नीवटव बका वित्रता शांकिटक छात्राव वर्फ खान नांतिछ। **क्वल (र अक्रुंडिन मध्त (मोन्फ्रंडि (म (रिंडिड) कोलवामिक डाहा नरह,** ভাষার প্রতীর ভরাবহ প্রচণ্ড এবং প্রশান্ত লুলোর প্রতিও ভাষার বিলক্ষণ. चाकर्य छिन । देवनाथ देवारकेत हिल्लास्त द्वीराज मार्कित मर्त्या विवृक्तकाल. किया व्यमानिनाद चनजममाक्त्र निर्कान छग्न (प्रवमन्तिद्व द्वादात्क, व्यवता বিগন্তব্যাপী কৃষ্ণ মেঘাবুত বজ্ঞবিকম্পিত ভীষ্ণ শব্দাহ্যান আকাশনিয়ে धकाकी दिनिहा (म अकृष्टित शष्टीत धवर कृष्ट (वर्ग पर्मन कदिछ। (स (स श्राटन भरनाता खत्र भात्र, वाञ्चातात्मत त्रारे त्रारे श्राटन खत्रु क्यांतनत छेन्त्र ছয়: ধ্বন সে লোকালয়ে বয়সা বালকস্থান্ত সক্ষে থাকিত, তথ্নও একটু বেন পতঃ পতত্র ভাব। সর্বাদাই বেন কি ভাবিতেছে, লোকাতীত काब बात्का रवन विवत्न कतिराज्यक, यात्रात्रा कारक जात्रात्रा कारक नम्, बाहा अपृत्रा जाहात প্রভিই চিত নিম্ম। মূবে বেশী কবাবার্তা ছিল না, **ष्टर प्नःप्नः ष्टेटाबिष कवित्य बक्ट्रे** दानिया किन इरसीश रिक्षानिक ভাষায় দুই এক কৰার অভাতর দিত। সহাধ্যারী বালকের। এইরূপ ভাব সভাব দেখির। তাহার নাম রাধিয়াছিল ফাইলো। কেছ কেছ পণ্ডিত ৰলিয়া ভাকিত।

বাধানাম পণ্ডিতকে কেই কথন চুল আঁচড়াইডে, কিয়া আননা বুকুৰ ব্যবহার করিতে দেখে নাই। এই জন্য তাঁহার দার্থ চুলগুলি চির কাল বিশুখল অবস্থার বাকিত। লরীরের সংবাদ ডিনি প্রার কিছুই লইডেন না। সমরে সমরে লান দড়মার্জ্জন, এমন কি আহারে পর্যান্ত ভুল হইড। কথাঞ্জিল আত্তে আত্তে মৃত্ দরে, সমন্ত কার্যাই ধীর গড়িতে। কথন কার ক্ষেকাপড় চালর হাড়। জুড়া বছল করিডেন, এবং নিজের ঐ সকল ব্যবহার্যা সামগ্রী কোধার কথন কেলির। আসিডেন ডাহার ঠিক পাণ্ডরা বাইড লা। এক দিন ভুলজেবে একটা ছোট ম্লারি দোছোট করিরা বাহির

ছইরাছিলেন। আর এক দিন একটা পিরাণ বুকের দিক্টা পিঠে এবং পিঠের দিক্টা বুকে বিপরীও ভাবে পার দিরা বাহির ছল। তাঁহার এই সকল অনুত বেপ ভ্রা অনেকের হাস্যাযোগের বিষয় ছিল। এ জন্য সহচর বালকরণ অনেক সময় তাঁহাকে একটু বার্বোগঞ্জ নির্মোধ রবে করিরা ঠাটু বিজ্ঞাও করিও। বে সকল কার্যা খাভাবিক নিয়ম্ব এবং প্রচালিত অবার বিবোরী তাহাতে যবন বালকবং সরল নির্মোধ আর প্রকাশিত হয়, তবন ভাহা দেবিতে নিভান্ত মন্দ লাগে না। বাছারাম্ব সরলভার অবভার বিশেষ। সেরাগিকে আনিত লা; বে বাহা বলুক, এক নির্মোধ মৃত্ হাস্যে সমন্ত উড়াইর। বিভ।

এক দিন বাড়ীডে বি ছিল না, বাজার করিবার লোকের অভাব হইল। বনমালীর ভগী রামমণি ভ্রাতৃপুত্রকে বলিলেন, "বাবা, আজ अकरात वाकारत वाहेरल भातिरत कि १ रेनरन ७ चात ताता एंग्र ना।" वाश्वाताम रव अ मकन कारक निजास है अन् जारा वला वाह्ना । उदानि जिनि উरमारका प्रशिक्त विलालन, "(कन भावित ना ! रक्क, भवना एक्क, कि कि कामिए इंटेर वल, युव कामिया पिए छि। " अध्यक्ष वहिंद खरवात्र छानिका विद्या छाष्टाटक वासाटत श्राठीहरनन। वाञ्चातात्र सुरतान ইভিহাস মুধছের ন্যার থোড় মোচা ডুমুর কাঁচকলা **আসু পটোল শাক** आह धन कतिएक केतिएक बाकारत निया छेनशिष्ठ हरेन । किस्क**ंकि**नि-ৰার সময় অধিকাংশ জব্য ভূগ করিল। ক্ষক প্রসা তাহার হাত**্হইতে** निष्या (त्रन, कडक (पाकानपाद्यवा ईकारेया नरेन। बारा किছु व्यव ক্রিয়াছিল, ভাহা গুছাইয়া বাড়ীতে পৌচিয়া দেওয়া বড় মৃত্তিল ছইল। বাজারে লোকের ভিডে গা খানিরা উঠিরাছে, এক হাতে মাচ, অপর হাতে निश्मित्र काठकला भाक, रशत्न अक्दान खाड़, काँदि शामहात्र दांदी अमेगाना ভরকারী। চাত্র সাম্লাইতে কাচা কোঁচা বসিরা পড়ে, কাণ্ড পরিতে পির। চাণর বৃণার লুটার। আনিতে আনিতে অর্থেক আলু শটোল পথেই .পড়িয়া বহিল ৷ তীকুলুটি দৃংদ্শী মংস্যলোভী চিলের প**ংক এটা বড়** छक क्षा । अनामन्द्र कहुन लाक स्वित्त छात्राहा त्वन हिनिट्ड शाद्य । बाक्षावाम त्यन हिटलब (भगाव कनारे नाहरणन शहर बिका क्लिका

कतिए हिरान । भर्षत्र मार्च हिरान रहाँ। मातित्रा छाँदात्र दाछ द्देर् । माह नदेश भनादेन, छत्र भादेश राष्ट्रात्राम प्रवास्त्र स्वताहि माहीरण द्वित्र न्यूटे विरागन। भरिराकत्र माहाराग्र स्वान क्षकारत (भर बाधात्रमानकी विक्र किछू गृहद पामीण दश्र।

নামন্ত্রি প্রিটা অব্যাদি দেবিয়া অত্যে থানিক নাকে কঁটিলেন, বাহারামকে ভব্লিনা করিলেন, শেব ভাতৃপুত্তের অব্যান্যতা দেবিয়া হালিয়া
কলিলেন, "হঁটারে ছেলে, ভার কি কোন ক্ষমতা নাই ? হার হার হার হার হার গারে বুল কালা নেথে, বেমে আিথতি হরে, মুধ রাজা করে ! আর সব
সাম্প্রী পত্ত কৈ ? কি কি কিনে আন্লি হিসাব দে দিকি দেবি ? অমন
নির্কোধ ছেলে তৃই ! হা আমার পোড়া কপাল ! হাতে রক্তের দাল
কিসের ? মাচ কৈ ?" বাস্তারাম হাসিয়া বলিলেন, "পিসা, চিলে ছোঁ মেরে
হাত থেকে মাচ নিরে গেছে, ভাই রক্ত পড়্ছে। এই নাও কি কি
সাম্প্রী এনেছি সব ব্বে হুবে নাও, আমি আর বাপু লভ হিসাব চিসাব
কিলে প্রির না।" বাস্থারাম এক থান পুত্তক মুখ্ছ করিতে পারে, কিছ
আলু প্রির না।" বাস্থারাম এক থান পুত্তক মুখ্ছ করিতে পারে, কিছ
আলু প্রির না।" বাস্থারাম এক থান পুত্তক মুখ্ছ করিতে পারে, কিছ
আলু প্রির না। বাস্থানি কেই দিন হইতে আর ভাহাকে কথনও বাজারের
ভার দেব থাই

বাশ্বরামকে তান মানুব পাইরা অনেকে অনেক সমর ধ্যক দিত, নির্কোধ বলিও, উপহাস বিজ্ঞাপ করিও, কিন্তু কিতৃতেই কেহ রাগাইজে পারিও না। হর তো বধন কেহ ভাহাকে বনিতেছে, তখন দে অনা ক্রিম্ম ভাবিতেছে; থানিক লগ পর বলিন, "আঁ, কি বল্চ চ আনি ভনিতে পাই লাই।" সব মাটী হইরা পেল। গঞ্জনা ভংগনা উপহাসবাকা অনেক লম্ম এইরপ্রেক্ষারে কর্পে প্রবেশই করিতে পারিও না। সে সহজেই চিন্তামর হইরা বাছবাগার বিস্মৃত হইরা বাইও। এত অল বরসেকেন সে এমন গভীর হভাব অনন্যমনা হইরাছিল ভাহা আমরা ঠিক থলিতে পারিলাম না, এই মাত্র কেবল ভনা গিয়াছে, যে সে বি, এ, ক্লাসে পছিবার প্রেই চিন্তাশীল জ্ঞানীছিগের বিজ্ঞানপ্রছ পড়িতে আরম্ভ করে। বিশ্বরুব গাঠ্য পুত্তক আছিত করিব। অবসর কালে, বিশেষ্ডঃ প্রীয়ের

ছুটিতে ঐ সকল গ্রন্থ পড়িত। বাছার বে বিবরে স্বাভাবিক ক্লচি, সে আপনা হইতে সেই বিকে গমন করে। বাছারামের মনের গঠন ঐ প্রকার ছিল, স্তরাং চিন্তাশীল জ্ঞানগ্রন্থ তাহার ভাল লাগিত। গ্রীষ্মকালে বাড়ুল ভবনে গিরা ক্রেমাগত চুই মাস কাল সে বড় বড় লোকের জীবনচরিত, মনোবিজ্ঞান ও দর্শনশাত্র অমুশীলন করিত। পরীক্ষা পাঠ্যের উৎপীড়ন না থাকিলে এ পথে সে আরও অপ্রসর হইত সন্দেহ নাই। এই ভিস্তাশীলতা, ভত্তিপাসা এবং গাভীর্য বরোর্ছির সহিত ক্রেমে বিভিত্ত হইরাছিল। সমস্ত বাধা বিশ্ব প্রভিত্ত অবস্বা অতিক্রম করিয়া ভাহার মনের গতি এই ক্রিকে ধাবিত হর।

তৃতীর পরিচ্ছেদ।

भागानदेवत्राका ।

প্রথম বৌগনেই বাছারামের জীবনে এমন একটি পারিবারেক চুর্বচনা উপছিত হর বাহাতে তাঁহাকে একবারে সংসারসহজে উলাসীন নরিরা তুলে । ইতা না ঘটিলেও কোন কালে তিনি সাবারণ লোকের মত বিবরাসক্ষাবারী হইতেন কি না সন্দেহ; কারণ তাঁহার নির্দ্তি জন্য প্রকার ছিল। বাহিরের প্রতিকুল ঘটনা তাঁহার প্রকৃতির সাভাবিক প্রতিকে নির্দিষ্ট নির্দ্তির পথে লইরা বাইবার পক্ষে কেমন অন্তুক্ত হইরাহিল পরে ভাহা সকলে জানিতে পারিবেন। ইথাকে অন্তর্ভর লিখন বলিলে কোন ক্ষতি নাই। সেই অনৃষ্ট কল ফলিবার পর্য্যে নির্দ্তির সহিত হৈনিক জীবনের অন্তত্তর দিনারাজীর সংখাতে বে সকল জনত ঘটনাবলী সর্পার হর ভাহাই উপন্যাসের কুলা। শেব বাহা অনৃষ্ট, বহুবিধ কর্তব্যাল্ডীন ও অবস্থাচাক্রের ভিতর দিয়া ভাহা পরিণামে দৃষ্ট হর। উপন্যাসের শেব পরিজ্যের না পছিলে সে অনৃষ্ট কি ভাহা জানিবার উপায় নাই। কিন্তু বাহারামের জীবন-স্বভির ভবিব্যৎ চরিত্রের নির্দর্শন সব্যের কিছু জ্যেই প্রকাশ পাইরাহিক।

বনমানী বাবু কুলীন বংশোদ্ভব, বিষ্ণু ঠাকুরের সভাসনা ইহাঁর পিড শিভামত প্রভৃতি পূর্বাপুরুষের। বছবিবাহ ক রয়াচিলেন। কিন্তু ইনি নিঞ্ একটির অধিক খারপরিপ্রাধ করেন নাই। করিবার প্রবৃত্তিও কথন হয় नारे। मान मान कोशीना धाथारक मुना कतिरखन । विराधनकः छशीन শ্বদ্ধবিৰী বনণীকুলের বন্ধগরণা ছিলেন। উভিন্ন ধর্মনিষ্ঠ। দয়া দাদিব্য सङ्ख्या माह्या रमगानीत यम वर्षानात साम्य माह्या महामा एवं। मह्या महा ৰত প্ৰকাৰ সহার এ পৃথিবীতে আছে উন্মধ্যে সাক্ষী খ্ৰীত ৰত সহার আয় ৰেহ নাই। অনেক লোক জীৱ খণে ধৰ্মের পধে ছিব থাকে এবং স্ত্রী-বিরোগে ধর্মভাট হইয়া বিপধে গম্ন করে। বন্মালীর ভাগ্যে শেষ ভাহাই ঘটিলাভিল। বালারামের জননী পুরীক্ষেত্তে জগলাথ দর্শনে গমন করেন, সেই খানেই তাঁহার মৃত্যু হয়। তাঁহার বিয়োগে পিডা পুত্র উভ-রেই অভিযাত্ত কাছর হইরা পড়িলেন। গৃহকক্ষীর অভর্কানে সংসার পরিবার খাশানবং প্রতীয়নান হইছে লাগিল। বনম্লীর জ্বয় ভালিঃ। গেল। বাঞ্চানাম বিষম শোকের আমাতে আরও নিস্তর গভীর ভাব ধারণ করিবেলন। এক জনেও অভাবে পরিবারের সমস্ত বন্ধন একবারে শিথিল ছবীয়াপড়িল। কে আর তখন কাহাকে সাজুনা দিবে? একারাম্মণ পিসী;ুভিনি আবার কোন্দিক্ সামলাইবেন ় এক দিকে পিডা, অপর দিকে পুত্র ভূংগ খোকে ন্রিম্নাণ হইয়া কাল্যাপন করিতে লাগিলেন।

প্রির্ভনা সহধর্ষিণীর বিরহে বন্যালীর মনে অভিশ্র নির্ফোর উপস্থিত হইল। চিত্ত এমনি উদাস হইরা পেল, যে গৃহকর্ম্মে আর তিনি এন দিতে পারেন না। মধ্যে মধ্যে শোকভয়জ্বরে হতাশ হইরা এমনি হীর্ম নির্মাস পরিতাগে করেন, তাহাতে জ্ঞান হয় যেন অর্ক্রেক পরমায় কর হইরা গেল। এত বে সংলারে মারা মন্তা, সমস্ত নিঃশেষিত হইল। একমাত্র সম্ভান বাঞ্চাম তাঁহার পানে একরার ফিরে চাহিতে ইছ্যা হয় না। মন্তানের ম্বপানে চাছিলে জ্রীবিরোগনোক উবলিয়া পড়ে, প্রাণ পালল হইয়া উঠে, নয়নম্বলে বুক ভাসিরা বায়। সম্ভ সংমার তিনি শূন্য দেখিতে লাগিলেন। প্রথম ক্রেক্টা দিন অভ্যন্ত করে কাটল। অর্থম ক্রেক্টা দিন অভ্যন্ত করে কাটল। অর্থম ক্রেক্টা দিন অভ্যন্ত করে কাটল। অর্থম ক্রেক্টা দিন অভ্যন্ত করে কাটিল। অর্থম ক্রেক্টা দিন অভ্যন্ত করে কাটিল। আর্মন

শোবের প্রথম আবাত কোনত্রশে সংবরণ করিরা একটু ছির ছইলেন।
তলনতর অবিহাৎ জীবন গৃহত্যাগী তপথীর ন্যার অভিবাহিত করিবেল
এই সভয় করিয়া, গলতীরে একটী ক্ষুত্ত উপরন ছিল তর্মার ক্ষুত্রীর
বাঁবিয়া তল্পথে বাস করিছে লাগিলেন। ক্ষিত্রতে একবার ব্যক্তে ক্ষিত্রার
ভোজন, গৈরিক বসন সরিবান, জপ তপ সভ্যা আহিক, নীজে আলক্ষ্
বোরবাশিক অধ্যয়ন, খ্যান চিক্তা ইত্যাতি নির্মেক কালাভিপাত করিছেল।
• চূল কাভি রাখিলেন, কল আনবশতঃ চুলে ক্রেমে কটা বাঁধিতে আরক্ষ

হল। ঠিক এক লন প্রকৃত বোগী সন্ত্যাসীর ন্যায় অবভিতি করিছেল
লাগিলেন।

বারে কেবল একা রামমণি পিনী বল্যা, জনবিধবা; তিনি সংসার্থার সমস্ত বহন করেন, বাল্লারামকে কেবেন ভনেন। পতিপুত্রহীকা বিধবা জন্ধচারিণী হইবাও তিনি সংসারভারে আক্রান্ত বহিলেন। গীজাপার্ক জ্ঞানী ব্যক্তি সহমে এরপে নিজাম ভাবে সংসারের কর্ঠোর কর্তব্য প্রসন্ত চিতে বহন করিতে সক্ষম হন না। তিনি বৈরাগী হইবা সকলকে বৈরাগ্যান্তল দক্ষ করিতে চাহেন। কিন্ত হিলুর বিধবা পরের মুবে মুবা, সে উদার প্রেমিক বৈরাগিনী। ভগবান রী প্রকৃতিকে এমনি এক আক্ষয় উপাধানে নির্মাণ করিবাদেন, বিশেষতা হিলুর বিধবাকে, বে সে সকল মুবে মুবা হইবাও মর সংসার করিতে পারে। আজীয় জ্ঞাবংকর মুবে ভার মুবা স্বান্ত স্বান্ত বার মুবা হিলুর বিধবার বিশ্ব উৎসাহের সহিত গৃহকার্য্য সকলের সেবা করিবা নিজে উপবাসী থাকিয়া বিশ্ব উৎসাহের সহিত গৃহকার্য্য সকলের করে। ইহাই ভাহার প্রকৃতি, মুতরাং ইহাতে, অপেকাক্তে সে মুবা।

রামমণি পিনী সংসারের ঈর্শ বিশৃত্বণ ভাব আর সহ করিতে পারি-লেন না। ভাতৃপুত্তের জন্য উচারর প্রাণ কাঁদিতে লাগিক। আছা। মাতৃহীন বাঞ্চারের আমার কোন কিনারা হইল না! তর সংসার সব পাঁধারে ভাসিয়া পেল। বাছা আমার মনের চ্যবে কাংছের হতে করা কর না; ভাল থার না, ভাল পরে না, কেবল কেডাকে বুব ভ্রিয়া পড়িয়া থাকে।" এই ভাবিয়া ভিনি এক দিন সেই গ্রম্ভাতীয়ন্ত উল্লোচন বিরা উপন্থিক হইলেন। তথার বিরা ভাতার স্ক্রাক বেশ পূর্ণক করও फाँश्व त्यां क तृः व चात्र अ महात्यत्य छेथिन श क्रीकां जिला चार्यान अनीबारम महाामिनी एरेडा मकन चर्च विनाम छात्र अदिए भारत. किस আত্মীমুগণের নিরামিব ভোলন বৈরাগ্য ভাগেগীকার সহ্য করিতে পারে লা। আপনি বন্ধচারিণী হইয়াও লে আভীর প্রির অনের নিমিত্র মৎসা ৰাংস বন্ধন পরিবেশন করে। ভ্রাভার বৈরাগ্য বেল দেখির। তাঁহার ভুই **চক্ষে धनशा**हा रहिएक नामिन। चन कान शाह वनशानीरक चाकि कालब ভাবে बनिष्ड नाशितनमः "हादि वसमानी, बहे कि (छात वर्ष । आकाः" ভূমিই না হর সন্থাসী হইলে, কিন্তু দুবের ছেলে বাস্থারামকে কেন পাঁখারে कामारेटव १ राजाया मा एव ववन एटेवाटक, धर्म कर्म मिरव काइ, बाक; বাছাকে আমার কেন প্রের ভিঝারী কর । আহ। সে বে মা বাপ বিনে **एकटम एकटम (बस्टाएक)। एकटम खाशांत जिल हाउटहे शांत्र क्रियरह, कृत्रिन** शरत ठाकति करत ठाका चामरत, कछ माद चाक्ताए कत्रत, विरत्न था एव. বিধাতা তাতে বাদ সাধলেন। এখন তুমি এক কাজ কর, ছেলের একটা विषय (एक) विषय पत সংসার तथात करत जात शत था:शनि वा जान (वांके छ। कारत । वन्तात (छ। छनरव ना, (छात्रात्रहे कि व वहरत वज्रत कता मास्य १ जानिन विदय् कहरव, वाहित वह निरंत छटल छत्। ज्ञात्त्र वंक्टित. किस्त चारमाक चाक्तार क्रिया कर्या स्टव, अव बक्बाट्य **क्टिंग** किएन। एक बाद विशिष्ट का कि एटन, जरुलि विधित्र विकु-चना। अथन वा बरहान छाश विक हे छहा एव कवा। आदि अथन वाली वारे. वत कत्रा व्यक्तित त्रल व्यवित्तः" कि हमश्कात वार्वशैन वार्ता। बाममनिक प्रविद्य (पनियम विकृत शृहत एक विवया मुखानहीं मा दश्रमित स्वतः একটা উচ্চতর পবিত্র আসন প্রতিষ্ঠিত আছে ভাষা অসীকার করা বার না। देश निर्णिश निकाय माध्यातिकछ।।

বিধবা ভগীর নিখার্থ ছেত্রে কথাওলি বনমালীর প্রাংশ বড় লাগিল। পুত্রের নিরাপ্তর অবস্থা আরণ করড তিনি নিজেও কিছু মোহাফ্রর মুইরা পড়িলেন। ভাবিলেন, "সভাই ত বটে সভানকে কেন আমি । পাঁথারে ভাসাইব ? ভাহার একটা কিনারা করিয়া আমার দেওগা বিভাতই উচিত মুইফেন্ডে। সুধিকা আর বিবাহ, এই দুইটা পিভার প্রধান কার্যা। একটা কর্ত্তব্য সম্পন্ন করিরান্তি, অবশিষ্টনিও করিছে ছইবে। আর বাজবিকও একথা ঠিক, বাছারান বলি গৃহবর্ষে প্রতিষ্ঠিত না হর, আরার বৈরার্য রক্ষা পাইবে না। অপত্য স্বেহের স্বাভাবিক জিরা কি আনি অভ্যন্তবন্ধ হইছে সহফে দূর করিছে পারিব গৃতভাহাত বাধে হর না। প্রভারং ইহাতে আমার তপস্যার বাধাত ক্ষরিবে। সংসারের সকল বিলি ব্যবহা করিয়া দিলা নিশ্চিত বনে সাধন ভক্ষর স্থাবাক্তবন্ধ প্রের:। ভ্যার কণা আরি উপেক্ষা করিছে পারিক্তে না। আর এ সাধন ভক্ষর বোর তপস্যাওত ভূই পাঁচ হিনের কর্ম্ম নত্ত্বর কাল ইহা লটরা থাকিতে হইবে; ভাহার ভিতর কত উৎপাত ভটিতে পারে কে আনে গুলভার ক্রের: কেলাই ভাল।" এই সিভার স্থিন করিয়া কিছু হিনের জন্য তপোরন পরিত্যাপ প্রাক ভিনি প্রবন্ধ অবেষ্বে বাহিন হইলেন।

চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

घरेनाध्यः।

হনবালী প্রথমে বসভপ্র প্রামে আপনার খণ্ডর তবনে গিয়া উপস্থিত হন। আহার পরিচ্ছেদ, সাধন তজন, জগ তপের বে সকল নিরম করিয়া-ছিলেন তরুত্বসারে চলিতে লাগিলেন। পুত্রের বিবাহ দিয়া সংসার সম্বন্ধে এক কালে নিশ্চিত্ত হইয়া বৈয়াগার্মস্থ পালন করিবেন এইটা আছরিক অভিপ্রায়।

বসভপুৰ একটা ভত্তপ্ৰাম, অনেক ত্ৰামণ সঞ্জনের বসতি। নিৰ্দানাধ বংল্যাণাব্যার বনৰালীর সন্থবী তথার বাস করেন। নিৰ্দানাধ সিংস্ভান, ক্লী বন্ধা, প্ৰসন্তা, সুলালী এবং প্রভাগণানিনী। তিনি হিন্দু আচার ব্যবহারের অভ্যন্ত পঞ্গাতিনী। কৃতি থানি নিবেট চাঁচা ছোল। আল্ভাণ্যা চুইথানি পাবে বিশ পঞ্চাশ ভবি রূপার ভারবন্দাট। বোল

পোল কুই বছি। যাল, ছাতে সোপাল বাউটি ও চুই পাছি তাগ।। কাৰে চেঁছি বুন্টলা, পলার এক পাছি দভা হার। যাথার সিঁভিতে টাক পাছির। স্থানটা রাজপথের মত পাল হইরাছিল, ভাছাতে তেল সিন্দুর পোলা পাইত। মামটা ইছার নমনতারা, ভারি জাঁহাবাজ মেরেমানুর। নারের পোলাভা দরোরান চাকরছের ধনক ছিতেন, বাড়ীর ধরত পার তাহার ছাতে বাকিত। নিশানাথের উপর বিস্কল আধিপত্য ছিল। তিনিও ইছাঁকে ভয় করিয়। চলিতেন। সভানাছি নাহকরায় এবং প্রবোচিত কার্য্য করার তাহার প্রকৃতি কডকটা পুরুবের মৃত হুইরা পভিয়াছিল। প্রাচীনা শাভড়ী ঠাকুরাণী তাহার ভবে কাঁপিডেন।

निमानाय रायुत राफ़ी है। अभक्ष धदः पुरे छाना, ठाति पिटक शान भारतक; शुक्रतिथी वातान अवस्त्र ७ वाहित वांगी नहें वा दांध हव विभा विचार कम स्टेरव ना। वाहित महत्न श्रृपात जानान, छाहात जानात धक्यानि चार्रे हाना। उर शार्थ देशक्याना श्री कालाति चत्र। शत्ती-व्याय्यत व्यक्षिणात, जाहाटक व्याचात्र अव्याणित मञ्जालि, चत्र शांत्र शांक्रव गंतिकार गंतिक्व अवर संशांत्रि भवन चुनुधनामण्येत वाकित्व कांधा করা বার না। উঠানে কোবাe জালানি কাঠের রালি, কোবাও চুই চারিবানা ভালা পাত্তী; এক কোণে অতিবিদিগের পরিভাক্ত উচ্চিষ্ট পাত। ও হাঁড়ি সরার ভূপ, অপর কোণে ছই চারিটা পোর বাঁধা। चार्रेहानात विख्त এक शिरक श्रामारश्यकारः युद्ध याँ गाँजारेश मुख्य मन्द्रन चि लाच चारव दायस्य कतिराहरून, बाबेचारम पृष्टिन्नीहरू। কুণার্ক্ত অবিক্রিত অসভ্য কুকুর অবস কুটুদ্দিরের ভার দিবানিজার রুধ। गर्मे नहे क्षिएएह । छाराता (व (करन मिपारन छरेत। बारक कारा नरह, कठिन मुखिकामनारक नवाचारण छित्र कित्र कतिया तृतात श्रीष श्रेष्ठण कतिया नरेबारकः। चारन नात्न कारान मानिवाना, काबान नर्काः काबान निमान द्रमंत्र कष्, द्रम्थाश्च श्रविदात कांग्रीरमा । अ व्यक्तन वावूरणत आप सम्मा-বন্ধন নাই, কেবল পূজা পাৰ্জ্যবের সমন্ত তাঁহার। আমেন। ভাহার কিছু शृहक्ष शृद्धाणम (वश्वद्धातको अहाभद्र धकराद छहादक करिया सम । हामारमङ विभिन्न शास्त्र वाच (१९७) कृष्टेयामत घर ; त्यवादन कृष्टे ठावि स्पन निम्बद

ভাইরের মানা, মামাও ভাইরের পিলে, গুড়তত সম্বন্ধী, নাসীমায়ের বেওর, নামার্যন্তর ইত্যাদি নিয়তই বিরাজ করেন। তাঁবাবের কাজের মধ্যে ভাষাত্ব মেবন, আর নিজ্ঞা, আর মানে নাবে বাবুবের বৈঠকবানার এক কোলে বনিরা থাকা। পাশা কিয়া ভাগ বেলিবার সকী না জুটলে তাঁবাবের অভিত্ব কিছু কাজে লাগে। ইহাঁর। কুট্যের কুট্যে। অনিদার বাবুবের বাড়ীটীর কোবাও চুল বালি বাগরা পড়িতেছে, কোবাও অল বলিরা ছাভা বরিয়াছে, কোবাও বা অবর্থ পাছ বাহির হইতেছে, কোবাও জ্বোরের নীচে গ্রন্থ-পোকুলা এবং ভোলড়ে বাসা করিয়াছে, কেছই সে বিবরের তম্ব লাইবার লোক নাই।

নিশানাথ বে অংশে বাস করিতেন তাহা বেশ পরিকার, থাছার্কর, প্রসজ্বিত। তিনি প্রার বাড়ীর ভিতরেই থাকিতেন, এবং অব্ধরের পার্থে
আপনার বৈঠকধানার বসিরা পড়া ভনা করিডেন। কোন ডার লোক বেড়াইতে আসিলে তাঁহারই কাছে যাইড, এবং থাকিড। গৃহসংলগ্ধ পুলোদ্যানটী তাঁহারই অক্লচির পরিচারক। বর্তমান সভ্যতার নিরমে ভিনি
থাকিতে চেষ্টা করিতেন। কিন্ত নরনতারার ভাচি বাইরের লোরাজ্যে সম্বন্ধ
পারিরা উঠিতেন না। বাড়াতে একটী অনাধা কন্যা থাকে, ভাহাকেই
সন্তান নির্মিশেষে গৃই ভনে পালন করেন। কন্যটী নিশানাবের পত্নীর
ভরীর গৃহিতা। ভারিনের বাঞ্যারাম কালেকের ছুটির সময় এথানে
আসিত এবং গৃই এক মাস থাকিয়া বাইত।

বনমালীর দ্রী বিরোগ ঘটিলেও খণ্ডর বাড়ীর আছর বত্ত কিছু করে
নাই। আমাতাকে তালুল সন্নাস বেশে দর্শন করিয়া নিশানাবের বাড়া
কাঁদিতে লাগিলেন। একে কন্যার মৃত্যুলোক, তাহার উপর আবাডার
উদাসীন মৃত্তি, চ্রে মিলিয়া তাহার শোক সন্তাপ বিতাপত করিল। পরলোকগতা চ্হিতার নাম বরিয়া কত কণ কাঁদিলেন। তাঁহার রোজন ভুনিয়া
বনমালীর চন্দেও অল আলিল। অনন্তর লাভড়ী ঠাকুরাকী ভাঁহার প্রভি
ব্বাবোর্য আছর বত্ব প্রকাশ করিলেন, আসনে বসাইয়া অল বাইছে
কিলেন। পরে বনমালীর বে অন্য তবায় আগমন তবিবরে শাভড়ী সম্বন্ধী
এবং বাড়ীর কত্রীর সহিত অনেক কবা বার্ডা হবল।

दिना वरमान थात्र इरेशाल, वाक्ष्मन माना अव निक्कन शृंदर माणा-বিশী একাকিনী বসিয়া এক ধানি গ্রন্থ পাঠ করিতেচেন। গ্রন্থ পড়িতে विजिज्ञास्त्र वर्षे, किछ त्म शिक बरमार्याश्च नाहे। चुछताः वाहा शिक् ख्या कार्या वर्ष श्रमक्रम प्रदेख्य ना। मानव चिष्ठव खना अक চিন্তা আসিয়া উপস্থিত হইয়াছে, চিন্ত চঞ্চল হইয়াছে। বোধ হয় বনমা-লীর তথার আগমনের উদ্দেশ্য তিনি শুনিরাছিলেন। এই জন্য চিত্তের গতি অতি চঞ্চল। কেন না, তিনি বাহাতে আগক তাহারই বিবাহের জন্য চেষ্টা ছইডেছে। এই রূপ চিছাবিকিপ্ত মনে গ্রন্থ পাঠে নিযুক্ত আছেন, এমন সময় চপলা সুদ্ধী অঞ্জিয়া উপস্থিত হইলেন। চপলা বলিল, "ভগী, অভ পড়ে ভনে আর কি হবে : ক্রীলোকের বিবাহনভ প্রাণ, খামীর সোহার না পাইলে দে জীবন বিক্সিত হয় না, অধিক পড়া গুনায় কেবল खेमरतत शीषा चरत्र, महोत छकार्रेश वात्र, एकटव (खटव मार्था (चाटत, इल शांदक, नानान द्वारत शद्य ; अ विश्वरत चामि अक चन एक छात्री। श्रामीत শান্তিপ্রত্ব শীতন ভারায় বনিয়া প্রাণটা ঠাণ্ডা হইলে তার পর এ সকল পড়া ভুনা ভাল লাগে। তখন পাঠা প্রন্থের মর্মও বুঝা যায়, ভত্তির সকলই अक्रकात । आक्रा, (ভाমার সংক্ষ (कन वश्वात्रास्त्र वार्शत विवाह इडेक ना। **ভেখিতেও বেশ হক্ষর পুরুষ, বয়সও তেমন কিছু বেশী বোধ হয় না।** (शायवदत विद्य छात्रात कर्गाल कि चात्र जान कुटेदत ? कछ पिन चात अ বৈশ্বর বন্তব। সহু করিয়া থাকিবে ? আহা। ভগী, তোমার কটেই কথা मरन हरेल जामात काता शाहा कुलीरनत विश्वारत वर्ष कर्छ 👫

সভোবিধী একটু মৃত্ হাস্য কৰিয়া বলিলেন, "ছিছি, তুমি আপুনিই বে সব কথা মীমাংস। কৰিয়া লইলে ? আমি যে বিধবা তাহাৱই বা প্রমাণ কি ? আর বছিই বা বিধবা হই, ভাহা হুইলে হিন্দু সমাজে পুনর্বার বিবা-হের সম্ভাবনা কোধার ? তুন নাই কি, এই হুংখে বিদ্যাসাগর মহাশয় দেহ পাত করিয়াছেন ? তাহার চক্ষে জল ছেখিয়া কি ছেশের লোক কাঁছিল ? এ হুডভাগ্য হিন্দু আতি উৎসন্ন বাইবে, পাপ্রভোগ্তে ছেশকে তুবাইবে, তথাপি বিধবার হুংখে কর্ণণাত করিবে না। বাস্থারামের পিডা বিশ্বই করিবেন এ কথা তুবি কোধার ভানিলে ? উনি বে পুত্রের বিবাহের জঞ্চ কন্যা

ধেৰিতে আসিরাছেন। তাও বটে, আর উনি বে এখন গৃহত্যাধী সন্নাসী। দেখ নাই কি, কেমন কৰি তপখীর মত গেল্লা কাপড়পরা, চুল দাড়ি রেখেছেন, নিজ হাতে রেখে থান। এমন ধার্মিক লোকে কি আর চ্বার তিন বার বিরে করে। বিশেষতঃ বে ব্রী তাঁহার মারা বিরাছেন তিনি বড় সতী লক্ষী ছিলেন, তাঁর প্রতি প্রদ্ধা ভালবাস। এখনো ওঁর ধুব আছে। প্রকৃত দাম্পতা প্রেম চিরকালের ক্ষন্ত, দেহের বিচ্ছেবে তাহার ক্ষন্ত হয় মা, সেসো মহাশরের কাছে আমি ভানিছি। সে প্রকার প্রেম কাহারো সঙ্গে প্রকার বহিদ হর, তাহা ভূলিবার ক্ষমতাও থাকে না। তাহাতে এক ক্ষম আর এক ক্ষনের সঙ্গে একবারে মিশিরা ক্ষেত্র হইরা বার, এ কথাও আমি কত পৃস্তকে পড়িরাছি।

চপলা বড় মুখরা এবং চড়ুরা, বদমালী বে পুনরার বিবাহ করিবেন না, কি করিতে পারেন না, ইহা ডাহার মনে লাগিল না। সে খাডাবিক সংখ্যাবের ওপে বলিল, "ভাই, পুক্তবই পড়, আর উপদেশই প্রবণ কর, আরি ও সব অনেক দেখিছি। থাশানবৈরাগ্য উপস্থিত হইলে চুই পাঁচ ছিনের জন্য এরপ অনেক করিয়া থাকে। কিন্ত মনের একটা ক্ষণিক উত্তেজনার কি খভাব কর্বন বছল হয় ? তা হয় না। কোন কোন লোকের কর্বা শুনা বার বটে, তাহার। কোন বিশেষ ঘটনা উপলক্ষে একবারে নৃত্তন জীবন পাইরাছে, কিছু সচরাচর ভাহা ঘটে না। আরি বলছি, তুরি হেবে নিও, উনি আবার বিবাহ করিবেন। আরি ওঁর চেহারা ছেবেই তা বুবতে পেরিছি। আর নাই বা করিবেন কেন ? ভবের বাজাতে বৈয়াগ্য কি এতই সন্তা ? সংসারের অবস্থাও বেশ সন্ত্রল, বরসও আছে, ভাহা ছাড়া বাড়ীতে জন্য কোন ত্রীলোক নাই বে সেবা ভক্তি করে। ভোরার সক্ষেত্তক না হউক, অনেকে উইাকে মেরে হিবার অন্ত সাধা সাধি করেন। আমার ইচ্ছা বে ভোরার সক্ষেত্ত, তগবান্ আমানের ছল বুছি করেন।

চপল। উঠিয়া গেলে সভোবিৰী ভাবিতে লাগিলেন, "আমিত কেবল বাহানামকেই বাহা করি, অন্ত কাহারো সহিত বিবাহ হউক না হউক, সে কত কোন গুংব নাই।" কিন্তু আমার বাহা কি পূর্ব হবে? বাহারাম हिन्दू नित्रवाहक कृतीन महान, जाटक वि. এ, नामकता। आयात व आया निषास मुद्रामा बनिया मत्न रहेरणहा । वहि बाबि मध्या बनिया अमानीक **एरे.** छाष्ट्रा एरेटल छ विवादित भर अकवाद्वारे बन्द । आब पहि विधवः रहेना বাদি, ভাতেই বা আৰা কোধার ? মাদী মাধের বে রূপ চুর্জের প্রতাপ, হেবসো নহাশর কি এও দুর সাহস করিতে পারিবেন ৭ কোন দিকেই আর कन किनाता (क्या यात्र ना। यात्र। इडेक, खानाएक छत् खानक यथ আছে। আমার মন এ সুবের আশা ছাড়িবে না। ছাড়ির। কি লইর্ বাকিব ? সে বার বৈ তিনি কভ বতু আঞ্চের সহিত আমাকে চাঁপাড়ন পাড়িয়া ছিল্লাছিলেন সেটা কি ভালবাসার চিত্র নর ? বে পর্যান্ত না আমি ৰাড়ী কিরিয়া আসিলাম ডডকৰ ডিনি সেই গাছ ডলাভেই ছিলেন, এবং विखाना कतिवाहितनन, 'खात कि कृत हारे १' हेराएउ आयात लेखि सन छाँद अक्र वित्मव है। वृत्रा यात्र । यक्षि क्षम श्रूरमात्र चटहे स्थामात्र मतनत ভাৰ তাঁর কাছে প্রকাশ করিব। প্রকাশ করিবই বা কিরুপে ভাওতো ব্রবিতে পারি না। দেখি, কোন ছলে কৌশলে আকার ইলিতে আমি আমার মনের ভাব একাশ কুরিতে পারি কি না। গোপনে গোপনে জ্বরের जरक क्षप्रदेश जानान नवित्र कि एटेए नारत ना र"

পাঠক দ্বহাশররা ব্রিরাছেন কি না বলিতে পারি না, বাহারামের প্রতি সভোবিশীর ভালবাসাটা এক তরক:। কেন না, বাহার প্রতি তিনি মনে মনে এত আসক্ত তাহার জ্বদরের প্রেমকুশ্ব এবনো পর্য ও কন্টুটত ্বর মাই। বাহারাম চিন্তালীল এবং অধারনশীল যুবা, এত হিন পরীক্ষার পাঠেই অধিকাংশ মনোবোর সমর্পিত ছিল। অন্য কোন আমোহ প্রমোহ রস বিলাস তিনি, জানিতেন না; আমোহের মধ্যে কেবল প্রকৃতির পোতা সক্ষর্পন, নির্জনে একাকী চিন্তা ও অম্ব, ইহাই ভাল গাগিত। লোকসন্থে অবস্থান, পোকচরিত্র অধ্যরন, মানবহভাবের দৌক্ষা হর্দান, কি সামাজিকতার উৎকর্ষ সাধন এ সকল বিষয়ে আলো তাঁর প্রবৃত্তি ছিল না। থাকিবার মধ্যে কেবল এইটি ছিল, বে বড় বড় লোকের জীবনচরিত মধ্যে মধ্যে পাঠ করিতেন। সেও বাহারা বাহার। বৃত্তি বিহাসাশ্যর জানী পণ্ডিত অবৈত্যবাদী ভাহাহের; ভাবুক ধ্রেরিক বিশাসী ভঙ্কের নহে।

ভুতরাং সভোষিণী আপন মনে কি ভাবিতেছেন, কি করিভেছেন ভাছার गংবार दक नव ? जिनि देव जानवामात क्रियु एरविवादक्त मदन करतन, दम কেবল তাঁহার নিজের অনুরাগপ্রস্ত কলনার কুহক যাত্র। খকপোল কলিত কলনার বত কিছু প্রিয় সামপ্রী ছিল তদ্বারা তিনি বাস্থারাসকে সাজ্ঞা-हेता अकी चार्न अधिमा करन छाराक कारतिश्हामरन वमाहेरलन। ছিনের পর ছিন ভাষরাভাজরে বত নব নব অনুরাগ আশা পিপাসার ভরক ট্রবলিড হইতে লাগিল, তৎসমুখার ঐ মানসপুত্তলিকাতে ভিনি চরিভার্থ कतिएक नाशितन । नदीना तमनेत्र व्यनतनाननात अन्या (व्यमाक्षण (क निवादन कदिया वास्टिए शादन १ तम अभीत वादका चारनात क्षादनमहिकान नारे। প্রাণের নিভত নিলরে বসির। সজোবিধী বত পারিলেন বাছারাছকে मायारेलन, वागिन वागन मान कड छार कड बानाव (सना (सनिलन, আদরের ধনকে আদর করিতে লাগিলেন; বালিকারা বেলনা পুতলের প্রতি বেমন করে তেমনি করিলেন। ঘটনালেধক এবং পাঠক ইয়াকে কল্প। মারা অপ্র পার্যামি বাহা ইচ্ছা বলিরা নিশ্চিত্ত হইতে পারেন, কিন্ত श्चिमिनाच पुरुषीय नक्त अ क्या बाट्डे ना । तम क्यानाक मणा मत्न করিরা মুখী; কেবল মুখী নছে, ভাছার উপর ভবিষ্যভের সকল আশা ভরসা স্থাপন করিরা সে নিভ্য নব নব রসোল্লাসে উল্লসিড হয়।

পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

মুনিনাঞ্চ মতিভ্ৰমঃ।

পর দিবস নিভারতা সরাধাতে বনরালী রহনকার্য্যে নিযুক্ত আছেন, নিশানাথের পরী আহার্য্য বভর আরোজন করিয়া থিতেছেন, শাশুড়ী ঠাকুরাকী কপাটের আড়ালে বসিয়া ঘোষটার ভিডর হুইতে ক্রন্সংকর হরে বলিতে লাগিলেন, বাবা, আমার গোড়া কপাল পুড়ে থেছে, পূর্ব্য ক্রের পাপের কল কে আরু বভাবে ? আবা হইবার হুইরাছে, এবন বাবা, পুনি কি এইরপ সন্নাসীর বেশে বেড়াবে ? আমি বেঁচে থাক্তে এটা চক্ষে
দেখ্তে পারব না। আমার একটা দেওছবি আছে, বরেসেও বেশ শেরানা,
বিবাহের ব্যুগ্য বটে, আমার বড় সাধ, সে মেরেটাকে তোমার হাড়ে
দিই। বে মেরে আমার মরে গেল তাকে আরতো পাব না, কিরু তোমার
মত জামাই কেন আমি হারাব ? বাবা, এ অমুরোধটী শোন, আর এমন
করে বেড়িও না, বাতে তার সংসার বজার থাকে ভা আগে কর, নৈলে
মনে বড় কন্ট পাই। বাল্লারামের বিয়ে পরে দিও, আগে তার বজার
কর। আহা। আমার কি তুংগের কপাল। মেরে আমার ব্যাটার বউ
দেখে বেডে পারলে না, ধর্ম ধর্ম করেই বিদেশে প্রাণটা হারালে।" এই
বিদরা তিনি সেই পরলোকগতা কন্যার উদ্দেশে তুই এক কোট। চক্ষের
আলও কেলিলেন। নিশানাথের পত্নী নম্নতার। দেবীর এ প্রভাবে সহামুভূতি চিল।

বনমানীর মন উদাস, ধর্মসাধনে সর্বদা অনুবক্ত, অন্তবে বৈরাদ্যের আধি অলিতেছে, সাধনী পতিরভা সহধর্মিনীর বিরোগ শোকের নিদার্ক মর্ম্ম-বেদনা তথনো পর্যান্ত সমারক উপশমিত হর নাই, তদ্রির গত করেক নাস নির্জনিবাস এবং গীতা ভাগবত বোগবাশিষ্ঠ পাঠের ফলে সংসারটা বে ক্রমাগত রপ্তান্তর অবস্থান্তর হইরা সরিয়া সরিয়া বাইতেতে এ জ্ঞানটা বড় উজ্জ্ল হইরাছিল। এই জন্য বুরা শোকাত্রা শাল্ড্যার প্রস্তান মনে স্মান পাইল না। তিনি আপনার ভাবে ভোর হইরা রাধিতে লাবিকেন, কোন কথার উত্তর ছিলেন না। প্রস্তাবটা বেন পাখীর মফ হছত্ত্বের উপর ছিয়া উড়িয়া চলিয়। পেন। ভাছার ছাগ ভিতরে বসিল কি না, কেই আনিতে পারিল না।

বনৰানী বাবুৰ এই বৰ্জমান বৈরাগ্য বেল বাছিও আজীর প্রিরজনের শোকউদীপক, কিন্ত ছেবিতে বড় সুন্দর। লাড়িগুলি কাঁচার পাকার মিলিড, বেশী লয়। নয়; গারের বর্ণটা বেল পরিভার পৌর বর্ণ, ছেছ থানি জ্বই পৃষ্ট এবং ভাষাতে বৈরাগ্যের পবিত্র পদ। ধুব বনোবোগপূর্বাক নিরীক্ষণ করিলে বুবে কিঞিৎ পোকের কালিয়া বেল নরনগোচর হয়, কিন্ত লে বুব নিভান্ত নিরাশাক্ষরাজ্বর অপ্রসম্ভ নর, বয়ৎ হঠাৎ ছেবিলে অভীব প্রশাক্ত বলিরাই বোধ হয়। গৌরবর্ণ কুছুবার পুরুষ, চিরকাল টানা পাধার বাতাসে আফিসে বসিরা কেরাবির কাজ করিরা আসিরাছেন, প্রচণ্ড রৌজ্ঞতাপ কিছা জনসিক্ত লীডল বঞা বার্র কঠোঁর আঘাত কথন সভ্ করিছে হর নাই; শরীর চিরকাল ধর্মপিছীর সেবা শুল্লবার আকুর অবজ্বাতেই ভিল। একংশে ইহাতে আর এক প্রকার সান্তিক সৌল্লহা প্রকৃটিত হইরাছে। নির্মাণ কেই কাজির উপার গৈরিক বসন, মুধ্মগুল ভপসাার, জ্যোতিতে সম্ভ্রুল, চক্ষের লৃষ্টি অভর্বী, ধীর পাদবিক্ষেপ, মৃত্ বাক্তা, দর্শন নাত্রেই মনে প্রভার স্কার হয়। বস্তুড: বিলাসবাসনোমত সংসারাসক জনসমাতে এরাপ প্রিরদর্শন বিবালাবণ্ড সাধু পুরুবের দর্শন অভীব স্বৃহ্র্লভ; ইহার প্রভাবে মানবের মারাবন্ধন ভিন্ন হইরা বার।

বনমালীর শান্তড়ী বে 'দেওর বির জন্য বিবাহ প্রজাব করিয়াছিলেন, সেটী তাঁহার বড় অনুগত, এই জন্য মায়া এত বেশী। বনমালী পুরুত্তর বিবা-হের জন্য তথন ব্যস্ত, স্তরাং মনে মনে ভাবিলেন, "বছি মেয়েটী স্থক্ষরী হয়, তবে একবার দেখা বাউক "

এই ছিব করিয়া কন্যা দেখিতে গেলেন। কুণীনের মেরে, একটু শেরানা হইরাতে, দৃর হইতে দেখিতে অতি সুন্দরী, গৌর বর্ণ, রঙ্গীন বসন, তাহার উপর সর্পালকার, নারীবৌবনের সঙ্গে এই তিন বর্থন মিলিত হয়, তথ্ন রপত্রিত চক্ষ্ আর মুগ্ধ না হইরা থাকিতে পারে না। তিতরে কি আছে না আতে মন তথ্ন তাহা দেখিবার অবসর পার না। দর্শন মাত্রে চক্ষের উপর বাহিরের উজ্জ্বল ছবি থানি মুক্তিত হইরা বায়। এ কাজটা বিচার চিন্তা গবেষণার উপর তত নির্ভর করে না, অক্সাতসারে ইহা বালব্দিতে আপনার অনতিক্রমণীয় প্রভাব বিভার করে। ইহা এক প্রকার রাসায়নিক ক্রিয়া, মালুষকে ইহাতে একটু ভাবাভারিত করিয়া কেলে; বিশেষতা যেখানে পুকর প্রকৃতির মিলন, দেখানে একটী অভাবনীয় মুর্থমনীয় কার্যা সম্পাধিত হয়। ছাবের সহিত বলিতে হইবেছে, ত্রভারী ভঙ্কাটা সংবত্ননা। বনমালী এই রূপবতী কন্যাকে দেখিয়া একটু বিচলিত ইহালন, ঠিক বেন বালির বাবের নিমে একটু বন্যার অল প্রবেশ করিল, ধর্মপ্রতি নিমেবের মধ্যে শিবিল হইরা কেন, জীবনের মুনে আমাত

লাগিল। এ সকল কার্যা এত শীত্র আরম্ভ হর বে লোকে সহসা ধরিতে পারে না। প্রত্যেক কার্যাই এইরপে অলক্ষিত ভাবে প্রথমে আরম্ভ হইর। বাকে। মানসিক বোর আন্দোলনের মধ্যে ইহার কার্যা প্রথম আরম্ভ হয়, এই জন্য আসল ব্যাপারট। কি তাহা সহসা লোকে বুঝিতে পারে না। কিন্তু পরিশামে তাহা মৃতিমান আকার বধন ধারণ করে তখন বুঝা বায়। এমন অবছার বুঝা বায় বধন আর তাহাকে তাড়াইবার কোন ক্ষমতা বাকে না।

बनमानी मानाब संगाद अफ़िना (शानन। भाक्फ़ीत शाकाविहाई उदन मरन नर्सार्थ छेन्ड हर्रेण। (व नमह श्रष्टांव श्रथ्य अवन करवन ख्यम आभारतत मरन दरेबाहिल, तुलि वा कथांछ। छात्रिया शंल, खबरव व्यदिभाषिकात शारेल ना; राक्शवस्था पर्भात अक्र यात इत्या किछू षाक्री नहर । किन्न छारा बक्तारत छात्रता सात्र नारे, शुरुत्रक झेवर म्पूर्ण करिवाहित। प्राप्तात्र नार्टेव। अकात् मस्तक देखानम करिता। एथन ৰনমালীর মনে এই যুক্তির আবির্জাব ছইল বে, "লোকাতুরা খঞা ঠাকুরাণীর অস্থবোৰ উপেক্ষা করাট। कि ঠিক ? অন্যান্য যুক্তিও আসিরা জুটিল। ইচ্ছা रिशारन अवन धतुर्वित स्वेतन, (मशारन स्वात मुक्तित स्वात कारात १ शृरखन জন্য অপর স্থানে পাত্রী অবেষণ করিব, এই সিভান্ত ছির করিয়। আপনি पूनर्सात विवारका क्षता अक्ष ह क्रेरनन । कनात क्षत्रिकारकारणार अस्तत कथा ज्यम जानिया विशासन मा, विशास की शासिक रहेज ना। बारा रहेक, बत्तव काव जबनकाव कना लालन बारिया तिहे वाड़ोरण बार बकी बन्छा वानिका हिन छारात्रहे मस्य नृरत्व नवक ছির করিবের। অভিভাগক ছিলের বে একটু আপত্তির সন্তাবন। ছিল छाहा हेहाबाता थेलन हेहेबा (गर्न । (कन ना, छाहाता नामाना कनाकात ত্তৰ আৰু একটা কন্যা বিশ্বা বাস্থাবামের মত উংক্তই জামাতা লাভ করিল। वनमानी हेहारफ नास्थान हहरलन । एकडी ब्रोडक खरर किछू नश्रम होका शारेत्वन । क्यांकी राष्ट्रावाद्यव बरनानीच दरेटव कि मा, त्य विरद्ध छावियात । आह खबन डाराव अवनद बरिल मा। वाखनिक स्मारकी निवाद्यत मन्तुर्व मरगाना । रहम कथ, निखास क्यांनी, मायात्र हुन मारे, वर्ष यक्ति कान

নর, কিন্ত সৌশর্ষ্যের বড়ই অভাব, পেটে বোব হর এক আবচ্ পিলেও ছিল। বনমালী বলি নিজের বিবাহের অস্ত ব্যক্ত হইরা না পড়িতেন, ডাহা হইলে এরূপ পাত্রীর সহিত স্থার পুত্রের বিবাহ হিতে কথনই পারিতেন না। এক্ষণে পুর্ক্ষোল্লিখিত ব্যস্থা স্থারীর অভিমূর্তি উচ্ছার মনে আগিতেছিল, স্তরাং এ বিকে আর বেশী বৃটি রহিল না। সেই মেরেটীকে পুত্রের জন্য রাধিষা প্রথম্টি আপনি বিবাহ করিলেন।

वनमानी वातू, এ कांकरी ट्यामाइ नटक वड़ खान इडेन ना। आनंतिष একটা কুনুষ্টাল দেখাইলে অধিকত্ত পুত্ৰের ভাষাস্থার পথে চিরকালের জন্ত কণ্টক বোপণ করিলে। নিজে ভূমি পুনর্জার এ বরুসে বিবাছ করিয়া यि यथी हरेए हा ६ हथ, किंद्र लामात विवाहसम्ब निर्देश सम जना সভান বাস্থারামকে কেন ভূমি বলিখান করিলে ? ফলডঃ বনমালী বড় ভূৰ্ব্ব-লতার পরিচুত্র বিবেইটা আপনার আধ্যাত্মিক উন্নতি ও শান্তির আশাস্থ विकेष स्टेटनन । (बहान निकास कित्रा। वास्त्र स्ट्रेग्नाक्टनन खासात्र विनेतीख कार्य कतिया विजिल्ला अभन कार्या कतित्वन रच ना बिद्धि किछ्रिष्ट चात जारा रहेरल मुक्ति नारखत चाना नाहे। शार्ठक महानद्व बबारन निका কলন, এক বার বন্ধন শিথিল হটলে মামুষ কোবার পিরা শেষ কঁড়ার। সাং-त्नद्र अन्द्रिनकारचात्र अना नित्क अकराद्र विक अन तनन, जत्व सानित्व त्य चात्र जाशंदक भूर्त द्वादन महत्व किताहेत्रा चानित्व भावित्व ना । वनवानी त्त्रके त्वास्त्री दासमनित श्राद्याहन वादका मखादनत **कावीक्षरवंद का**मास सार्गिक रहेश पिएतन, हेशहे छाराइ पष्टतक मरूप परद अबस पूर निक्ति हरेन ; जात नत बारा यहा पंतिन नक्टनरे एबिटफ नार्रेटनम । बहे बादन्हें भ्य रत्र नारे, चटनक पृत्र भर्ताचं अफ़ारेशावित । अरे खनारे बाह्य-कार्टिका वीनवारहन, हर्षांभारत याच अवही बात किल बादक, खादाब क्लिक বির। সমস্ত জল বিনিংহত হইরা পড়ে। মনের বছন ঠিক ভেম্বি, A क चारन अक्षे चानना हरेरन क्राय नवत वृणिया नाय। बाबना क्रिकि चार चारतो वाक्टि शाह ना। हशता इसरी हकता मारी, किन्द ৰ বাহা বলিছাছিল ঠিক ভাহাই স্টল। ত্ৰীজাভিত স্বভাৰ এ বিষয়ে विकारक वृक्षमणा (क्यम (क्य चानमः चानमि वृक्षिरक नारकः।

ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ।

माञ्जादश्यंगीएन।

বাঞ্চারাম এখন আর বিদ্যালয়ের ছাল নহেন। বি, এ, পবীকার উজীর্থ হইরা একাণে গৃহে বসিরা জ্ঞান বিজ্ঞান ইতিহাসাদি তল্পাত্র অধ্যরন করেন। সংসারে পাকিয়াও বেন নাই। মুবা প্রকৃতি বশতঃ সমবরদ্বদিপের সহিত এক আধ বার মিনিতেন এবং তাহাদের নানা রস রক্ষের করা বার্তার কিছু কিছু আমোদেও অমুভব করিতেন। কিন্তু সেটা আশানা হইতে আর বড় ইটিড না। অধিক কণ লোকসকে থাকিয়া আশানা হইতে আর বড় ইটিড না। অধিক কণ লোকসকে থাকিয়া আশানা আমোদ কৌত্বে হোগ দান করা তাঁহার প্রকৃতিবিক্তম কার্যা ছিল। তাহাতে মনে বিরক্তি এবং অখান্তি বোধ হইত। যুবকদল সেই জন্য তাঁহার সক্ষেবেশী সুনম বাকিতে ভালও বাসিত না। তরল চিজ্ঞ চপন মতি অস্থির সভাবের লোকের। প্রতীর চিজ্ঞাশীল নির্জ্ঞানতাশ্রির লোকের-সহবাসে বড় কট্ট পার। ভাহাকের হাস্য পরিহাস বাচাল্তার হে হোগ হিতে পারে না ভাহাকে অরসিক বনিয়া ভাহারা মুনাও করে।

ক্ৰা কয় না, স্ত্তহাৎ এ স্বত্তে উহার সজে কি আর প্রায়র্শ করিব ? আরি বাহা ডাল বুরিতেছি ভাহ। করিৱা বাই।"

এরপ সীমাংসার বে তাঁহার কিছু গৃঢ় বার্থ ছিল ভাহা আর বলিবার প্রহোজন গাবে না। পৃত্তের অন্থ্যোগনের অপেকা না করিয়া পৃত্রেই ব্বন সম্বত্ত ছির করিয়াছেন তথন আর ভাবিবার বা প্রায়র্শ করিবার প্রব্ কোধার

থ এরপ স্থানিক্ষত বৃত্তিমান প্রাপ্তবন্ধক সভানের বিবাহ হিছে হঠলে ভাহাকে লইয়া একটা প্রায়র্শ করিছে হয়, ইহা বে বন্দ্রাণী বৃত্তি-ভোহার বৃত্তি কিছু বিকৃত হইয়া পিয়াছিল।

वाश्वादाप्रत मृत्व है। कि ना, क्लान कवाहे नाई ; निजा बाहा कतिएख विज्ञादन छात्रा (स निवाशिखाए कतित्व देश कानाई आहा । कार्बन, शिक्रवाशाका काशात कीवटनत अक व्यवान तक हिन। तम तक तम निरम বেমন গুঢ় নিষ্ঠার সহিত পালন করিত, তেমনি অন্য পাঁচ অন সহচয়কে **उदियद छेनटबम निछ। राहाता क्रिके, क्रशीन, शृब, निवा, काछ, छछा,** वांशाजारे जाशास्त्रं भव्रमधर्य, धरे जाशांत मध्यातः। किस चार्थतं विवे, श्रमीजित नत्त (त्यारन, मियारन क वाशाका कर सन वाकित्व नारत ? प्रकार जननि जानमात अकित्याय मन्न बन्ध रहात निर्मन केनेप्रिक करेंत्रे । वाशाबाब गुर्द किछू बलून, ना चनून, छाहाब क छिनिहीन विद्यानन, निकीक दमना, चारकन एक. अवर केशमीना जाव अ विवादक लाख्वाक कतिवाहिल। अवभा त्म निर्द्धाय निश्व कृषि वृता, अकामनंक वृत्कित्तिव नावि विवादकरसूत्र निशृष् ब्रह्मात किछत क्वन स्ववजन करत नाहै, ख्वानि क विवास त्यांना मूहि बक्डा भाषास्य खान हिन । कोरननकिनी विश्वन एक्स डेरिज जारा त्र वृत्तिज। किंद जारात खान वृद्धि क्रेरि च नित्त्रेमा निक बशारन श्रीकृरिक शावित ना। निकात कर्कृत्वत त्रवतन, चात ब्राह्म-মণি শিসীর সাধ আহ্লাদের তুকানে বাহারাবের অভিত একবারে উভিত্র (तन । जाराव बाज्राभावरक सरव, गाविवर्गागनाए श्रुनीव आश्रा आगावाव कार किया कृत्य मकान नरेश क्यम कानमात्र मत्या बारवण कतिन । वाहिएत राशित विवादक केरकाव करेक नावित ।

কাৰ অসমনে ইচ্ছাৰ বিক্লমে বিবাহ প্ৰভাব, তাহার উপঃ আবার আবার প্রবাসী প্রবাসী বিসের আবার কোলালল, ইহাতে বাহারার বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন। এ সকল সামাজিক অভ্যাচার উৎপীড়নের ভোন প্রতিবিধান নাই, বিচার নাই। তাঁর সংবাদ তবন আব কে লব পূল্যালচজে ববন তিনি পড়িলাড়েন তবন ইচ্ছার হউক, অনিচ্ছার হউক, কানিরা হউক তাহাতে ঘ্রতে হইবে। কোন বজের ভিতর বদি কাহারো পরিধের বসনের কোন এক অংশ অভাইরা বার, ভাহা হইলে তৎসকে জনমে ভাহার সমস্ত শরীর প্রান্ত নিম্পেষ্ঠিক হইরা থাকে। (সমাজবন্ধ ঠিক তজ্ঞান, ভোমার বিবাহে তুমি আজ্ঞাদিত হও আব না হও, ভাহাতে তুমি মর আর বাঁচ, কিছা স্ক্রিয়াছ হও, আ্লীর প্রসান বন্ধু বান্ধুব্র আপ্নার প্রান্ধ্য ছাড়িকে না।

বালালীর মেরে ছেলের উরাহ ক্রিয়াটা অনেক ছলে একটা সামাজিক জুলুম বিশেষ। বাহারা বিবাহিত হর তাহাদের প্রথ তুংগ মতামত পছল না পছলের বিষরটা আত্মীর অভিভাবকগণের পক্ষে তত গন্ধর মহে, লোকলজ্ঞার ভর্নটাই সর্প্রোপরি। লিল্পতা জীবনের ভাবী ভঙান্তত ফল কেই ভাবিরা দেবে না। বর বা কন্যাকর্তা অপরিষিত ব্যর করিরা পরিবামে করিবাস করুক, কিয়া গুলহার উন্নান হইরা বাউক, প্রতিবাসী কুট্মুলরে করিবাস করুক, কিয়া গুলহার ভাবিরা হারাদে মাডাইরা, ভুগ্যাতি পাইরা, ভোল কলার পান তামাক গাইয়া ভাহারা সরিয় পড়িবে, জার প্রেরাকর্তা ব্যবজ্ঞীবন হুল পণ্ডিতে গাইনা। বাহারাম এই সংলাজনিই চিল্লা করিয়া ব্রিয়মাণ হইয়া রহিলেন। ওিদকে মহ্বংওরালা ওড় ওড় নাকে বয়রা ভাল বালাইল, রসনচোকীর সানাইলার নাহানা বাহারে ভান ব্রিয়া তুল নাকে বয়রা আল বালাইলার নালা বল তেলে চাটি ছিলেন, জানির কাই কাই শক্ষে কান কালা পালা হইয়া উঠিল, পার হরিয়ার ব্য লাগিয়া পেল। ব্রব্যান্ত প্রবলে ব্যক্তাপ্রবিধ ব্যবন নাচিয়া উঠিল। বিরাহ্বাহো তেরনি নরনারী বালক বালিজা ক্রেপিয়া উঠিল।

্ৰাড়ীয় অধ্য বাছিয়ের উঠান সামিয়ান। চাকা অধকার, ভাষার নিয়ে কোবাও কলার পাড়া, বাটার রোলাস বুরী,কোবাও বৃত্তন বেলে বঁকার লানি,

मान्नाजारश्चनभीकृत।

टकाबां वाहाकत्रशिवत शतका भागनः टकाबां वृद्धि वृद्धि क्यांत नम्बिक् स्टेटक विविध नामधी मखात चानिता जालात सुटक जुनीकर रहेटछट्ट। पूर्वात्रक काञ्चर्य द्यानकृत माति वैदिया काट्य काट्य परि हृद कोर हामा मायन धनीर देखाहि बानिया देशविक करिएकटका बालाय इटेट बारकतन कर कुमाछ करनी बार्डाकुमूर्व कर्मा जनन मानिया রোরাকের উপর কেলিভেছে। মসিবরণা সুলোছরী বীবরপত্নী অর্থানিক-লিডব্লেহ স্থালিকারে ভূষিত করিয়া পর্কের সহিত বড় বড় মৎস্যা সকল बाहित कतिया (प्रवाहेटण्डकन, चात्र वनिटण्डकन, "चाक्र कारनत वाक्षास এমন মাচ আর কেউ লিডে পারিবে না।" সমাগতা ভুটু ছিনীপণ নীল পীড লোহিত ইভ্যাদি বিচিত্র বর্ণের বসনে এবং নানাভরণে ভূবিতা ছইরা প্র-স্পারের বস্তালভারের গুণাগুণ ব্যাখ্যা করিতেছেন। বি চাকরাশীর দল হাসির दान ज्निया ननन कांनारेटलटक्। दकर विषेत्रक चारवारवन्त्रक कंदानवहना महिमाणुतम्किनीत नाम मरमाम् थ थे विषेश कर्ष मानिष्टाता धराष्ठन णामारेट एक। तकनगृद्द भाषिकातन कृष्टि अक्न, स्वादक हुए। वाबिना विवादयस्थात क्रजुर्वित द्वनीत शाखा कतिता थात बात नामादेश রাধিভেছেন। তেল মসলা ঘুত ইত্যাদি ছারা ভর্জিত ভক্ষা দ্রব্যের প্রেছ আকাশ পরিপ্লাবিত। এই তো পেল রাল্লাবাড়ীর ব্যাপার।

অভংশ্যমহলে তকুণবর্দ্ধা বি বউ এবং অর্চ্চ এটানাগণ চূণে হলুছের পোলা লইব। পরস্পরের অঞ্জের বসন রঞ্জি করিতেছে, আর বিল বিল শব্দে হালিছেছে। কেছ আলপনা দিতেছে, কেছ পান সাজিতেছে, কেছ বা নবাগত কুটুদ্বিনী ও জামাই বিহাই বিহানের সজে হাল। কৌতুকে মাতিয়াকে। তার দলে বত রাজ্যের ভোট ছোট ছোলে নেত্রে ওল ছুটা ছুটি, হটোপুটি আরম্ভ করিয়াছে। তাহারা কেছ ভোজনে, কেছ ক্রিল্টে আরম্ভ করিয়াছে। তাহারা কেছ ভোজনে, কেছ কিলুকের গলার নালা, কপালে সিন্দুর পরাইর। তাহার লাজ ধরিরা টানাটানি করিতিছে, কেছ চোলে চাটি দ্বিরা পলাইতেছে, কেছ ভাণারীর নিকট বার বার জলপান বেঠাই চাহিতেছে, কেছ বালা ছিটাইতেছে, কেছ কেছ বা অন্যবিধ কার্চ্যে নিম্কুক রহিরাছে। রাম্বাবি পিনীই এবন বালীর পিরী।

ভার স্থান আন আনলের নীনা নাইর ভিনি একবার রামা তার, একবার আন্তর্ব ডারে, একবার বিকেনীয় নির্মিতিশিবের নিন্দ ক্ষর্থিত পুরিক্তি-ক্রিনার অকলরে আলর রন্ধ করিতেছেল আরু ব্যৱস্তেত্ন, "বাছা, অ ক্রোলাবেরই বর বালী। আলনারা নিব্র বুবে করে কর্মে বাও লাও, কেথ লোলনা, পরের বড কেউ ব্য প্রিয়ে থেক লা। আহা বালারারের আবার বা নাই, ভোররাই ভার বা বোল, সকলে ভাহাকে আন্বির্মিত কর।"-

বনৰানীৰ নৰবিবাহিতা শদ্ধী এই উপলক্ষে বাড়ীতে উপস্থিত ছিলেন। আগন্তক প্ৰীলোকেবা দশ বাঁধিয়া ঠাঁহাকে দেবিতে গেল। দেবিয়া ঠাঁহার বসন ত্বণ নাক মুখ চোখ কান কপাল হাত পা চুল নবের সমালোচনা আয়ত্ত করিল। কেহ নাক বাঁকাইল, কেহ জ কুঞ্চিত করিয়া মুখ টিপিল। অনেকে অনেক প্রকার বুঁত ধরিল। কেহ বা অহস্কারের হাসি হাসিল। ইহারা বধন অপরের রূপের দোব গুণ ব্যাখ্যা করে, তখন নিজের মুখপানে চাহিয়া দেখে না। দেখিলেই বা কি হইবে, নিজে কুরুপা হইরাও অপরের নিজা করিতে ছাড়িবৈ কি পু মেরেটী বরসে শেরানা, তাই সব লোম তখন চাকা ছিল। যাই হউক, পরিশেবে ভাল মল গড়ে সকলে একটা রক্ষা করিয়া লইল।

বীশ্বরাম ঘভাবতঃ শান্তিরির, বেখানে লোকসমারোহ, নাচ গান আমোদ ভাষানা, কিলা অবরহীন কপট সামাজিকতা সেখানৈ ভিনি কোন কালে ভিন্তিতে পারিতেন না। বিবাহ উপলক্ষে বাড়ীর ভিতর মহা হঞ্টগোল আরম্ভ হংরাছে। বাচের আঁস্টে গছে, খেঁকি কুকুরের শেঁউ থেট শকে, কাকের চিৎকার, ছেলেকের চেঁচামেচি, মাচির ভেন ভেনানি এবং চাকরাধীদের পিশাচবং হাস্যথানিতে, বহু লোকের কোনাহলে অহির হইরা তিনি বহির্বাচীতে আসিলেন। কিন্তু সেখানেও নিরাপত্ত ইংলম না। বরস্য মুবকগৰ আসিরা ঠাটা ভাষাসা উন্তং ফুল্ডং আরম্ভ করিল। ভোষার মনের ভিতর কি ঘটিয়াছে না ঘটিয়াছে, ভাষা জানিবার জ্বাত কেই হারী নহে। বাহিরে বধন বিবাহের উৎসব তবন ভাষার ভোগ ভোষাকে ভূগিতেই হইবে। ঘটনাচক্র অবিশ্রান্ত ঘ্রিভেছে, ব্যক্তিক বিশেবের স্থাব্য অন্থাব্য হব হুবি লে ভাবিতে পারে বাঃ শের্বান্ত ব্যক্তিক

राष्ट्राक्त्यवर्गीहरू

चार्त्रतातः, निकारक्य प्रत्यके त्या केश्वरका जातका इत्ताताका आयाज राष्ट्राहेश चार्गमान्य चाँकमा समिता समिता वादेरकात ।

नाशासावरम् अञ्चात्रक् सहितात अक्षा गण्डतः दुवसम् साम्य अक्षा ক্ষা পাছিল ৷ কেন্তু বৃদ্ধিল, শান্তিক, বিবাস করিতে স্বাইলেন্স एक मा रक्त ! विशेष कि रकाशक ककी देवसालिक करवात. सीमाल ন। শনীয়তক্রের পর্যাবেক্ষর 💡 🖦 ববিভের নিয়াত ۴ আর এক বান_্র্য "बटर छारे. छनि जामात पतामर्ग (मान । विवादका पत (कामात होत संहरू अक्षान हममा नाकित्व, वाट्ड अक्षान विकारत्व मुख्य दिरव, घरवत रकारव विवाद दिये ।" भार क्षक पुरक विनन, "ना दर ना, विवादक ता, केंद्र क अब कि छान नानिएएए साः दिनी नीकानीकि करिएन अथनि व्यटका केर्ड -हरन बादन । बाश्चाताम, सन्दर्भ शास्त्र कि सब कथा १ मा **आं**ड किंद्र स्थास १° वाहारायत किल कृत्वकाटर चालांच. दवाम बनारहे केलर किलम मा. विक ভিতরে ভিতরে বড় ক্রেশ অমুভব করিতে লাগিলেনঃ তদনভার অপত্র এক রসিক ব্যক্তি বলিল, "ভাই বৃদ্ধি ডোমার এডই কট্ট বোল হয়, ভবে না হয় चाबाटक ভाর দাও, चामि (ভাষার ছইরা বিবাহ করিরা আদি !" এ কথাটা ভনিরা সকলেই হাসিরা উঠিল। বাপ্রারাম নিজেও মুখ মুচ্কিরা একট हाजिलन। हाजिया विलिलन, "वसु, छ। हरल आधि अ बाखा (बंटह बारे। लामना शाह करन मिलिना विष जामारक क दिशक वहेरक जिल्ला कांत्र क भाव, जारा रहेल व्याम बाक्षविक वक्त सुबी रहे. (जामारिनरक अक्टी बुंद वर्ष किष्टे क्रिके।" परमव मर्रदा दे हिए भाका छोटा वकरमत पूरे अक्का ব্ৰহ্মজ্ঞানীর ছেলেও চিল। \ভাছারা নিরীছ বাপ্পারামকে বাল্যবিবাই লোবে লোমী, পিভার অভ অনুগত ভীকু স্থান বলিয়। নিশাবাদ করিল। বিশ্ব-বিভাগেত্রে উপাধিধারী কুডবিভা এখিছিত হটতা অসভা বর্কবের মত বালিকা कनाव प्रशिष्ठ ना (एविड) कृतिहा विवाह कवाही (र चलान बहागान चर्षि-बट्ड जाराता रोच डेनटरम & बळाजा चाफिन। वाहाताम विक्रमन वास्कि. त्म क्वाक्रांन च्छाक क्रिएंड शाहिरनम मा, बरन बरन चाशहारक बक्डे रहत्र 'धानवार्थ काम कतिराम । कि कतिराम, निषाद वाथा महाम, शक् ना वधा। िति बद्धावस्य साविद्य साविद्य सम् वक विकृत महित हिन्दा द्यानत ।

कि वित्र जार मारे, नाका नक्षीय पुत्र मारे " माकीर किस्त कि देवरन कर चारबारर बाका बाकि कविरक्तक, कार्याक्षक दश्क निरंक्षकरे क्रीर । (१म) हरे टास्त वक्ता वाक्षित्र निवारक वहरू बाहेनुक बाव ৰাভয়াইবাৰ অভ । বৃহ শক্ষিয়া বেল । কিছ বহু কোবাৰ ভার ট্লিক নাই। बादित वाड़ी विकत रांड़ी जकरन चरवरन कतिरक नानिन, द्यान बारनेहै वाशाबारमंत्र दश्याः भावतः। यात्र ना। त्मय बायमान शिमीः कारस्य छेन्द्र र्जि। एव बदवे निवा छाराटक बतिटनम धनः बतिवा स्थानिवा स्थाराटव बमारे-লেন। বিবাহের সময় পাত্র পাত্রীর উপর মেয়েকের অত্যাচার জুলুম করি-্বার খেন একটা বিশেষ অধিকার আছে। ভারতের অধীন নুপতিবর্গের উপর • স্থানীয় পলিটিকেল একেটের যেমন একাধিপত্য, গরিব কলুর ছেলের ৰাপের প্রান্ধের সময় পুরোহিত ঠাতুরের বেমন প্রভুত্ব, বৃদ্ধ কালের বিবাহের ধুবটকের বেমন বিবাহকর্তার উপর অধিকার, বিবাহের সময় বরের উপর পাছ। প্রতিবাদী আত্মীয় প্রনারী ও কুট্ স্বনীগণের তেম্নি অধিকার। ভূমি বি, এ, এম, এ, ই পাস কর; আর ডেপুটী মেজেটর সদর আলাই হিও, মুবা বৃদ্ধ ডেজারী গন্তীর যে পদের লোক হও না কেন, বিবাহ কালে নারীগণের নিকট ডোমাকে বশীভূত হইগা চলিতেই হইবে। বাস্থারাম খেন হাডকাঠে পলা দিল। পড়িয়া রহিলেন, বে বাহা পারিল ভার ্মুখে র্তালিয়া দিল। বাধা হটক, বিবাহের ক্রিয়া স্মস্ত এইরপে সম্পন্ন रहेता (अन ।

সপ্তম পরিচ্ছেদ।

ু তুঃৰে হুৰ।

বিবাহের পর কিছু কাল বাস্থারাম অভিশন চ্:বের অবস্থার কালাভিগাভ করেন। পড়া ভনা আর ভাল লাগিড না, কেখল অকলা বলিয়া ভাগিতেন, আর দীর্ঘ নিখান ড্যাগ করিডেন। বে বিবাহ্নমন সম্প্রের পার্থিক এবং মান্ত কৰিবেৰ পৰ্য ছবেৰ ভাৰণ, জাহা বাহি বাৰণ প্ৰক কৰেব কৰিব।
স্বৰে সৰ্য কৰাই বাহিছ হাইছা প্ৰকৃত্য নাহাৰাৰ কিবাৰিক কৰিবেৰ কৰাইছা প্ৰকৃত্য প্ৰকৃত্য প্ৰকৃত্য প্ৰকৃত্য কৰাইছা কৰাইছ

বন্দাণীকে অবল্য এ জন্ত স্মাল্যখে নিশিত হুইডে হুইরাছিল।
বাহারা বাপ্পার্মকে এ বিষয়ে সহাস্থভ্তি করিত,তাহারা এই বলিরা জাঁহাকে
এবং আপনাধিপকে বুরাইল, বে কুলীনের কেলে, তাহাতে আবার বিছান্
পূক্র, আর একটা স্পরী দেবিরা বিবাহ করিলেই হুইবে। কিন্তু ভাহারা
আনিত নাবে বাপ্পারাম একাধিক বিবাহের বিরোধী। কুলীন পত্নীপর্বের
ভূজ্প। কেবিরা বাপ্পারাম পূর্ম হুইডেই মনে মনে প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন,একটার অধিক বিবাহ করিবেন না। স্তরাং তাহার এ হুবে দূর হওরার আর
উপার ছিল না। বিবাহ হওরা না হওরা তার পক্ষে স্মান হুইরা বাজাইল। অধিকত একটা নিভাত অপ্রীতিকর কঠোর কর্তবের বোরা
আগিরা বাধার প্রিল।

বাহারার কচকটা অনুইবাদীর বড, হুডরাং বীর প্রকৃতি, কোন ঘটনাডেই সহজে উত্তেজিত হন না, নকন বিষয়েই রভীর ভাবে বিচার করিয়া কার্যকারবের অবশ্যাভাবী কণাকন নির্মারশ করেন।

একণে ছিনি ভাবিতে বসিলেন, এবং এত দিন পরে মনে মনে বুঝি-्र त्वन, "बोक्कि एवत अधिकात मण्णुर्वत्रत्भ आत्नात हेक्कात अधीरन छाड़िया ছেওয়। ঠিক নয়; কারণ, ভাহাতে জ্ঞানে ছোষ পড়ে এবং সভ্যের বিকাশ হয় না। পুত্রের উপর পিতার অধিকার আছে সত্য, অনেক ছলে তর্লমতি যুবক সন্তানকে বিবাহ সম্বন্ধে পূর্ণ স্বাধীনত। দিলে অনিষ্ঠ মটে, সুতরাৎ ্বিই সেই স্থলে অভিভাবকের হস্তে সে ভার ন্যন্ত থাকাই প্রার্থনীয়। কিন্ত যেথানে অভিভাবকের কোন পার্থ আচে, যথন তিনি নীচ প্রলোভনে প্রলুক্ত হন, কিম্বা বিবেচনা শক্তি যাদ তাঁহার না থাকে, ভথন তাঁহার দোষ জটি ্মোচনের জন্ম অন্য কর্তৃক বাধা পাওয়া উচ্চত। বিশেষত: ভুক্তভোগী বে ব্যক্তি তাহার ইহাতে হস্তক্ষেপ কর। কিছুই অন্যায় নহে। এত দূর আনু-প্তাবশাত। স্বীকার আমার উচিত হয় নাই। ইহাতে আমি আমার প্রক্রা বিবেক সুকৃতি এবং শিক্ষা সংস্কারের অবমাননা করিয়াছি। প্রচলিত প্রধার অস্বাযুগমন কথন ধর্ম নয়, সে কেবল অসার লৌকিক ব্যবহার। (कन श्वामि श्वामात श्वादीन जात मदावशांत कतिलाम ना १ याश विधिनिर्क्षिष्ठे ভাহাত হইবেই, সে জন্য আমি হুঃ ব করিব না; কিন্তু নির্দ্ধিট নিয়তির পথে श्यक्त छाट्य दक्त हिनव १ साधीन हिसा, विटवक वृद्धि श्रामाटक मञ्जाटन साधी-নভাবে সেই দিকে লইয়া যাইবে। নিয়তি এবং কওঁবা চুই এক হইবে। এক্ষণে আমার মুখ হুঃৰ পাপ পুণা ধর্মাধর্মের ভাগীকে ৪ নৈভিক জীবনের দায়িত্ব এবং শুভাশুভ কাষ্য ফল সম্পূর্ণরূপে যথন আমারই উপর নি 🕏 🛊 করি-তেচ, তখন কেন এ গুরুতর বিষয়ে সভর্ক হইলাম নাণ একণে আর ইগারতে। কোন প্রতিবিধান দেখি না। যাহা হউক, স্বাধীনতা আর আমি काशादा रुख किंव ना ।"

বাঞ্জারাম স্থভাবত: তত্ত্বদর্শী, এবং নিস্পৃষ্ট বৈরাগী, এই জনা এই চুর্গটনার তাঁহাকে একবারে নিজ্জীব হতাশাস করিতে পারিল না। স্থাবিচার-বলে স্থ গুংধ মঙ্গলমঙ্গলের অপ্রতিবিধেয় কারণ সকল বাহির করিয়া ভিনি আপনার মনকে কর্ধকিং সাজুনা প্রদান করিলেন। তাঁহার ধর্মমত কোন প্রচলিত শাস্তসমত ছিল না, জ্ঞানকান্ত বা কর্মকাত কোন নির্দিষ্ট শাকার তথনত প্রাপ্ত হয় নাই। সমস্ত বিধ এবং তাহার বিচিত্র ক্রিয়ার

অভান্তরে এক অবিভাষা ত্জেরি অন্ত মহাশক্তি স্থিতি করিভেছে ভাহাই কেবল তিনি ব্রেতেন। দৃশামান বাহাতিখা সকল বিশেষ এবং বৃত্ত কতন্ত্র তংসমূলার মালামরীচি সদৃশ ক্ষণস্থারী মরণশীল, তাহার ভিতরে যে অবও নিত্য সারবকা তাহাই স্থায়ী প্লার্থ। ফলতঃ বাস্তারামের মৃত কতকটা মালাবাদী অবৈত্রাদীর ন্যায় ভিল।

তদনস্বর ভাবিতে ভাবিতে বিচার করিতে করিতে শেষ তিনি উপস্থিত দুর্ঘটনা সম্বন্ধে এইরূপ দ্বির করিলেন;—"আমি মায়াবিকারগ্রন্থ শারী-রিক বিবাহকে যথার্থ বিবাহ বলিয়া কথনইত স্বীকার করি নাই। আত্মা আত্মাকে বিবাহকে বর এবং আত্মাই আত্মাতে মিলিত হইয়া উভয়ে শেষ অনস্থে গিয়া নিতা কাল ছিতি করে; তবে কেন আমি শরীরের সৌন্দর্যের বিষয় ভাবিব ? রূপত চক্ষের বিকার, প্রতিক্ষণে পরিবর্তিত হইয়া যাইডেচে, দেখিতে দেখিতে মৃত্তিকায় পরিণাম প্রাপ্ত হইবে। যৌবনওত করা বার্ধ-কোর প্রারন্থ মাত্র। অতথব রূপ যৌবনুকাল কর্তৃক প্রতিনিয়ত যথন ক্ষমপ্রপ্র হইতেছে, সময়ে বিকৃত এবং অদৃশ্য ইইয়া মহাকাশে মিশিয়া যাইবে, তথন আমি এ জন্য কেন শোক করিব ? যে পদার্থের ধ্বংস নাই, অংশ নাই, পরিবর্তন বিবর্তন নাই, চিরকাল যাহা অথও অবিকৃত অটল উজ্জ্বল, আমি তাহারই সহিত প্রীতিবন্ধনে বন্ধ হইরা থাকিব। এ ভাবে আমি প্রভ্যেক মহব্যের সহিত উদ্বাহবন্ধনে বন্ধ হইতে পারি। প্রেমের চিরমিলনই আমার প্রকৃত বিবাহ।"

এইরপ অধ্যাত্ম চিন্তা এবং জ্ঞানবিচারবলে বাপ্রাম শোক হৃঃধের পরিবর্ত্তে শেষ মহা জানকে উল্লগ্নিত হইলেন। ইন্দ্রিস্থাভিলাষী ব্ব-কেরা স্বন্ধরী দ্রী পাইলে যেরপ আনন্দিত হয় জ্ঞান আনক তিনি ভাসিতে লাগিলেন। তাঁহার মন উদাস হইরা আকাশে মিশিয়া গেল, ভেদজান বিলপ্ত হইল, জড়রাজ্য পরিজ্যাগ করিয়া তাঁহার সারগ্রাহী স্বন্ধনা আত্মা অনক জ্ঞানালোকে বিচরণ করিতে লাগিল। গাতীর চিন্তাশীল ভারুজ্ঞ ব্যক্তি চিন্তাসমূদ্রে মগ্ন ইইয়া যে অনির্ব্বচনীর আরাম সজ্যোগ করেন, বৃদ্ধ, সক্রেটিশ্রুকারলাইল,ইমার্সন,ক্যাণ্ট, কৃষিন গ্রন্থ জ্বাদ্ধিরের জীবন ভাহার প্রমাণ। চিন্তাশীল্ডা এবং বৈরাগ্য, এই হুইটী মহুবা্কে পার্থিক

মোহবন্ধন হইতে প্রমুক্ত ব্যবিদ্যা পরম শান্তি বিধান করে। বাঞ্চারামের পক্ষে এ তুইটীই বিশেষ সহায় ছিল। অনম্ভর ভাঁহার জ্পয়ের ভার চলিয়া (शन, ठिख ध्यमन घरेन ; शृषिरीत एव इःश्यात्रा सम्राज्य समात्रा क्रिया-ख्वारन প্রত্যক্ষ করিয়া, এবং নিত্য অবণ্ড অনস্ত জ্ঞানালোকে আলোকিত इटेया फिनि रान चार्फा राजितल ममल विकारतत कात्रपुरक छेछाहेता দিলেন। স্বাধীন চিস্তার বল, ইচ্ছার পরাক্রম শক্তিই প্রকৃত মনুষ্যত্ব, ঈদশ अंकि याहात हरुगछ, पृथियोत तूर्घहेनात्र छाहाटक व्यक्षिक काल मूक्यान कतित्र। विशिष्ट शादि ना। . चणःशद मानिमक महावत्न वाञ्चात्राम राजाग्यास । নিকৃষ্ট প্রবৃত্তির স্রোতকে সংযত এবং নিগ্রহ করিয়া ক্রমশঃ তাহার গতিকে कारक कारल कितारेवा वित्वकाशीन माधु रेक्कात कथीन कतिवा किलालन। পরে নিয়তিকে বিধিনির্দিষ্ট পথে অনত্তের দিকে এমনি বেগে চালাইলেন, ষে ছৈডজ্ঞান বিকল বুদ্ধি আরে রহিল না, কিছু সময়ের জন্য তিনি অভে-দাখা হইয়া আখাময় জগতে বাস করিতে লাগিলেন। এইরূপ মুক্তাবভাকে ভিনি স্বৰ্গ মনে করিতেন। অভ্যাস গুণে এইটী ক্রমে তাঁহার আয়ত্ত।-ধীন হই য়াছিল। বিপদ আপদ বা মানসিক উদ্বেশের সময় এই রূপে অন-ছের বিশাল বক্ষে জীবন ভাগাইয়। দিয়া তিনি নির্মিকার নিশ্চিত মনে নির্ম্বাণের শাঁজি উপভোগ করিতেন। বিবাহবিভাটজনিত ক্লেপ সম্বাপ তুঃৰ বিষাদ এইরূপে শেষ নির্বাণের শান্তিতে পরিণত হইল।

অ্ফম পরিচ্ছেদ।

स्र १ पूर्व ।

বাঞ্চাবামের পিতা বনমালী মোহের ছলনে দ্বিতীর বার দার পরিগ্রহ করিছা সংসারে স্থী হইলেন। সে স্থ কি প্রকার, তাহার বিস্তারিত বিবরণ ভানিলে অনেকের চৈভন্যোদ্য হইবে। নবপারীর প্রথম বৌধনের ক্রপালাবণ্যে অন্ধ্রার হইরা আট দুশ বংসর কাল ভিন্নি সংসারে এমনি

ডুবিয়াছিলেন, যে কেহ আর জাহার মাধার টিকী দেখিতে পাইত না। একবারে বেন আত্মবিস্মৃত। মনুষা কার্যাদেবি করান্তর লাভ করিয়া পভ উদ্ভিদ্ জড় পাষাৰে পরিণত হয়, এ কথার মানে আছে। এক জন্মেই পুন: পুন: জন্মান্তর বা অবস্থান্তর ঘটে। পুরাতন পড়ার ভীরোভাবে শালান-देवबारतात छेम्ब, धावाब नवन्त्रीत धाविकारत प्रमुख छाङ्गात विनाम, हेटा সচরাচর দৃষ্ট হয়। তাঁহার সেই নির্জ্জন উদ্যানের ভল্পনকুটীর এক্ষণে মালীর ঘরে পরিণত হইল. পেরুয়া বসন গুলি ছারা বাড়ীর মেছেরা লেপ তোষক প্রস্তুত করিয়া ফেলিল, গীতা ভাগবতে উই ধরিল, মুগচর্ম বর্ষার জলে ভিজিয়া পচিয়া গেল; শুকু এবং কৃষ্ণপক্ষ মিশ্র খাঞা রাশি এত দিন গোলে মালে লুকাইরা কোনরূপে জীবিত ভিল, শেষ ক্রমশ: শুরু পক্ষের সীমা প্রদারিত হওয়াতে গৃহিণীর দৃষ্টি আকর্ষণ করিল। তখন আর কার भाषा (य जाशादक ब्रक्का करत । वनमानी खोत अमुरवारव काफ़ि मुफ़ानेतनन, হবিস্য ছাডিয়া মংস্য ধরিলেন, থান গুডির পরিবর্তে পাড়ওয়াল। সৃক্ষ বস্তু পরিতে লাগিলেন। অর্থাৎ পূর্ণ মাত্রায় সংসারী হইয়া বিষয়মদিলা পানে किया निर्मि खम्च तिरित्तन । करमक वरमदात गारा किछ वाकी शाक्तिक এদশুদ্ধ ভাহা আদায় করিয়া লইলেন। এই স্ত্রীর গর্ভে কয়েক বৎসরের মধ্যে উপর্পেরি তাঁহার প্রায় ডফন থানেক ছেলে মেয়ে কয় এহণ করে। ভাষার মধ্যে আবার বোড়া চুই তিন যমক। এই সকল লিলিপটিরান গুড় শুড়ে সিপাই পণ্টনের রস্দ যোগাইবার ভাবনায় এক একবার वनमालीत नारवत त्रक एकारेवा वारेज, मरा छव छेनाच्छ रहेछ. কিন্ত উপায় কি। অনুষ্ঠে ধাহা আছে ভাহা ঘটিবেই। পেনসেন अवर रेপक्क मम्माखित्र, चारत मः मात्र चात्र करनात राह्य किनात (नाक অনেক, আয়ের লোক নাই, ধার কর্জ হইল, বিষয় বাঁধা পড়িল। সকল - দিকেই তিনি জড়াইয়া পড়িলেন। ক্রীর ভবে মুব ফুটিয়া কিছু বলিতে পারিতেন না। কিন্ত ষ্ঠী দেবীর অত্যক্ত অনুগ্রহ দেখিয়া মনে মনে ভিনি মা ওলাদেবীকে নিজগৃতে আহ্বান করিতেন, এ কথা আমরা অবগত আছি।

मञ्जान छीन शृश्वित कारक खालो (चॅनिक ना, ठाँव खननवर वड़

क्य ছिल। पाकिरलेख व विषय जिनि चाननारक उठ नात्री मरन कब्रिटजन না। দ্বিতীয় পারপরিগ্রহের বোধ হয় ইছা একটা বিশেষ সর্জ, যে সন্তা-নাদি যাহা কিছু অন্মিবে ভাহাদের লালন পালনের ভার পিভার উপর। काटकर एक एवं भाग अक मध्य यनमानीत काठकां ए। रहे उना। छाहाता কাঁদিবার সময় মা মা না বলিয়া বাবা বাবা বলিয়া কাঁদিত। বনমালী এখন প্রভাহ ভিন চারি বার বাজারে যান, জিনিষ পতা ভাল না হইলে স্তীর মুখ-নাড়া খান। কিন্তু সেটা খাইতে নিহাত মল লাগিত না। একবার হাসি মুধ দেখিলেই আবার সকল গুংখ ভূলিয়া যাইতেন। সংসা-রের এত যে কঠোর যন্ত্রণা ভাবনা ছশ্চিস্তা গৃহিণীর প্রসন্ন বদনের এক হাসিতে সে সব নিমেষের মধ্যে কোথায় অভ্তহিত হইত। তবু গিল্লীর মুখ খানা তত ভাল ছিল না। রৌতে রৌজে ঘুরিয়া পথের গুলা খাইয়া ওক কঠে পলদখা শরীরে যাই বাড়ী আসিয়া পৌছিলেন, অমনি कान (हत्यहे। शीर्ष हिष्या विमन, कानहै। भना क्राहेमा बुनिट नाभिन, ভাদের দেখাদেখি "আমার বাবা, আমার বাবা" বলিয়া আর গোটা কতক ভাতে পডিয়া পরম্পরে অংড়ামড়ি আরম্ভ করিল। স্বর্মবিগলিত দেহে ধলায় ধুস্ত্তিত সন্তানগণের আলিজন কেমন সুধকর তাহা সকলে কল্পনা कक्रम । यममाली (मधिरतम, এकটা ছেলে एँका कलिका প্রভৃতি ভাষাকু সেবনের সরঞ্জম ভব্যগুলি লইয়া বাহ্যবস্তর সহিত মানবপ্রকৃতির সম্বন্ধ বিচার করিতেছে; তাঁহাকে দেখিবামাত্র সে সেই ভুঁকাটী গুৰের काटक चानिया धतिल । कानेंगे ठोरकात त्रात, कानेंगे नगरक स्थरक नाना পর ভন্নীর সহিত কাল্ল। বুড়িয়া দিয়াছে, কেহ কেহ কিলোকিলি আরস্ত করিয়াছে। সেই সময় অবোর গয়লামিন্সে তুখের দেনার জন্য দরজায় मं। एंड्री विक एउट्ह, जात माझ माझ वक्छ। जियाती विक्य "(वना इन আছবে কানাই গোঠে ঘাই বলিয়া গান ধরিয়াছে। বনমালী নাকি কিছ দিন গীতা ভাগবত পড়িয়া কিছু কিছু চিত্ত সংব্য অভ্যাস করিয়াছিলেন. ভাই এ সব দৌরাস্থ্য সহু করিতে পারেন। গৃহী ব্যক্তি সংসারমধ্যে যেরূপ व्यवस्थित रेश्या महकादि मञ्जानवर्षक छेरलीएन এवर व्यना महत्व क्षकाक ঝঞাট সহ্ব করে, মহা জিতেন্ত্রির সংযত আন্তা যোগীও তেমন পারেন না।

একটা চেলের একবারকার খুব জোবের কারা যদি ঠাছার কানে প্রবেশ করে, ভাষা হইলে হরতো ডিনি কৌণীন কাঁথা কমল কমওলু ফেলিয়া আরে। দ্র বনে গিরিগর্ভে পলাইয়া যান। কিন্তু বড় ছুংখের বিষর যে গৃষ্টা ব্যক্তির এ সহু ওপের কোন অপার্থিব পুরস্কার নাই। সে ভাবে সহু করে না বলিয়াই পুরস্কার পার না। বনমাণীর মন্তিত এ অন্য এক এক বার বিচলপ্রম হইড, ছুংখেতে চক্ষে অল আসিত। কিন্তু ভা বলিয়া কি যমে ছাড়ে গ এর্মনি হয়েছে কি! হাড় মাস চিবাইয়া খাইবে, ভার পর চি চি করিয়া ভাক ছাড়িতে হইবে। সাধ মিটেতে কি গু আরে বিষে করবে গুনা গরল হইতে অমৃত উদ্ধারের চেষ্টা দেখিবে গু

যথন তিনি এইরপে সন্থানগণে পরিবেটিত হইয়া কাতর সরে ছার আমি কি করিলাম এসে ভবে" বলিয়া গাঁও গাইতেন, তথন তাঁহার নবীনা গৃহিণী জকুটী ও তর্জ্জন গর্জনের সহিত "ইহা নাই, উছা নাই, এটা চাই, সেট চাই, বালারে গেলেন তা ছাই করে আন্লেন" ইত্যাদি কথার অব-তারণা করিতেন; আর ঘ্যান ঘ্যান ক্যান ক্যান প্যান করিয়া কানের কাছে অবিশ্রান্ত বকিয়া কনের কাছে অবিশ্রান্ত বকিয়া কনের পাক। বাহির করিয়া দিতেন। ইহাতে বনমালীর মনে কীদৃশ অশান্তি উপস্থিত হইত ভাহা সকলে বুলিভেই পারিভেছেন, বেশা বলা বাহল্য।

গৃহিণী ঠাকুরাণীর কান্দের মধ্যে কেবল পানীর কানের কাচে গালর গালর করিয়া বকা আর ভাবন করা, ইহাতেই জাঁহার সমস্ত দিন আর আতি-বাহিত হইত। সন্তানগুলিকে কোলে লইবার কিন্তা পরিকার করিয়া দিবার প্রবিত্ত ছিল না, ভাহার অবসরও পাইতেন না। এক ধানি আয়না আর চিকান সামদা বাচে আছেই। বিবিদ প্রকারে কেশ রচনা করিয়া তাহাতে গদ্ধতা, স্বাসিত তৈল মাধাইয়া কবরী বছন করিতেন। ক্ধন কথন ছুই ভিন ঘণ্টা ক্রমাগত আয়নায় মুধ দেবিতেন। মুধ দেবিবার সময় তাঁহার চকু নাসিকা লগাট এবং গওছেল ওঠাধরে ক্রেগ্ল হত্বিধ ভল্পী রল্পী। প্রকাশ পাইত। গাল ছুটি গোলাপ ফুলের নায়ে গোহিত রাগে রঞ্জিত করিবার জন্য কত যে উৎক্রিত হইছেন তাহা আর বলা যায় না। এক বার মুছিতেন, আবার লাগাইতেন, কিছুতেই আর মনের মৃত হইরা উঠিত না।

ঠোটে আলতা, হাত পায়ে আলতা, গালে আলতা মাথিয়া, চুলটি বাঁধিয়া, পানটা খাইরা, জিহ্বাটা বাহির করিয়া দর্পণে নিজ মূর্ত্তিটা অভি মনোযোগ-পূর্ব্বক নিরীক্ষণ করিতেন। কথনো দাঁড়াইয়া, কথনে্াসিয়া, কথনো বাকা হৈইয়া নান। অঙ্গভন্ধীর সহিত আপনার রূপ আপন্নি দেখিয়া মোহিত চঠতেন। এ বিভাগের কার্যানিতান্ত সামান্য বলিয়া কেই বেন মনে না করেন। গ্লাডেপ্টোন প্রভৃতি মহাবভার সভ্যদিগকে বেমন রাজ-কার্য্যে ব্যক্ত থাকিতে হয়, ভাবনকারিণী বিলাসিনীরা তেমনি এ কাঞে ব্দনেক চিন্তা একং পরিশ্রম করিয়া থাকেন। মুখে সভিময়দা মাথিয়া ভাহার পর বেশম দিয়া গা ধুইতে মাজিতে ঘসিতে, চুল ভাটতৈ, ভাহার পরিচর্যা করিতে অনেক সময়ের আবশ্যক হয়। তদনন্তর গাভে রং ফলা-ইতে, কাপড় গহনা পরিতে, খুটি নাটি মাধা মৃত পিও দান করিতে করিতে সন্ধ্যা হইয়া আইদে। বাঞ্ারামের মত অধ্যয়নশীল কৃতবিদ্য ভদ্র সুবার মনে হইতে পারে, এ সব কাজে কেবল সময় নষ্ট আর অসারতা বৃদ্ধি। কিছ মহিলাকুলের সম্বন্ধে তত বৈরাগ্য সম্ভবে না. কেন না, তাহারা গ্রের এীসরপা। সুস্জিরভা রমণী গ্রের শক্ষী। অবশ্য বাহার কথা আমরা বলিতেছি, এরূপ সৌল্য্যান্রাগ আত্রশন্ত নিল্নীয়। ব্রাহ্মণকন্যার রূপ ছিল না বলিয়াই সাঞ্চ সজ্জার এত বাডাবাডি। नव्रकात्रो युवकशन चालनानिशतक नात्रोत्यरम मञ्जिष्ठ कत्रिवात म_{ें स्}रुप्यन হাব ভাব প্রকাশ করে, বনমালীর স্ত্রী প্রতি দিন তাই করিলে । ভিনি আভিনেত্রীর বেশে সাজিয়া গুঞ্জিয়া আপনার গরবে আপনি ফাটিয়া মারিতেন।

বনমাণী বাবু ইহাতে তত বিরক্ত ছিলেন না, বরং মনে মনে খুদী হই-তেন। কিন্তু ধবন ভিনি কোন রূপ বস্ত বা অলকার দ্বারা কিছুতেই গৃহিণীর মনস্তাষ্ট সাধন করিতে পারিতেন না, তথনই বড় বিপদ উপদ্থিত
হইত। তাহার স্ত্রীর এ বিষয়ে পরিশেষে একটা যেন রোগের মত জারিয়া
গিলাছিল। স্থামীর বেশী বয়:ক্রম বলিয়া তিনি অনেক প্রপ্রম পাইতেন,
সেই জন্য কিছুতেই আরে তারে কোন সামগ্রীতে মন উঠিত না। তাহার
ভাবন আরে পথকের ফালার রাজনের মাথা এক একবার ঘ্রিয়া যাইত,

এবং তিনি হতাশ হইরা সমরে সময়ে চক্ষে সরিষার ফুল দেখিতেন। তথালি চেষ্টার ক্রটি কখন করেন নাই। জ্রীর অধের উপর যাহাছের তথ শান্তি নির্ভ্র করে তাহাছের কি বিষম বিজ্ঞনা। বনমানী জ্রীর সেবার জীবদ ঢালির। দিয়াও ভবিষয়ে সফলকাম হইতে পারেন নাই। <u>জৈণ পাঠকগ</u>ুণের এ কথাটি ব্যুন মনে থাকে।

बक्र विनाम आमहाक जान मत्न कदि ना। असन किछू विराध সৌন্দর্য্য তাঁহার ছিল না বাহাতে তিনি সার। দিনটা কেবল অক্ষরারে আর বেশ বিন্যাসে কাটাইরা ছিতে পারেন। বর্ণটা পোর ঘর্ব ছিল ১৫% ভাহ: আমরা মানি, কিন্তু কেবল পৌর বর্ণই কি ক্লপের পরাকার। ? পাটিকা-श्र क्या कविरात, आमदा म्लाहे बनिए बाबा इटेएक. वहे बनतीन नाकी ভान हिल ना। जारा हाज़ा नान पुरेते। यत्रा, ताब हाते, मूब नया, माधारे। खाका दाँका, इन भाउना अवश् बारे, (कान क्राप्त काइ (क्रांच ছেঁড়া চুল পরচলের সাহায্যে খোঁপাটী বাধিতেন। সভাব বেধানে প্রতি-কুল, কুত্রিমভার সেইখানে আতিশয়। কিন্তু ভাহাতে কি স্বভাবের ক্ষতি পুরণ হয় १ इनेक चात्र ना रहेक, এই ब्राक्षणकन्या श्रीनलल कच्छना (हही কিন্ধ এক মুখের দোবেই তাঁহার সকল আবোজন নিক্ষণ করিয়া वाचिश्राहिल । विनि वादः मत्न कक्नन कामदा न। विलव्हा चाक्टि लाहिलाम ना, वनमानीत नवी (चारकवननी, एक ननामिनी अवर विष्नानामी हित्तन। चुण्यार काँचात मी त्रीमधा प्रक्रित कना अख (व (ठडे। व तम सक तक्रम ভ্যাম বি ঢালা হইত। কাহারে। নিন্দাবালা করা আমাদের উদ্দেশ্য নর বিশেষতঃ ভদ্ৰলোকের দরের কুলবলুর রূপের ছোম গুল বর্ণনা আমাদের পক্লে নিহাত অন্ধিকার চর্চ্চা। তথাপি বাহা সভা তাহা বলা ভাল। বার क्रम नारे, खश्र पिनि क्राप्त वडारे करवन, किश्र अक श्वन क्राप् ভাহাকে দুখ ৩৭ করিতে চাহেন, তিনি বেই কেন হটন না, তাঁহার সম্বত্তে क्षत्रभ कथा ना दलिएल श्वामारमद क्ष्म बारक ना।

বনমালী বাবু কি দেখিয়া যে এত মোহিত হইয়াছিলেন ভাহ। **ৰদি ছাই** আমরা কিছু বুঝিতে পারি। মেয়েটী শেয়ানা ভাগর ভোগর, **আর গায়ের** চামড়া থানি ফর্সা; দূর হইতে ঃস্থান কাপড় পহনার সঙ্গে ইহা দেখিয়া

ভিনি একঝারে ভূলিয়া পিয়াচিলেন। এটাকে অবশ্য যোচ্চেই কাজ विनाष्ट रहेरव । स्मारह वधन छिखरेवकना छेनच्छि हत्र, ७थन छक्न कि · দেখিতে কি দেখিয়া ফেলে। বে বাহা বাস্কবিক নয় ভাহাকে ভাহা সনে करत्र। औ मोलर्रात ७७० मा कता निवानन्तर करनत ली कृतिय। ভাহারারং বেরং কাপড় গহনা পরিয়া এমনি সাজে, যে কত টুকু সৌন্দর্য্য ভাহাদের নিজের এবং কড টুকুই বা ধার করা ভাহ। ধরা বড় কঠিন। (चालाउन्ष्टिए पिनि लत्रमाञ्चलती, विरम्ब करल नितीक्रव कतिया स्बिद्धल তাঁহার রূপের ভিতর অনেক গলছ বাহির হইয়া পড়ে। যুবক্গণ, ডোমরা সাবধানে আপনাপন উত্তমার্দ্ধকে নির্মাচন করিবে। কেবল শালা চামডার উপর সমস্ত মূল্য ছির করিও না, ভাহাতে ঠকিবে। বরং একটুময়লা হইলে কিছু যায় আন্সেনা, গঠন অপ্রণালীভভা কি না, আনর জ্ঞান চৈতন্যবিংশত মায়ুবের জাত্ম ছার মধ্যে আছে কিনা, এইটা অত্রে रमधित । अ भव छाड़ा छाड़ित का**ल** नत. श्वित मास मतन श्वीनिर्वताहन कविरक হয় ৷ তবিষাতে কার কপালে কি দাঁ:ড়াবে কেছ জানে না, স্ত্রীভাগ্য সক-লের সমান নয়। কিন্তু এ জিনিব ঝাঁকড়ে মিলে না, একবার ঘরে আনিলে আর ফিরবেনা। এই জন্যবলি, সাবধান । ত্রিয়ার । আরু যদি বন-মালীর মত পিতার হতে ভারাপণ কর, তাহা হইলে আর এ বিষরে কোনই कारना थाकित्व ना।

মান্য কি হুজাগ্য! যদি কোন ঘটনার পড়িরা ভাহার মনে একটু বৈরা-গোর সঞ্চার হয়, কোণা হইতে এমন একটা উপসর্গ আসিরা জুটিবে, যে ভাহাকে এককালে সম্লে বিনাশ করিয়া কেলিবে। ভাজ মতি বিপ্রের এক একবার মোহনিজ। ভাজিয়া বাইত। যখন পরিবারবর্গের উৎপীজনে, সংসারের হুজাবনার নিভান্ত ক্লান্ত হইরা পড়িতেন, তথন সেই খাশানবৈরা-গোর প্রভি ভিনি অভি কাতর ভাবে দৃষ্টিপাত করিভেন। কিন্তু সে ভক্র লোক তথন আরে কি করিবে ? ত্রী মরিলে সে এক আরে বার দেখা দিভে পারে, ভার বাহা কিছু পরাক্রম বিক্রম মুভপত্তিকর নিকট, অ্যান্ত মেরে মান্ত্র বিশেষভ: ছিতীর পক্ষের ত্রী ভাহার পক্ষে ব্যাস্থরণ। ভাহার ভয়ে সে নিক্রীব হইরা পড়িরাছিল, স্করাং বনমানী বার বার ভাকিরাও আর ভাষার সাজা শব্দ পাইলেন না। অসভ্যা শেষ জীবন ভাঁচাকে শেরাল কুকুনের মত অভিবাহিত করিতে ছইল। পূর্ব্বভীবনের তপস্যা আর পুন-জ্বাবিত ছইল না। হার কত কত অম্প্য মানব জীবন যে পরিণামে এই-রূপে অধঃপতিত হর ভাহা কে গণনা করিবে ?

নবম পরিচ্ছেদ।

নিৰ্কাসন।

(द সমরের কবা আমরা এত ক্ষণ বিবৃত করিলায় তংকালয়বার বায়ায়-মের জীবনেভিহাদে তুই তিনিটী গুরুতর ঘটনা উপদ্বিত হয়। (১) খ্রী-বিষ্যেপ, (২) গৃহ হৃইতে নির্বাসন, (৩) মত পরিবর্তন। ঠাছার সেই চিরক্য প্লীহাত্রন্ত দংক্রামক অরাক্রান্ত স্ত্রীর পীড়া ক্রমে বুদ্ধি পাইন। फाहाब क्रम (शोरन रहम श्यांत्र राष्ट्रिन ना, दकरन दागहे राष्ट्रिन। निटन चबमान काँत्रत रेखापिट (लेडे शृतिहा (नेल, ला कृतिल, हटक नार्वा हरेन, बहे बहुत ब्रदाखात. ब्रद्धित. मृत्यं चा, नाना রোগে ভাহাকে (पतिन। स्वयं कुतिवा এवर (कातारेवा (एटनीना मचदन कतिन। वक्षाताम अकारे जाराब সেবা করিছেন। ভাঁহার পিতা নিজের ছেলে মেরে লইরাই বিরত, বিমাতা আপনার অঙ্গরাগেই ব্যতিব্যস্ত, ক্রম বহুটীর প্রতি ঠাছারা একবার कितिया हाहिएजन मा। वाक्षाताम विवाद कविता हित खप्तशी हम, अधिक क कृत चीत (मरा कविरा कविरा कविरा कारा मात्र मात्र मोरन चारा मात्र। क्वाच रहेवा छेट्ठे। कि कविद्यान, क्वीद्य नहा ममूरवात शांशदिक धर्च, विष्यतः अप्रवाद निराखेत दाशी ठाकत प्रमाक कडे भारेखाइ देश (एवितः (कान स्टूडवान शूक्त चित्र वाकिट्ड शादि ? वादा एकेक, अहेन्नश मियार्थ जादन खोद रमना करियों फीशन किछू आज्ञश्रमान काल शहेबा-ে ছিল ; দাম্পত্য জীবনের এই টুকু মাত্র কেবল ঠাহার প্রস্কার।

ক্ষালী বে সময় সংসারচজ্ঞে পড়িয়া নিয়ক্তর বিখুর্ণিও ছইডেন, সেই সময় বাঞ্চাম বিজ্ঞান ও দর্শনশাত্র পাঠে গ্রাণ মন এক্ষায়ে উৎসর্থ করিয়া রাধিয়াছিলেন। সংসারের স্কল প্রকার তৃংধ খোক তিনি এইরুপে कुनिया बाक्तिका किन्न वनमानी फाराट वक् मक्डे हिन्म ना। উপযুক্ত সভান, যাহাকে এত দিন যতু করিয়া লেবা পড়া শিধাইলেন, এক্তের সে অর্থ উপার্জ্জন দ্বারা পরিবারের সাহায়া করিবে মনে মনে এই প্রভাশ। ভাষা পূর্ব না হওয়াতে ক্রমশঃ অসঙ্টি বিরক্তি বাড়িতে লাগিল। অনস্তর সেই বিরক্তি ক্রোবে পরিণত হইল। গৃহিণীর অত্যাচার উৎপীড়ন, উত্তমর্ণিবের তাড়না গঞ্জনা, সন্তানগণের দৌরাত্ম সহু করিছা ক্রিয়া সঞ্চিত অপরিতৃপ্ত রাগ টুকু শেষ এখন বাস্থারামের উপরেই তিনি চরিভার্থ করিতে লাগিলেন। ইহাতে প্রমাণ পাওয়া যায়, পৃথিবীতে কোন শক্তির বিনাশ নাই; আপাততঃ বাহার কার্য্য অপ্রকাশিত, সমরে কার্য্যান্তরে অন্য কোন উপলক্ষে তাহা বাহির হইরা পড়ে। বধন বাহির হয় তথন আবার সে মুদ ভদ্ধ আদায় করিয়া লয়। সেই যে বনমালী স্ত্রীর নিকট নানা প্রকারে লাঞ্চিত অপমানিত হইরা, পুত্র কন্যাগণের জালার জলিরা পুড়ি-য়াও কিছু বলিডেন না, চুপ করিয়া থাকিডেন, ভাহাতে তাঁহার জেলাব विकृष्णि कीर्य क्षांश करें क मा; ददा जमरद वर्षन काहा महा (बरनव जहिक ৰাঞ্ছারামের উপর দিয়া বহিয়া ঘাইতে লাগিল। নিরীছ বাঞ্জারাম বেন পিছার প্রভ্যেক উত্তেমিত নিকৃষ্ট প্রবৃত্তির প্রসন্নতা সম্পাদনের বলি-चन्न पहिलान। बनमाली क्षेत्रम विवाद किछू चर्य नहेश क्रेश कूरशिख জরাগ্রন্থ বরুকে গৃহে আনেন। পরে ভাহার হুরারোগ্য ব্যাধি 🕬 নিরা পুনরাম্ব অর্থ লালসার পুত্রকে বিবাহ করিতে অহুরোধ করেন।

বছসমান্তে একণে কৃত্বিকা পুণাত্ত বেরণ মূল্যবান সামগ্রী ভাহাতে বাহারামকে আমরা প্রথম প্রেমীর পাত্র মনে করিতে পারি। বিবাহ ছিলে নগত কুই হাজার টাকাত জনারানেই পাওর। বার। পরিবার কৃত্তি এবং দারিত্তা করেইর সময় এরুপ লাভঅনক কার্যোর লোভ সম্বরণ করা বড় সহজ্ব কথা মহে। নির্লক্ষ স্বার্থপর মোহাছ বনমালী পুত্রকে একবার বলিভান করিয়া কাড হইলেদ না, হিডীর বার বলিভানের প্রহাস পাইতে লাগিলেন। কিছু বাহারাম এ বিবরে এখন ঠেকিয়া শিবিরাছে। লোকের ছেবিয়া ভনিয়া বিবাহের প্রতি ভাহার স্থাপ প্রথম বিবাহের প্রতি ভাহার স্থাপ অধিবাছিল। অধিকৃত্ত পিডার নীচ স্বার্থপর্যা

বুৰিতে পারির। সে আহো সাবধান হঠল। বনমালী জজ্জন্য অনেক শাপ মূন্যি দিলেন, কটু কাটায় বলিলেন, কিন্ত কিছু করিয়া উঠিতে পারিলেন না। বাল্লাবাম গ্রন্থ অধ্যয়নে দিবা নিশি মন্ত্র থাকিতেন, সে সকল কথা কানে করিতেন না। বরং সংশারভূতগ্রস্ত্র পিডার চুর্দ্ধণা দেখিয়া ভিনি আন্নানিক সুখী ও নিরাপদ ভাবিয়া মনে মনে একটু আহ্লাদিত হুইতেন।

চারিদিকের অবস্থা যেরূপ অশান্তিজনক হইরা উঠিল ভাহাতে বাঞ্চারাম পঞ্জিত আর বাডীতে ভিষ্টিতে পারিলেন না। একে পিতার ক্রোধ অভি-সম্পাত অভিমান, ভাছার উপর পরিবারমধ্যে দিবা নিশি কোলাহল বিবাদ, ইহাতে তাঁহার চিত্ত। অধ্যরনের ও সমূহ ব্যাবাত ক্ষাত্তি লাগিল। বাতাবিক বনমালীর বাসভবন বেন পিশাচগণের রঙ্গভূমি ছইয়া উঠিয়াছিল। সর্বাদা কেবল পান ভোজন বন্ত্র অলকারের কথা, আর অসার কুট্রিতার লৌকিক আড়দর। প্রতিদিনের আহারের সমর বেন একটা ভূতের বজ্ঞ অনুষ্ঠিত হইত। এক পাল ছেলে মেরে, এই ধাইরা উঠিল, আবার ধাইতে বিদল। কেছ এক খান বেশী মাচ পায় নাই বলিয়। বাডের মত চীৎকার করিতেতে. সেই অবসরে আর একটা আসিয়া ভাহার পাতে বাহা কিছু অবশিষ্ট চিল ভাছা লইরা প্রস্থানপরায়ণ হইরাছে। কেই বিবস্ত বিকটবেশে পেট মোটা গণেখের মত ভাইরা ভাইরা আঁবের আঁটি চসিতেছে, কোনটা বা काल जान जुरुकाति नहेता हातिनिक कि छोडे जिल्ह चात मर्लाट मार्च-ভেছে। আহার করিতে করিতে কেই বা তাহার বিপরীত কার্যাও করিছা ব্দিরা আছে। একজন স্থার এক জনের মুখে ভাত তুলিরা ছিডেছিল, সে ভাছার আকৃল কামড়াইরা লইরাছে। একটা আপনার ভাপ বাইরা আবার অপরের অধিকৃত অংশ আত্মসাডের উদ্যোগ ক্রিতেছিল ডজ্জন্য তাহাকে সে চলে ধরিয়া কিলাইডেছে: এবং নিখারুণ নবাঘাতে ভাষার পণ্ডছন আজিত করিছেছে। ইহা দর্শন করিয়া পিরী চেঁচাইভেছেন, কর্ত্তা চেঁচা-हेर्फ्ट्इन, हाक्त्रान बाक्षनी टाँहारेर्फ्ट्इ, यहा होरकारत त्राटन शृष् ' नितृत्व। डिलाई कालब बना बाज़ीट माडि नारे। बाक्षाबाय नामा वकारत खालाजन रहेवा পরিখেবে গৃহ পরিতাবে করিতে বাধ্য হইলেন। बनबाली बदर छम्। ल्योद श्ट्य वालाम नामिनः।

मनम পরিচ্ছেদ।

বিজ্ঞানবিকার।

বাঞ্ভারাম বদি অগভীর চিত্ত চিত্তাহীন কোমল জ্বর যুবক হইতেন ভাষা হঠলে নিশ্চম গৃহ পরিত্যাগ কালে তাঁহাকে কাঁদিতে হইও। অউ-विषक प्रधायनकता अवर विख्लानिक उद्घ प्रात्नाहनात्र जिन देवानीः কিছু কঠোর জ্ঞানী হইয়া পড়িরাছিলেন। পরিবারমধ্যে যে তাঁহাকে (कह बक्छे (क्षत्र सम्जाल वर्णन कतिया काँचित बनः काँचिया काँचाई त এমন এক অনও ছিল না। ভালবাসিবার লোক এক রামমণি পিসী. তিনিও কিছ দিন পূর্বের পরলোক চলিয়া গিয়াছেন। নানাগ্রকার ত্র-बच्चा ७ देक्त चर्रेनाय मायाव तक्कन किन्न ट्रेंब। याब, छाटाव छेल्व विख्यान গ্রন্থ পাঠে চিত্ত এক কালে ঔদাসিন্য ভাব ধারণ করে। ভাতির পিভার তুর্বাবহারে এবং বিবাহবিভাটে বাস্তারামের হৃত্র একবারে ভালির। शिवाक्ति। • विषेश्व मानिषक वल भवाक्तरम (म (भाकारवर्श किवाहेवा ডিনি মনকে কিলংপরিমাণে আত্মবশে আনিলাভিলেন, কিলু মর্থে **ৰে গুরুতর আগাত প্রাপ্ত হন, তাহা সমাকরণে বিস্মৃত হ**ইতে भारत्म नार्टे । এই निषाक्रण मर्चारत्मना जुलियात खना जिनि महिल्कात देशास्त्र अध्य करमक वरमत क्रमानं अस् शार्क मत्नानित्यमं करदन। কিন্ত এই অধ্যয়ন এবং অভিবিক্ত চিন্তা গবেষণা বিচার তর্কে জাঁহাকে আবার আর এক প্রকারে গঠিত করিয়া ফেলিল। পূর্বের বিশ্বাস সংস্থার চিত্তাপ্রধালী আর এক নৃতনবিং পথে চলিতে লাগিল। প্রত্যক্ষবাদ অজ্ঞাত-বাছ এবং জড়বাছ মতাবলম্বী আধুনিক পণ্ডিভগণের গ্রন্থ পড়িতে পড়িতে काशाम् इ हिन्ता । युक्ति एर्का युनायाना याया छिनि शिष्ट्रा (त्रानन। ৰাছাদের মডামত এবং চবিত্র ভালরূপে গঠিত হয় নাই, ভাষাদের ভয়ল मन वर्ष वर्ष मारम मारम পविवर्षि ए इहेन्ना बान । वर्षन (व श्रास्कारनन গ্রন্থ ভাছার। পাঠ করে, মনে হয়, ইহার তুল্য বিধান স্বায় কেই নাই।

ভরল পদার্থ পাত্রভেদে বেমন বিবিধ আকারে পরিণত হয়, ম্বকগণের মনভ ভত্রেপ। চত্র লোকদিপের বিকৃত মান্তিক প্রতা প্রকাশ করে। বাঞ্চানক মোহে প্রবিধত হইয়া তাহার। বড়ই অছিরতা প্রকাশ করে। বাঞ্চানম ভায়ার মানসিক অবছার বাের পরিবর্ত্তন উপছিত হইল। ভৌতিক জ্ঞানের চাকচিক্যে তিনি আত্মতত্ত্ব একবারে ভূলিয়া সেলেন। ইতঃপুর্ব্বেকতকটা মায়াবাদী অইয়তবাদী বৈদান্তিকের নাায় ছিলেন, এক্শনে অভ্নেরাণী অনুত্বাদী ইন্যা উঠিলেন। অগৎকারণের অভ্যন্তবাদী অন্তবাদী ইন্যা উঠিলেন। অগৎকারণের অভ্যন্তবাদী অনুত্বার সাধারণ ও বিশেষ সম্বন্ধ নির্দ্তির অহিল্ন নিক্সন অহ্ব আনিয়া বহিম্বি পথে ইন্তিয়্রাহা বিষয়ের দিকে থাবিত হইলেন। পদার্থ ছাড়িয়া ছায়া, সভ্য ছাড়িয়া মায়া, নিয়্তা ছাড়িয়া মায়া, মায়া কাড়িয়া নিয়ম, ধর্ম ছাড়িয়া নীতি, ব্যক্তির ভাড়িয়া শক্তি, কারণ ছাড়েয়া কার্য লইয়া য়হিলেন। দ্বামান অগতের অভ্যালে অদ্বা মহাশক্তির আলোচনা এবন আর ভাল লাগিত না, ভাহা কবিকলনা, ত্র্বোধ্য অনায়ন্ত অনাব্যাক পণ্ডভ্রম বিলিয়া মনে হইল।

জ্ঞানচর্চ্চা করিতে করিতে ইদানীং ওাঁহার মনে কিছু ওমোওপেরও প্রাহ্র্ডাব হইয়াহিল। অল বয়সেবি, এ, পরীক্ষায় প্রথম হন, ওাহার পর বিজ্ঞান বিষয়ে একটু অভিজ্ঞালাভ করেন, ইহাতে মনটা একটু গরম হইয়া গেল। মনে করিছেন, "আমি সব বুঝিব, সমত্ত অমীমাং-সিত তত্ত্বের মীমাংসা করিব। কেনই বা না পরিব । এত লেখা পড়া শিবিয়াছি তবে কিসের অন্য ! বিদেশীয় ভাষায় বছি এত বড় বড় কঠিন গ্রন্থের পরীক্ষায় কৃতকার্য্য হইলাম; তবে অকবিখাসী অজ্ঞের নায় হইয়া আর বাকিব না। বুজির আলোকে আনের বিচারে সমত্ত তর বিভন্ন থণ্ড বিষপ্ত করিয়া বুঝিব তবে ছাড়িব। কোন্ কালে সেই মাছাতার আমলে নিউটন বলিয়া বিয়াছেন, জ্ঞান উপার্জন আর সমুদ্রের বেলাভ্মিতে উপলবণ্ড সংগ্রহ চুই সমান, এবন এই উনবিংশ শিভাকীতেও কি সেই কবা মানিতে হইবে । মানুষ না পারে কি গু এই মানুষই জ্ঞানোয়তি সহকারে ক্রমে ঈশ্বণদ লাভ করিবে। তবে আর ভার পক্ষে অসাব্য কি আছে । আমি এত দিন ব্রিয়া বাহা পড়িলাম বুজি-

লাম চিন্তা করিলাম তাহাত বড় সামান্য নর, পর্বতি প্রমাণ গ্রন্থ পড়িয়া কেলিয়াছি। মূর্য অন্তলিপের ভ্রান্ত বিখাস অপেকা নাত্তিক জ্ঞানী হওয়া ভাল। অন্তানাক্ষারে সুগভোগ অপেকা জ্ঞানে আত্মহত্যাও প্রেয়স্কর।

कुनवराक वृवकन्ताव विकास निविधा हरेल या क्या चार वाक्षातात्मन ভাহাই হইল। তিনি খোদার উপর খোদগারি করিতে পিয়া মহা বিপদে পড়িলেন। প্রকাণ্ড বিশ্বরাজ্যের অনন্ত কার্য্যকারণের জটিলভার মধ্যে প্রবেশ করিয়া শেষ না পারেন অগ্রসর হইতে, না পারেন ফিরিয়া আসিতে, মধ্যপথে পড়িয়। চক্ষে আঁধার ছেধিতে লাগিলেন, বুদ্ধির শুদ্র দী শালোক নির্ব্বাণ হইয়া গেল। চারিদিকে অনন্ত অক্কার। স্ষ্টের भटोत तरुमा, रेनमर्तिक नित्रमावलीत कुर्छका প্রহেলিক। মীমাংসা করিতে পিয়া শেষ অংপনাকে পর্যান্ত আরু খুঁজিয়া পান না। ভগবানের দৃতেরা বেন পলা ধাক। দিয়া এক বিস্তীর্ণ মহাসমূদ্রের মধ্যে তাঁহাকে ফেলিয়া দিল। कान पिरक कुल किनाश (पिरिष्ठ ना शारेषा, अरनक नाकानि कात्र ডুবু খাইয়া পরিশেষ এই সিদ্ধান্ত ছির করিলেন, যে "অপরিজ্ঞের ডভের অফুসন্ধানে কোন পুরুষার্থ নাই, বাহা দেখিতে শুনিতে ধরিতে ছুইতে পাওর। যার, যাহা আপাততঃ কাজে লাগে তাহা লইয়াই থাকা ভাল। । এই বলিয়া মৃত জড় পদার্থের রাজ্যে ফিরিয়া আসিলেন। লাভের মধ্যে এই इरेल, अनिधिकात ठाईठ। कतिए गित्रा मिखिक किछू विकृष दरेवा পाइन । পূর্কেবে বে মতে বিশ্বাস করিতেন, যে আদর্শ ধরিয়াছিলেন ভাছার 🕃 🗸 বিশরীভদিকে চলিলেন।

প্রথমে চিল বাহা কিছু ইন্দ্রিরগোচর সে সমস্ত মারামরীটি মপ্প কল্পনা, রজ্পুতে সর্পত্রমবং মিধ্যা, কেবল নির্ভূব অবিভাষ্য শক্তিই সর্প্রয়, একণ কেবল জড় আর জড়ীর নির্মাবনী সার জ্ঞান করিলেন। আত্মা বিবেক জ্ঞান চৈডনা ইচ্ছা ভাব এ সমূলরের অভিত্ব উড়িয়া গেল, রহিল কেবল পরমানুপুঞ্জ তড়িং ইথার অক্সিলন নাইটুজন্ কার্প্রণ কর্সজ্পরান্ প্রোটোপ্রক্র মোল্রকিউল, আকর্ষণ বিশ্লেষণ আর সংযোগ বিরোধ। এই নুডন পথে নুডন মতে দীক্লত হইয়া এক একবার বাঞ্ছায়াম পণ্ডিত মধে ভাবিতেন, ভিনি নিজেও স্বন কেবল পরমানুশিও, কত্রক্রালি অভীর

পার্থিব উপাধানের সমষ্টি মাত্র, কতকটা বেন যন্ত্রপরিচাশক বাব্লের মত, এত তির হাহার বাহ্নিত্ব বা আমিত্বের সতন্তর। কিছু নাই। কবন বা মনে করিতেন, "আমি নাই, ভৌতিক পদার্থপুরের সহিত আমি এক হইরা মিশিরা গিয়াছি। পকে পক লয় প্রাপ্ত হইরাছে। অবের সঙ্গে অল হইরা, অবেনর সঙ্গে আরন হইরা, তুল কল ওরলভার সঙ্গে মিশিরা যাওয়াই স্থ, বাক্নিত্বের ভাব বহন বড় কটকর। আমি নাই, এই জ্ঞানই শ্রম জ্ঞান " "আমি আছি, আমি ভাবিতেছি, চিন্তা করিতেছি" ইত্যাদি সভাসের জ্ঞানেও সংশ্র ক্রিল। সময়ে সমরে নিজের অক্তিত্ব ইত্যাদি সভাসের জ্ঞানেও সংশ্র ক্রিল। সময়ে সমরে নিজের অক্তিত্ব ইত্যাদি করা মহা কটকর হইও। দেশীর বিজ্ঞান শাস্ত্রে পাঁচটা ভূত ছিল, ভাষা-দের জ্ঞালাতেই লোকে অবিয়া মরিত, বিলাতি বিজ্ঞানের প্রকাষ্টি ভূত ঘাতে চাপিয়া বান্ত্রগ্রমকে ঘূরাইতে লাগিল। কোন্টা স্থা, কোন্টা অবতাইহা স্থিবও হয় না, মনে শান্তিও পান না, যেন আধারে ছুটা ছুটি আহস্ত করিলেন। অনেক প্রকার কুট শব্দ সংজ্ঞা নিয়ম ব্যব্দা মুব্দু ইইল, কিছ জ্ঞান অব্যান না। ভ্যানময়কে ছাড়িয়া জ্ঞানামুস্কাম। ছরি-ছাড়া বিভিন্ন। ইহা কি কবান হৈতে পারে গ

পত্তিত এইরপে জড় ভাবিতে ভাবিতে জড় ভারতের মত অড়ীভূত হইষ।
পড়িলেন। ভক চিস্তার জ্বর ভকাইরা গিয়াছিল, স্নের মমতা ভকি প্রীতির্ক্র স্থান্ত্র করিতে পারিতেন না, ঠিক ষেন এক বও বর বাজর নার নীরস
মৃত্তি ধারণ করিলেন। যে যেমন চিস্তা করে, পণিয়েমে সে সেই ভাবে পরিবত্ত হয়, এ করা অভি সুসসত। চৈতন্যের বাক্য ছাড়িয়া মহ্বা হওটেতন্য
জড়ভূত হইষা উঠে, তর্বন ভাহার মুমুষাত্ব পদ্যন্ত বিল্প্ত হইয়া বায়।
ভাবোর চৈত্যনার বাজ্যে প্রবেশ করিলে ভাব ভক্তি প্রেম আনন্দে প্রস্কুর
পাল্তের ন্যায় সে স্কার এবং সরস দেব প্রকৃতি প্রাপ্ত হয়। একে বাস্তারাম
স্নের বাংসালা দাম্পত্য প্রেম, বস্কু বাজবের ভাগবাল। ইইতে বক্তিত, ভাহার
উপর কঠোর চিন্তা বিজ্ঞানবিকার, ইহাতে তিনি একটী নিভান্ত দ্বার পাত্ত
, ইইয়া পড়িলেন। স্থাবিধার মধ্যে এই, জড়বাদ মতে সচরচের লোক্ষিক্রির বেমন যথেছেচারী করিরা ফেলে তাহাকে সেরপ করিতে পারে
নাই। বরং জড়ের অড়ড্ তাহাকে নির্কাণিগতিপরারণ শাভ চিন্তু

করিয়। দিয়াছিল। তাহার অমুকরণে তিনি এক প্রকার সাম্যাবিদ্যা লাভ করেন। কোন প্রকার মানসিক ইত্তেজনা ভাবান্ধতা বা জ্ঞানান্দ্রশীলনে তাঁহাকে পাপের পবে কবনো লইরা যাইতে পাবে নাই। জ্ঞান বিষয়েই যাহা কিছু একটু পাগলামি ছিল। তিনি যেন ছোট খাট একটী লাইব্রের। যে সংবাদ তানতে চাহিবে তাহা এখানে পাইতে পারিবে। কেবল তৃঃখের বিষয় এই, মিল্কোমং স্পোনসার দারউইন হিউম বেকন বেন টিতেল হন্ধিনী, আরো কত কত (যাহাদের নাম এ কালের ছেলেরা বক্তার সময় কড় ফড় করিয়া সচরাচর বলে; আমাদের মত সেকেলে লোকের মুবে যাহাদের নাম উচ্চারিত হয় না,) জ্ঞানীদিগের নাম যথন তথন উচ্চারণ করিছেন, কিছু একটী বার ভূলিয়াও ভারবানের নাম মুবে আনিতেন না। সে বিষয়ে একবারে উদাসীন নিলিপ্ত বৈরাগী। তিনি স্পন্তির স্লোভা, প্রাকৃতিক নিয়ম দুখাল কৌনল দেখিয়া কর্ত্তাকে একবারে ভূলিয়া যান। কির ভড়তা সৌজঞ্জ সঙ্গানিছল লায়পরতা সহিত্তা প্রভৃতি গুবে চিরদিন ভূষিত ছিলেন।

द्यानम शतिरुष्ट्म।

शर्थ।

বাপ্রায় বংকালে পৈতৃক্তবন ইইতে নির্মাসিত হন তথন তাঁহার এইরপ মনের অবস্থা। এই পরিবর্ত্তিত মানসিক অবস্থা লইয়া নুলনপ্রাম পরিভাগি-পূর্মক তিনি বসস্থাবাদিনুতে মাতৃগালেরে যাত্তা করিলেন। পথের সম্বল করেক থণ্ড গ্রন্থ, আর প্রাতন সংখ্যার নাইটিছ সেক্ট্রিরি'ভউ। ভোষ্ঠ সালের শেষ ভাগ, সম্প্রতি হই পাঁচটা রুটি হইরা রাস্তা ঘাট মাঠ বাগানকে ধৌত করিয়া গিয়াছে। হটিছের্থ নবীন দুর্মাদিনশোভিত ভটপ্রবাহিনী স্থাবৈধাননী আহুবী গৈবিক বসন পরিধানপূর্মক প্রমোন্যাদিনী বোগিনীর বেশে স্মাদ মাক্ত হিয়োলে হেলিয়া ছ্লিয়া ভরক্ষ ভূলিয়া সিমুর উদ্দেশে বাবিত হইডেছেন। তাঁহার সেই হাসাময় শীতল বক্ষবিহারিকী ক্রীড়াদীল উন্মীমালা চিন্ন ভিন্ন করিয়। খেত পক্ষবিশিষ্ট শত শত ভরণী শ্রেণীবন্ধ রূপে সবেরে ছটিভেছে। স্থানাথী নরনারী বালক মুবকের জনভার ঘটে পরিপূর্ব। মহিলাগণ অর্প্রেসনে উর্দ্ধনয়নে আলুলায়িত কেশে কৃতাঞ্জলি পুটে স্বস্থ ইষ্টদেবভার পূঞা অর্চনা করিতেতে, কেহবা নৈবিদ্য ফুল ফল পদাতরতে ভাসাইয়। দিতেছে। সম্ভরণপট অভিভাবকবিহীন বালকপণ তাহা ধরিবার জন্য জলজন্ত ক্ৰায় ডুবিতেছে উঠিতেছে ছুটিতেছে। মধ্যে মধ্যে এক এক জন দীর্ঘশিধাগারী উন্নতনাদা লম্বোদর ব্রাহ্মণ ইতস্কতঃ কুটিল কটাক্ষপাতের সহিত তার স্থারে গর্মিত ভাবে এমনি মন্ত্র উচ্চার**ণ করিতেভেন,** বেন শান্ত ভন্ত সমস্ত তাঁহার উদরন্ধ; তিনি বেন ধর্মকর্মের অধ্যন্ধতা পিতা; তাঁহার বাড়ীতেই ধেন ধর্মবিধি সকল প্রস্তুত হয়। গুলিখোর বাবু গামছা কাঁবে ফেলিয়া কিনারার বাস্যা ভাবিভেছেন, স্নান করিবেন कि ना। পाছে निभा छूडिया यात्र, इवडी शतनात आक्रिर लाकमान इस अहे তাঁর ভাবনা। তিনি ইতিকর্ত্রা নির্দ্ধারণে অসমর্থ চ্ইয়া শেব অসুলী স্বাস্থা একট একট জল মাধায় দিতেছেন, আবা ঘন চুপ্লের সক্ল ভোজন কেম্মন স্থাবর বিষয় মনে মনে তাহাই আলোচনা করিতেছেন। যুগ্রা সুবুকের ছল चाटि विशव कडेब्रा कब्रिट उट्ह, भथ छाड़िया निष्ट ठाटर ना। हेराबा প্রাতে উঠিয়া তাস বেলে, আবার স্নানের পর পাশা সভরক শইয়া বঙ্গে, মুভরাং ডভ ভাড়। ভাড়ি নাই। বসিয়া বসিয়া বিলম্ব করিবার আরেও একটা यस डेएफ ना चाटक। युक्ति (माकानमात महियात टेजल मन्त्रीक चिक्रि कवित्रा खूल अल भट्न करल পिछ्ल, छुर मिल, सूर्यात मिटक हारिया हाड ষোড় করিল, তিন অঞ্লি জল তুলিয়া জলে ফেলিল, শেষ প্রণাম করিয়া एकारन कितिया (शल। निक रायमात छाए। एवं अना किसा नाहे, अना पृष्टि ।

সানের বাটের উপরেই বোড়ারাড়ীর আন্ডা। কোচমান আনিআন্ মাটার আলবোলার তামাকু বাইতে বাইতে আধা বাজালা আধা হিন্দিতে বাজারামের সজে ভাড়ার চুক্তি আরম্ভ করিলেন। তুই পাঁচটা ইংরাজি কথাও তাঁহার আনা ছিল। আলিআন মিঞার শরীরটী ওলি বাইরা বাইরা পোড়া কাঠ বানির মত হইরাছে, পশার এক গাছা গত রছনীর

বাসি বেল ফুলের মালা, কোটরে প্রথিষ্ঠ ঈরং লোহিত চক্ষ্মর মিট্ মিট্ করিভেচ্চে। ঘাড়ের চুল ছাঁটা, মাধার সিঁতি কাটা, গায়ে একটা রঙ্গীন কাপ-ড়ের ফড়র। আঁটা। হাসিতে হাসিতে নানা রক্ত ভক্ষে নিজের গাড়ী খোডার গুণ ব্যাধ্যা করিয়া এক গুণ ভাডার জায়গায় চারি গুণ হাঁকিলেন। **७९माल व्यापार को को अपने कार्य कार्या कार्या को वार्य के वार के वार्य के** কেবল সেই এক দিন মাত্র বাহ্মার করিয়াছিলেন, ভাহাতে কৃতকার্য্য हरेए পाরেন নাই, পিনী ঠ।कুরাণীর শমক খাইরা আর সে বিষয়ে কথন সাহসীও হন নাই। পৃথিবীর ব্যবসাথী চতুর লোকদিগের শ্রুতি মধুর কপট বাকোর মধার্থ অর্প অবধারণে তাঁহার ক্ষমতা আদে ছিল না। ভবে এই মাত্র জানিতেন যে, যে যভ দর বলে ভাষার অর্দ্ধেকে রফা করিতে হয়। কিন্তু আবাধিজান যে চত্ও প্লাম হাঁকিয়াছিল ভালা ভিনি কিরুপে বুঝিবেন • বিশেষতে সে দামের কপাটা ইংরাজিতে বলে, এবং তৎসক্ষে এরপ কাঁহাকে আশা দেয়, যে যোল মাইল পথ দেড় দ্তীয়ে शिष्टिया पिरव ।· हेश्ताकि कथात मञ्जम चारक, कावन हेश्तारकता मिला क्या क्य मा, काटकर राष्ट्राताम ভाषाय ठेकिया এक छटनत प्राप्त विछन খীকার করিয়া গমনোদ্যত হইলেন এবং অর্ক্তেক মূল্য অগ্রিম দিয়া আলি-ছানের হাতে প্রাণ সমর্পণ করিলেন।

আনিজ্ঞান আন্তাবোলে প্রক্ষেপ্র্কি প্রথমতঃ বদনার জলে গোড়েল করিল, তার পর রুটী কাবাবের সামুক লইয় নাস্তার বসিল। নাস্তা ভারয় একবানা ভাসা কাঠের চিকুলি ধারা চুল আঁচড়াইয়া তুই চক্ষের কিনারে স্থ্রমা লাগাইতে লাগিল,আর সহিস রহিমবক্সকে আলবোলায় ভামাকু তৈয়ার করিতে হকুম দিল। পরে ভাহাকে লোড়ায় সাম্ল চড়াইতে বলিয়া সে আস্থাবোলের বাঁদরের সঙ্গে ধেলা করিতে লাগিল। এ দিকে বাঞ্লাম রৌজের উত্তাপে দয় এবং গলদ্দর্ম হইয়া ক্রমাগছ অপেক্ষা করিতেছেন। ভাগো তার চিন্তামীল মন পণে লাটে ধেধানে সেখানে বৈজ্ঞানিক ভক্ত চিন্তায় সহত্যে ময় হইডে পারিত ভাই রক্ষা, নতুবা অন্য কেছ হইলে এত ক্ষ্ চাটয়া লাল হইত সন্দেহ নাই। এক একবার গাড়ীর কথাটা স্থাব হওয়াতে বিক হে, সময় বে গেল, শীল্ল এস না গুণ এই বলিয়া ভাকিতেছেন। কেইবা

তাঁর ডাক ভানে ? কোচমান সাহেব তথনো নাস্থা করিয়। সুর্থা। পরিষা ভারাকু সেবনে মর্থ আছেন। বাস্তারাম বেমন ডকুচিস্থার আবেশে বিজ্ঞার, আহিফেননেবী আলিজান্ধুম পানে ভাষা অপেক্ষা গভীর ভাবে নিম্ম ছইয়া আরনায় মুর্ব দেবিতেছে, চুল ফিরাইভেছে, প্রসায় এক ভোলা বে আডর ভাষা গোঁফ এবং দাড়িতে মাবিতেছে॥ সহিস রাহ্মবক্স ভধন গোড়ার সাল দিতেছিল। সে একটা হাড়পেকে মুসলমানের ছেলে, ন্যাংটে ডাল কুকুরের মন্ত চেহারা, বুড় গক্র পাকা হাড় মাস চিবাইয়া চিবাইয়া ভাষার মুর্বে শিরা বাহির হইয়া পড়িয়াছে; দেবিলেই বােধ হয় বেন ম্যের অক্রচি; অববা হজম করিছে পারিবেন না বলিয়া ম্যরাক্ষ ভাষাকে প্রভাগান করিয়াছেল। ভাষার বাহা আকার যেমন কঠোর, আন্তরিক প্রভাবটিও ভেমনি কাকড়া বিচার মন্ত বিষাক্র। পাগরে আছাড় মারিলেও ভাষার মরণ হয় কি না সন্দেহ। রৌজ রুটিভে কোচমানের চালুক প্রহার এবং গালাগালিতে এমনি সে ভৈয়ার ছইয়া উঠিভেছে, যে ভবিষ্যতে সে যবন আবার কোচমান হবে, তথন ভন্তস্থানিদ্পের হাড় ভালাভন করিয়া ভূলিবে।

প্রায় ঘণ্টা দুই*কাল বাঞ্চারমের প্রচুর ধৈগারাশিকে প্রায় কায় অব-সন্ন করিয়া আলিজান রথারোহণে বহির্গত হইলেন।

নাড়ী থানি নগরমধাে বত্কাল পবে পথে গৌছে পুড়িয়া, অলে ভিলিছা
পাথবের ধােয়া এবং ট্রামওরের রেলের ধারা খাই । অরা আবি হুইরাভিল,
ভথালি ঘ্দের ক্লে লাইদেল্ল ইনেম্পেটর বাবু ক্ষেক বংসর রেলিটারি
করিয়া চালাইয়া দিয়াভিলেন; শেষ ধবন নিভান্ত অচল হুইয়া পড়িল, ভখন
সহরে সে আর মান পাইল না, কাজেই সেই নাগরিক ইচ্ছিই এক্লে প্রামা
বাবুদের নিকট প্রসাদ রূপে উপন্থিত হুইয়াছে। একে তৃতীর প্রেনী
ভাহাতে ভগ্ন আবি প্রাভন, আলিজান মিএল গোটা কুড়িক টাকায় ভাহা
কিনিয়া ধেবানে ধেবানে রং উঠিয়া গিয়াভিল দেবানে আলকভরার পটী
দিয়াছেন, ভগ্ন মান সকলে দভি জড়াইয়াছেন। আর পনী তৃইটী, ভার
কবা যত কম বলা যার ভেডই ভাল; সংক্রেণে এই মাল্ল বিলিলই যথেপ্ন
হুইবে, ভার অধ্যেল রুব কাটিয়া ছোবড়া বাহির হুইয়া পড়িয়াছে। বাবড়া

মারিলে ধুলার গগন আছেল হর। কড পঢ়াইলিস মাচ, আমার বসভা ●লা-উঠার মুডলেহ যে যে বহন করিয়াছে ভাহা বলা যার না।

পশ্চাদেশে রহিষবক্ষ আলবোলা হতে দপ্তায়মান আলিকান থীরে থীবে বর্ধর ঘর্ষর ধনন্ ধনন্ ধনন্ ধনন্ নল বল ইটাকোচ কোঁকোচ শব্দে পাড়া লইয়া বাঞ্জারামের অন্তর দাঁড়াইল,এবং "বাবু আফ্রন মহাদর!" বলিরা ছই একবার ডাকিল। বাবু তথনও চিন্তার ঘোরেই ছিলেন। প্রথম চুই একটা ডাক কর্পে প্রবিষ্ট চইল না। তথন সেই সম্বভানের অবভার কোচমান ধমক দিয়া বলিল, "কি মশার আপনি দেরি করিভেচন। ঘন্টাভোর গাড়ীনিবে বসে আছি। এ সভো এস, নৈলে আমি দোসরা ভাড়া নিরে এখনি চলে ধবে। এতকার বেক্যদা খাড়া করিবে রাধ্লে, এর ক্রম আরে আট আনা ভাড়া বেশী দিছে হবে।" এরপ বেয়াদবি আর চুইমির কথা ভনিলে মরা মান্থবের ক্রোধের উদয় হয়। বাঞ্জারাম একটু চটিয়া বলিলেন, " হুমি আপনি বিলম্ব করিয়া শেষ আমার উপর দোবারোপ করিভেছ ? কি রমক ভোমাদের ধর্ম হে বাপু?" আলিজান তবন আরো চুইমির সহিত সাক্ষে ভাবে বলিল, "আরে ঘাও মন্দ্রি, ভোমার মত অনেক বাবু দেখা আছে। এখন ক্রম্ দি ক্রম্বি এসত এস, আমার ঘোড়া থামছেনা, গ্রম হবে উঠেছে।"

বাঞ্জারাম আর কোন কথার উত্তর না দিয়া পাড়ীতে উঠিলেন।
উঠিবার সময় প্রেকের থোঁচা লাগিয়া গায়ে রক্ত পড়িল, চাদর থানি ি ডিয়া
গেল। অনন্তর কোচমান লোটকের বাসরজ্জু ধরিয়। টানিল, বোড়া
নড়িল না; বিতীয় বার টানিল ভাহাতেও না; শেষ পুনঃ পুনঃ সফোরে
টানাটানি আর্গ্রু করার ভাহাদের নিজা ভঙ্গ হইল এবং ভাহারা যাড়
ফিরাইয়া অভ্যন্ত বিরক্তির সহিত দত্তপাতি বাহির করিয়া যেন বলিয়া উঠিল,
"আ: কর কি! একট্ ধাম না, যাওয়া যাচ্চে! এত ব্যন্ত কেন গ্" পদ্যাপ্রের
কবিত্রসহীন পাঠক পাঠিকাগণ হয়তো বলিবেন, বোড়া চতুপাদ প্ত. ভারা
কি কবা কহিতে পারে! আমরা বলি, কেন পারিবে না! সকলেই নিম্ন নিম্ন
ভাষায় কবা কহিতে পারে! প্রেমিক জন ভাহা স্তনিতে পান। কবা কহা
ছড়া আনেক বুক্ম ভাষ। অপতে প্রচলিত আছে। বোড়া চুইটী গাঁতের

মাজি পর্যান্ত বাহির করিয়া, বাজে বাঁকাইয়া, চারি পা ছুড়িয়া এক সানে দণ্ডায়মান বাকিয়া আপনাদের হুংধ বিরক্তি প্রকাশ করিয়াছিল। প্রান্ত হুর্বল
ক্ষতাক্ষ অবংবাজিত তৃতীয় প্রেণীতে বাঁহায়া আরোছণ করিয়াছেল। তাঁহায়া
বোটকের ইজিতের ভাষার অর্থ অবশাই জানেন। অব্ধরের এরপ বিরকির বিশেষ কারণ ছিল। তাহায়া পূর্ম দিবসে সমন্ত নিশি আগিয়া বসন্তপূর হইতে নক্ষনগ্রামে অ.সে. একবারও নিজা ষাইতে পায় নাই, ভার পর
আজি দূর হইতে না হইতে আবার চলিতে হইবে, কাজেই ইহাতে বিরক্তি
হয় আর না হয়!

ঘোড়া চুইটা কিরুপ তুর্দ্দাপর ভবিবরণ শুনিলে অনেকের চক্ষে कल कांत्रित। এकी वर् अकी (छाउँ। वर्षी नृत्रन, अक्ट्रे मांश्म কলে আছে। চাবুকের প্রহারে ছোটটীর গায়ের লোম গ্রায় ছিল না বলি-লেই হয়। মুরগীর ভোট ছানা গুলি বেমন, কিম্বা বে সকল শালিক পাধীর পাধা উঠে নাই ভালের বেমন দেখিতে, এই ঘোড়া তুইটার চেহারা ঠিক তেমনি। পক্ষারাজের গুই াদকের ডানা বাহির হইয়াছে, ভূচর হইয়াও स्व (यन (यठत क्षेत्र) পড়িয়াছে, গলায় এবং পায়ে য়। দগ্দগ্করিছেছে, চক্ষে ছানিভরা, তাহাতে মাছি বসিয়াছে, লাক্ষ্ণটী গিরাগটির ল্যাঞ্জের नाष निल्लांब, छादा मध्य कोटवेद खावान छान । छेन्द्र नाना भानि नाहे. নিজার ভারে চক্ষে জল ঝারতেছে, এমনি কাহিল যে ঠেলা দিলে যেন পড়িয়া মরে। ভাহার উপর শত গ্রন্থিক পচঃ চান্ডার সাজ। সংহাই হউক, भाषाव (भौष्ठिया क्रिया ভाष्टा लक्ष्या मात क्ष्या मात क्ष्या मात्रा করিলে তাহার ব্যবসায় চলে না; বিশেষতঃ ডাঙ্গ। গাড়ী মরা ঘোড়া ডাড়াইয়া সে নিজেও খেঁকি কুকুরের মত হইয়া গিয়াছিল। পুনরায় সে রাস ধরিয়া সবলে টানিল, তৎসক্ষে প্রথম তৃই চারি বার মিষ্ট বাকো আল। ভরস। দিয়া আবাদর মেছ দেখাইল: ওদ্নতার দ্ভির চাবুক মারিল, ভাহাতে কিছ হইল না, লাঠী শোটা বাহির করিয়া ডাহা ছারা যত পারিল ঠেকাইল, অশ্লীল তুর্বাকো গালি দিয়া ঘোড়ার বংশের চতুর্দশ পুরুবের নিকা গ্রানি প্রচার করিল; তবু বোড়া নড়িল না, ক্রমে পরপ:খে খানার দিকে বাইতে नाजिल, आखारवारलय परक पूर्व कियारेया यहिल। प्रका मुनि निक निक

সাধীনতার ব্যবহার করে, কার সাধ্য তাহাদিব্যের দ্বারা কাজ করাইয়া লয় ৽
পরিশেষে আলি জান যোড়ার স্থাক্তে দড়ি দিয়া টানা টানি আরস্ত করিল,
এবং রহিমবক্স চাকা মারিতে লাগিল। যথন এত দ্র প্র্যান্ত পীড়াপীড়ে
হইল তখন কনিষ্ঠ চুর্লেল লোটকটী প্রের মাঝ থানে একেবারে স্তইয়া
পড়িল। সে স্পৃত্তই বলিল, "আমি একটু না যুমাইলে কিছুতেই আর
বাম্তে পারিব না।" এই বলিয়া কাদিয়া সে ধুলায় গড়া গড়ি দিতে লাগিল।
আমাদের পণ্ডিতজা ভিতরে বসিমাছিলেন, সমস্ত ব্যাপার স্কচ্ছেল দেখিতে
পান নাই, দেখিলে হয়তো পশুর প্রতি দয়াপরবন্ধ হইয়া ভিনি একটা
বালেস বিহানা তৎক্ষণাং ভাষাকে আনিয়া দিতেন। অনেক চেয়া যতের
প্র শেব গাড়া থানে আস্তাবোল ছাড়য়া গমাস্থানের দিকে শনৈ: খনৈঃ
প্রন্থ শ্বত্বইয়!

বাপ্তারাম গাড়ীর ভিতরে চাহিয়া দেখেন, পায়ের নীচে কতকগুল। রসা রুমি, কোচমান সহিসের বিভানা আসবাৰ, কাঁথা কম্বল, ও খাদ্য; ভোড়ার শরবা বৃক্ষ এবং থলে প্লোরা ঘাদের রাখি। গাড়ীর দরজা জানাল। নামাইতে ইঠাইতে সরাইতে গেলেন ভাহারা কেহ উঠিলও না, নামি-লও না, এক আজুল সরিলও না; অনেক ঠেলা ঠেলিতে যদিও তুই একটা নডিল, কিন্তু স্থানচাত হইয়া একবারেই নামিয়া পড়িল। তথন ভাহাদিগকে ভূলিয়া লইয়। আবার গাড়ীর মধ্যে সাবধানে স্থান করিয়া দিতে হছিল। কোচমান হতভাগাটা সে সময় ঝিমাইতেছিল, নতুবা ভাগ্রত গাকিলে নিশ্চর কত কি বকিছ এবং ভর্মনা করিত। মণ্যপথে আসিয়া মাঝে মাঝে ঘোড়। দুইটি কেপিয়। উঠে, তজ্জন্য বার বার বার্থারামকে নামিতে হর, এবং নিজেও চাকা ঠেলিতে হয়। পেটরোগা লোড়া, না পারে চলিতে, ना পারে দৌড়িতে। তুই এক পা ষায়, আবার থমকিয়া দাঁড়ায়; ইহাব্যতীত একট। উপসৰ্গ আছে যাহাতে পুনঃ পুনঃ নাসিকা বস্তা-বুত করিতে হয়। কথনো চাকা ঠেলিয়া, কখন ওপ টানিয়া, কখন বা चारताशीक नामाहैवा मावली तथ जानाहरण नातिन। এक अक बात बुव বেগে চলিয়াছিল, কিন্তু ভাহাতে অন্য প্রকার বিপদ ঘটিল; চাকা খুলিয়া পড়িতে লাগিল। ফলড: वाञ्चाबात्यत्र हेश खर्णका है। हिशा वाल्या खर्नक

ভাল ছিল। ঠাহার ছ:বের কাছিনী আর স্বিস্তাবে বলিবার আংবেশাকড। নাই, অবশিষ্ট কটভোগ স্কলে ব্রিরা লটন। কিন্ত এখনও খেহ হয় নাই।

ৰসন্তপুর পৌতিতে এক জোল পদ বাকী আছে এমন সময় কোচমান বলিল, "বাবু, তুমি এই থানে নাব, আর গাড়ী চলিবে না ।" এই বলিয়া সে খোড়া গাড়ী রাম্বতমু এবং আরোহার উদ্দেশে আদন মনে বিজির বিশির করিয়া বজিতে লাগিল। তুই পাঁচটা গালাগালিও দিল। বাঞ্জাম তথ্য ভাষার ভাবে গতি দেখিয়া না হাসিল। আর থাকিতে পারিশেন না। শেষ দেখিলেন, বড় বেগতিক, পথের মারেয়া ধারিয়া ধারিয়া কাপড় চোপড় কাড়িয়া লইয়া যদি বিদায় করে, আনায়াসে পারে।

চলিতে চলিতে পশ্চাদ্ভাগের এক থান চাকা থানিয়া গড়াইতে গড়াইতে পথ-পার্শ্বে পড়িয়া পেল, আর ভাহ। আপন স্থানে সম্বন্ধ হটল না। তিন চাকাভেন পাড়ী চলিতে পারে দেখা গিয়াতে, কিন্তু আরোহী ভাষাতে থাকিছে পারে লা। কাজেই বাঞ্চারামকে নামিতে হইল। এ দিকে বেলাও প্রায় শেষ হইরা আংসিয়াছে। এমন সময় দৈবকুপায় আকাশের উত্তর পশ্চিম কোৰে এক খানি খন ক্ষণ্ডৰ্প মেঘ দেখা দিল, ভাষার সঙ্গে সঙ্গে বাতাস উঠিল, এবং দির ছইতে দিবস্তরে বিজ্ঞার মালা চম্কিতে লাগিল। দেখিতে দেখিতে মিবিড জলদ্ভালে সমস্ত গগনমগুল ছাইড়া ফেলিল। শামল শুসা-ক্ষেত্র, খনপত্নবিত ছারম্বর্ণ আন্রকাননের ছায়া, াহার উপর গাঢ় কৃষ্ণ মেখ-মালা, এমনি অৱকার হইলা উঠিল যে আর কোন দিকে কিছুই নয়নবোচৰ হয় লা। ক্রমে জোর বাভাস বহিতে লাগিল। শেষ বিষম বৃষ্টি ঝাড জ্ফালে একবারে প্রাণিপুঞ্জকে আকৃল করির। তুলিল। পথের উদ্দীয়মান বুলিরাখিতে ভোটক ও সারধীর চক্ষকে অরূপ্রায় করিয়া গাড়ী বেড়ে। কোচমানকে বায়ু-বেশ্বে উড়াইর। একথারে খানার মধ্যে আনিরা ফেলিল। ভাষার কিছু পর্সের বাপ্লাবাম নামিয়া পাড্যাচেন এবং নিকটত্ব অংমবাগানের অন্তাবিক্তেভাতিপের া পর্বস্কৃতীরে প্রবেশ করিয়াচেন। তথন আলিফানের ভর গাড়ী ভালিয়া (धल, महा (वाफ) कावि काठेए लाजिल, भि निष्यक नाला नावृत्र इरेंग প্তিল ৷ ভাছার উপর দিয়া মহা বিক্রমের স্থিত বড় বহিয়া পেল, পম পম গুড় গুড় নাছে মেল গার্জিল, শেষ বৃষ্টির ধমকে আর বাভাসের ঝাপটে ভাহার প্রাণকে ওঠাগত করিল।

অনতর ঝড় রৃষ্টি থামিয়া গেলে বাঞ্চায়াম অবিশিষ্ঠ পণ টুকু পদত্ত আই পমন করিতে বাধ্য হন। এত হৃণ ঠাহাকে বেন মামূদ ভূতে পাইরাছিল, **। अर के काल काल काल काल मात्र की यन मृ**र्खि (मशा हे या । प्र कुछ लायन क्रिल। भून्त भनत्न काल स्मच छथन ও क्रमां विशिष्ट्र विश्वादक ; काहात শিধরাগ্রভাবে অস্তাচলগানী সুর্য্যের রশিমালা নিপ্তিত হইরা আকাশকে বিচিত্ত বর্ণে সুচি আছে করিয়াছে। নিদাম কালের উত্তপ্ত মেদিনী বৃষ্টির শীতল জালে বধন স্থান করিয়া উঠে এবং তাহার উপর অক্তমিত তপদের ছেম বৰ্ণ কিব্ৰণচ্চটা এবং সন্ধাৰ শীক্তল ছাছা আসিয়া যখন পতিত হয় তখন ত্ৰণত্ৰাচ্ছাদিত ভূভাগ, বৃক্ষ লডা সমাকীৰ্ণ উদ্যান, বনভূমি এবং সর্সী खाजपा **फ**क्रवाकी मनन कि बक निम्न मुर्खिरे धाउन करता। भरतन ধুলা উড়িয়া বিয়াছে, শুরকির লোহিত বর্ণরঞ্জিত সরল রাজবন্ধ টী বারিধারা সংস্পর্শে সম্জ্রুলিত হইরাছে, তাহার হুই পার্বে আম্রকাননপ্রেণী হরিছরে পথপ্রাম্ভ জনের ভাপিত চলুকে শীতল করিতেছে, নিকুঞ্জ বনের মধ্যে वित्रा सर्वत- भाषी भरमानत्म त्रीज ताहरणहा, वाहाबाम धारे नवनवक्षन শোভা সন্দর্শন করিয়া পরিতৃপ্ত হইলেন। ইহা দর্শনে তাঁহার প্রথপ্রাপ্তি हुत **हरेन (करन छाहा नरह, मरत नाना धाकात रिख्डा**निक ठिखात खन्न উঠিল। প্রকৃতি দেবীর অমুপম শোডা দেবিতে বেধিতে বসভপুঃ গ্রামে भाष्ट्रमण्यस्य छिनि बारवभ कतिरम्य ।

দ্বিতীয় খণ্ড।

প্রথম পরিছেদ।

শুন্যে গৃহ নির্দ্মাণ।

 जत्खावियेदक चामता भृत्ये (व चन्छात्र व्यवित्राद्विनाम, त्र चन्छात्र चात्र जिनि बद्दन नाहे, छाहात्र (अमक्त्रन) चित्रात् (जक्तिनी देशाहिनी হইয়া তাঁহাকে দিবা রাত্রি প্রিয়তমের জনা মন্ত প্রায় করিয়া ভূলিয়াছে। তৃ:খিনী অবলার প্রেমে বাঞ্চারামের বিশ্বমাত্ত সহাযুভূতি নাই, কারণ সে ইহার সংবাদ কিছুই জানে না, অপরের নিকটতো সম্পূর্ণ ই প্রছেল, কেবল আপনার জ্বয়াবারে আবদ্ধ বাকিয়। সে প্রেম নিস্তানব নৰ কল্পনা পান ভোজন করিয়া হাউ পুষ্ট হইতে লাগিল। সময়ে সময়ে কলনারবে চড়িয়া বিচিত্র কলনার রাজ্যে মহানদে সে বিচরণ করিড, কখন বা গুল্চিছা নৈরা-শ্যের ঝঞাবায়র আঘাতে অবশাদগ্রস্ত হইরা বিবাদ অন্ধরতের গভীর গহররে ভইয়া পড়িভ। বাঞ্চারামের সহিত সভোষিণীর ইতঃপুর্বেবসভপুরে অল पित्न बना कृष्टे अकवात (पथा नाकार प्रदेशकिन अवर जाशात नत विटक्क সমরে চুই একধানি পত্তও তিনি প্রাপ্ত হন। এই চাক্সুষ দর্শন এবং পত্ত কিবং পরিমাণে তাঁহার স্থকজনার মনোহর নিকেডনের ভিত্তি ভূমির দুল্ড। সাধন করে। কিন্তু এমন কিছু ইছাতে গ্রকাশ পার নাই যাহাতে ঠাহার আশা পিপাসা চরিভার্থ হয়। মামুষ কি ভাষা! বিশেষতঃ প্রেমবিকার-श्रक पूरक पूरछी। (म जिलाक जान मान कवित्रा राम, मृत्ना अहे। निका নির্মাণ করে। বে সকল পবিত্র কল্পনা কল্পনাডীত নিডা সভা আছিপুরুবের कान भक्ति सक्रम ভाবের পাস্তার্থ্য सट्छ সৌক্র্যা রমণীয়ভাকে নান। व्यवहारत मिक्किए कत्रण व्यवहार बीरिय व्यवहारीय व्यविका काल নিরম্বর চল্লের সম্পুধে ধরিয়া রাখে, তাহা চম্মচন্দেরণোচরীভূত প্রত্যক্ষ ষ্টনার ন্যায় না হইলেও তদবলম্বনে মনেবজীবন স্বর্গের মুধ প্রাপ্ত হয়। क्डि चनात छात्र एचामक क्रीय नहताहत दम भर्द बाहेरछ हारह ना।

हाय ! यक्ति कहाना एक प्रशी हहेए इहेन, उत्त नवक कहाना कतिया किन नावको एरेव १ कलनाय किन अर्गटलांग कवि ना १ ध्वहल धकरे, शवि-শ্রমেরও কিছু ইতর বিশেষ নাই। স্বর্গ নরক ধুব কাছাকাছি। স্বর্গের অক্তিত আছে, নিতাত। আছে,তাহার তথ সৌন্দর্যাও অনস্ত ; এ সম্বন্ধে কল-নাও সভা হইয়া আত্মার বৃত্তি দমুদ্যকে নিতাকাল পরিপোষ্ণ এবং সৌন্দর্য্যে বিভ্ৰিত করিতে পারে। কিন্তু যাহার অন্তিত্ব অনেক সময় থাকে না, থাকি-लिख याहा विविध्य मारक्षांत्र कता यात्र ना; व्यथना च्याली याहा कुच्छाला. কিম্বা প্রাপ। হইলেও অসার ক্ষণধ্বংসী; কল্পনা শক্তি কেন ভাহার জনা প্রাণ উৎসর্গ করে। অথবা পার্থিব সুখের অতীত অপার্গির স্থর্গ কুখকে याराता कविकलना भटन कविया विश्वा खाटिक. हेर कीवनरे बाराट्यत मुर्वाय. खाशास्त्र परक रेराहे जानाविक। अरखाविनी वृक्षिमणी धर्माजीक नाबी. অপার্থির অনস্ত পর্নের অন্তিতে সে বিখাস ন। করিত এমন নতে,কিন্ত ভাছার বিখাস সংকার বাঞ্চারামের মত বলশালী ছিল না; সুতরাং ভাহা বর্ত্তমান ছাড়িয়া ভবিষাতে, সুণ ছাড়িয়া সুন্দে, কড় ছাড়িয়া অনস্ত চৈতন্যের দিকে প্রসারিত হইল ন'; কার্যাকালে সে বিখাস বিভাবেৎ চম্কিয়া ভাষাকে খেরে নিরাশান্ধকারে ফেলিয়া গেল। তুডগাং সন্তোবিণী মিধ্যা অসার অনিড্যের खेलत कल्लगात माधालुरी गर्रन कतिए छाड़ित्तन ना। छाटाटक अथन दुलान র্থা। শেষ প্রান্ত সে দেখিবে, দেখিয়া ব্যন প্রতিদাত পাইবে ভর্ম মে ছান্ড। ভাজিয়া ঘাইবে। এখন ভাহাকে কল্পনার মুধ কিছু দিন ভোগ क्रांत्रिक (मश्रम शास्त्रक । हेशारक जानरे रहेर्य, भिका शाहेर्य, ज्विशारक আয় ও পথে সে কখন যাইবে না।

সংস্কাষিণী মেণ্ডেটী কে,তাহা এত ক্ষণ আমরা পরিকার করিয়া বলি নাই।
ইতাঁর স্বিশেষ পরিচয় এক্ষণে কিছু দেওয়া বাইতেছে। ইনি নিশানাথের
শ্রীর ভ্যার কনা।। পিতঃ বর্তনান আছে, কিন্তু তিনি কেবল ক্ষমদাতা মাত্র।
মান্তা নাই। বিবাহ হইয়াছিল, কিন্তু সেও কেবল ক্ললক্ষার অকুপা হুইতে
বাঁচিবার অন্য; অর্থাৎ বছ্বিবাহকারী এক হতভাগ্য কুণীনের সঙ্গে ভাহার
এক জিনের জন্য অল্ঞাতসারে বিবাহ হয়, ডাহার পর সে ব্যক্তির সঙ্গে আরু
দেখা ত্না নাই, লাছে কি মরিয়াছে ভিষ্কার্যের কেছ কিছু বানে লা। এই

দক্ষ কারণে সন্তোষিণীকে এক প্রকার বিধবা বলিলেও বলা বার; আবার কুমারী মনে করিরা লইলেও যে কিছু অন্যার হয় ভাহাও নহে। বাহাই হউক,মেরেটী রূপে ওপে অতি মনোহর। ভাহার নামের সঙ্গে সভাবের বেশ একতা ছিল। নিশানার নি:সন্তান, এই অনার: কু:বিনী কনাটীকে ভিমি ববেও সেত মনভা করিতেন। লেখা পড়া ঘাহা কিছু সে শিধিরাছিল ভাহা নিশানারে:ই পরিপ্রমের কল। বাঙ্গালা ভাষার প্রচলিত এবং পাঠবোগা গ্রন্থতিলি ভিনি ভাহাকে বেশ করিয়া পড়াইয়াছিলেন। সমরে সময়ে ভাহাকে দিয়া প্রস্থ বিশেষ পড়াইয়া আপনি ভানতেম এবং চিঠি পত্র লেখাইতেন। সভ্যোষণীর বিদ্যা অপেক্ষা বুরি অধিক, মুবস্থ পড়া ভনা অপেক্ষা সহজ্ঞজান এবং চিস্তাশীলতা ভাবুকতা অতি গভার ও প্রবর ছিল। স্বাভাবিক ধারণা ক্রি এত বেশী, বে সে সকল বিষয়ের ভিতরেই প্রমেশ করিছে গারিত। ফলভঃ বুরিবার সঙ্গানে ভাহার একট্ অসাধারণ ক্ষমতা দেখা গিয়াছে। ইংরাজি ভাষাও জানিত, সহজ সহজ্ঞ গ্রন্থ পড়িতে এবং বুরি তে শারিত।

পাঠক পাঠিকাগণ হরতে। এত ক্ষণ ইহার রপের ছবি থানি দেখিতে না পাইরা নিতান্ত কোঁত্হলী হইরা থাকিবেন। তাঁহাদের কোঁত্হল আনহা কত দূর চরিছার্থ করিতে পারিব ব্যিতে পারিতেছিলা। বদি এক কথাই সকলে বলিতে অনুমতি দেন, তাহা হইলে এই পাঁয়ন্ত বলা হাইতে পারে, যে সন্তোহিণীর না ঠিক ত্রীলোকের মত। তাহার মুখমণ্ডল ললাট পণ্ডছল চল্লু কর্ণ নাসিকা দক্ষ ওঠ হন্ত পদ গ্রীবা কঠ পৃষ্ঠ কটি বক্ষ এবং মন্তক্ষে কেল্যানি প্রভৃতি সমন্ত অন্ধ প্রতাল এবং তৎসমূদ্যের স্কালন ক্রিয়ার মধ্যে ত্রী প্রকৃতির কমনীর সৌক্ষায়, অপূর্ক্য মার্থ্য অমৃত্ত হইত। প্রতিভাগনালী স্কবি কার্যলেখকগণ যেরপ দক্ষভার সহিত নাইক নাছিকার ক্ষণ বর্ধন করেন ভত দূর বিদ্যা আমাদের নাই। বিশেষতঃ চল্লে দেখিয়া অন্ধ্রের ব্যাহ তাহা লেখনীতে ব্যক্ত হ্বাব স্কৃতিন।

অনেকে হরতো মনে করিতেকেন, সেই জনাই বুঝি সজোবিশীর ঐ ক্রীলোকের মত বলিরা এক কথার আমরা সব কাল শেষ করিয়া ছিলাম। না, বাস্তবিক তা নয়, ইতার ভিডর আরো কিছুপভীর বিজ্ঞান আছে, বাল্লা- রাম শভিত তাহা জ্বানেন। প্রকৃত কথাটী এই, বে স্ত্রীলোকের স্ট্রীত্ব অর্থাৎ ভাবুৰভা সরলত। কোমলতা তীক্ষতা রসগ্রাহিতা প্রেম্মাধুর্য। ভীক্ষতা বালক-বং ক্রীড়াশীলতা তাহার সঙ্গে তেজসীতা লব্জা শান্তি সেহ মমতা গান্তীর্ঘ্য সহিষ্ণুতা নাই তাহাকে যথার্থ স্ত্রী আমরা বলিতে পারি না। কেবল কি নারী মূর্ত্তি ধরিয়া স্ত্রীলোকের সাজ পোসাক পরিয়া সন্তান পালন করিলেই স্ত্রীনামে অভিহিত হওয়া যার ? কখনই না। আমরা পৃথিবীতে যত প্রীলোক দেবি তন্মধ্যে অনেকে পুরুষভাবাপত্র। স্ত্রী জন্ম পাইয়াও তাহাত্রা श्वीरजुत छे दक्ष माधन करत ना। धरे खना ध मण्डल अर्जाल अर्थादत्र বিস্তুদ্ধে আমাদের ভরানক প্রতিবাদ আছে। কেই উপহাস করুন, বা चक वलून, अ সংস্থার আমাদের কিছুতেই অপনীত হইবে न।। साहारक নিংড়াইলে এক ফোঁটা রস পাওয়া ঘার না, ভাহাকে স্ত্রীলোক বলিতে ইচ্ছা **एम्र ना। वाक्ट्राक्ट्राक्ट्राक्ट्र एक्ट्र विल्ड क्ट्राक्ट्र क्ट्र क्ट्** মিলে না। আমরা যে কুলবালার সৌন্দর্য্যের কথা বলিতে ঘাইছেছি অনেত্রক সে জাতীয় স্ত্রী নহে। ইহার প্রমাণ আমরা স্কর্কে অনেক দেধিয়াছি, এই উপন্যাসের ভিতরেও সেরূপ দৃষ্টান্ত পরে প্রাদর্শিত হইবে। এই সকল দেবিয়া শুনিয়া রূপ বর্ণনায় আর আমাদের বড় প্রবৃত্তি নাই। তবে পাছে পাঠকরুল বিরক্ত হন, তাই আমরা সংক্ষেপে কিছু বলিতে বাধ্য হইলাম। **এ**क हे विश्व श्रष्ट शिक्ष महिल मकत्न है हा शार्ठ करिद्वन ।

এই অলোকসামান্য। বরাজিনীর চক্ষু পটোল চেরা, কি চুল কালভুলিনিনীর মত; হল্ম মূণাল সদৃশ, কি কটি কেলারর ন্যার ক্ষীণ; ইনি বিস্থান্ত।, কি মরালগমনা, কি বঞ্জনগঞ্জননরনা; এত কৃষ্ম হিসাব আমরা দিয়া উঠিতে পারিব না; রূপে ওপে মিশিয়া তিনি অতি গৌরবশালিনী প্রভাবতী দিব্যান্তী রমনী ছিলেন এই পর্যান্ত কেবল আনি। বে সমরের কথা আমরা নিধিতেছি, তথন জাঁহার সমন্ত অল প্রভাক নববৌবনপ্রভার প্রদীপ্ত এবং বিক্সিত হইয়াছিল। পালমূল হইতে মুধ্মগুল পর্যান্ত বেধানে ঘাহা ফুটিবার এবং পুরিবার ভাষা ফুটিবারি এবং পুরিবার ভাষা ফুটিবারি এবং পুরিবারিল। আরুতি নাতিদীর্ম্ব, কিমা স্থদীর্ম বিল্লেও বলা বায়। অর্থাৎ তেম্বন দ্বীর্ম না, বে কাপড়ের ওসারে কুলার না, কি পারের পোড়ালি ধানিকটা বাছির হইয়া ধাকে। সে দ্বীর্ঘার ভিতর

মনের মহত্ত এবং উদার্য্য সুস্পষ্ট পরিলক্ষিত চইত। অঙ্গ সকল বধা পরিমাধে সর্বাঙ্গ স্থার রূপে পরস্পরের সহিত সম্বিরিষ্ট চিল। ভাঁহার অলকাবলা-শোভিত স্কর ললাটের নিয় দেখে প্রোজ্জ্বল এবং আয়ত লোচন হয় মধুর প্রেমবারে নির্ভর রঞ্জিত থাকিত এবং গৌরকান্তির পুন্দর লাবশ্য ছটার, (कायन कर्छत खारनगरनाष्ट्रत वाकानिनारम ७ डे० प्राप्त- शूर्व काशास्त्रणाद्व নিশানাথের আলয় লক্ষ্মীর আলয় রূপে প্রকাশ পাইত। সভোষিণী সানাজে বিধৌত মিল্লেক্ড্ল গাতে নীল কৌশের বসন পরিধানপুর্বক পরিমার্ক্জিড কৃক কৃত্ৰ কৃটিল কেশদাম পৃষ্ঠদেশে লখিত কবিয়া যধন পৃতভাবে মাসী ঠাকুরাণীর জন্য ঠাকুর ঘরে বিচিত্র বর্ণের স্থগন্ধ কুসুমাবলী পুষ্পপাত্তে পুৰত্ব भुषक क्रार्थ माकाहेबा बाबिएजन खरः छाद। क्रमन क्रिकेड कविएजन, उपन ষ্ঠাহার সেই পবিত্র মুধ্মগুলে এক অপূর্ব্ব দেবলী পরিক্ষটিত হইড। কুত্মরাশির বেত পীত নাল লোহিত বর্ণের উপর তদীয় গৌর অকের ভত্ত আভা নিপতিত হইরা উভর উভরকে বেন সৌক্র্যাক্রেণে ভাসাইত। সচেতন ফুলের সঙ্গে অচেতন ফুল মিশিয়া একাকার হইয়া যাইত। তখ-বস্থায় তাঁহার অনিক্ষনীয় অপ্রপু শোভা যিনি ছেবিয়াছেন, তিনি অবনীতলে স্বর্গের ভপ্রতীর প্রতিজ্ঞায়া দর্শনে কৃতার্থ হইয়াছেন সন্দেহ নাই। নারী-বৌবনের বিভৃতিময় বাছ সৌন্ধ্যের উপর ধর্ণন ভগবছক্তির তুনির্দ্রন জ্যোৎলারাশি প্রতিবিশ্বিত হয় তথন ছা প্রকৃতির প্রকৃষ্ণ গৌরব এবং রমণীয় শোভা আমরা প্রিবীতে দেবিতে পাই।

সভোষিণীকে আমরা বিভিন্ন অবস্থার ভিন্ন ভিন্ন বেশে কর্পন করিরাছি। ভিনি ববন নানা অভরবে অসজ্জিত হইরা, বিচিত্র বর্ণের পট্ট বত্ত পরিধান-পূর্বক প্রপদ্ধ তৈলচচিচিত্র বেণীবত্ত মন্তব্দে অলক্ষরিত্ত পদে সপোরবে কূট্রভবনে নিমন্তবে বাইতেন এবং সেই বেশে সম্বর্গ্তা প্রভিষাসিনী কামিনীমওলে বিরাজ করিতেন তবনকার এক প্রকার শোভা; আবার বধন মৃক্তবেশে চকলা চপলার ন্যায় জিপ্রগতিতে গৃহকার্য্যে কিয়া নিশানাবের পান ভোজনের অরোজনে এটা বাকিতেন তবনকার আর এক প্রকার শোভা। সমরে সমরে নিশানাব ভাঁহাকে ইংরাজি পুত্তক হইতে ভাল গল প্রভাবিয়া ভুনাইতেন। তৎকালে সভোবিণীর শিক্ষাপিপাল্প

চিত্ত এমনি কৌতৃহলাক্রান্ত হইয়া নিশানাধের পানে চাহিরা ধাকিত, খেন মনে হইড, ভাহার বিস্কারিত নয়ন, প্রফুল্ল ম্থপন্ত এবং বিক্সিড অপরা-দ্বিত পুষ্প সদৃশ কর্ণবয় তাহা অভিমাত্ত ব্যাকুণতার সহিত পান করিতেছে। ত খবভার কথন কথন তাহার মুধ্মগুলে এক প্রকার উল্লাসকর মৃত্ মধুর হাস্য-রদের ক্লোভি উভাগিত হইত। সে হাসি অফ্টবটে, কিফ ভাহার ভিতর প্রেমতত্ত্বের কত বে গভীরতা বিলাসচাতুর্যা ফুটিয়া উঠিত তাহা আর বলির। উঠা বার না; যে চক্ষু তাহা ছির দৃষ্টিতে দর্শন করিয়াছে সেই কেবল ভাহার সাক্ষ্য প্রস্থান করিতে সক্ষম। হৃঃর অভিমানের সমর শিশিরণীত ছলপদ্ধের ন্যার সে মুখের শোভা হইত। আবার নিরাশ ভাবনা ছুল্চভায় মথ হইয়া যধন তিনি বসিয়া থাকিচ্চেন তথন অভগামী পূৰ্ব-हत्सव नाव ठीशव होकहत्सनिन ज्वास विवाप अक्षकारत द्वित्रा वारेख। নানা সমল্বে নামা বেশে এই রম্পীরত্বকে আমরা দেখিয়াছি, সে সমস্তই অবতি অবয়ানলকর; কিন্ধ মধ্যে মধ্যে ঐচ যে ঠাকুর ঘরে দেবপ্রতিমার বেশে তাঁহাকে দেখিয়াভি ছাহার সলে কোন সৌলর্ঘ্যের তুলন। হয় না। সমীৰণ সঞ্চালিত নিবিড় জলদজাল সদৃশ সেই কুটিল কুন্তলৱাশি কি লোচনানম্কর ৷ অচিরলাভ সেই তুমু সুগোল লিয়ে জেল অক্কান্তি কি প্রভাবশালিনী ৷ সারদীয় চন্দ্রমার অমিয় মাধা কমনীয় জ্যোৎস্থার ন্যায় সে রূপের জ্যোতি, দর্শনে নয়ন পরিতৃপ্ত হয়, সংগাঁর দেবভারাও ভাষা পুনঃ পুন: দেখিতে ইচ্ছা করেন, কিন্ত অধিক কণ সে দিকে বে সে লোক চাহিয়া থাকিতে পারে না; কারণ তাহাতে মোহ আছে, মহামায়ার মহাশক্তি আছে। अरकादिवीत ठाळ १७ घटल, मुर्ग ७ टन, नहन कमटन, छीवारमध्ये, कर्वहाह ও বাছযুগলে ত্রী প্রকৃতি বেন মৃত্তিমতী হইয়া বিরাল করিছ। প্রক্ষ্টোমুধ অধবা অভ্ববিক্ষাত বড় বড় মার্শেল নীল কিছা বসরাই গোলাপ ফুলের সঞ্জে এ ক্রণের তুলনা দিলে যদি কোন দোষ না হয় তবে আমরা তাহাই দিলাম। ष्परमान्ति भूकात चारतायन कालीन छाहात त अभूकी लीनत्यात কথা আমরা উল্লেখ করিয়াছি, তাহাতে বেন কেহ এমন সিভান্ত না করেন द्व किनि এक क्षत चाकि चनाशायन धर्मानवायना जनविनी नावी क्रिलन; कर्रोद माधन एकन, बढाएकोरनद्र बाह्य खाएकद अधिक किছू काँहार दिन না. পূলা চক্ষন নৈবিছ্যাছি ছাবা নিজে কোন দেবছেবীর পূলা অর্চনাও তিনি বড় একটা করিতেন না, কেবল মাদী ঠাকুবনীর ভবে করের বংসবের কনা একবার শিবপূজার বড় লইরাছিলেন। কিন্তু ডাহার উদ্দেশ্য বাঞ্চার্যানকে পাইবার জন্য। অনাান্য পূলা অনুষ্ঠান ষ্বিত্ব ভাহার বেশী ছিল না, কিন্তু আভাবিক ভক্তিতে ভপবান্কে তিনি বড় ভালবাসিতেন, এবং সেই ভালবাসার ভাবে, পূল্পচরন, চক্ষন অর্বা, দেবমন্দির পরিমার্জন, ভোগ নৈবিদ্যু দৃপ দীপ কুসমাদি ছাবা পূলার আবোজন ইত্যাদি কার্যোনিবিষ্টমনা ছইরা এডই আনন্দ এবং দেবপ্রসাদ সভ্যোগ করিতেন বে, এক জন চুই পাঁচ ঘণ্টা পূলা ধ্যান স্তব স্ততি ব্রত উপবাস করিরাও ভাল্প স্থাকল লাভে সক্ষম হন কি না সন্দেহ। নিষ্ঠাসুক্ত মনে, পূত চিত্তে, প্রকৃত্ম হবে যে নারী ঠাকুবছরে নিত্যপূজার আব্যোজন করে দেবভার। ভাল্র প্রতি বেধি হয় অভিশব্ধ সন্ধর্তী হন, সেই জন্য ভংকালে ভাষার মুখ্প্রীতে উন্ধূশ দিব্য শোভা প্রকাশ পাইয়া থাকে। কুমারীগণ, ডোমরা বাদ্ধ ভাল বর চাও, তবে ব্যবিকন্যার মত আফ্রাদিত মনে ঠাকুবছরের পরি-চর্য্যা আবল্পকর।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

প্রেমতত্ত্ব।

সভোষিণী এক দিন যাঁহাকে কৃদয়ের ভিতর লুকাইর। এক:কী সোপনে পোপনে ভালবাসিতেন সেই কৃদয়রঞ্জন প্রেমন্তালন এক্ষণে সম্পরীরে ভালার সমীপাপত। প্রিয়তমের বিদ্যমানতার সুমিষ্ট আন্তালে ভালার গুপু প্রবন্ধ উৎসারিত হইরা চকু স্ত্রোন্তালি ইন্দ্রিপণে বাবিত হুইডে লাগিল। অনুবাপের আবেশে সম্ভাদেহ মন উৎজ্ব হুইরা উঠিল।

ভত্ত রসিক সাধুৰৰ বলেন, প্রেম পক্ষণাতী, এবং আছে। বিশেষ কোন এক ব্যক্তিতে একাধারে ভাহা ঘনীভূত না হইলে ভাহার মাধুষ্য এবং প্রভাব

बुद्धा बाब ना। वर्षन देश अवकार्य व्यक्तिश्व कार्य शक्तभाजी श्हेश शर्फ, खबन (करन (महे वाकित मचहे शार्यनीय हम, आव काशास्त्र छान नात्र না। অপর সহজ্ঞ ব্যক্তি রূপে গুণে শ্রেষ্ঠ হইতে পারে, কিন্তু অন্ধপ্রেম छाष्टारक मरक ना। रत्र व्यना शीह व्यनस्थ जानशास्त्र, यादारक यज , हेकू रणत्र छोटा पान करत, किन्छ कर्खना ब्लाटन। निरमय धनत्रावद व्यक्तिक महत्व श्वारात्र हात्म मर्साष्ट्राकारण जानवारम। अहे कना [া] ভাহার দেশ কাল পাত্র জ্ঞান বিলুপ্ত হইয়া যায়। ভূত ভবিষ্থ অগ্র পশ্চাৎ ভাল মন্দ ফলাফল দে ভাবে না। (আগে আপনাকে বিস্মৃত হয়, ওদনত্তর ৰাহাকে ভালবাদে তাহার গুণাগুণ অবস্থা সমস্ত ভূলিয়া যায়। সস্তোষিণী আপনি কি অবস্থার লোক, ১ সে বিধবা কি সধবা, না কুমারী; বাঞ্চারামের প্রতি ভাহার এরপ আসক্ত হওয়া উচিত কি না,উভয়ের মধ্যে কিরুপ সম্পর্ক, এ সকল চিন্তা ভাষার মনে কথনই উদয় হয় নাই। ভাষা সে ভাবিতেও हात्र मा, त्करण खापरवात्र छेपलिख প्रिमार्टिश हालिया पित्रा थान खित्रा छाल বাসিতে চার। ভাবিয়া চিঞ্জিয়া বিচার তর্ক করিয়া কেই কাহাকে ভাল वाजिए भारत ना। पाजन रेवज्यानिक (अम क्विन व्यामार्मत वाक्षात्राम পথিতের পঞ্চ পোষায়। প্রকৃত প্রেম অবত্রসমূত হেডুবর্জিত, ভাই। ভঙ दशास्त्र कल। यादात्रा देदात जुक-छात्री छादात्राख खात्न ना क्वन छात्रा चारम । ट्यायत पर्य दिन विधि दिनातात बदर माधातन लोकिक मौजित चछोछ। ध प्रमुगाइतक चछाए कदिशा (प्र मेख माजतकत नाम दिवका श्रम करत । कारे ध्यमत्रमण रेक्स्प्रेया शांन कतिबारक, "करव याद আমার ধরম করম, ককে বাবে জাতি কুলের ভরম, কবে বাবে ভর ভাবনা স্বরম, হায় স্থামি কবে হব সুরাচার।" রাধারুফের থোমে ভাই প্রচলিত দালাভ্য ধর্মত উপেক্ষিত হইয়াছে। বস্তুতঃ এ বিষয়ে বিচার कविष्ठ श्रात वन बादक ना, व्याकर्षन প্রলোভন কমিয়া साम ; उद्यन छेट्टा िकिरमानद्वत मवगुनक्क्ट्राचन नाभाव स्टेब्रा छेळे। (यश्रास छेल्ट्यानिए। रेक्टिनिर्द्धका, श्रकुष्टिशक अवका बादक त्यरे बाद्यरे देशात व्यादिकीय मृष्टित्शाव्य इद्र: (अभवस्तिय अरे माळ अमान, त्य मान इरेटन, अवेकी আমারই জন্য ঠিক করিয়া মাজিয়া খলিয়া মাপিয়া জুকিয়া কাটিয়া ছাটিয়া

ভগবান প্রেরণ করিরাছেন। এই জন্য দেখা বার, জাপাডড: বেখানে কোন সৌগাল্প্য নাই, বরং হঠাৎ জ্ঞান হর জনেক বিবরে বিস্কৃপ, সেখা-নেও প্রেম অস্কুরিত হইরাছে, যেন জলে অল মিলিরাছে। চুইটী আত্মা বিধাতার চল্লে ঘুরিতে ঘুরিতে আপনা আপনি এক আর্পার আসিরা ভাবে ক্লচিতে ইচ্ছার মিশিরা পিরাছে।

কিন্ধ এই পক্ষপাতী অন্ধপ্রেম আবার এক দিকে মানুষকে পশুবং করিয়া কেলে, এবং পরিপামে ঘোর নিরাশান্ধকারে নিক্ষেপ করিয়া চলিয়া বায়। কোন ব্যক্তিবিশেষের প্রেম মাজয়া বিদ্ আর আর সকলের প্রতি মানুষ উপাসীন প্রেমহীন হর, তাহা ছইলে প্রেমে ব্যক্তিরার ছেলে বটে। প্রেমের পক্ষপাতিতা ও অন্ধারার তাংপর্ব্য ছাইার ঘনীভূত অবস্থা দর্শন করা; এক আধারে ঘনীভূত হইয়া ভাহা জগংময় বিস্তার ছইয়া পড়া। মাহাতে বিভদ্ধ চৈতন্যের, নির্মাল বিবেকের ঘোগ নাই, অপরিবর্ত্তনীয় সার্ক্ষণেতির অনুমোদন নাই, তাহা প্রেম নহে, অবিদ্যার খেলা। বে প্রেম সভাবের সরসভূমিতে সঞ্জাত হইয়া দিবাজ্ঞানের অনুসরণ করে, তাহা অনভের নিত্যপ্রেমের অস্বীভূত; ভাহাতে ওয় নাই, বিকার নাই। তদ্বলম্বনে নিরাপদে প্রেমধামে উপনীত হওয়া যায়। প্রকৃত্তপ্রেম হেত্বিহীন হইলেও তাহা প্রসীর, সুতরাং পবিত্ত।

প্রেম এক বিকে অব পক্ষপাতী, অপর দিকে সেক্ষাবার চক্ষুদ্মান্।
আর কাহাকেও চিনিতে পাকুক না পাকুক, বাহাকে সে ভালবাসে ভাহার
প্রত্যেকে পরমাণ্র মধ্যে সে বেন অমুপ্রবিষ্ট হয়। অবভাবে আপনার
বান্ধিত বস্তকে দেখিরা সে প্রথমে বির্দ্ধ হয়, তদনস্তর তর বিভব্ধ
করিয়া ভাহাকে বুরিরা লয়, ভবিবরে প্রবিক্ত হয় না। কিন্তু সচরাচর
এই দোষটী ঘটে, যে এক ৩৭ ভালবাসাকে মোহ বশতঃ সে দশওণ মনে
করে। তবে এ কথা সভ্য, যে বাহাকে ভাল বাসিয়াছে সে ভাহার কভাবর গঢ় অভ্যন্তরে প্রবেশ করিয়াছে। সেবান হইতে কেহ ভাহাকে
বিদার করিতে পারে না। নরনারীর অক্তিম প্রেমের ভিতর প্রেমিকচুড়াম্বি ভ্রবিনের অনেক কৌশল চাড়ুরী আছে। বনা ভিনি। ব্লিব্রী ভাহাকে! বিনি প্রেম্বছনে বারিয়া চুইকে এক করেন।

সংস্থাবিশীর এ প্রেম কোন্ আছীর, তাহা পরে আনা বাইবে; সদোব কি নির্দোর, সরল কি কপট, সার্থমূলক কি নিঃমার্থ, গৈছিক কি আব্যান্ত্রিক, কি লুরে মিশ্রিত, তাহাও নির্দারিত হইবে। আমরা, লোকের অভিপ্রারের ভিতর প্রবেশ করিতে পারি না। কেবল এই আনি, মানুর অবস্থার দাস এবং অবস্থার প্রভু; দাস হইরা অব্যে, প্রভু হইরা স্বর্গে হার। অসার অনিভা অভ অনতে অন্মিয়া শেষে তাহা হইতে সে সার নিত্য এবং পরল হইতে অমৃত উদ্ধার করে। ইহারই নাম মানবস্থাবের বিকাশ এবং উর্ভি। অব্বা পশু হইতে মানব, মানব হইতে দেবতার উৎপত্তিক্রয়।

नकावजी कूनवाना लाकजरत श्वस्तात पूर्वभनीत जानवानात्क अज দিন ক্রমাগত চাপিয়া চাপিয়া ভাষাকে ফীরবৎ ঘন করিয়া তুলিয়াছে। কোন ক্রপে ভাষা বাহির হইবার পথ পার নাই। প্রাণ ফাটিরা, চকুছার केमराहेन कवित्रा व्यव्यक्तरण ममस्य ममस्य छात्रा वरक्तव केशव विद्या विद्या ষাইও ৰটে, কিন্তু ভাহাতে গাঢ়ভা বে কিছু কমিয়াছিল ভাহা বোধ হয় না। ৰুবং আরো খনতর হইয়াছিল। বাহির হওয়াই বাহার নিম্নতি, অভারের উদাম ভিতর হইতে এক দিকে বাহাকে ঠেলিয়া দিতেছে এবং বাছিরের আকর্ষণ অপ্র দিক দিয়া বাহাকে বহিন্দুথে টানিয়া আনিতেছে, তাহার উপ্র र्जाधक पिन ठापाठाणि कतिरल पाकित्व (कन १ छादाव अछि । ताथ कतित्वहें ৰা কে ? সচৰাচৰ ইহাতে মানুষ পাপল হইর। যায়। সম্ভোহিণীৰ প্রেম গ্রাছ খেষ সীমায় আসিয়া পৌছিয়াছিল, একণে ভাষার কোন একটা বিভিত্ত इक्श छेडिछ। प्रভाবের সমস্ত পৃতিশক্তি এবং ক্রিয়ার সমতা बुका मा क्टेरल कथर मरमात हाल ता। कि चाउत कथरा, कि विट क्रिंगाए, बहेद्वल সংগ্রাম এবং সামঞ্চ্য ক্ষতি ও পূরণ চিরকাল চলিয়া আসিতেছে। সজ্যে-विशोब श्रुपतारवन वीव लाजिया निकाल दहेरव छाटांब परवान अकरन नम्न-चिछ । भर्त्ताष्ठनिः मन्ति षठिनी मन्त्र भारत्र भारत्र वाश छिनत्रा, पृतित्रा कितित्रा र्वयन जालमाव ल्या चारनव किरक नामित्रा जारेरम ; कथन मुख्कांव ज्ञान्तव ছিল্লা, কথন বা শৈল্মাল। উল্লেখন করিলা চলিলা বাল, নর নারীর জানাত গাঢ় ভালবাসার লোভ ভেমনি বিপুল বিশ্ববাশির মধ্যে আপনি আপনার প্র क्षित्रों नत्र । अत्याविषेत्र ध्यमनया वाशातास्त्र धीक्षित्रमात्र महत्त्र काल नर्स कि लगानौर्ण चानिका मिनिकाहिन छात्राव चर्चश्वरत चामवा बक्स्प প্রবৃত্ত হইলাম। লীলাবিহাতী প্রেমময় বিধাতার ইহার ভিতর কত রলের (थला, चिक्रा । भागन निवस चाह्य छाहा (मधा शहेक। कि चार्य পুরাণ শাল্র রচনার জন্য তিনি এই কন্যার হাদরে প্রেমল্রোড: উৎসারিত করিয়াছিলেন ভাহার তত্ত্ব মনোবোগপূর্দাক আমরা পাঠ করি। আউীর हेजिहारम बदर शरकाक नव नावीव कीवनकाहिनीव भवनमव लोकिक चछनाताकीत जिल्हत बहेटल काला काला आकर्षा ज्ञाल जिलि अमूड डेप्ला-দ্ন করিয়াছেন তাহা আমর৷ দেধিয়াছি; একাণে বাপ্তারাম সভোষিণীর চরিজে তাঁহার কি মঙ্গলসকল সংসিদ্ধ হয় তাহা দেখিবার জন্য প্রস্তুত ছই। পুরিবীর অনন্ত কার্যাকারণবিমিশ্র বিচিত্র ঘটনাবলীর হুরবর্গাঞ পভীর অন্ধকার গুহামধ্যে লুকারিত থাকিয়া ওগবান প্রজাপতি নিড্য নিড্য নব নব কার্য্যের অনুষ্ঠান করিতেতেন। তিনি পুরাতন নিজ্জীব অবস্থার ভিতর হইতে নৃতন সৃষ্টি বিকাশ করেন, এবং পৃতি গলমা গলিভ পদার্থ-वाभिक मधन कविया उद्याव। अकृष्ठित विवनवीनषु अवर उद्यापनी अकित्क পরিপোষণ করিয়া গাকেন। তাঁহার মকল নির্মে সরস ফুলুর ফল ফুলে শোভিত ভকুলভাগৰ পাৰ্থিব জ্ঞান দুৰ্গন্ধময় ধনিত ঘূণ্য পৰাৰ্থ ছাৱা नृष्टिका लाल इस । रुष्टिक किनि नृराजन हरेल तन ना; नृराजन कहे প্রতিনিয়ত নবভাবে পরিণত করিতেছেন। প্রেম এই নবীনত্বের চির-लाम्छी। अनवान (लामप्रज्ञान, काहाउदे (तम शकार्व मसूया नवस्रोयन नाछ कतिया वहविध चछेनात छेशलाक अनस्य कान छीहाट नव मन সৌন্দর্যা সুধা সভ্যোগ করিতে থাকে। মানবজীবনের উপন্যাসের ভিতর फिनि (कमन नौला विशव करवन, छाटे एमपारेवाव बनारे अहे "भवट्न অমৃত" রচিত হইতেছে।

তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

প্রেমাৎপাদন।

বাঞ্চাবাম বছ তৃঃধ কট্ট সহিরা মাতৃল গৃহে আসিরাছেন, এ কণা প্রবংশ সকলেই তাঁহাকে মংখাচিত সমাদর করিতে লাগিল। এক বাড়ীতে ভাই ভাগিনীর ন্যায় তিনি এবং সজোবিণী অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। নিশানাধ এক জন করিতেন। তাহাদের অবস্থানে বাড়ীর প্রী ফিরিল। নিশানাধ এক জন সংস্কৃতমনা উন্নতিশীল শিক্তিত হিন্দু, পড়া শুনার বেশ চর্চা রাধেন, বাড়ীতে পুস্ক কাধারে অনেক গুলি সদ্প্রস্থ আছে, এই জনাই ওখানে বাঞ্চান্যের থাকিবার এক প্রধান আকর্ষণ। নিশানাধ বদি স্প্রস্থিত পারেন, উাহার পালিতা কনাটো বিধবা, তাহা হইলে চাই কি বিদ্যাসাগ্র মহাশবের প্রবৃত্তিত বিধি অনুসারে তাহার বিবাহও দিতে পারেন। কিছু সে বিষয়ে শ্বির দ্বিন্যু সংবাদ এখনো প্রান্ত পাওরা বার নাই।

সজোবিধী গৃহকার্য্যে অনেক সহার্থা করে; লেখা পড়া শিক্ষা জ্ঞানামুশালন বিষয়েও ছাহার বেমন অমুগাগ, আবার রক্ষন পরিবেশন, গৃহমার্জ্ঞন,
জলধাবার প্রস্তুত করা, জ্রবাদি গোচান এ সকলেতেও ধরেও আছা এবং
ভক্ষতা। সেবা উপলকে সে বাপ্পারামের নিকট বার বার আসিত, এবং
ভাহার প্রতি আপনার ওপ্ত প্রণর গোপনে মনে মনে চরিতার্থ করিত।
সক্ষোবিধী বাপ্পারামকে দাদা বলিয়া ভাকে, কলধাবার দের, তাঁহার অনীত
প্রতিলি টেবিলে সাজাইয়া রাখে, অন্যান্য ফাই ফরমাস থাটে, কখন বা
পড়া বলিয়া লয় এবং জ্ঞানগর্ভ কথা প্রবণ করে। এবস্থিধ নানা কার্য্যোপলকে নানা সময়ে সে জ্পরের বাপ্পনীর বাপ্পারামকে দিবসের মধ্যে অনেকবার দেখিতে পাইত। যতই কাছে আসিত, কথা কহিত, এবং দেখিত,
ভতই আপনাকে সে কৃতার্থ মনে করিত। বিশেষ প্রণর্থাকে অপরের
অক্ষাভসারে সন্তোধিনী বাপ্পারামের সেবা করিতেন, ভিনি ব্যক্তীত ভাহা

আন্যে আনিতে পারিত না। এইরপে সেই প্রেমাছ্রজা কামিনী আকার ইলিতে, ভাব ভলিতে আভবিক অনুবার প্রিলনের সমীপে ব্যক্ত করিতে লাগিল,—মোহাদ্ধ হইর। আপনাকে এক প্রকার ভূলিয়া গিয়া ব্যক্ত করিতে লাগিল। তাহার প্রেম এমন এক আধারে গিয়া ব্রকিয়া পড়িয়াছে বে সেধানে সহজে চরিতার্থ হইবার নয়। হঠাৎ বেধিলে মনে হয় বেন সে আকের ন্যায় পথ ভূলিয়া এখানে আসিয়া পড়িয়াছে। কারণ, বায়ায়ম সে তত্তে এখনও সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ। কিন্তু এখানে উভয়ের মধ্যে অাকৃতিগত একটা বিশেষ উপযোগিত। ছিল, নত্বা এমন ঘটিত লা।

বাপ্তারাম মনের যে অবস্থা লইয়া পিত্রালয় পরিত্যাপ করিয়াচিলেন সেই অবভাতেই আছেন। তিনি স্বয়ংই এক অভিনৱ রাল্য, অপরের মনোগত ভাৰ বুঝিবার ঠাঁহার অংবসর বা প্রবৃত্তি নাই। যে বি**স্তীণ** চিস্তারা**জ্যে**র সামান্ত প্রদেশে গিয়া তিনি পড়িয়াছেন তথা হইতে কত দিনে বে গৃছে প্রত্যাগমন করিবেন কেইই বলিতে পারে না। তবে সভাবের কার্যা একে-বারে তিনি বন্ধ করিতে পারেন নাই। তৃঃধ বিষাদে, বৈজ্ঞানিক চিম্বা বিতর্কে ভ্ৰম কঠোর হইয়া বেলেও উপকারী বা অনুগত জানের প্রতি ভালবাসা ক্তকটা ছিল। অনাথা বলিয়াই হউক, কিন্তা বুদ্ধিমতী শাস্তপভাবা গ্ৰিয়পৰ্শনঃ বলিয়াই হউক, সংস্থাধিণী তাঁহার লেহভাগিনী হইয়াছিলেন। কথাবাতীয় চাল চলনে ভাষা প্ৰকাশ হইয়া পুড়িত। কিন্তু সে স্বেহ ভালবাসা সন্তো-াষণীর প্রেমণিপাসার ষ্বার্থ উত্তর স্কুপ নতে, তাংকে সাধারণ ভদ্তা বা ছয়াশীল ডার পরিচর বলা যাইতে পারে। কিন্তু একটু বিচকণভার সহিত সৃত্ম দৃষ্টিভে দেখিলে বুঝা বায়, উভয়ের প্রকৃতির মূলে অনক্ষিত ভাবে আরও কিছু নিগ্ট প্রেমাকর্ষ এবং মিলনোপ্রোগীতা ছিল, তখন কেহই জানিতে পারে নাই। সভোষিণী সাহস করিয়া স্পষ্টরূপে (काम कथा विनास भारत ना, भारतिस्थ कुडकार्य घरेख कि ना मत्लिए; ুকেন না বাজায়াম তথন যে বাজ্যে বিচরণ করিতেন তথার শ্রেমতক্তের কোন সংবাদ বা রসাসাদ পৌছে নাই। সন্তোবিণী বে কিঞ্চি শ্রীতি খেছের চিত্র দেখিতে পার ভাষাকে আপনার ভাবের প্রতিরূপ ভাবিরা মনে মনে आविष्ठ रहा। क्लाउ: राक्षाताम जाशांदक ठात ना हेशा दम क्वांना विचान করে নাই; বরং ইহাই ভাহার স্থৃচ সংস্কার যে আপনি থেমন ব্যাক্ল পিশাস্থ সেও তেমনি; বেশী না হউক, সমান সমানভ বটেই। অনেক কিনের ভ্রান্ত সংস্কার এইরপে ক্রেমে বদ্ধুশ হইরা আসিয়াছে, সে ভ্রম দ্ব হইবার কোন উপার ছিল না। বলি কথন নিরাশ অবিধাস আসিয়া চিতকে আন্দোলিত করিত, ভাহার বিক্রমে প্রভাক ঘটনামূলক অভ্রান্ত প্রমাণ সজ্যো-বিণীর হস্তুগত ছিল। কার সাধ্য সে সমস্ত প্রমাণ কেহ বঙল করে? বাধারামের প্রতি ভাহার ভালবাস। হালাত সংশ্রমহিত ভ্রানভূমিতে প্রভিত্তি। মিধ্যা ভ্রানে মামুষকে কভ দূর অঞ্চ করিয়া রাবে ভাহা আমরা ও স্থলে দেখিতে পাইলাম।

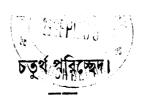
এই ভাছ বিখাপ এবং তাহার ক্রিত জ্বভান্ত প্রমাণ দর্শন করিয়। সভোবিশীর সাহপ ক্রেমে বুদ্ধি হইয়। পড়িল। কোন্দিন মুখ কৃটিয়। বলিয়া
কেলিবে কেলিবে এইরপ মনে করে। সময়ে সময়ে জন্য মনজ্বের মুড
বাল্লারামের প্রতি চাহিয়। থাকিড, চোখো চোঝি হইলে নয়ন ফিরাইয়া
লইড। বাল্লারাম যদি কোন কর্বা বিভিন্ন, ভাহা সে বিশেষ ভালবাসার
প্রমাণ করেপ মনে করিয়। কোন কর্বা। বলিছেন, ভাহা সে বিশেষ ভালবাসার
প্রমাণ করেপ মনে করিয়। লইড। এরপ প্রেমক্রনা এক প্রকার রোর
বিশেষ, স্ত্রৌ পুরুষ কেহই ইহার হস্ত হইতে নিস্কৃতি লাভ করিছে পারেন
না। কড যুবা এ জন্ত পারল হইয়া নিয়াছে। পথের ভিধারী হইয়াধ প্র
রাজকনার পানিগ্রহণ করিছে চায়।

এইরণে একাধারে নির্কিছে সেই প্রেমাসুরাগ দিন দিন পরিবর্ধিত হইতে লাগিল। মনের একটা বৃদ্ধি প্রবল হইলে বৃদ্ধি কল্পনা ইচ্ছা উৎসাহ আলা সমস্তই তাহার অধীন হইল। পড়ে। এক আলোকে সমস্ত জীবন আলোকিত হয়। তদব্যার সে আপনি বেমন অনাকেও ঠিক তেখনিটী মনে করে। কিন্তু আশ্চর্যা এই, যে এত অমুবাগ, অলাসুরক্তি সন্তেও সন্তোবিশীর ক্ষয় বেন থালি থালি বোধ হইত। বিশাসের ভিতর আবিশাস, আশার ভিতর সংশার, উৎসাহের ভিতর নিরাশা ল্কান্তিত থাকিয়া বেন ভাহাকে এক একবার কাতর করিয়া ক্লেভিড। অভাব আপনিই প্রমাণ করিয়া থিতে লাগিল, বে ভাহার ভাহয়ভারীর প্রর বালাবান্তের ক্লেজনাট্রান্ত

ভবনো স্পর্গ করে নাই, উভয়ের মধ্যে এবনো সমগ্রহণতা আয়ে নাই।
ভবালি কি মোহ, চ্রাশা মিধাা করনা আসিয়া আবার সে সমত অভাবকে ভুলাইয়া দিত। এ দিকে এই অবদ্যা, অপর দিকে সালামাম একাকী
এক নির্জন গৃহে বসিয়া গ্রন্থ অধ্যয়ন করেন, বিচার চিন্তা করেন, মধ্যে
মধ্যে সেই প্স্পোদ্যানে গিয়া বসিয়া বাকেন। জাঁহার জনা একটী
জীলোক আকুল হইয়াকে, তৃংধে মরিভেকে, ভ্রন্থমধ্যে ঘনীভূত প্রেন সঞ্চর
করিয়া রাখিয়াকে ইহার সংবাদ ডিনি কিছুই আনেন না। সর্বাদা ধেন
উন্মনা, চিত্র বেন বিজ্ঞানসমূল্যে নিম্মা; আত্মবিস্মুত হইয়া ভল্পচিল্ঞান্তোতে
নির্জয় ডিনি ভাসিতেন।

বাপ্পারামের আন্তরিক প্রকৃতিতে বেমন, বাছ আকারেও তেমনি কিছু বিশেষত্ব ছিল। একাণে তিনি ষৌবনের পূর্বতা প্রাপ্ত হট্যাছেন। শ্রীর ভুক্ত স্বল নিকলক, মূর্তিটী ঝবি তপসীর নার প্রশাস্ত সৌষা। সমস্ত অক প্রত্যকে শান্তির সিন্ধপ্রতা বিবাহিত। এমন এক প্রকার অকৃত্রিম নৈস্থিক দৌক্ষ্য ভাঁহার ছিল যাহা সচরাচর অন্যত্ত কর্মন মুলভ নতে। ইহার নিগৃঢ় ভাংপর্যা এই যে ভিনি নিজে আংনিতেন না কেমন তিনি সুক্ষর পুরুষ ; বেছেডু, শরীরের ব্যর লইবার উচ্চার অরুভি এবং অবসর ছিল না। এই জনা ছাহার আকর্ষণ অধিক। বিলাগী सवा যুৱক বহু ৰত্বে আপনার দৈহিক শোভার উৎকর্ষ সংগন করে, ভারাতে এই ফল হর, বে বাহ। কিছু ভাহার স্বাভাবিক শোভা সৌন্ধ্য থাকে ভাহাও বিকৃত হট্যায়ায়: বস্তুত: আপনি আপনাকে বেরপ তুলর শ্রীমত সে মনে করে তাহা নর, বরং ভাহার বিপরীত। "আহ। আমি কেমন কেবিতে স্থার ৷ এমন মূধের শোভা আর কি কাহারো ভাছে ৷ শোবাক পরিক্রি আমাকে বেল দেবার !" এইরূপ ভাবির। বে ব্যক্তি পূনংপুন: আপনার शादन हात्र, माना श्रकारत हल कितात्र, (करलहे आत्रनात पूर्व (शर्व, फाश्रक , (त्रोवर्ष) पर्णात चारुर्वन ए७३। वृत्त शोकूक, मान द्वात एव. नव्या एव। एपरा-ইবার প্রবল পিপাসাই ভাহার সৌন্ধ্য্য বিনাশের ভারণ। সে উপহাসের পাত হুইর। পড়ে, বে হেড়ু ভাষার অভিগ্রায় মন, অহস্তার চুর্সাসন। ভাষার ननार्ड मुक्त्रकान कनरका ताथा व्यक्ति करता । वक्त पृत्रिक श्रेतन मध्य

কৃত্রিম বেখ ভূষার বেমন শরীরের লাবণ্য রক্ষা কর। বার না, ভেমনি মধে यिन नीत कामना अनाशु कन्नना यनवजी थात्क, जारा रहेतन वानि বাশি ভুগৰি তৈল হার৷ কেশ বিন্যাস্ট কর, আরে নানা রক্ষ ভক্ষ করিয়া पर्शात मुंबरे (पथ, यात विकित रमन ज़बलरे यक्त माजार, किहुए है আপুনাকে প্রিয়দর্শন করিয়া তুলিতে পারিবে না। বাঞ্চারামের ভিতরে নির্ব্বাণের সাম্য এবং নৈতিক নির্মাণত। চিল: ততির তিনি আপনি শুশার कि ना जाना क्यानिएन ना ; आनात भतिका न आज्यतिकीन ; विजानातिजा আজুসংখ্য প্রভৃতি আভাস্তরীণ পবিত্র প্রভিত। তাঁহার এই পবিত্র সৌল-ষ্যোর নিদান। তরলমতি চঞ্চলিজ্রি যুবক্রণ তাহা কোথার পাইবে ? মুভোবিণীর চক্ষে বান্ধারামের এই অভিনব নৈসর্গিক সৌন্দর্য্য বিশেষ আকের্বণের বিষয় ছিল। তিনি ইহার বিনিময়ে মহার্যা রত্নাভরণভূষিত রামপুত্রকেও প্রার্থনা করিতেন না। কিন্তু আর এক দিকে দেখিতে গেলে সেই প্রেমোআছিনী ভূদরীয় পক্ষে ভালা দারু পুত্রলিকাম্বরপ; কেন না, ভাহার সৌন্দর্য্যের মধ্যে প্রেম্রস সঞ্চারিত হর নাই। সভোষিণী ষাহাকে দুরু ছইতে ভাবিয়া তুথা হইতেন, কলনার বিচিত্র বর্ণে চিত্রিত করিয়া প্রময়সিংহাসনে মাহার পূজা করিতেন, তাহাকে চল্লের নিকট পাইয়াও তাঁহার শিপাসা মিটিল ন। ; অপিচ ভাহা বর্দ্ধিত হইয়। উঠিল। কিরপে এই বিজ্ঞানরস্পিপাত চিত্তানিম্ম ভ্রেযুবার ভ্রমান্ত প্রেম্বুসাভিষ্ক হয় তাহাই এখন তাঁহার ভাবনার বিষয় হইল: ডিনি क्रीन সমস্যার মধ্যে পড়ির। বেলেন। প্রস্তরভূমিতে কৃপ খননের ন্যার চুদ্ধ কাৰ্যো ভিনি বতী হইলেন। অতি উৎকৃষ্ট নিৰ্মাণ শীতল প্ৰেমবারি 🕒 ভাহার মধ্যে আছে, কিন্তু অনেক পভীর নিমে; ভভ বোগে ভাহা উৎসা-विक क्षेट्र अ वर अक बात छेरमाबिक क्षेट्रल व्यात छात्रात राम महत्व . शाबिटर मा।



বশীকরণ মন্ত্রণা।

নিশানাথের ভবনটা প্রামের মধ্যে অনেকের বলিবার দাঁড়াইবার থেলা পুগল করিবার ছান। আক্ষেপ বৈদ্য কায়ছ নবশাধ প্রান্ত আবাতির ছঁকা मतकाती रेवर्ठकथानात्र सरत सरत मालान चारछ। रेवकारल छाम लामा সভরঞ ধেলার সময় বধন বছ লোক একত্রিত হটয়। স্বস্থ ভাতির ছঁক। ধরিরাধুম পান করিতেন, তখন গৃহটী লোকোমটিজ্ এঞ্জিনপ্তের মত শোভাধারণ করিত। ধুমরাশিতে আকাশ আছের হইত। বাড়াটী সাধা-इन সম্পত্তি, নিশানাথের আহে তুইটী ভ্রান্ত। তথার থাকেন, তাঁহাদেরই উৎসাহে এবং উল্যোগে ভগায় প্রতি দিন চুই এক সের তামাকু. পোড়ে। দিনে রাতেত ধেলার ধূম এবং ডামাকের ধূমে মজালিস সরগরম। আনমের ষ্ত নাধেরাজ্বভোশী পেন্সেনভোগী, অংলস কুট্ম্ব এবং পরের গণগ্রহ উত্তর-স্তুরাদিপের সেই আড্ডা। কখন দলাদলির ঘেটি, ফলাপের গল, কখন প্রনিকা, কখনো ধর্মতের তর্ক বিভর্ক, শালিবি মধাম্ম বিবাদ মীমাংসা भव तकम कथातरे चालाहना ख्याग्रह्म। नियानाथ स्थारत्वे मदन कथा-চিং বোগ দান করেন। ভিনি কি নাএকটু বিদাঃ∉সের আধাসান পাটলা-হেন, সুতরাং অবিদ্যার অমুচরগণের সহবাস তাহার ভাল লাগিবে কেন ? ৰাহাতে দেশের কোন ব্যার্থ হিত ছর, লোকদিগের জ্ঞান নীতির প্রতি আছে: বাড়ে, সামাজিক দৃষিত রীতি পদ্ধতি উঠিলা বাল, এই চেটাল ডি<u>লি</u> কিরিভেন। এরপ রস্থান হুল। আমোদ, বিশেষতঃ দায়িত্বোধবিহান ক্ষমার ব্যক্তিক্রির সঙ্গ তাঁহার ভালই লাগিত না। যে স্কল যাক্তি রুখা প্তলে সময় কেপৰ করে, অসার চিস্তাহীন করঃ কয়, গেবা পড়। শিবিয়াও याहातः आभाक्षिण वर्त्वदत नात कान कानेति ; बाहात्मत आत्मात्म वृद्धि বিভাব পরিচর পাঁওবা হার না, রসিকভার কেবন পুরাজন অসভা কৃচি গুৰুলিত হয়, অৰ্থাৎ বাহাদেৱ সজে বলিলে বা কথা কহিলে জ্ঞান কি ভাৰ

কোন বৃত্তিঃই কুর্তি জাল্ম না, ভাহাদের সহবাস নিশানাথের নিভাস্ত অধিহাছিল।

বহির্মাটীতে বেমন পুরুষদের, অভ্তপুরে তেমনি প্রতিবাসিনী মহিলাদের পতিথিবির ছান। ভাগদের ভিতর আশিক্ষিত। হিলুর মেরেও আসিড, মধ্যে মধ্যে খিষ্টীয়ান এবং প্রাহ্মদের মেরেও আসিয়া জুটিত, এ কাল এবং সে কাল উভয় কালের প্রতিনিধিগণ মিলিভ হটয়৷ নানা বিষয়ে চর্চচ করি-ভেন। তাঁহাদের বাক্যালাপের স্ময় মনে হইও যেন অভঃপুরে হাট বাঞ্জার বসিয়া গিয়াছে। সকলে মিলে এক সল্পে কথা কহা মেয়েদের রোগ। ष्पापनात कवार पाँठ कारन। अक बिन मटलाबिनी शटर रिम्बा श्रीव यरनावथ निक्षित जेशात्र किला कतिराज्यान अवश विदालिक मान चन चन ही वी নিখাদের সহিত অভির ভাবে কখনো বসিতেছেন, কখনো উঠিতেছেন. बक बक रात ब फिक् । फिक् भएनकानन कतिराउद्दान, बमन समग्र तमम् अती এবং চপণা হৃদ্দরী বেড়াইতে আসিল। চপলার কোলে দুই আড়াই ৰৎসর বরসের একটি দিবা হাউপুট কুলর ছেলে। ঠিক যেন যশোদার **च्याल मोनमानः। त्रम्भतो अधरीका, ७**वर विश्वा। **छा**हात मृर्खि अधन এক নৃতন রকমের যে বয়স কড ভাহা ঠিক করা যায় না। কথনো त्वाब एव नकारमार्क्स, कथन वा हिद्यालात कम । इंदाना हुई खरन मत्त्राविशीय निकृष्ठे व्यामिया कथावाला कावल कवित्र ।

স্তোবিশীর একই চিডা, একই ভাবনা দিন রাত্রি মনের ভিতর জাগিততেছে। তিনি ঘুনাইলেও চিডা কিছুডেই ঘুনাইতে চাহে না, সে সারা নিশি আগিরা উাহাকে সপ্র কেবার, প্রাতে শব্যা হইতে উঠিতে না উঠিতে আহ্বে আসিরা দাঁড়ার। কধন বা রাত্রি হুই প্রহরের সমর মাধা গর্ম কবিরা দিরা ঘুম ভাসাইরা উমাদিনী দানবীর বেশে মানসচক্ষের সমক্ষে উপস্থিত হয়। এই চিডাস্কেনী নানা মূর্ত্তি ধারণ করিতে ভানেন। ভাকিনী বোগিনী পিশাচিনী সাজিয়া বিরহিণী কামিনীদিগকে শইয়া নানা রক্ষরসে ক্রীড়া কবেন।

রসম্প্রত্তীকে দেবিরা সভোষিণী ঈবজাস্যের সহিত বলিলেন, "মাসি, তুষিত অনেক প্রকার-তত্ত্ব মন্ত্র আন, আনার ছালার মনতে তানি ভাল কবিবা ছিতে পার ? আহা ! খর সংসারে আর জাঁহার মন নাই. আমোদ প্রমোদ ভালবাসেন না, দেখিলে বড় চুঃৰ হর, পড়িরা পড়িরা মারাটা বারাপ হটরা পিরাছে, কেবলই বই আর বই, আর কিছু না।" বসম্ঞ্নী সে কবা শুনিরা পস্তীর মূর্ত্তি ধারণ করিলেন। ভিনি বে এক অন শুণশালিনী উচ্চ ছবের স্তীলোক ভাহার প্রমাণ পাইরা মনে মনে ক্ষীভ হইছে লাগিলেন।

त्रमम्बरी बारमत मर्था अरू कन विरमय श्रीतिष्ठा। उन्न मन्न स्मारू कतिजा (म व्यत्निक कार्ति। क्षेत्रि वर्षि दर्शि द्वावनाजात वात्, क्षेत्रिक क्षेत्रक বারে পক্ষতে মিশিয়া গীত গায়, রাত্তি জ্বাগিয়া কুফলীলার কথা কর। ভাহার পায়ের রংটা বেশ ভেল চুক চুকে, গলায় এক গাছি সোণার স্থানা, হাতে রূপার তারা, বঁ⊨পারের বুড় আফুলে একটা ভামার আংটী, পরিধান এক থানি দিব্য ধোপ ধাপ সৃদ্ধ শাদা বৃতি, নাকের উপর প্রতিপদের চাঁদের মত সক্ল রেধার তিলক খোভমান। মুধ থানি চতুকোন, মাধার চুলগুলি কাল কৃচ কুচে, এক পারে একটা গোদ, বঞ্চী অভি বিস্তুত, ভাহাতে উল্কির ভাগ, চকু তৃইটী পটোলের ভাই আলুচেরার মত গোল পোল। পুরুষ মালুবের মত ভাবা হঁকার গড় গড় শব্দে সে ভাম কু বার, कि इ कि इ व्यटिक्षित (भवत अ व्यक्तान दिल। क्रीत्माक व्यक्ति भूक्र স্মাজেই ভাহার অধিক পভি বিধি। গৃহপালিত আমাতা, অলস বেকার कू हेय, हाक तीत है स्वारत, अरू महा नत, क्षारमंत्र नाणिय अ वर्ष कात एक সক্ষে ভাষার বেশী भागान পরিচয়। কবে যে সে খাবাগী বিশ্ব इरेब्राइ, जाहा काहारबी मरन भएए ना, अरे कारबरे हिब्रकान मकरन ভাষাকে দেখিয়া আসিতেছে। আসে वि চাকরাণীর কাল করিও, আর গরু পুবিরা হব বি বেচিত, একবে মধ্যে মধ্যে ঠিকে ঠাকার কাল করিয়া (वड़ात, कथन वा शिनि कानटड़: क्षति कटत: क्रेंचराड़ी एस करा, नव्यविद्यादिका क्रमात अधिक चलुबगुट्ट वाल्या, गृरस्था वर्षे सित कार्ट्स नम करा शान नाखरा, चहे कालीत मयम खूडिया (मध्या, এই ममल कार्या स्म ঁবিশেষ পটু। টোট্কা টাট্কি ঔষধও কিছু কিছু স্বানিত। বেশ চৌকল लाकी। विनि वज वज लाक (कन एकेन ना, उत्रमुश्रतीय क्यांत कार् পভিলে তাঁহাকে আর শীজ বাড়ী ফিরে বাইতে হইবে না : করার করার

कविश्वा कीशास्त्र मरलव मरथा छाशाबा महा अन्त त्वाल वांधारेश विश्वास्त्र । কোমল করিবার কালে রসম্ঞ্রী সে কথাটা বলিতে ছাড়িল না। খুব অহকা-Can महिल विनिन, "क्टना, (छात्रा कि चात्र शिष्ट काँक कतिम ! (मर्थर्स रा. আমাদের অমুক মহাশরের পারের তলে ভোদের কত বিক্ষি পড়ে গড়াপড়ি मिटक ! किरमत अब वड़ारे ! याक् ना चात्र किছू मिन, ट्डाएमत मनटक ছল খোষপাড়ার নিরে গিয়ে উপস্থিত করব। শ্রীকৃষ্ণ মদনমোহন শীঘ্র আম -শের গোত্র বৃদ্ধি করুন। কেন মিছে চালভাজ। চিবিয়ে মরবি, ভোর भागीतक वन्तर या, व्यामात्मत्र कात्क अत्म अक्ट्रे तमत्त्राहात उम त्थतः (वन আৰ ঠাণ্ডা করে যার। আহা ! হা ! তোলের লাভ কুল হারিয়ে কি নান্ত-নাই ছলো। ভোৱা বাঁডের গোবর হরে শেষ রইলি। ব্রহ্মসভার বারা বিদ্বান জ্ঞানী ভজ তারা আমাদের দলে মিশে গেল, কেন আর नाज्रितर् कर बन रजाता वारेरत পर् पाकिन् ? जार, जार, त्राशक्क ভলবি, সুথে থাক্বি। আভ কুন সব ফিরে পাবি। "লোকের মধ্যে লোকা-চার, সৃদ্ গুরুর কাছে স্বাচার।" ভোবের ব্রহ্মস্ভার এত কার। কাটি হর रकम ना ! बाज (भारत शांतरत्र हिन् वतन वृत्ति ! बामारहत शक्र एक-बादा बक हिन निर्देश रहरणे चानित्र, कछ स्थादात्र छ उस, कछ नीता इस्तत्र इक ; कछ चानत्मत्र वहा, कछ शामित हहा। ; शटछ शटछ वर्त ।

সকল রসের সার কৃষ্ণপ্রেমামৃত।
রাধারাণী বার লাগি সম্বাই ভ্রিড র
অকৈডর কৃষ্ণপ্রেম শেরাকুলের কাঁটা,
বেন কাঁটালের আঠা;
ওক্তবন্ত নিত্যধন আট ঘাট আঁটা।
বংমহলে রসের মাণিক জনে অন্ধ্রনারে।
সহজ্ব সামূহ বিনা সেখন কে চিনিডে গারে।
সেকি সহজে বেলে;
উদয় হর ডড বোগ পেলে।
পুরুষ এক্ডি সুর্ল মুবল মুবডি,

21261 2742 Zu

জুড়ায় নয়ন, कति प्रवर्धन ভাষা ভিবা অপ্রপ।

প্রেম্বদে গলি.

রসের পুতলী,

करत्र (कली तुमारानें ;

সেরপ ভ**ব্বি**য়া, আনক্ষে ম্বিয়া চিরত্বধী ভক্ত গণে।

রুপাই জ্লনম,

धत्रम् कत्रम्

समि नः मिलिन छात्र ;

কি হইবে গভি, ওরে মূঢ্মভি

হার হার মরি হার !

(গীড) "প্রেমের কথা বল্লে কি হর, ভন্লে কি হর রে। সাধু গুরুর করণ বিষম দায় রে। বেমন মড়ার উপরে मड़ा (त, जाता कुक्त मड़ा, (शमकरन को बात (त।"

তুমূল স্বপড়া করিয়া, ছড়া কাটিরা, পান পাইয়া লেয় রসমূঞ্জীর রাপের क्षेष्ठ फुकान किछू नवम निष्ठ । उसन त्र बाख बादव हननाटक हुई बक्टा উপদেশ पित्रा जारात मनरक ठीका कतिवाद रुष्ट्री शारेल। जलना व्यविधा ভনিয়া অবাক হইলেন, তাঁর কোলের ছেলেটা ভর পাইরা কাঁদিয়া উঠিল। রসমুঞ্জরীর কি দুর্জ্জর প্রভাপ ভাষা ভিনি বুঝিতে পারিলেন।

(य সমরে উভয়ের মধ্যে বোর্ডর তর্ক বিভর্ক বচসা হটভেছিল, ভং-কালে সভোষিণী বসনাবৃত মুখে মৃতু মৃতু হাসিতেছিলেন। অভঃপর তিনি তুই জনকেই বিনয় ৰচনে বলিলেন, "ভোমরা ভাই অমুধ্রত করিয়া কাল धकवात क्षम, मकरल कक मरण प्राप्तात कारण वार, क्षम (जावारणत कात कछ विरशाब (बीफ जाहा (बचा बार्टन।" जनम मकलबर मृत्य शाम वाविक रहेन । मरकारियो तम्मुक्षतीरक वनिरम्म, "मामि, रणामारमन अकते। तमुन ুলীলার গান গাও না ভলি। রসমুঞ্জী গলা কাঁশাইটা গান ধরিলেন।

"আমার মন কি বেতে চাও, মধা বেতে আন্তপুরে। তথার রাপের मायुव हरल निर्क्तिकारत ।

ख्या नारे स्थितः निरमः खेता मृङ्ग ध्यक्षाच भाषा, ३ष्ट्रहोत शीखियान

করে; তথার নাহি চন্দ্র দিবাকর, বিজ্ঞা বিজ্ঞার অপোচর, তথার পবন ' বেতে নারে, তুই বাবি কি করে, সাহসে কি চেকি গিল্তে পারে 🛨

আনলমন্ন বাজার থানি, নিড্য উঠে প্রেমের ধ্বনি, মুক্রন আগুনে এক ঘরে; তথার কামী লো্ডী থেতে বারণ. শুদ্ধ হয় যার রাগের কারণ, লয়ে রূপের ঞ্জীপ হাতে, যেতে হবে পথে, সন্দত্ম কেবল দূর করে।

গোসাঞী বৈক্ষৰ চাঁদের বাণী, শুদ্ধ হয় যার ভক্তি থানি, মনে করণে সে বেতে পারে; ও চাকুরে বেনাগাছে বসে, ডুম্র পেল কোন্ সাহসে, ভোর কি বাবার এমনি ধারা, খোন রে চাকুরে, পিণড়ের পাধা এঠে মরবার ভরে।"

গীত প্রবণে সকলের মন আমোদিত হইল, বিবাদ মিটিয়া পেল, শেষ সভাপতিকে বস্তবাদ দিয়া সভা ভঙ্গ হইল। চপলার চিভের কিন্ত ভার ঘূচিল না। তাহার দলের প্রধান প্রধান ব্যক্তি কর্ত্তাভলার শিব্য হইরাছে ভনিয়া সে মরমে মরিয়া লক্ষায় স্বধোবদন হইয়া উঠিয়া বেল।

পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

রসসঞ্চার।

বাছারাম বে গৃহে বসির। সভা সর্বহা পড়া ভনা করেন, টিকটিকির মক্ষীকাভোজন দেবেন, পিঁপড়ার পা গণেন, হাঁ করিরা বসিরা ভাবেন, ছির নয়নে টবের গাছের ফুল পাতা দর্শন করেন, ভাহার একটী দরজা বাড়ীর ভিতরের হিনে, আর একটী বাহিরের হিনে। তিনি একাকী প্রছ অধ্যরনে নিমর্ম আছেন, সভোষিণী চপলা এবং রসমুঞ্জনীকে সক্ষেক্ষী ওবার উপস্থিত হইল। সভোষিণী বলিলেন, "হাহা, আমাদের এই বসমুঞ্জনী মাসী ভোমার সঙ্গে দেবা করিছে আসিরাছেন, ইহার নিকট ভূমি অনেক ওছকবা ভনিতে পাবে, অনেক রক্ষের শান্ত ভন্ম ইনি জানেন।"

वाक्षातात्र अञ्चयनत्त्रत्र नााच्च अकवात जाहात्र भारत श्रचीत जादि जाहि-ल्म, अरेर क्रमकल श्रद अक्ट्रे मूह हाना कवित्नन। कि वृत्तिता जिन ৰাসিলেন ভাষা বলা বড় সোজা কৰা নয়। হয়তো সেই নয়াকৃতি খন খ্রায়-वर्ष। विक्रिनीना नातीत (एटर क्ल श्रीकार्य कान् क्लान् हेशासारमत नश्रीक रदेशास जारा वृत्रिष्ठ भाविता रामित्वत । काराव रामाव्य पर्नात वम-মুক্তরী একটা প্রণাম করিয়া কথা আরত্ত করিল। সে চুই পাঁচটা সাধু ভাষার কথাও শিধিয়াছিল ; ভাছা ছারা কখন আপনি, কখন তুমি ইন্ড্যাছি मत्याधान जानाश कतिए नातिन। नित्यहे नाक मूध हाई घुराहेबा, हाड नाष्ट्रिया कथा करिता शारेटलट्स, वाक्षाताम तम मन कथात मारनहे वा कि कारमन, बात छे छउटे वा कि पिरवन, छित छाटव दक्वन छनिटछहन्। तन-मुक्की विकश्न विकश लाख हरेन, उवालि द्वान धकात प्रेरमाह वा प्रेषक পাইল না। সেরুপ প্রকৃতির মেরে মাতুর বাছারাম ক্ষমে ক্রম-ক ह्मर्थन नारे, (मज्रुप नृष्ठन ভाषात्र (ह्मर्था कथा अ कथरना अरनन नारे । তাঁহার প্রশান্ত মৃত্তি এবং অচঞ্চল পত্তীর নির্মাণ ভাব সভাব স্বৰ্ণনৈ রসমূঞ্রীর রস ক্রমে মরিরা আসিতে লাগিল। তার প্রেম্বসভদ্বের द्यान क्थार कन कनिन ना, काखरे त्र च विष्क हरेए नातिन। मात्रद (म छाव हाना शिवांत कना जानना जाननि एक ना एक दानिक হাসিল এবং বক্তুতা করিল। কিন্তু বাঞ্চারাম লে খিকে মন খিলেন ना। क्रिनि একে একে वृहे, वृद्ध वृद्ध छात्र ; हेहा वाजील व्यक्त किछू मारनन ना, ভাষাস্থ লোকের প্রেমরসের প্রলাপ বাকোর অর্থ বুকেন না, রাধাকৃষ্ণের লীলা তাঁর কাছে ভূতের পল বিশেষ; প্রভরাৎ রসম্বরী মাসির হাসিটে মাঠে মারা পেল, লাভের মধ্যে ভাষাতে পলা ও ঠেটি ভবাইরা উঠিল, পা বামিতে লাপিল। ওদিকে চললা ভাষার কলা কেবিয়া মুধ কিরাইয়া हातिएएह, मर्खायि जन्नस्मात्र्य हरेएएह। सहात्रा त्रिक रका ्रवित्रा विशाल, लाक्टक शानाहरू बदर आत्माहिल क्षिटल ना शाहिरण ভাহার। বড়ই বিভৃত্বিত হয়। অন্যের মনে রসোদ্দীপন করিতে বিরা শেষ আপুনি অনেক সময় ওকনা ভাষার পড়িয়া হাবু ডুবুখার। রসমুঞ্জীর मुक्त अखिमान हुन इटेश (जन, म्ह ख्वन भगादेवार प्रव पात्र ना। वाक्षा-

রাম ভাষাকে কিছু অপমানও করিলেন না, অগ্রাহাও করেন নাই, কেবল আপন বভাবে আপনি ছির রহিলেন। তাঁহার নির্দোষ শান্ত কুপন্তীর ঘভাব রসমুঞ্জীর পক্ষে নিভান্ত অগ্রীতিকর, বুতরাং ডজ্জন্য সে এক প্রকার অব্বর্থ অমুভব করিরা শেব আন্তে আন্তে সে হ্যান হইকে স্বিরা পড়িল।

ভাগর পশ্চাতে চপ্লাও প্রস্থানের জন্য দুপুরেষান হইলেন। জাঁহার কোলে সেই প্রিয়দর্শন বালখালভক্তবং সূকুমার সন্তানটী খোভা পাইভে-ছিল। সহসা সন্তানকোলে সেই জননীরূপ সন্ধর্ণন করত বাঞ্চারাম তাঁহার দিকে সচকিত নেত্রে চাহিয়া রহিলেন। সে দৃষ্টি সামান্য দৃষ্টি नत्र। अधियाश्मरलाल्भ क्रभम्क यन्त्रयि भूक्ष्यक्रित्व कृतृष्टि नत्र, किन्न निर्स्तानगणिनवाहन विज्ञानहर्मेळ एक्नभीत अष्टर्डनी वोक्षपृष्टि। वाक्षा-রাম যেন দৃষ্টিপথের ভিতর দিয়া সেই অপুর্ম মাত মর্ত্তির অভ্যন্তর প্রদেশে প্রতিষ্ঠ হইলেন। উহা দৃষ্টিমাত্র কোম্তের নারীপূজার স্বরূপ লক্ষণ বিধি বাবভা উদ্দেশ্য এবং সিদ্ধির কথা সমস্তই তাঁচার মনে আসিল। ভাহার मटक मिलारेश मिलारेश खनिरमय लाइटन अरे किया त्यांका क्यिए লাগিলেন। সন্তান্টী মধ্যে মধ্যে জননীর স্তন্যপান করি ভেছিল। সন্তো-বিণী চপলার কিছু কিছু পরিচয় ভাঁহাকে ছিলেন, কিন্তু বাস্তারামের কর্বে সে সকল কথা তথন স্থান পাইল না, তিনি বিমোহিত চিতে কেবল ন শিক্ত এবং ক্রনীর মোহন ত্রপ দেবিতে লাগিলেন। এক ক্রন অপরিছিল। যুবতী স্ত্ৰীর পানে এ ভাবে চাহিয়া থাকা বে তাঁহার মত যুবা পুরুবের পক্ষে নিশার বিষয় তাহা তিমি তখন মনে করিতেও পারেন নাই। তাঁহার ঈল্প স্তৃষ্ণ দৃষ্টিপাত অবলোকনে সভোষিণীও কিছু আশ্চর্য্য বোধ করিল। ছাহার মনে ধেন একটু হিংসার ভাব মাসিল। কারণ, সে অনেক আরাধনা করিরাও সে একার একাপ্র দৃষ্টি অপিনার দিকে কোন দিন আকর্ষণ করিতে পারে নাই। চপলা বে ছাহা অপেকা অধিক ফুলরী ভাহাও নহে: ख्वालि त कि करन तम वांशातात्मत हिन्छ चाकर्यत मक्क्य इंटेल मत्खाविनी खारा कि हूरे वृक्षित्व भाविन ना । जब्बना खारा अव शृक्षित नानिन ।

চপলা হৃত্যীর এই রম্বীর মৃত্তিতে কি এক অভাবনীর সৌষ্ঠ্য ক্তি পাইতেছিল, তাহা বাহারীয় ভিত্র জন্যে কানিবার সাধ্য নাই। চপলা रीवांत्री, शतिवज्रतीयना, अवः छेळ्ल नामवर्गा ; वन्नत्र लात्र वाजिरमर বৰ্ব। ভাষার বিশক্ষিত কেশপাশ অন্ধ্ৰসনাবৃত হট্মী পৃষ্টজেশ চাকিয়াছিল। পরিধান এক খানি চওড়া লালপেড়ে নৃত্তন কোরা কাপড়, মন্তকে সিলুর বিলু, नम्बद्ध व्यनकरक्षिण. भेरीकृष्ठी पृष्ट প্रভारभानी श्रुष्टत, हरक वृद्धित জ্যোতি বিভাসিত, অফ প্ৰভাক সমন্ত মাতৃভাবের পূর্ব বিকাশ; ভাহার উপর জ্ঞ্ট পুষ্ট হাসাবছন বর্দ্ধনশীল মুকুমার শিক্ত সন্তানটী বন্দ্রেশ আলো कवित्रा वित्राह्म । (म कथन नीवटर मत्नव ऐद्गारम मुखिछनवटन सन्नीव स्त्र नाभान कतिराउत्ह, कथन वा हक्क धूनिता चाह्नारमत बारवर्थ है उस्र छ: চাহিরা দেখিতেছে, এবং মৃত মৃত হাসিতেছে। মাতৃলেহ বাৎসলা এবং শিশুত একত্র সামিলিত হইয়া এই মোহিনী মূর্ত্তি সংগঠন করিয়াভিল। क्रमीनभाञ्जितमात्रक् भिक्तितत कामः (र बहे क्रामित क्रिके मञ्चारक वनी-ভূত আদর্শ প্রতিমৃতি দেখিয়া জনবের উৎকর্ষ সাধনের জন্য তাহার উণা-সনা ধ্যান আরাধনার আবশাকতা অমুভব করেন ইহাতে তাঁহার নিরীশ্ব-বাদ ধর্মের ভিতবেও কিছু কবিত এবং ভক্তিরস প্রকাশ পাইয়াছে। খড় एडि वाभ कार्र माति भाषादात मुख (एवडा वा चरे भरे व्याभका महानाताताता खननीत कीवल व्यक्तिमा (व ल्लास्कृतिकत, माक्तिवार धावत प्रविद्या । ভাহাতে আর সক্ষেত্নাই। লেহে গদ্পদ দিবালী বর্ছা নারী স্তা-নকে কোলে লইয়া স্থান্য পান করাইডেছেন, আৰু মাসর্কার শিশু উচ্চার বাহুপাৰে আলিক্সিড হইয়া বক্ষরপ প্রেমসাগরে সভানন মনে বিহার করি-তেছে, ঈলুশ ঐকান্তিক :লহ মমতঃ এবং ঐকান্তিক আনুগত্যের মিলনকে ভর্বের প্রভিচ্ছায়া বলিয়া বাভাবিকই মনে হয়। ফলত: অদৃশা নিভ্প সন্তা মুদুখাত্তে যদি কোন মৃতিমান বাহ্য আকার প্রদান করিতে হয়, ভবে धहे क्रमहे जाशात अमूक्रम वर्षे।

পণ্ডিত ৰাশ্বারাম এত দিন গ্রন্থ পড়িয়া বাহা প্রাপ্ত হন নাই, চপলাকে দেবিয়া তাহ। নিমেবের মধ্যে লাভ করিলেন। প্রের্থিত তিনি অনেক বার সভানক্রোড়ে অননী মৃত্তি দেবিয়াকেন, কিন্তু তবন বিজ্ঞানগ্রু প্রস্কৃটিত হয় নাই, কোম্তের মানবংশ্বিতত্ত এবং নাইাপ্লার বিধি পাঠ করিয়া এক্ষণে উহার মাধ্যা কোম্পতা প্রত্যক্ষ অমুত্ব করিলেন। কলির আইব

অধিকাংশই নারীর উপাসক, কিন্তু সন্তানবতী নারীর ভিতর সমূহাত্ কর জন দেখিতে পার ? এই মাতৃ মূর্বিটী বাঞ্চারামের শুক কঠোর হালরে প্রস্তর প্রেলত মূর্বিটী বাঞ্চারামের শুক কঠোর হালরে প্রস্তর বোলত মূর্ত্তির ন্যার অধিত হইর। গিয়াছিল। এই রূপের ভজনার বে দরা মেহ প্রীতি বাৎসল্য প্রভৃতি হালরের মূকোমল বৃত্তিসকল বিক্ষিত এবং চরিছার্থ হয় ভাষা দিনি স্পাইই উপলব্ধি করিলেন। ইহাতে উচ্চার নীরস প্রাণে কথকিত ভাবরস সঞ্চারিত হইল, এবং তিনি একটু আরাম দান্তি পাইলেন; কে বেন তীব্র জ্ঞানার্থি দিখার প্রেমের দীতল জল চালিয়া দিল। এই ঘটনা হইতে বায়ারামের জীবনগতি ভাবরস কবিত্তের দিকে কডকটা অগ্রসর হয়, একটা নুহন রাজ্যের হার ভাষার নিক্ট খেন উদ্বাটিত হইরা বার। এক্ষণে ঠিক যেন বিদেশ হইতে তিনি মরের দিকে আরু কর করিয়া ফিরিয়া আসিতে লাগিলেন।

অনন্তর প্লকিত হালরে তিনি চপলার সহিত তুই চারিটী কথা কলিলেন, এবং সন্থোবিনীর মূবে তাহার সবিশেষ পরিচর ভানিলেন। চপলার সামী এক জন বিধবাবিবাহকারী সমালসংস্থারক ব্রান্ধ ইহা প্রবণে তাঁহার সহিত দেখা সাক্ষাৎ করিবার জন্য পণ্ডিতের মনে বড়ই কৌতৃহল জন্মিল। জনসমাজে মিশিরা লোকচরিত্র অধ্যরনের একটু প্রস্তি হইল। অচেতন জড়তন্তের জালোচনার চিত্র ভারাক্রান্ত হইরাছিল, এক্ষণে মানবতথের ভিতরে প্রবেশের ইছ্টা জন্মিল। জড়রাজ্যের চরমসীমার উপনীত হইরা স্টেক্ট্রান্ত ভ্লিয়। বে সময় ভিনি আপনার অভাবের সরল পথ হারাইয়াছিলেন, সেই কালে এই ঘটনাটী সম্পন্থিত হয়। মনোক্রতের কি জলক্ষনীর নির্মাণলী। বে পর্যান্ত প্রস্থিত প্রস্থিত হয়। মনোক্রতের কি জলক্ষনীর নির্মাণলী। বে পর্যান্ত প্রান্তিমনকলের সামগ্রসা না হয়, একটা আর একটাকে অভিক্রম করিয়। চলে, ভাবৎ মন্থবা কিছুতেই শান্তি পার না, অবস্থাতরক্ষে পড়িয়াই থিনির সমরে বিভিন্ন মুর্ভি পরিগ্রহ করে। অনন্তসামক্রস্য, সর্বসমন্তর, চিত্র-প্রেম্মিলনের দিকে মানবের নির্ভি তৃশ্ছেল্য বন্ধনে বন্ধ আছে; সেই থিকে বাইবার অন্যই এই সকল অভিরতা ব্যাকুল্ড। এবং পূন: পূন: প্রাণ্ড পরিবর্জন।

मर्खादिनीत (व बना अठ (हर्ड) উत्सान जारात किछूरे रहेता

সমাজভত্তে, নারীপৃথাতত্ত্ব, নানা তত্ত্ব নানা পথে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। সংসারে জী পরিবারের সহিত অবভিতি করিয়া পুখী হইবার বে কিঞ্চিৎ অভিলাষ যৌষনের প্রারত্তে ছিল ভাহ। ইতঃপূর্ব্বে পিভার অন্যায় অভ্যাচারে নিংখেবিত হইরা পিরাছে। তবিবরে সমস্ত আশা ভরদা ছাড়িরা দিরা তিনি জ্ঞানপথের চিরপরিব্রাক্তকের ব্রভ গ্রহণ করেন। নারীসঞ্চ জাঁচার क्लान मिक्नाब छेनाव, प्रख्यार मस्वादिनीव महनावाक्षा किक्रहल नूर्व हरेटव ? সকল निक्र अधिवक्षक। একেও সেমধ্বা कि विध्वा छाहात कीन मीमाश्मा इटेन मा। भवता इटेल्ड हित्रकीतम विवतात मण काहा-ইতে হইবে। বৃদ্ধিবাহইর। ধাকে, এমন নিশ্চিত অমাণ কিছু পাওর। ষায়, ভাহা হইলেই বা বাঞ্চারামের সহিত পুন:পরিণয় কিরুপে সুস্পা-षि**उ हरे** एउ शादब १ अक शृद्द जाउ। अत्रिनोत नाात्र बान, बिक मच्चार्क वाटर ना, किन्तु (पश्टिष द्वन (कमन (कमन द्वार एवं। एडिय निमानार জ্ঞাতি কুটুল্বের মারা মমতা ছাড়িয়া, জীর প্রবদ শাসৰ অভিজ্ঞান করিয়া কাৰ্য্যকালে সে বিষয়ে কভ দূৰ সাহসী হইতে পারিবেন, ভাছাভেও গড়ীর সলেহ আছে। স্থতরাং পত্নীগ্রামে হিন্দুপরিবারে একটি বিধবাধিবাছ দিরা সমাজসংখ্যার-প্রবৃত্তি চরিতার্থ করিব, কি উভয়কে দাম্পত্য প্রেমবন্ধনে বাধির। সংসারাপ্রশ্নে সুথে নাধিব তাহার পক্তে আমরা বড়ই ব্যাঘাত ছেবি-एए । अवनाश्वित्वाहेष असुनमत वसूत पृतिविद्याति निर्वाति (रमन বক্রগতিতে প্রনপ্ত। অবেষণ করে, সম্মোষ্ণীর জ্বন্ধতহার অভ্যস্তরে তেম্বনি উৎসারিত প্রীতিলোত প্রতিপদে বাধা পাইরা পর অধ্বেবৰ করিছে-ছিল। ভাহার সামাজিক অবছ। এরণ ফটিল কেন হইল আমরা ভাহা अधनक छान्निया विन नाहे। देशनद रथन छिनि পिতृत्रवरन वात्र करवन. সেই কালে তাঁহাৰ প্ৰছিবাসীর এক কন্যার সহিত কোন বছবিবাহকারী কুলীন মহারশীর বিবাহ উপস্থিত হয়। কন্যার পিতা পথের সমস্ত টাকা ভিরাছিলেন, কেবল ছলটা টাকার বোগাড় করিতে পারেন নাই। সেই कता श्वयमात्र भाग बालिया हाननाउना ट्ट्रेंट डेठिया व्यवस डेक ক্র্যাক্রার প্রতি রাগপরব্দ ক্ট্রা বিনাপণে সভোবিশীকে সেই রাত্রেই विवाह कतिरान्त । अतिव दिनाती धर्मन पुत्राहेरछिन, किछूरे जारन मा।

SHE

তথন তার বোধ শোধও কিছু অবে নাই। রাগ অভিমান চরিতার্থের জন্য এই বিবাহ, ইহাকে এখন আপনারা যাহা বলিতে চাহেন বলুন, কিন্তু ঠিক বিবাহ বলিয়া আমাদেরত মনে ধরে না।

ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ।

সভাতার লীলা।

বসতপুর গ্রামের প্রান্তভাগে একটি প্রস্তীগানমগুলী আছে, তাহার মধ্যে আনেক তেঁতুলে বাগদী, চাঁড়াল এবং কাপ্তরা সপরিবারে বসতি করে। তুর্জিকের সমর সে বার দেশে বড় অরকন্ঠ উপাছত হইয়াছিল, প্রমুকীবীদিগের কাল কর্ম জুটিত না, সেই স্কুষোণে পাদরী ভগান সাহেব তাহাদিগের মাধার লল হিটাইয়া দলভুক করিয়াছেন। তুই পাঁচ ঘর কায়ছ নব-শাধ্র ভাছার মধ্যে ছিল, কিন্তু সংসর্গ গুণে তাহাদের ব্যবহার প্রকৃতি হাড়ী বাগদীর মত হইয়া বায়। মগুলীমধ্যে এক জন দেশীয় পাদরী বাদ করিতেন। শ্বস্থীয়ানেরা কেহ তাঁহার তামাকু সাজিত, কেহ বর বাঁচি কিন্ত, কেহ রেখিত, কেছ গরুর ঘাস কাটিত এবং বাদার করিত। ভাহার বিনিমরে পাদরী মহাশয় ইংরাজি স্বরে বিলাভি বালালা ভাষায় উপদেশ দিতেন।

মওলীর প্রকাঠে প্রকাঠে হাঁদ মুর্গি পের পার্রা ছার মেবাদি ভূচর খেচর উভচর প্রাণিগণ ইভন্তও: বিহার করিতেছে, ভাহাদের বিষ্ঠা মূত্র এবং খলিত পক্ষপুঞ্জে উঠানের চারি দিক্ পরিপূর্ণ। ভাহার মধ্যে কোথাও জাকেটপরা কামিজগার কোন নারী বসিয়া হল্দ-মাধা শিলের উপর শিল্পী মাচ ঘসিতেছেন, কোথাও বা কোন হল্দী পেরাজ রভন ছাড়াইরা রাশীকৃত করিতেছেন। ভংপার্থে খাড়ের চুলছাটা টেরিকাটা হাকআজিন জামাপরা কোন মুবা মুর্গি ইংসের গলায় ছুরি

জালপার মাস এক জালপার রাবিভেছে। কেছ বা চু**রট টানিভে টানিভে** নারীগণের সঙ্গে ঠাট্ট। আমোদ করিতেছে। গৃই একটা ছোট ছোট ছেতে চুকুরের প্রতিঘন্দা হইয়া ভাহার সঙ্গে ভাড়ভাবে বকরির ঠ্যাং চিবাই-;তছে। কেহবাকাচাহাসের ডিম ভারিলা চ্বিডেছে। চারি পার্বে চল শক্লি কাক উড়িডেছে। কুকুরগুল সভরে কেহ দূরে আরাফু াতিরা বসিয়া আছে, কেহ বাকাক চিলের সঙ্গে বিবাদ করিতেছে। ব্ৰতি দিন তথার এইরূপ মহাস্মাব্যেহের ব্যাপার নম্নগোচর হইত। যাবার সন্ধাকালে ভবলার চাটি, বেহালার গদ্ এবং সঙ্গীতথানিও श्निटल पांक्य। याहेल। पूटर्क देशका यथन कृतक अमकीवी किन् ाचेन दोका कथिकादरक कर किछ, नगारताणार्ड्जिङ स्टन क्वीरिका निर्द्धास iतिया निर्द्भाष ভाবে সরল মনে খরকরা করিত। খুটান इ**ইর। অবধি** ब्लाटक चात्र शाकाना (एव ना, छछ लाकटक मान ना, मशक्तन हेकि। াহিলে ভাহাকে ঘুঁষি দেখার, মিব্যা কৰা কর, লাজা করে, লোকের ाशल मूर्शि চूরि कतिया बाय, (कह उड्याना नालिम कतिरल शायती मारहररक াকিয়া লইয়া হাকিমের বিংহাসনপার্বে বসায়। এই সকল ব্যক্তি-গেকে গির্জ্জার বসাইর। রেভারেও ভগান উপদেশ দেন, আর বার্ষিক াপোটে সংখ্যা বৃদ্ধির কথা লিখিয়া ধন্যবাদ গ্রহণ করেন।

এক দিকে এই থিষ্টীয়ান পত্নী অপর দিকে বান্ধণ কারছ অভ্তি হিন্দুর
।স, রখাছলে একথানি ছোট আটচালার সন্ধটাচরণ বাবু অবছিতি
রেন। তিনি বেমন হউক, বিধবাবিবাহ করিয়া ব্রান্ধলণে মিশিয়া এক
কার ভরিয়া নিয়াছেন, একটা সহোদর ভাই তাঁহার ভিন্স, ভাহার কিন্তু
থনো পর্যান্ত কোন কিনারা হয় নাই। মে সন্ধাাকালে হাটকোট পরিয়া
চরিয়া বৈশে ঐ প্রিটীয়ান পত্নীতে পিয়া ভবলার চাটি য়ারিত, মদারকা
ন করিয়া টপ্পা পাইত। কখন বা ব্রান্ধণবেশে হিন্দুসমাজের ভিতর
হোরো বাড়ীয় কোন ক্রিয়ালাও উপলক্ষে উপস্থিত হইয়া জোঠের নিশা
রিভ এবং ভোল ফলার বাইয়া আসিত। কেছ চাপাচাপি ক্রিলে
নিড, "আমি সভস্ল বাকি, দাদার সঙ্গে কোন সংশ্রম রাধি না।" সম্বট
বুপ্রাম্য সব্রেজিয়ারের কাষ্য করেন, এবং ভংগদের প্রভ্রম প্রভাবে কন

করেক লোক লইরা একটা ব্রাহ্মসমান্দ গঠন করিরাতেন, ভাহাবের বাবে অতি বুগবারে উপাসনা হইরা থাকে। প্রামের মধ্যে নিশানাধ বাবুর সঙ্গে কেবল ঠাহার বাহা কিছু একটু পড়িবিবি ছিল। করেণ, ঠাহার নিকট তিনি কোন কোন বিবরে গোপনে সহাম্মুভ্তি পাইতেন। সকটের সঙ্গে সেই খানে বাঞ্চারামের আলাপ পরিচয় হয়। এক দিন তিনি ঠাহাকে নিক্ষতবনে নিমন্ত্রণ করিয়া লইয়া যান। ইতঃপুর্ব্বে বাঞ্চারাম কোন দলেই বড় একটা মিশিতেন না, প্রায় একাই থাকিতেন; এক্লেণে সেই সন্তানকোলে চপলার মৃত্তি দেখিয়া অবধি ঠাছার মন কিছু সরস হইয়াছিল এবং বিশেষ বিশেষ লোকের সঙ্গে আলাপ করিবারও একটু ইচ্ছা অনিয়াছিল।

এক দিন ভিনি সন্ধানিলে বেড়াইতে বাহির হইর। সকট বাবুর আলেরে উপন্থিত হইলেন। সে দিন বুধবার, সমাজের দিন। তুই এক জন আক্র সভাও ক্রেমে ক্রমে আসিরা জুটলেন। সকট বাবুর অনুষ্ঠানের ক্রটি নাই, বাপ্তারামের অভার্থনার জন্য তুঁক। সাজিয়া দিলেন, তাঁহার ভাঙা গোটা কডক চুরট, একটা পুরাতন পাইপ আনিয়া হাজির করিলেন। বোড়ালে একটু উচ্ছিট্ট মুরা চিল ভাহাও আনিয়া সমুধে ধরিলেন। বাপ্তারামের সঙ্গে এ সঞ্জানের কোনই সম্বন্ধ নাই, কেবল একটু নদ্য লইরা ভিনি নাদে দিলেন।

সক্টেবাবুর গৃহে একলো ভার্থাকিউলার তৃই রক্ম বন্দোবস্তুই আছে।
তাঁহার এক তৃতীরাংশ হিন্দু, এক তৃতীরাংশ ব্রাহ্ম, বাকী সাহেবানী।
তদীর ভ্রাতা বিকট বদন পুরো বোলজানা সাহেব। কাঁহার 'জার
তেমন ছিল না বাহাতে আলা মিটাইয়া সাহেবী চালে চলিতে
পারেন, কিন্তু আঠার আনা সব হিল। দাদার আফিসে নকলনবিশের
কালে মাসে পাঁচ সাত টাকা বা পাইতেন ভাষা হারা কলিকাভার লালবাজার হইতে নীলামে বিক্রী পুরাতন কোট প্যান্ট্লান, কাঁচের ভাষা
মাস বাসন, পিতল কিন্তা দভার কাটা চামচ সন্তা হ'বে কিনিয়া আনিতেন।
মুর্সিমাটনের পরসা প্রার কোন দিন জুটিভ না, কেবল মধ্যে মধ্যে চুরি
চামারি করিয়া চালাইতেন; নিত্য ব্যব্রের জন্য তুই পরসার ভক্না গ্রন্থর
মাসে বরাল হিল। ভাই আগতনে বংগাইয়া ভাষাতে একটু সরিবাং

ৰাটা মাধিয়া ভক্ষণ করিছেন। কেবদক্তি কাঠের একটা ভালা টেবল আর পায়াভালা একবানি টুল ভিল, ভাষার উপর বসিরা ঐ সকল সাহেবী বানা थारेएकन । मत्या मत्या चावात वानि ल्यामारम भन्न विवटमत उत्रक्षातित জন্য রাবিলা (দওরা হইড। একে বুড় পুরুর শুক্ত মাংস, ভাছাতে আবার বাসি, অভি অপূর্ব সামগ্রী; সিরকার রসে ডুবাইরা উলা বধন ভিনি ভোকন করিতেন, তথ্য মনে ভাবিতেন, আমিই বা কে, আর বুবরাজ প্রিক্স অবওয়েল্সই বা কে। অল ব্যারে সাহেবী চাল যত দুর চলে বিকট ভাষা প্রাণগত বতে অভিশব নিষ্ঠার সহিত সম্পন্ন করিত। সাধিক ভক্তিমান হিন্দু বেমন প্রদার সহিত পিতৃ মাতৃ প্রাদ্ধের ব। চুর্গোৎসবের দ্রব্যাদি **আহ**রণ करत, विकट्टेत ब कार्या एकमनि निक्षा किल। एम अवकी वाश्क्रम कृतिशा-ছিল, ভাহাতে একট। কমোড থাকিত, সে কমোড নিজেই আবার সে রোজ রোজ পরিকার করিয়া রাধিত। একবার নীলামে চারি আনা দিয়া একটা পুরাতন গাউন তিনি ক্রন্ত করেন। মনে বড় সাধ যে বিবাহ করিয়া मिरे । स्मारक পরাবেন, পরাইয়া ঢ়ৢই জনে হাত ধরাধরি করিয়া পরে পথে বেড়াবেন; সেই অন্যই থিয়ারানমগুলীতে বন খন এত প্রারাত। একটী ঠেতুলে বাগদার মেয়ের দক্ষে গ্রণয়ও হইয়াছিল, কিন্তু ভাগ্য দোষে (मृह्यो हाख नाजिन मा। প্রবয়ের বাড়াবাড়ি অর্থাৎ অভিরিক্ত কোটদিপ দেবিরা পাদরী ভগান একদিন ভাহাকে চাবুক মারির৷ মণ্ডলীর সীমা হইতে বিভার করিয়া ভেন: পরে যদিও অনুভাপ সহকারে সে থিপ্তীরান হইতে हारियाहिल, किन्तु गाँठ भाषतीत अदब छाए। करा रय नारे ।

বিকট বাবু একংশে ব্রাহ্মণলে ভর্তি ইইবার জন্য উমেদার আছেন। প্রতি বুধবারে সমাজে গিল্লা চক্লু বুঁজিয়া বসিলা থাকিতেন। বেধানে উৎসব কি সমারোহ ব্যাপার, বিকট তথার বিনানিমন্ত্রণে অত্য গিলা উপজ্জি হইত। সে হওভাগার অগম্য ছান ছিল না। বেধানে সেধানে বার কার সক্ষে এমনি গিলা মিশিও বেন কতই আজীলতা। অনালাসে অপরিচিত ভজ্জ লোকের পলা অভাইলা ধরিত। কথার কথার ঠাহার মূখে ভ্রাতা ভগ্নী। ভজ্ল গৃহস্থ-ভবনে পারিবারিক উপাসনার বোগ দিবার জন্য আগে ভাগে বাড়ির ভিতরে পিলা ছানিলা পড়িত। চক্ষুণজ্জার সহসা কেই কিছু ব্লিতে পারিত না।

জাহারে বসিরা আর সকলে ববন ভগবানকে স্বরণ করিবার জন্য চকু
রুজিতেন, বিকট সেই উপলক্ষে অমনি পাশের পাত হউতে থাক। জুলিরা
বাইতে আরক্ত করিত। উপাসনার সময় সে একবার চলু বুলিয়া ধ্ব
আড়েম্বর করিয়া বসিত, তাহার পর বেহারাদের সংক্রিমিয়া তামাক্
বাইত আর বেড়র বেড়র করিয়া গল করিত। শেব শান্তি বাচনের
সমর ধুব উৎসাহের সহিত জোরে জোরে—শান্তি: শান্তি: শান্তি: (মনে
মনে আপল শান্তি) বলিয়া তবনি আবার তাড়াভাড়ি হুঁকা ধরিত।
উপাসনার স্থলে মহিলাদিগকে অমুপন্থিত দেখিলে বিকট বাব্র হৃঃধ
বির্জির সার সীমা থাকিত না। বলিতেন, "বে উপাসনার ব্রাক্ষিক।
ভরীপণের সমাগন নাই আমি তাহাতে বোগ দেওয়া পাপ মনে করি!"
এই বলিয়া সমাজের সভাদিগকে ভর্মনা তিরভার করিয়া লম্বা লম্বা
উপদেশ দিভেন। তাঁহার উপদেশের আলার নিরীহ রাক্ষ ভ্রাভারা
বড়ই কাহিল হইয়া পড়িয়াভিলেন।

বিশ্বট সমাজে নিয়া চকু বৃলিয়া (দখিত, কাহার হাত মুখের ভলী কিল্লপ হল, এবং কেইবা নাক ডাকাইরা ঘুমার। ছিল্দলে পিয়া আবার এই সব বিষত্তে লালার কাই নাক ডাকাইরা ঘুমার। ছিল্দলে পিয়া আবার এই সব বিহার লালার কাই লালার কাইলা, হল্পাতি বাহির করিছা থাকে. কে আধ্যুমন্ত অবস্থার মুখে কালা টালে, কার চুই কস দিয়া লাল গড়াইয়া ধারাণী পড়ে, কে নমস্বারছলে ক্রিট ছইয়া নিড়া যার, কে চঞ্চল বানরীর ন্যায় পূনঃ পার্ম পার্ম পরিবর্তন করে, এবং কেইবা বৈষাছিকের ন্যায় পাত্রের উপর পা রাধিয়া বাম হস্তে মলা তুলিয়া তাহা ওটাল পাকাইয়া লোকের গাত্রে কেলিয়া দেয়। কোং কোঁথ শক্ষে কে ঢোক গেলে, কে নির্জ্জলা চন্দে কালে, কে হন না হক চেটাইয়া মতে, এ সমন্ত খবর বিকটের বিলেম্ব রূপ জানা ছিল। কোন্ কোন্ আম্বান করিছে জরিছে বজ্জতা বরিয়া কেনে, কে উপদেশ ঝাড়িবার জন্য ছার্ম প্রার্মিরা ধার্ম হারাইয়া শেষ মাঝা চুলকায় এবং মুবে যা আনে প্রলাপ বকিয়া যায়, দম্বা বক্তৃভায় কেই বা ভ্রোভাদিগকে বিরক্ত এবং নিপাড়িত করিয়া ভোলে এবং আপনাকে আপনি বড় বজা মনে করে, ইছাও সে বিলক্ষণ রূপে জানিজ। বিরক্ত এ মনল বিচিত্র

নাপার দেখিত আর দুখ মুচ্কিলা ঠোঁট টিপিলা ক্রমালত হাসিত।
কৰন বা সেই সক্ষেত্রাপনিও নানা বল্প তক্ষে বাল্প করিত। ব্রাক্ষচিরত্রের
বিচিত্রতার এক প্রকার তালিকা ছাহার নিকট ছিল। বাহারা মহাপান
করে, জীর ভরে পুঁতৃলের পারে পুশাঞ্জি দের, আজিসে মুস খার,
বিবাদ ঝগড়া বাধার, কান ভালার, মিখ্যা কথা কর, বার লইরা এল শোধ
করে না এবং এই সকল পাপের প্রালম্ভিত্র সক্ষপ সমাজে মাকে মাঝে
কিছু কিছু চালা দের ভাহালের সজে বিকটের বিশেব খনিইতা ছিল।
ব্যাহ্মসমাজের বে ক্রিটা ভাল সে দিকে সে প্লার্থণ করিত না, কেবল
লেয় পুঁজিরা বেড়াইত, কাবণ ভাহাই ভাহার প্রয়োজন।

জতংপর সন্ধা উত্তীর্ধ চইলে সকট বাবু বজুগণকে লইরা উপাদনার বিসলেন এবং বাঞ্চাবামকে বরু সহকারে ভাহার মধ্যে উপবেশন করাই-লেন। উপাচার্যা অব্যেতা গারক সকলে ব্রথাছানে বসিরা সংস্কৃত্যিশ্র আভালা ভাষার উপাদন। আংজ করিল। বাঞারামের নি÷ট এ সম্ভই নৃত্ন, কারণ ভিনি কোন কালে রাজসমাজ হেবেন নাই। সভট বাবুর সে ছিন উপাসনার আর বড় বোগ হেওরা বটিল না, ভিনি আগত্তক ন্বাপ্ত বজুর সভৃষ্টি সাধনের জন্যই ব্যক্ত রহিলেন। বাঞারাম তাহার সমাজ ছেবিরা প্রশংসা করেন, প্রীত হন, এইটী মনে বড় ইছো। সভট বাবুর রাজসমাজ বছিও সামানা, কিন্তু সকল প্রভাব সাম্প্রী ভাষার মধ্যে আছে। একটী পুরাতন ভগ্ন ঐশি বেলর হারমনির্ম, এক বেড়ে বীরা অবলা, একটা ভানেরা গাহকের সাহায় করে। সম্মুবে প্রাণাতি করা বান কভক আবি কাঠের ভজা, মবেরা উপাচার্যের জন্য চেয়ার টেবল। সকলে চজু সুঁজিল, উপাচার্য্য সমনেক সমকে কোঁকে কোঁকে বিশেষ বর ভজার প্রতিজ্ঞা প্রত্যা পড়িলেন, পরে সঙ্গীত হইরা সভা ভক্ন ইইল। পরিরাজ্ঞা বিজ্ঞা পড়িলেন, পরে সঙ্গীত হইরা সভা ভক্ন ইইল।

ভদনত্তর আর আর সকলে চণির। পেলে সকট সেই টেবিলে এক ধানি চাদর বিচাইলেন, এবং বিকটকে আহারের বোগাড় করিতে বলিলেন। চাদর থানির মাবে মাবে ভরকারীর ঝোল হলুদের দাপ, এবং এমনি ভাহাতে বিল্লী ভূগাঁক, যে নাকের কাছে ধরিলে পা থোমি বোমি করে। টেবিলের मीति हाम अवर मूर्तित विक्री अवर छात्रात्मत नानि । अ नकल व्यवित्री अनित्री ৰাঞ্চারামের হরিভক্তি উড়িয়া পেল। বিকট বাবুর (ওঁ বিষ্ণু, মিষ্টার विकारित) चाल विश्वय चानम, वसु छाक्रानत छेनलाक मानात वारत আল তিনি করেকটা বুর্গি হত্যা করিয়াছেন, এক বোডল মণ্ড আনা इरेशाइ : रीशा चना व नमक चारशकन छैशात अर्शकत चार्क ना चाएक, विकामेत देशाय वित्नव नाम चाह्य। (ईए। श्रोपेत्नामे ণ্যানটুলান পরিয়া উৎসাহের সহিত ডিলি নিজেই খানসামার কলে कतिरक नातिरनन। किन्न कृश्टबत्र विकत्न, खबवा क्रूरबत विवत्न, वाञ्चाताम এ সকল কিছুই খান না; যাহা কিছু ভাঁছাকে দেওয়া হইল সম-স্তই ভিনি প্রড্যাধ্যান করিলেন, গৃহস্থামীর বিশেষ অনুরোধে কেবল पृष्टे बक्के कल धारेरलन। यथमा माध्य महिका रेखानि भक्षमकात लाज्यदात धमक डेपत माथा धाराम कतिम। मिष्ठीत विकट भूनः भूनः इरे हाति है। अञ्चरीन अब रक्ष रेशकी कथाइ राक्षात्रात्मत महिन जाना-(शत देएगान कविद्याहित्तन, किन्छ छात्रात वाकाला छेखत शहिता खात (वनीः चन रम भारत चार्य चार्य हरेट भारतिहान ना । चारिक के (म क्या काकात निक्छे कि ह बिष्ठे छ९ जना e वाहे कि हहे ल। जवानि काहा ब्र माधा . जाहा क ख्र थ-ডিড করে; বাকাল। ইংরাজিতে মিশাইয়া বাঞ্চারামকে ব্রাহ্মসমাজে বোগ बिवात सना त्म ख्यादेख लावित। मकते वर्ष्ट्रे मक्टि श्रिल्लन, ख्य-লোকের সন্মুখে বেশীকিছু বলিতেও পারেন না, অথচ রাগে অঞ্চ গ্রন্ত করিখেছে ; অন্য সময় হইলে ভ্রাছাকে পাতৃকা ধারা ভ্রাছা ক'্তন, कानकार मिन मान बकाय वाशितान । च्या वाशावाम विलालन. "আমার কডকণ্ডলি কথা ফিজ্ঞান্য আছে, চলুন ব্রেশার পিরা ব্সা बाक्, बबादन वक पूर्वक ।"

সপ্তম পরিচ্ছেদ।

সংখর ধন্ম।

আহারাতে বারাকার বসিরা চুই অনে বিধিন করার প্রস্তৃত উথাণিত করিলেন। বাহারার সভ্যাত্মভারী তত্ত্ব পিশাক হাত্র, ত্রাত্মসরাজ জিনিব্টে কি ভাহা আনিবার অন্য তাঁহার মনে ইয়ানীং কিছু কৌত্যুল অগ্নিবার হুলি কিছু কৌত্যুল অগ্নিবার কিছু কিছিল করা ত্রাত্রীতে সভ্টেরবের সজে তাঁহার করা হুইতে লাবিল।

मक्र । कित्रभ नाभ्रताः । आभनात मरनत मरक मिनरना कि ।

বাহ্বারাম। কেন বেশত ! সমাজ কি আপনাদের প্রতি সপ্তাচেই হয় ? স। না, প্রতি সপ্তাচে হয় না, তবে ভদ্রগোক টোক কোন দিন এলে করা যায়। আয়ে বাংসরিক উৎসব পুব সমারোহের সহিত হয়ে থাকে।

व। आपनाद्यत ज्ञा भ्राशा किस वर् क्या

স। ইা, নিভান্ত কমও নর, তবে আৰু কাল লোকের তত উৎসাহ নাই। কিন্তু আমার ক্রী যে দিন উপাচার্য্যিকা হরে লেক্চার দেন, গে দিন জাররার কুলিয়ে উঠতে পারি না। ভয়ানক ভিড় হয়।

বা। আছে। মণায়, এ অংকার নূডন তর পুর আপেনারা কোধার পেলেব বলুনত গুক্ধনত এরপ ভনি নাই গু

স। এটা আমাদের তাল্পনালেরই পুর, এই পুরে আমাদের সমাজে বক্তু ভাউপাসনা হট্রা বাকে।

বা। বে বাবুটী থার্থনা করিলেন, বেশ কিন্ত তাঁর ভাজি ভাব। গোড়া ছইভে শেষ পর্যন্ত কালিতে পারা সহজ কথা নর। আমি ভানে বড় পরি-ডুপ্ত হলেম। রোলনের শ্বস্তানে চক্ষে বেন জল আস্থিল।

স। অংক্তে সেটা হাভ বিক ক্রেমন নয়, ঐ রপ কাঁচ্নে হার। আমা-কোউপাচার্যা মহালয় সর্কায়নেই ঐ প্রকায় কাঁছ্নে হারে বজ্ঞাকরেন। ভিন্তে এক প্রকায় মন্দ্রনায়

व।। बाहे इक्रक, त्यामा (वन कावहूक्।

সক্ষত স্বিভাসের সহিত বলিলেন, "আপনি বোধ হয় তাঁর মুধ পানে
চেরে কেথেন নাই। মুধভন্নী দেখিলে আর সে দিকে আপনার চাহিতে
ইচ্ছা হইত না। চক্ষে এক কোটা জল পড়েনা, অবচ কালা; বেশ দেখেভেন। কিন্তু এ সমন্ত আমারি চেন্তার কল। তাঁকে আমি অন্প্রহ করে
একটা কাল দিলে এখানে রেখেছি। নিজে ভাল বালালা আনি নাতাই,
নৈলে নিজেই সব করা হয়ে থাকে। সমন্তই করে কর্মে ব্রিবিছে দিতে হয়।

বা। আপেনাদের দলে নাকি এক জন লিডারের বড় অভাব হয়েছে স। না, লিডারের কিছু অভাব নাই, কলোরার পাওয়া বাচ্ছে না, লিডার আমরা সকলেই। এবং প্রভাবেকট্ অভাতা। ভাততা কেছ খীকার করে না।

वा। ज्यानि अक सन वित्यव (नजा ना इत्त कि कास इत्त १

বিকট বাবু বলিলেন, "ই। মহাশর, আপনি যা বলিলেন সে কণা সভ্য। আমি ছাছা বাবুকে সেই জনা পরামর্শ দিয়াছিলাম বে আপনার। ভাল একটা লিভারের জন্য কাগজে বিজ্ঞাপন দিন্।

স। আবে মোলে। এ ই পিডের আলার যে হাড় আলাতন দেখি। ডুই কেন উত্তর করিস। এ একি স্থানাটার ভাই এডুকেশন পেলেটে বিজ্ঞাপন দিব।

বা। আছো মশার, বিনি উপাসনা করিলেন তাঁর গলার পৈতা কেন রয়েছে গ আপনারতে। আতিতেক মানেন না গুনিছি গ

স। আরে দাদা ত্মিও ধেমন, পৈতে। পৈতেত সামানা কৰা, আমারও গলার একগাছ আছে, ওটা বড় দরকারী জিনিব। সে জন্য কিছু চুংধ নাই, আমাদের উপাচার। ভাষার বাড়ীতে চুইটা বিধবা আছে, একটা জার ঝুড়ী, একটা মাদা; বিবাহ দিলে তারা এখনি অনায়াসে বিবাহ করে, দেশের কড় উপকার হয়, কিছু ভাষা এমনি ভীকু কাপুকুৰ, ভা কিছু ভেই পেরে উঠলেন না।

বিকট। এক জনকেও আমিই অনায়াসে বিয়ে করতে পারি।

স। थाकृ वाकृ ! जूहे हून करत वरम बाक, न। इस केर्ट्य करन या ! ज्ञान-नात रनके करन ना, केनि ज्यादात विरक्ष कतरवन !

- या। जनम विश्वांतरे कि विवाद कहा देविक जाननि बास करवन ह
- न । जात जात जरमह १ विश्वविवाह छनिए ना हरेटन जात्र एक केवात कता वाटव ना । जायिक टार्ट कनाई विश्वविवाह करान्य ।
 - বা.। আপনাদের এ ধর্মের সংস্থাপকত রাম্যোহন রায় ?
- স। হাঁ, তাঁর নামই চলিত বটে। তবে ভিনি বিশেষ কিছু করে বেতে পারেন নাই।
 - াবা। তবে কি পেবেক্সনার ঠাকুরকে এ মডের প্রবর্তক বলেন ?
 - न । वावर्डक क्रिक वला यात्र ना, महात्र कछक्छ। विलट्ड शाद्रन ।
- বা। কেশবচন্দ্র সেনের দারাই সভাসমাকে বোধ হয় এ ধর্ম পোকে জানিতে পারিয়াছে। তাঁহাকেইত জাপনারা দিডার বলেন ?
 - न। লিডার একপ্রকার হইতে পারেন, কিন্তু ভরিজিনেটার নতেন।
 - व।। यथार्थ श्रद्धिक्तिहात एत कि

বিনরের সহিত আত্মপোপন করির। সঙট শেষ আপনাকেই প্রকারাভবে গুরিজিনেটার সীকার করিলেন। এবং ম্পৃষ্ট বলিলেন, "আমি বার
বংসর বরসে ছাত্রাবছার ধর্মবিষরক বে প্রবন্ধ লিখিরাছিলাম, তাছা
পাড়িলে আপনি পরিকার ছেখিতে পাবেন, নববিধানের নূতন আইডিরা
সমস্ত তাহাতে ছিল। নেমধারাম ছেশ, বার বাহা প্রাপ্য তাহাকে তাহা
দিতে চার না

- বা। আছো, যিনি বক্তৃতা পড়িলেন, তিনি কি বেশ বিহান্ ? বোধ হয় অনেক বিকান গ্ৰন্থ তাহার হেবা আছে।
- স। হা: হা: হা: । ও সব কথা বেডে দিন বেতে দিন। সময় পাই না, নতুবা আরো অনেক ইম্প্রন্ত করা বেতে পারে।
- বা। কেন, বে কথাওলি লিখে এনেছিলেন ভাষেত বেশ চিডা আছে, গভীর ভাষও আছে!
 - म। बाक्यात कावना कि !
 - वा । जानि दृषि छत्व त्रव वत्न हेत्न (कन !
- স। হাঁ, বদেও দেওরা হর। ডা ছাড়া অধিকাংশ কেশব সেন, আর দেবেক্স ঠাকুবের বজ্ডা উপদেশ থেকে ডোলা। আমল কথাটা কি

ভা ভানেন, আমিই এর সব, নিজমুখে বলাটা ভাল দেখার না; কিন্তু খেটি না দেখিরে ভনিরে দেব তা আর হবার যো নাই। একটু মনোযোগের ফ্রেটি হরেছে, অমনি দেখুন না, পরের বৈ থেকে তুলে মরেছে। ওরি-ভিনালিটা ড কিছুই নাই! চিন্তা করে করে আমার ভার্নিটিশের রোগে ধরেছে, আর পেরে উটি না। এই রাল্লসমাজের উন্নতির জন্য আমি সর্কাল্য হইরাহি। তাতেও কি লোকের নিকট প্রশংসার প্রত্যাশা আছে । এমনি অকৃডজ্ঞ সব লোক, এত করিলায়, তা কেউ মুখে একটা বার শীকার করিতে চার না। এ দেশ অতি পালি দেশ।

বা। আপনি এত শীল্র দেশের লোকের উপর চটিলে কাজ করিবেন কিরপে ?

স। ডাকি আবি ছাড়িব ? শরীরের শেষ রঞ্জবিলু থাকৃতে আবে ডা পারব না।

वा। जाननारण व जिल्हा निर्साण माधरनत कि किछू ठाई। एरत थारक ?

স। সেত বৌহলের ধর্ম । আমাদের হচ্ছে সকল প্রবৃত্তির সামক্রুস্য রক্ষা করা। উদার সার্ক্ষভৌমিক অসাপ্রাক্ষায়িক ধর্ম আক্ষংর্ম, ইহার
ভিতর কোন রূপ ভাজি কুসংস্কার সকীর্ণতা আসিতে পারে না। সকল মন্দ্রুকে একপরিবারে বৃদ্ধ করিবার জন্যই ইহার অবতরণ।

বা। ভবে আপনাদের ভিতর বোধ হয় দলাদলির কোন গোল মাল নাই। বেশ, বেশ, এই ভো ঠিক।

স। বেশই ছিল বটে, সম্প্রতি একটু দলাদলির ভাব দাঁড়িংইছে। মতে কিন্তু সব ঠিক আছে, সকলেরই এক উদার মত।

वा। चनाचिन इहेन (कन १

স। কেন, তাহা আধেই তো বলিছি। সকলেই সিডার, ফলোয়ার কেছ নাই। লোকের মত কাগজে লিখে বফুডা করে, বেহারা হয়ে আপনার কথা আপনি আর ড বলে বেড়াতে পারি না, স্তরাং রেয়ো বেয়ো হাফুডাকু সকলেই এখন লিডার।

वा। कछ छलि इन इरव्राह् १

म । जा बार्टित कारन बकीत मूर्य छाई किरत अरनक श्रीन । जिन्दि छ

প্রধান, (১) আদি, (২) সাধারণ, (৩) নথবিধান। তত্তির কুজ কুজ দল আবার আছে। জনে জনে দল বলিলেও বলা বার। সাধীসভার জোরে সকলে দল দিকে সটুকে পড়েছে।

বা। বাঁহারা সাম্প্রহারিকজা বিমাশের অসা প্রাতন হস্ত্রী ছাড়িশেন, তাঁরা কেন আবার সম্প্রহার করেন ?

স। না করে কল্বনে কি । কারো নাম কারার বে বেলে না। আমি বিলিলেত কেই আমার গুনিবে না। এক জারগার গুঁডোও ডি করাই আলেলা ইডব্রু তাল মনে করিরা এইরূপ করিতে সকলে বারা ইইরাছেন। কিন্তু শাস্ত্র ঠিক আছে। সকলেই আমরা মুক্তকঠে বলিতে পারি, সাম্প্রাণারিকতা মহাপাপ! পূর্মকার লোকেরা বিশেষ বিশেষ মতভেষ বশতঃ আপনাপন বিশাস সংস্কার অনুসারে সভ্যরক্ষার জন্য শতর দল বাঁবিত, আমাদের মধ্যে মডের একতা আছে, মূলতঃ কোন বিশেষ পার্থক্য দেখা যার না, কেবল আত্মকর্তৃত্ব পদমর্যাদ। প্রভৃত্ব এই সকল সইরা দলাদলি হইতেছে। সেল্ফে আর প্রাউত্ ইন্ডিভিজ্বেলিটিভেই সর্মনাল্টা হইল। এমন আত্মাভিমান অহরার আর কোন সমাজে আপনি দেখিতে পাইবেন না ধ্য

এ কথার বিকটের মনের আগুল বিগুণ জলিয়। উঠিল। সে বলিল, "মহাশর, বাস্তবিক দাদা বাবু বা বলিলেন ঠিক কথা। "সেল্ফ" থাকিছে, এবং কল্যকার জন্য ভাবনা থাকিছে কিছু হবে না আপনাকে আমি লিখে দিতে পারি। বৈরাগ্য না হইলোকি ধর্ম হয় গ হার ! এ জনিত্য সংসারে কেই কারো নর। এক জনের বদি ত্রী অভাবে বংশ লোপ হয়, কেই ভাকে ডাকিয়া জিল্লাদা করে না। অহস্তারের বেন সব জ্বতার দুস্ত্য সভ্য বদি বরেন, নববিধানের সামশ্রস্যের মত প্রথমে "মাই হাম্বল সেল্ফ হইতে বাহির হইয়ছে। কিন্ত কে ডা মান্বে দু

বা। সেকি প্রকার গ

বি। আমার কাছেত কোন দলাগলি নাই ! এঁরা সব গরে গরে বিবাদ করেন, কেং কারে। সঙ্গে মিলিতে চাহেন না; আমি হিন্দু বুটিয়ান মুসলমান বৌত জৈন আন্ধাসকলের বাড়ী বাই, বসি, ডাঙ্গের সঙ্গে বাই, আবোদ করি, সকলে ববেই ভালও বাসে। আহারের বিবরেও আনি সামগ্রস্য করিছা লইছাছি। হিল্ব স্বতনি, মুসলমানের গক্ত ভালা গকুর বোল, প্রীষ্টানের মুগাঁ শৃভর মেব ভাগ ইত্যাজি সবাই বেতে পারি। আবার ভুধু নিরামিব। হুব বি একটু বেশী থাকুলে ভাও বেশ বেতে পারি। কিছুতেই আমার গোঁভামি নাই।

স। আন্ত্রিন্সণেণ্ড হাস্বাপ। বাষ, আর বিদ্যের কাজ নাই।

বি। কেন গ্ৰাম্বই বা কি জানা গু আমার কি আর খাবীনতা নাই গ্ মশার, এঁরা উদার ভাবে থাটিরান হিন্দু বৌদ্ধ মুসলমানদের সজে মিশিতে বান, তাবের শান্ত ব্যাধ্যা করেন, অধচ রাজ্মে রাজ্মে মুধ দেখাদেখি নাই, এই কি উদারতা । এ দিকে রোজ রোজ উঠুতে বস্তে থেতে ভতে শান্তি: শান্তি: শান্তি: ! কিন্তু চল্ফু খুলেই মার মার কাট কাট শব্দ। আমি মশার ল্পাইবভা। ভঁরা ব্ধান শান্তি: শান্তি: শান্তি: বলেন, আমি মনে মনে বলি, "নারদ, নারদ, নারদ।"

বা। ৰাউক, আৰু ও সৰ ভূন্তে চাই না। নিৰ্বাণ সাধন আ। হংল আপনাদের মধ্যে চলন নাই।

অনজর বাঞ্চানাম পুনরার একবার সন্তানকোলে চপলার সেই রূপটী কর্ননি মানসে সন্ধটকে বলিলেন, "আপনার সহধর্মিণী কি এখানে আসি-বেন? তাঁহার ক্রোড়ন্ছ সেই শিশু সন্তানটা বড় সুকর।" বাঞ্চারামের কথা শেব হইতে না হইতে বিকট বলিল, "আপনি মিসেস্ রাজ্বনিকে দেখিতে চান ? আছো আমি ডাকিয়া আনিতেছি।" এই বলিয়া গৃহে ক্রেক্স ক্রিল।

বে সময়ের কথা আমরা লিখিতেছি সে সমরে বাঞ্চারমের একেখর-বাদের দিকে একটু মতি ফিরিরাছিল। কিন্তু তাহা এক প্রকার অজ্ঞেরতা-বাদেরই নামান্তর, বিখাস তন্তির সালে ভাহার কোল সংশ্রব নাই।

সঙ্কীচরবের নিকট বাছারামের মনোবাছা পূর্ব হইল না, লাভের মধ্যে নাজেবের প্রতি তাঁহার কিছু অব্রহা অন্থিয়া গেল। সঙ্কট সন্থটে পড়িরা ব্রাক্ষ হইরাছেন; তিনি আতিও বজার রাধিবেন, সাহেবীখানাও করি-বেন, আবার ব্রাহ্মসমাজও চালাইবেন, কাছেই তাঁর নিকট নিগুঢ় তত্ত অবপত হইবার আর প্রজ্যাশা কিরপে করা বার। বুরজি এবং টাকার বোগাড় বাকিলে এত দিন হিন্দুহলে বিশিরা বাইতেন। বিবাহের অনু-বোধে ত্রাক্ষ হওরা, সাধন ভত্তনের ববর কে রাবে ? পরে সপুত্র বিসেস্ গাসুনী সভাছ হইলে বাঞ্চারার তাঁহার আপাদ মত্তক বিজ্ঞানদৃষ্টিতে নিরীক্ষণ করিয়া তাহা ভাবিতে ভাবিতে গ্রহে চলিরা প্রেলন।

यावेवात अञ्चल विकृष्टे कांशांदक वाफ़ी (श्रीवित्रा विवाद खना अटक अञ्चन করিতেছিল। সঙ্গে বাওটা ভাষার নিভান্ত স্বার্থহীন নয়। সে ভানিত, সজোবিণী বিধবা এবং নিশানার বাবু ভাছার বিবাহ খিবার অন্য প্রস্তুত चार्कन। एविचरव रा वाक्षाशास्त्रत निकृष्टे देशमाति कतिएकिन अवस् নিজের কোয়ালিফিকেসেনের বর্ণনা করির। পাচে পাচে বাইভেছিল। এমন সমন্ত্ৰ চারি পাঁচ জ্বন লাঠীহাতে, মূর্বে ফেটাবাঁধা দৃস্থাবং আকার লোক আগিয়া তাহাকে ধরিল এবং মারিতে মারিতে ধীষ্টিয়ান পদ্লীর क्टिक होनिया लहेबा हिलल। खहारबब धमरक विकट्टिब हारि देखिया পেল, ছে'ড়া পচা প্যাণ্টেলুন টুকরা টুকরা হইল, মুখের চুর্ট খসিয়া পড়িল। পরিশেষে অনেক বস্তাধন্তির পর লাঠিরালদিপের হস্ত ছাড়াইরা সে উদ্বিধাসে পৌ পৌ শব্দে ছুটিয়া পলাইল। পলাইবার কালে একটা শেরাকুলের কাঁটার ঝোপে ভাহার কাণড় অড়াইরা বার, এ দিকে পাছে পাছে গুণার হল ছটিতেছে; বিকট উপস্থিত বুদ্ধির প্রভাবে অক্সের সেই ছিল বিচ্চিত্ৰ আবরণটা খুলিয়া ফেলিয়া বিশ্বা কেবল বেহুখানি মাত্র महेबा श्राम कवित्वन । कांग्रे छाणाहेल श्राम श्राम कब थाना चान त्म किन बच्चा शहिए मा। छात शत बक चन बनवान वर्ण महादिदत्ते . (बोड़िया चानिया छाहात कान ग्रेनिया धतिन। किंक विकृष्टे अब व्यक्त कृष्टिप्छिन त्व वर्षादात शास्त्र काम शास्त्र तिश्वा त्रम, त्म वय-কৰ্ হইয়া আত্মরকা করিল। সৌভাগাঞ্জেৰে বাছালাবের গারে ভোল আখাত লাগে নাই, তিনি নিরাপদে গৃহে পৌছিলেন। বিকটের ও রপ ছৰ্মশাৰ কাৰণ আৰু কিছুই নমু, তিনি খ্ৰীষ্টবান পদ্মতে সে দিন বুৰ্গী ক্ৰেম্ব व्यविष्ण बान, त्रिया (एरवन, दक्ट कावां नारे, विना श्वत्राय हातिही मुत्री क्षत्र कृतिशा वाजी जानित्वन । शारात निकृष्ट व मूना गारेशहित्वन कारी

আপ্রসাৎ করিলেন। এই জন্য করেকটা বুীটিয়ান যুবক তাঁচার ঐকরপ বিভ্যমা করে। এরপ ঘটনা তাঁহার অদৃষ্টে প্রায়ই ঘটিত, এটঃ নুডন্নয়।

অফম পরিচ্ছেদ।

পাষাণে অঙ্কুর।

युवा প্রকৃতিবশত: এবং পারিবারিক চুর্বটনায় বাঞ্চারামের চিতে পর্যায়ৢ-ক্রমে অনেক একারের পরিবর্ত্তন ফটিয়াছিল। কিন্তু এক বিষয়ে তিনি ৰত ভাগ্যবান ছিলেন। ৰদিও বয়েধর্মপ্রপ্রভাবে কথনো অক্তৈবাদে, কৰ্নো অভ্যাদের অমীমাংগিত আবর্তমধ্যে পড়িয়া একবার এ সীমায় আর একবার ত্রিপরীত দীমার চলিরা বাইতেন, ত্থাপি জাঁহার মনের সাম্য কিছতেই বিনষ্ট হয় নাই। সেই জ্বন্য চরিত্রটী বরাবর বেশ নির্দ্রল শুদ্ধ ছিল। কাহারো উপকার করিতে পারুন না পারুন, অনিষ্ট কোন দিন কাছারো করেন নাই। দাম্পত্য প্রেম বা পারিবারিক সুধ সস্তোপে विकेष इरेशां कराना निशामा भएएन नारे, बावर काल शृत्वा सना भाभ পৰেও কৰনো যান নাই। তত্ত্বিপাত হইয়া একাগ্ৰ চিত্তে বেমন একটা अक ही विराम स्थारनत भाव (वर्त शाविक स्टेटलन, (क्यानि काहा क्यारक আঘাত পাইয়া ফিরিয়া আসিয়: পুনরায় নির্বাবের অনস্ত শান্তির ভিতরে প্রবেশ করিছেন। ফলতঃ নির্ব্বাণ সাধনের শক্ষে তাঁছার স্বভাব চির দিন अमुक्त हिन । निर्क्तिकार निर्क्तिक सम्मा रहेश अरनक कन जिनि निक्रिय অবস্থার বাকিতে পারিতেন। প্রতিকৃল অবস্থার ভীষণ তৃষানের মধ্যেও এই ভাবটা তার অবিচলিত ছিল। বৈজ্ঞানিক মত বিশাস পরিবর্ত্তন ও शर्वन मचरक (र माधावन निषय मरनायनराज व्यवनिष्ठ च्याह्य, जनसूमाद्य वर्शन क्राम वर्षानिवरम वाक्षावाम उच्चवारकाव किव किव वार्षाम श्वन्भविद्यारी बरणा किएत समा करता। अथरम गुक्तिचविशीन निर्धाय मक्तियाह का আধাব্দিক অহৈতবাদ, তাহার পর অনাজ্ববাদ বা জড়াইছতবাদ, তদনদ্বর বৌত শান্তের নির্মাণতত্ব আলোচনা করিরা পরিশেষে অজ্ঞাতসারে তিনি পৌতলিত। ও নরপুকার রাজ্যে উপনীত হন। ইরোরোপের আব্দিক ওগ্ননিত্ব হত, সংশারবাদ আলোচনার পর বৌত লাজের নির্মাণ, কঠোর নীতি, অহিংসা এবং দরাশীলতার প্রতি উাহার একাপ্ত অনুরাগ কর্মিয়াভিল। আগপ্ত কোমতের নারীপূজা বা মন্ত্রাত্বের উপাসনা উপরিউক্ত মডেরই অবল্যাতাবী শেব কল ভাহার আর সন্দেহ নাই। ইহার কিছু পূর্বেক করেক দিনের কন্য বাপ্লারাম পণ্ডিত একবার বিষদ্যক্তিই হন। লখা চুল রাবিরা বাগবজ্ঞ স্বস্তারন হোম করিতেন, ভূত প্রেত নামাইডেন, জলপড়া বাইতেন, করকোণ্ডী গণাইতেন, দুশ্য বস্তুর পরিবর্ধে অদৃশ্য শক্তির অন্ত্র অল্টবাদ্যক্ত প্রভৃতি বৃজ্যুকদিগকে বাড়াতে ভাকিরা আনিতেন। এক্ষে তিনি কার্য্যতঃ জড়বাদ্যী হইরা নরপুকার সোণানে আরোহণ করিবেন।

কিছ এই পথে আসিয়া বাঞ্বায়াম মনুষাকে, বিশেষতঃ নারীজাতিকে সামান আদর এবং প্রাতি করিতে শিবিলেন। ইবার প্রভাবে সজোবিণীর প্রতি তাঁহার প্রেই ভালবাস। ক্রমে বাছিত হুইতে লাগিল। নারীপ্রকৃতির মার্য্যা রসের অন্তের মার্য্যা বনর করানী করলোবিভলোলুগ নির্দ্ধর মুভাব সৈনিক পুরুষ; কি শৈলকক্ষরনাসী অসভ্য নাগা ভিক কুলা গারো, কি মুণ্ডিত্যক্তক ভিলক্ষারী অন্ত উলক্ষ বৈক্ষর বাবজী; কানা বোষা হাষা কালা বৃদ্ধ পক্স হেক্ষনা কাজানা পাগলা টিকিমাধার নামাবলীগায়ে ভট্টাচার্যা পর্যন্ত রমনীর রমনীর কোলল কাজির এবং মধুর ফভাবের প্রভাবের প্রতিশ্বিক কর্মান করেন। মহাজ্ঞানী সংশার্ষালী অন ইবাটি মিলের কুতর্ক্তিত সক্ষম নাইছ। মহাজ্ঞানী সংশার্ষালী অন ইবাটি মিলের কুতর্ক্তিত সন্ত নারীসংসর্গে শেষ এমনি ভাবুক প্রেমিক হইয়াছিল বে, ভিনি ন্ত্রীর সমাধিভূমির পার্যে এক ব্রহ্মান তথার অবস্থান করেন। তবে বাঞ্বায়াম একা কেন সে বর্মা বর্মিত প্রতিশ্বিক এক বর্ষালাত থার অবস্থান করেন। তবে বাঞ্বায়াম একা কেন সে বর্মিত প্রতিশ্বিক প্রতিশ্বিক প্রাতিশ্বিক ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ক্ষম্পরিক তথার অবস্থান করেন। তবে বাঞ্বায়াম একা কেন সে বর্মান ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ত্রায়ার প্রতিশ্বিক ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ব্যক্তির বিত্রীপ্র স্থান্তর ব্যক্তির বিত্রিক ব্যক্তিক ব্যক্তির প্রতিশ্বিক ব্যক্তির বিত্রীপ্র ব্যক্তির ব্যক্তির বিত্রীপ্র স্থান করেন।

ক্ষা কুরে বেন এক একটা কুল কুটাকে লাগিল। অথা তিনি সভোবিনীর ক্ষার তত তাবিতেন না, ডাহার ভিতরে প্রবেশ করিতেন না, এককে ভাহার সংফ নিশিয়া স্ত্রীপ্রকৃতির বিশেষ তত্ব অধ্যরনে ওঁছার স্পৃথা অসিল। ক্রেমে ধরা বারা একটু বেশী হইল। কোন রূপে তাহার একটু সেবা করিতে পারিলে বেন তিনি আগনাকে এখন কুডার্থ বেধ করেন।

কি সংখ্যাধনীর জ্বংগ্র শ্নাভা ভবু ইহাতে পূর্ব হয় না, কেমন বেন কান কান লাগে, আনুণ হ হ করে। কেমন এক প্রকার অনির্দিষ্ট অসুবের ভীর ভাগ অভবে দিবা নিশি আনিতে থাকে। বে প্রেমাম্পাদের চরণে তিনি আস্ত্রসমর্পণ করিয়াছেন, সে চচ্ছের সম্মুখে; পূন: পূন: ভ্লীয় বিমল কান্তি প্রস্থানন সন্ধানন স্কর্ণনে নয়ন ভৃপ্ত ইইতেছে, ভাহার স্মধ্র স্থাবিজ্ঞ বচনাবলী কর্পে প্রবেশ করিভেছে, ভথাপি জ্বংগ্রে আলা দূর হয় না।

অজানিত মহাসমূত্রপথে নাবিক কলম্বস্ বেমন বিখাসে নির্ভৱ করিয়া बाराक ठानारेबाहितन, मत्कारिने बालतिक वृद्धत्व (श्रापत देखनाव উৎসাহী হইয়া আশাকে অবলম্বনপূর্ত্তক তেমনি এই অপরিচিড প্রেম-भारत कार्य कारण कारण कारण कार्या कार्या वार्या कार्या कार क्षरमा भण्डाकायन करवन नाहै। अछ दिन स्वक्रभ नांधावन खारन वाहा-রামের সেত্রা করিয়া প্রেমপিপাসা চরিভার্থ করিছেছিলেন, তাহাতে আর चाना विकित ना । काल সহকারে ভালবাসা यত প্রবাঢ় হইতে লাগিল, সেবার ভাব তত প্রবল হইয়া উঠিল। কোন ছিল কোন স্থবসাল উপা-(क्य मिष्ठीत शकात शक्क कवित्रा किर्णन, कान किन टिविरम्ब अभिक ভাল ভাল স্থকর পুলোর ভবক এছত করিয়া রাধিতেন, কখন বা সংখ্যাভাত কুমুমের স্ট্রেণ মালা পাঁথিরা তাঁহার করে অর্পণ করিতেন। बक दिन बीचवाल दिशालात वाक्षाताम देवित्वतात व्यक्षमात्रिक অবস্থায় পুত্তক পড়িতে পড়িতে নিজাগত হন, সেই সময় সভোষিশী পরিছাসক্ত্রে একটু ঠাওা অস তাঁহার পারে ছিটাইরা বিরাছিলেন। ভাহাতে পভিতের মুম ভালিরা গেল বটে, १०% এমানভিজ্ঞা এবং বিজ্ঞানের বোর णांचिन ना; जिनि मत्न कतिस्तिन तृति देशवाद किछत्न मत्काविकेत शंक হইছে জন জানিয়া পঢ়িয়াছে। পণ্ডিডকে নিডাল্প সভাবুনের লোক মরে

पश्चिम गरत चार किन कार्यामा करिएक एक जाएगी क्वेरकन था। जकरा बक्रण रेंजिरशास्त्रक त्यारकर जरक बरनक बोलाइ चारवार पहिलाब स्विद्यक गातिक । विवाधारत क्वम किनि निवासिक एरेटन मरवास्ति बारक बाहक বুবের উপর পাবার বাভাস করিতেন এবং বাছি ভাতাইয়া ছিলেন। রাজি-कारम पुतारेका शक्तिम बनाकि बाहे। देश दिएक । वादारक विमि क्टर नाम **ভোজন करतन, जातारम निजा गान ; डांशांत ग्रही गाशांड प्रशक्तिक, अयर** পরিজ্ঞাতি পৃথালাবত বাবে ভজান্য সভোবিণীর প্রকাত্তিক বছ পূর্বেতি हिन, अकरन जाता अविकास द्वारा छात्रा ध्वकान गाईएक नाविन । कि दक काराव विरामन केरणमा, नाशावाम सर्वेटक (न काराव कि केमनान माधिक हरेत, जाहा नविकात करन किहरे वृधि छन ना; खनिनार खसकात हाका. অবচ সেই অভ্নার বড় লোভের সামগ্রী; অপ্রক্টিড আবার অনিক্রডার ब्राट्स द्वन कछ कि चुनवब छिनि शारेदन, देशरे ब्राट परेछ। बून कथा जरकाविनीत जारनत किएव बक्टी कि बमा श्रियामिक जरबम करिवाहिन । সেটা কি, ভার বাড়ী কোবা, নাম কি, ভার আকৃতি প্রকৃতি কিরণ, কি সে हाइ. ब जुक्त विवादत अदिहत क्रियाण दन चारत नारे, तमाह वर्ग विच-मृद्धि बहिट्य छथन युका चाँदेर्य ; अथन (क्यम (यन शालाक बाँवाह काँवान বের মধ্যে ফেলিরা অনাথা কুলবালাকে সুরাইতেতে, যেন ভাতার ছত্তে অপ্রেরজা চাপিরা ব্লিরাছে। তাই সে ইচ্ছা করে বে এক বার বাঞ্জু-बारम कारक वित्र बदर शह कति, छाँशांक जाएन कतिन। नामा मामळी बाहेर्फ क्रि, काँत बारब बक्ट्रे नाबाव बाफान कति, किर्करन क्रे बरन स्वकारे. क्षप्त बुलिया महत्तव सूध कृश्तव क्यों करें, बावर कान कविया कारा कुनि । क्रमाय यक क्राम्यामा च्याटक.--- रेक्का कृति छेवान व्यवनाग व्यव शव तक् কৰ্ণ প্ৰভাতিকে ভাছার দাস করিয়া দিবা নিশি ভাহাসিকে প্রিয়তমের সেবায় নিয়ক বাৰি এই কেবল ভাষার কামনা। সমগ্রাহী ভাবুক গ্রেমিক কবিপুণ अवना वृतिरा नाविवाद्यत, अननी त्यम म्हामत्क छनानान क्वाहैबाव জনা ব্যাকৃত হয়,সভোষিত্ৰ বাহারাষের জনরে নিক্তৃত্বের উর্বেশিভ শ্রেমা-∠क्त हानिया क्रियात क्रम एक्ति क्षित स्टेशाइ । व्यवसा स्वर्थाक्त्रा-क्रक्रबन त्वज्ञन चाननारका विद्यव श्रेक्टवन चान गुणा रक्षात देवसानि আরভি রহোৎসব অন্তরাপ ইত্যাদির অন্থ সহাসর্বীদা ব্যক্ত, কিছপে পিত্য দব দব ভাবে শীয় ইউদেবের তৃষ্টিসাধন করিবে এই বেনন ভাহাদের আকাক্ষা, সভোবিশী ঠিক সেই ভাবে বাপ্তারামের নিত্য সেবার নিযুক্ত রহিলেন।

চাহার ঈর্প সেবা সৌঞ্চন্য প্রীতিকর ব্যবহারে বাপ্তার্যারও মনে মনে অবশা তাঁহার প্রতি ববেই কৃতজ্ঞ হইছেন, ইহাতে তাঁহার জ্বর স্নেহরসে প্রিরা বাইছ, পে ভাব বাহিরে সমন্ত প্রকাশিত না হউক, কিছ আকার ইন্সিতে, ক্যার প্ররে অনেকটা বাহির হইরাও পড়িত। ইহা কি এক আকর্য পতীর রহস্য! এক অনের অক্রিম ভালবাসা প্রজ্বে থাকিয়া অপ্রের ক্রমে অগলিত ভাবে কেমন অল্পে অল্পে শীর অধিকার বিভার করে। শুইটী প্রকাশু প্রোভগ্নতী মহাবেদে গড়ল্প গাঁহতে চলিতেছে, ভাহার মধ্যে এক থণ্ড ভূমি ব্যবধান। একটা নহার গতি,—সম্প্র গতি সেই ভূমি জেক করিছা অপ্রটীর সম্বে মিশিবার অন্য হাইছেছে। জ্বমে ব্যবধান জ্বির প্রস্তুর কন্তর কঠিন মৃতিকার ভিডর স্রোভ প্রবেশ করিল, বাঁর ভালিবার আর বড় অধিক বিলম্ব নাই। অল্প ক্রেম মধ্যে প্রহে একাকার হউবে। এক দিকের প্রবল স্লোভের টানে অন্য হিকের গতি এধন ব্যবক্ষানুত হইরা আসিয়াছে, ক্রমে ফিরিরা এই দিকেই আলিবে। মানব্যনের কার্য্যের গতি কি প্রশা কি আশ্বর্ড অক্তে!

নবম পরিচ্ছেদ।

বিপদে বন্ধতা।

বৈজ্ঞানিক জীবনে নির্মাণজনিত পাতিবনের ভিতরে জ্ঞাতস। ।
ব্যন ধ্যেররস সংক্রোবিত হইল, তথান বাহারারকে তদ্বারা কিছু ভাবাছারত এবং প্রপান্তরিত করিরা তুলিল। চুইটারসের সংবোগে মানবমনে এক জনির্মান চনীয় সুধারস সমূহপার হর। বেন জ্যুমসূ বিভিড সুধারস। ভারিছাৎ

সক্ষিদ্ধ জীবন পঠনের পক্ষে এই চুইটা প্রধান উপাধান। ইবার সম্বারে জ্ঞানে ভাব, শান্তিতে ইউচা ও উদ্যয়, এবং গ্রহণ কবিন্থ রস স্কারিত হয়। বেন ছিব বীর গভীর জনতা জনবির প্রশাভ ক্ষরের জ্ঞা বিচিমানা কুরুমক্ষ মান্তত হিলোলে ক্রীড়া করিতে বাকে। দীরস চূর্ভেণ্য শৈলবক্ষ বিধানি করিয়া বেন ছাল্য নির্পান বারিবারা বহিয়া বায়। নারীসভাবের মধুরভার বায়ারামের জীবন ক্ষম কিছু মিই হইয়া ইঠিল, তখন তিনি পৃথিবীর সেবায় উৎসাহী হইলেন। অনস্মান্তের হিতরতে আক্ষোৎসর্গ করিলেন। ভাল-বাসা এবং সেবা এ চুইটা এক পুজে সম্বত্ত। নির্পাণ শক্ষিবারে বত হিলবাসা এবং সেবা এ চুইটা এক পুজে সম্বত্ত। নির্পাণ শক্ষিবারে বত হিলবাসা বামের বাহরে উপলার বা সেবার প্রকৃতি জ্যোনা, কেবল চুপ করিয়া একা নির্জনে বসিয়া বাক্ষিতেই ইচ্ছো হছা। পরে ব্যান সন্ত্রণ পুজুবের নীলারস বিশ্বিৎ ক্ষমে প্রবেশ করে, পৃথিবীতে জল্পতঃ একটা ব্যক্তির সম্বত্ত আন্তরিক প্রেম্বিলন হয়, তর্মব্র প্রান্তি টানে মনের অনুমানে লোকে কডই না থাটে। এই অবস্থায় সাধারণ সেবায় ভাবও ক্ষমের উবিভ হইয়া থাকে।

এই সময় নিশানাথের পদ্মী ধরা কাশী প্ররাগ শ্রীবৃদ্ধানন মধুরা প্রতৃতি তার্থ পর্যাটনের জন্য অতিগর ব্যাকুলিত হন। সন্থানহানা বন্ধ্যা নারার পজে শের বরুসে তার্থকর লার্য কি আছে। তাঁহার অহতেরাধে নিশানাথকেও কিছু বিহানর নিমিক বিছেলগামী হইতে হইজ। ভাগিনের বাস্তারাম উপস্ক বিশ্বান্ এবং বিশাসী সুবা, তাঁহার হক্তে বাজীর সমস্ত ভার অর্পণ করিয়া তিনি সন্ত্রীক ভ্রমণে বংহির হইলেন। বাজীতে একটা বৃদ্ধা কুট্ছিনী ছিল, সজ্যোবিশীর ভার তাহার হতে বিয়া গেলেন।

বাল্বাবানের এবন কাল কর্মে ক্লাচ লামিরাছে, স্করাং রাজুলঞ্চত এই ভার তিনি আহ্লাছের সহিত এহণ করিবেন। এই সব বিষর কার্য্য করিছেন। জেন, ভাষার সক্রে সজে অংশের হিতকর বিবিধ সংকার্য্য করিছেন। সেবাল্রন্থতি বিকসিত হওয়ার সক্রে সজে ভাষা চরিভার্থেও বেশ সুযোগ ঘটিয়া গেল। এবন আর বাল্লারার পুত্তকের কাট নহেন, জড়ভয়তের বড়। একা একটা হয়ে চুপ করিয়া বসিয়া ভারেন না, কিছ বিচ্যুতের ব্যাহ কার্যা-কেত্রে বিচরণ করেন। কর্মনা ক্রিক্রিলিরের লন্য হাতব্য ভাতারের স্টি,

त्मान्ति जीवितामय वार्षिति स्वतं क्षेत्र राष्ट्राह्म स्वे त्यारं वर्ष्य व्यवस्थान विद्यान स्वारं वर्ष्य व्यवस्थान विद्यान विद्यान स्वारं वर्ष्य व्यवस्थान विद्यान विद

्र अक्षा वर्ग कारण आवास भागा बारन कीरण महास वाहकार रहेत क्रिक्रिक्ट बाबारम विकास रमच मारे, जानर त्योदस शतक करना मही मुंद्रहिने बाम दिन मन एक फर्करेडा केंद्रिए मालिन, डायांडा यापांड राष विशा कंडिएक जांतक कतिवारक, यहा कारतात कोनकुठीवारणत वादा पृति-ट्रिंग्स, द्रकृतका अभावन क्रमाणात्य कृष ब्राप्त, बावन मामा आधार ब्राप्तन बट्टा बनाडेहै। दर्श दिन । विभव अवाकी दर्शकां वार्षेटक कान वारम मा । बाह्यवर्षे क्रमाच्याटक काविका व्यक्तिम । व्यक्तिका बाह्यक विद्याधिक de un celle vient ven feren, diete muire aleine ভিকিৎবা আরম্ভ করিবেন ৷^বিনকেভ ব্যেদিওপার্থর দায়া : वाकी श्रीकार जानिरामा शामीत बाम कर्त्र शक्तिका आंक् देवबारम रमपारम कर्जुल क्षत्राविरामम । विषय क्षानि राव निवन "कमाक्रेज क्ष विद्यापने कारान १९४ वालिन ना, अपि विस श्रीक साथ एन पन wiest tone after nifes : attes vie Bermit fegel nelten unique affer, fallentain faufen fen artere affen, mit wei aus britte efter fen fenbennible mit nifen et i von ere eier-HE OF PRINTS WELL OF STREET, MARIE SCE. OF STR an springer veryon often over the man species THE PROPERTY OF THE PARTY OF

to the suite was an entitle suiting the reffen a core foliant strate more an allian tibes of the मा मात्री बांकक वासिका प्रकारण शाव पावारेंग । स्थान क्षार हुना समावीत अटम मृत्य विश्व प्रचान साह, कारांच प्रधा गांचे विश्वपद्मक प्रदेश गाँउता লাতে । লাগের করে লোক সাং হতবুলি হইক। পেট করিছা কাশ কাল বুলিক ्वात बारेटक क्लाकेशक बटका कावात सांवरणकी बारेटक वा वाविकारक वालि (ताक कारे । (कारव केंडनमा कारत, त्यात त्यात पुरावके अवृति हर वामन वक बारेटक टार्ड का क्रिया बार कारे टमाटक बारेटक मार्विक है किए क्रिया े केंग्रेस त्यान त्यम बारमस सम्बद्धान क्रिक विश्वानम्ब केरतः क्यम अस्मान स्टेस (कर क्रीरा वृतिक नाताना; जन राजात्मक्ष्या क्रिया काशाः वीकरिति ह ं रकर वेर्षपूरी रहेश, सारव राष्ट्र हिशा, धानवरन एक क्यारेश केर्बरन विक साम वादेरविक्त, तारे समय वादाव त्या की की का कम कम विका किया क्रेडिम । वाश्रिक कार्रवाक्ष जात जात नवत तरिन मा। दक्ष वार्टि খৰ কেলিয়া বাড়ী আমিয়া নিষ্ণাভা বাইয়া বাজ বনিয়াছে, অমুদ্ৰি ভাষায় अक राष्ट्र (कर प्रदेश । कोविटका एडिटवास विवास मुद्दका मध्यात स्थित े बारत, जाशक काशनारे कृत रह । विवरत वरत प्रकार त्यान प्रमुख प्रकृत महेता हर का वि कि कविटक सानित । ावादारनत द्वायक माहे. देशका ं सार्रे बनावेंस्त तानी बार्रेशः कारांत बढे श्री हर । बारमानी कीय बाँक मक ं वकोवन महबारम दर्शकरम वक हुई मांगादिक वरेश महिनादक रह व्यक्तिविक রোধীকে বহিল্প টানাটানি করে, ত্বত মাত্তমকে কৃত করে কৰিছা পাইতে ्राप्त-। अप्रति प्रदेश दर शिरमङ द्रश्लाङ प्रदार गरिक वर्ण्या पात्र मा, पार्टम कीता व्यवसार तम जातिरिक त्राविद्याः त्रावित्र । स्रोताव त्यांक्ये अस हिक्तिमा था तका कवियात रूप मारे ; गेरियात रूप मारे ह मार्के किय अर्थ कारण स्टब्स क्या अर्थ क्यांचेता ट्राल, कारणा कीर्यक पहुँक पुरुष द क्यानवार परेन । पुरायरका पुणिताय, रविवारक क्रीका द्वारन columbi mare fine apren fend un, unanging Sharif े देशायुरव बाक्टे तम त्याम क्यान कृति उस गरेश केले र सम्बद्धा mile, whenever their core, we wished their seasons as

কুডাস্তের করালগ্রাসে পভিত ছইতে লাগিল। কেছ কেছ বাপাঁচ সাজ-ছিন শ্বাাগত ছইরা জ্বাতিসাবে জুগিল; তাহার। মরিজে চার, তথাপি মরধ-ছর না।

বাঞ্যাম বত দূব পারিলেন বিপন্ন লোকদিপের সেবা করিলেন,শেবে আর কুলাইরা উঠিল না; ওলাউঠার মহা প্লাবনে প্রাম ভাসিরা এবং ডুবিরা পেল। এ সকল দেখিরা শুনিরা সন্তোধিশী মনে মনে বড় জীতা হইলেন। বাড়ীর চাকর চাকরাণী আমলা দরোরান কডক প্রেই সরিরা পড়িরাছিল, বাহারা অবশিষ্ট ছিল ভাহারা বাঞ্যামকে বাড়ী বন্ধ করিয়া ছানাম্ভর চলিয়া যাইবার পরামর্শ দিল। তথনও যে সকল লোক প্রামে আছে, তাহারা বাঞ্জান্মর মুব চাহিরা বাছালে; তিনি ঘদি প্রছান করেন, তাহা হইলো ভয়ে নিরাশার তাহারা মরিয়া বাইবে। ইহা বুঝিয়াই তিনি তাদৃশ মহান্মারীর মধ্যেও পড়িয়া রহিয়াছেন। বদি মৃত্যুও হর তথাপি ভিনি প্রাম্পরিভ্যার করিবেন না, এই প্রেভিন্তা। চুই এক জন ঝি চাকরা রহিলা আর সব না বলিয়া চলিয়া গেল।

লোকেরা সারের কাপড় ফেলির। থিছে লাগিল। ছুল শরীরধারী ব্যক্তির। ভাঁছবের রড পেটে বুকে কাছা মাবির। ভালে ডুবিরা বসিরা থাকে, কেছ সরবৎ থার, কেছ ভিজা কাপড় পারে ছড়ার, কেছ বরফ পুঁজিরা বেড়ার, বছরুরের রোসীদের জারে। কট; পারের জালার ভারার। ঠাওা মেঝের উপর কুল্পপ্তের ন্যার গড়াগড়ি দের। জলপানে ড্কা: ভালে না, ভোজনে পেট ভরে না, নিস্তার দেহের জাবল্য বার না; বাপ রে, মারে, গুলার গেল রে, সকলের মুর্বে কেবল এই শক্ষ। মহা উভালে মাথার খুলির বোড়ের মুর্ব দিরা বেন মান্তিক গলিরা গলিরা বাহির ছইতে লাগিল। লিখিতে কিছা পড়িতে বসিলে ছরক্রিত থারে গারে খাম ছুটে, বিছানার ভইলে প্রতি লোমকুপে পরঃপ্রণালী বহিতে থাকে।

এইরপে শোক সকল অভিন হইর। উঠিবছে এমন সময় এক দিন মধ্যাক্ত কালে আকাশে প্রর বর্ণ ব্যাকার মেখ সঞ্জিত হইল, ক্রেমে ভাছা অনক গগন ছাইরা ফেলিল, বোধ হইভে লাগিল যেন আকাশটা থানিক দ্র নীচের দিকে নামিরা আসিরাছে। কিন্তু পাছের পাছাটী নড়িভেছে না, নিস্তুর আকাশ রাগভরে পম্হইর। আছে, ভাব প্রতি শেখিলে ভরে এবাণ উভিবা যার।

এত দিন বাস্থারামের বাড়ীতে ওলাউঠা প্রবেশ করে নাই, কেবল রুঙ্ধা কুট্বিনীকে লয় করিয়া সে শমনভবনে লইরা গিরাছিল। আল আহাবের পর সন্ধোষিণী এক বার বোমি করিলেন, চুই বার লাভ হইল। চুই লাভেই উাহার নাড়ী বসিয়া পেল, হাতে পারে খাল ধরিল, জলপিপাসার পাত্রখাহে প্রাণ কাটিতে লাগিল। বাস্থারামের প্রকৃতির এমনি পঠন, সহজে ভাহার চিত্তে বড় একটা উল্লেপ উত্তেজনা হর না, কোন প্রকার ভাবাতি-শব্যে বে তাঁহাকে চঞ্চল ব্যাকুল করিবে ভাহার সম্ভাবনা নাই। শাস্ত প্রভাব ভাবে ভিনি সন্ভোষণীর চিকিৎসা ভগ্রয় করিতে লাগিলেন। পীড়া ক্রমশং কঠিন হইরা উঠিল।

এ দিকে বেল। বন্ধ শেষ ছইরা আসিল, মেম স্বাভ স্থানতর চইরা আনকাশমণ্ডল আফ্র করিল, এবং তৎসক্ষেত্র উঠিল। ফ্রেমে সন্ধ্যার আঁথারে মেমের আঁথার মিশিয়া ভূতল নভ্যণ্ডল অন্ধরীক স্ব

क्रकावा इतेशा (नगः अम्लब शहल वाजारमत मरव दृष्टि चात्रस इतेन। একে প্রামে লোক কমিয়া গিরাছে, রাড়ীর লোক জবও প্রায় সকলে भुनावन कविशास्त्र, वालि वहेंद्रा व्यामिन, वाक्षावाम अकाकी वार्गमसाव বাসরা রোপীর প্রতি চাহিয়া রহিলেন। রাত্রির বৃদ্ধির সলে সলে বোঁ বোঁ র্গোগো শকে ঝড়, আর ভাছার সঙ্গে ঝমাঝম রৃষ্টি; পুকুরে ভেকগণ, বাগানে পতপ্ৰকৃত মহাগীত আরম্ভ করিয়াছে, চতুৰ্দ্দিক হইতে শোঁ শোঁ গোঁ র্গা শক্ত উঠিতেছে। মহাবীর প্রভঞ্জন রণমদে মত হইছা পৃথিবীকে যেন রদাতলে ছিতে বসিরাছেন। প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড প্রাচীন মহীকুহ সকলকে কেশে ধরিয়া ভূতলশারী করিতেছেন, আবার পদদলিত ক্ষুদ্র তৃণপত্র সকলকে कि व विक्रिय कतिया डेक व्याकारम जुलिया पिएडएक। (स्थान वृष्टि श्राद-भार पद किल ना, मिथारन किनि चार्या पथ श्रीतकात करिता पिएएएक I বড় বৃষ্টি উভয়ে মিলিয়া শেষ ভূপ্রাক্তে গল। ধরাধরি করিয়া নাচিতে লাগিল, ভাষাদের পদাঘাতে প্রাণিগণ আকুল হইল। প্রন, ভোমার বে কত লীলা खाश (क दूबिरव ? शहारक (कारन नाठां थ, चूम शांज़ थ, कड चामत यक् কর, তাহারই আবার ভূমি ঘাড় মৃচড়াইর। রক্ত চুাবর। ধাও। ভোমাকে চেনা ভার। বেমন তুমি শার্ড শিষ্ট ভদ্রলোক, তেমনি আবার রাক্ষস দান-বের নাায় নিষ্ঠ্র নির্দ্দর অভ্যাচারী, ভোমাকে বিখাস নাই।

বাড়ীতে একটা বুড় বি ছিল, বাহারাম ভাহাকে রোগার কাছে বসিতে বালিলেন, লে বলিল, "বাবা, আমার লাবে একটা লেপ চাপা দেও, আমি শীতে মরি। একটা হিন্দুছানী বেহারা ছিল, সে ভাক্তারের বাড়া ঐবধ আনিতে পেল আর কিরিল লা। বাহারাম মুমুর্ প্রায় রোগীকে লইয়া সেই অনশূন্য বৃহৎ পুরীর মব্যে একাকী আগিভেছেন, নিকটে একটী হারিকেন্ লাঠন অলিভেছে। অছকারের আর পারাপার নাই; গভীর অছকারের উপর অন অছকার, ভবে ভবে ধরে বরে অছকার, গাঢ় নিবিড় অনভ অছকারে কন ছিক্ পরিপূর্ণ। বড়ের বেগের উপর বড়ের বেগ, প্রবল বৃষ্টিবারার উপর অভ্যার ইছিবারা দলে দলে পালে পালে ছুটিভেছে। জনমানব নিকটে নাই, সভোষিধীর বাক্য বছ, সর্বাধীর হিমাছ, মব্যে মব্যে কেবল কাডর নরনে এক এক বার ভিনি বাহারামের চিছাভারাকাভ মুবের পারে

চাহিতেছেন। वाहारक जिनि लाल्य प्रहिष्ठ कानवास्त्रन, व्यक्ति कारन मृकुानवाानात्व (प्रहे कोदनम्बा देनविष्ठे बहे त्क्वन महाम मास्नुना । एवन ভাঁহার কেবল ধোমামুরাগ টুকুট আছে. আর কিছু নাই। সেই প্রেম জ্যোডি-ছান জ্বীণদৃষ্টির ভিতর দিয়া মেখাবৃত অভমিত রবিকিরণের ন্যায় বাছির **क्हें एक क्रिया वाक्षाताम क्रमा का का क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा** वटक कराजन नाच करिया शाकु लहीका करिएजहान । क्याना जानमान स्व ছারা উত্তাপ খেথিতেছেন, কখন বা চক্ষের ক্লেম্ মুচাইয়া মন্তকের বিশিপ্ত (कथकक ननाहे रहेट महारेम पिएएकन। मरखाविनीत कथा करिवात मिक नाहे, मार्पात कथा भार्पा भिनाहेता वाहे एउए, किन्न श्रवात वाहा अवाक कानवामा क्रम्बाधाद्व देवनिया देवित्वत्वा जिनि मत्न मत्न कावि-(७८६न.- भिषा माषा जाषा छतिनी नकत्नत्र (मराहे मिडे, किंद्र (धमा-ম্পাদের সেবা আবো মিষ্ট। আহা আমার ডাপিড অলে প্রিয়তমের প্রেম-माथा भी उन रुख्य प्रत्यां कि प्रशापनामक । ध अवस्था आमात मुखा-তেও সুধ। এমন সুধের মরণ কি আমার ভাগো ভটিবে ?" এইরুপ काविका मरकायिनी यम आन्दव शनिका माजित मागदत बोदत बोदत कृविका शहेरजीहरणन । याद्य नक्षण पर्नात (याद दहेरज नात्रन सम जिलि महा-নিডার মগ্ন হইতেছেল। বাস্তারাম ছেবিলেন, মানুষ মরে, কিন্ত প্রেম সরে না। মৃত্যুর অভকারমধ্যে যেন প্রেমের বাতি তথনও অলিতেছিল। তিনি ষ্ডটুকু লেহ ভালবাদা দিতে পারিতেন তৎসমূলার এই অনাধনী শরণা-রভার সেবায় অপুণ করিয়াছেন।

রজনী ক্রমে গভারা এবং ভয়করী হইল, বায়ায়াম বাের ফাশান্যবের প্রভিক্রের প্রাণ্ডরের মৃত্যুর বিকট মৃতি বােধতে লাাগলেন। খন অর্কারের ভাষ্ব গাভার্য্যন্থ্য অন্তর আভাস অর্থান কারতে করিতে আএড স্মৃত্তির অব্যার অবসরপ্রার হইরা ক্রনে। ক্রেডেছেন, শ্বক্তে সকল হাত পা ছড়াইরা মুব ব্যালান কার্য় স্পাকারে পাড়য়া আছে, তাহার উপর চিল শক্ন হাড়াগল। শেরলে ক্র্রের লল বেউ বেউ শক্ষ কারতেছে। ক্রবনো লােধতেছেন, ক্র্বর্ণ শার্ণকার করালময় লার্য একটা মনুষ্যদেহ লাভ বাহির করিছা লয়। লয়। পা কেলিরা নিকটে আলিওছে আর সক্র চুই

ধানি হাত ৰাড়াইয়া আহার্য্য চাহিতেছে। কথনো ছেবিতেছেন, চতুর্দ্ধিকে ঘারাদ্ধনার কার ভাহার মধাে কেবল একধানি হাড়ের লালা মুধ হাড়ের জিহন।
বাহির করিয়া হাসিতেছে। মৃতদেহের বিকট ছায়া সকল বিবিধ বিভৎসাকার ধরিয়া উহার কলনা ও নিজাভারে প্রান্ত চক্রের স্মুধে
কেবা দিতে লাগিল। মধ্যে মধ্যে বাভাসের ঝাপটে অর্গলবিহীন দরজা
জানালার কপাট গুল গৃহভিত্তির অক্তে মাধা খুঁড়িডেছে। আলিস: ও
কার্বিস হইতে চ্ডুম লাড়ুম শক্তে ইট টালি উড়িয়া পড়িতেছে। মহা
ধুকুমারী ব্যাপার! মেল বাভাস বৃষ্টি ভিনে এক একে ভিন। এটাকে
বলে সাইক্রোন্। ইছা পুর্কে এ দেশে হিল না, ইংরাজি সভ্যভার সক্ষে

এই ভয় এবং বিপদের পেষণে চুইটী আত্মাকে প্রাণে প্রাণে মিলাইরা ধেন এক করিয়া কেলিল। সেঁ অনন্ত তু:খ্সমুদ্রে আপনার বলিবার আর প্রবিষ্ট হইয়া পেল। বাঞ্চারামের সেবাত্রত উদ্যাপনের ইছা যেন একটি মহা ৰজ্ঞ সকলে। অননামহায় হইয়া বোর অন্ধকার বড় বৃষ্টির মধ্যে রাত্রি ষ্ণাগিয়া তিনি বোগীর পরিচর্য্যা করিলেন। এই উপলক্ষে সভ্যোষিণীর প্রতি বাস্থারামের আফুগত্য মমতা ক্লেহ প্রীতিকে রাতারাতি স্বলে অক্টিত করিয়া তৃলিল। সভোষিণী তাঁহাকে ইতঃপুর্বের প্রচুর সেবাঝ্রে বন্ধ করিয়া ফেলিয়াছিলেন, বাহারায় ভাষার প্রতিশোধ দিতে পারিতেন মা তজ্জনা মনে একটা বড়ই ক্লোভ ছিল। ভালবাসার পাত্রকে সেবা করিতে না পারিলে জনতা অতিশয় বন্ত্রণা উপস্থিত হয়, কুভজ্ঞতাভাৱে প্রাণ বড় আকুল হইয়া উঠে, এই স্থাবের বাঞ্চারাম পূর্বের সমস্ত ক্লোভ নিবৃদ্ধ করিয়া লইলেন। সমস্ত জ্ঞীবন ঢালিয়া দিয়া সেবা পরিচর্য্যা করিলেন। এড দুঃরা যত দূর ঘনিষ্টতা আপ্রীয়তা হইবার তাহার আর অবশিষ্ট রহিল না। অনতর ওাঁহার সেই অকাতর পরিশ্রম হতে সংখ্যবিশী সে বাত্রা কক্ষা পাইলেন। ভিনি বাঁচিয়া উঠিলেন কেবল ভাতা नहरू. (अमान्नाक्टक चालाक कड़िया (यन नवकोदन नाक कड़िटनन।

দশম পরিচ্ছেদ।

কলির হিন্দুধর্ম।

আধুনিক সভাভার কলখন্ত্রণ হে সকল সম্মুষ্ঠান পুৰাকীর্ত্তি নগর উপ-নগরতে অলম্ভত করিয়াছে তাহার সম্ভত্তিত্ত কিছু কিছু নমুনা বসভপুর প্রামে দেখা যাইত। প্রামটী নিছাত্ত সামান্য ত্মান নয়, একটা উপনপর বিশেষ। সেই মহাঝড় বুটির দিনে ছানীয় হরিসভাব সালংসরিক উংসৰ চিলা অপ্রাস্থ সময়ে সভা বসিয়াতে, চারিদিকে পড়াকা পত্র পুস্মালা শোভা পাইতেছে। নিমন্ত্রিত পণ্ডিত ভট্টাচার্য্য এবং গ্রামক্ষ ভত্তবিশিষ্ট ৰাজিব। বসিয়া শাস্ত্ৰ পাঠ ও ব্যাণ্যা শুনিভেছেন। পাঠ সমাপদাত্তে পণ্ডিত গলবাল গোসামী দণ্ডারমান হইয়াবত্রতা আবারত করিলেন। ভিলাধর্মাব-লম্বীদিপ্তে অভদু ভাষায় নিকা উপহাস বিভ্ৰূপ করিয়া বক্ত। শ্রোড-মওলীকে জাগাইয়া ভূলিলেন। বে সকল নবীন হিন্দু মুবা ভাগবত ব্যাখ্যার সময় ইতন্তত: চঞ্ল ভাবে চাহিতেছিল, এবং যে সকল বিজ্ঞা প্রাচীনগৰ সংসারচিত্তার আবেশে নিজার ভাবে চুলিয়া চুলিয়। পড়িতেছিলেন উাহারা সকলে এখন উৎকৃষ্ নেত্রে সহাস্য আননে বক্তাকে ধন্যবাদ খিতে লাগিলেন। করতালি এবং হাসাধ্যমিতে সভ: তহা গ্রম হইয়া উঠিবছে. रका नाना तक एकीएछ विद्याशीमिनदक नानि विद्युखन, राक कतिएछ-চেন, এমন সময় প্রবল বেলে মহ। ঝড় উঠিল, পরের ধুলার আকাশ ছাইল, কাতাসের প্রচণ্ড তেকে ভট্টাচার্য্য মহাশয়দিগের আর্কফলা উড্ডারমান ছইল। আহা তৎকালে টিকীগণের কি শোভাই হইরাছিল ৷ হে টিকীছেব, এ খোর কলিমূলে তোমার যে কি মাহাত্মা ভাহা আমার বলিতে পারি না। ক্লেফ্ডজন্য হিলুব অধায়া গো শৃকর কুরুট মাংস ভূমিই কেবল আবি করিতে সক্ষয়। ু ভূমি বাহার শিবে ছান পাইয়াছ কার সাব্য ভাহার হিলুত্ব বিনষ্ট কৰে 🤊 क्ट अप्रहेरा हेरद्राविभक्ष रातुद्रा राजारक अत जान नारमन । राज्यस्य. ভূমিই কি কম ? আৰু কাল লাভি কুলকে তুমিইত প্রস্থিত করিয়া রাধিয়াছ ! ভোষরা জীবন জাপ্রত চুইটা সহোদর ভাই, ভোমাদিগকে নমস্তার।
আঙঃপর সেই বায়ুবেপে পুঁথির পাডাগুলি ঘুড়ি চ্ইরা উড়িতে লাগিল,
নিশান পত্র পুল্পের সহিত পাল ছিঁড়িয়া পড়িল, বকার মুধে চক্ষে, ভ্রোভার
কানের মধ্যে ধূলা চুকিল, অবশেবে প্রাণের ভরে সকলে গৃহে প্লারন
করিলেন। এই বড়ে সভার ঘর ধানি একবারে ভূতলশায়ী হয়।

मजात ल्यान উर्द्यांनी পाछ। कुछाताम च्छाठार्घा बन्ध घनमाम राद् বাঞ্চাবামকে সভার অভিভাবক করিবার জন্য এক দিন তাঁহার নিকট আসি-द्राह्मन । जिन बक बन दम्महिरेज्यो नदाल बदर पूर्वां मध्य पूरा, नाना विष मरकार्श दावा रेखःशृत्सिरे खात्मत्र मत्या तम कथा खातिक दव। निमानारथत विर्द्धां है। एक बानि आहे हाना हिन, छाश्रां उक्ता महा বসিবে, আর বাল্লারাম নিজে সভাপতি হইবেন এই তাঁহালের প্রস্তাব। ছরিসভার উদ্দেশ্য কি তবিষয়ে জিজ্ঞাসিত হইলে পাণ্ডাত্ব বলিলেন," ছিলু-वर्षाक व्यामता शूनक्कीविष अवश त्रका कतिएक हाहे। अकिएक शृहीवान পাদ্রী সাহেবেরা, অপর্দিকে ঘরের টেকি ত্রান্দ্রেরা আমাদের ভাতি কুল मन्ने कतिका स्किलिएक एक, विश्वादिशक श्रीत्वा विवाह दिए एक, हिन्द्र (इत्वा चात हिन्दुशुनी मात्न ना, चार्राधर्य लाल टहेन, लिखा लिखामत्हत নাম ডুবিল, শান্ত বিধি পূজা পাৰ্বাণ ব্ৰতাদি কেছ পালন করে না, দরে খবে মেছাচার, বিলাত হইতে প্রত্যাপত ভাতিভ্রষ্ট পতিত ব্যক্তির ভান-রাসে গতে ছান পাইতেছে; এ সকল দেখিয়া আর আমাদের 🐲 চপ कृतिशा थाका छेठिछ ? जालिन जाशास्त्र मशास्त्र मशास्त्र मध्य विद्यान वृद्धिमान সাধুচরিত্র ব্যক্তি, আপনাকে সভাপতি হইতেই হইবে।" অত:পর बाक्षाबाटम्ब मत्य भाषाबरद्वत के मकल विषय कर्याभक्षन चावक **२**हेन्।

বাস্থানাম জিজ্ঞালা করিলেন, কি কি উপারে আপনারা হিলুসভানছি-গকে হিলুখলে ছিন্ত রাখিতে পারিবেন গ্

কুড়ারাম বলিলেন, এই ছরিসভাই তার এক প্রধান উপায়। বাছা। কি প্রকারের লোক সভার স্বাসে ? কুড়া। প্রাচীন প্রাচীনারাত আদেই, তাহা ছাড়া অর্ছ বছসী ইংরাজি-শিক্ষিত নবীন হিন্দু অনেকে আদেন। মধ্যে মধ্যে উৎস্বাদি উপলক্ষে যুবকদিগকেও আনা বাছ। তরুপ বরুত্ব ছাত্রদেরত কথাই নাই, তাহারাই আমাদের ভবিষ্যতের বিশেষ আশা।

বাস্থা। তাহারা কি ধর্মশিকা করিতে আসে ?

কুড়া। প্রথম প্রথম অবশা সে আশা। করা হার না, আহার পান পান বাজনা বক্তার আমোদের অমুরোধে এখন আস্ছে; আস্তে আস্তেই ভাল হরে যাবে।

বাঞ্জা। যদি আহার পান আনোদের লোভে আসে; তবে ভাছার? সেই লোভের জন্য হোটেলেওভো যাইতে পারে ?

कूछा। छाछ পाরেই এবং গিরাও বাকে, তবু আমাদের ধবা লাভ।

বাঞ্জা। নিয়মিত ৰাইলো সভা তাঁহার। কি বপার্থ হিলুপার অনুসারে চলেন ?

কুড়া। সব কি আর পেরে ওঠেন, বিশেষতঃ আনেক ব্যক্তিকে আদি-সের চাকরী করিতে হয়, তবে অবশ্য চেষ্টা করেন।

वाक्षाः कैं। इति कि स्मरक्त्र थाका यान ना १ मकाशान करतन ना १

কুড়া। তাডা অবিশা অবিশা বল্তে পারেন। তবে কথাটা কি ভা আননেন, কথাটা হচ্চে বে,—বে কথা বল্ছিলাম, অর্থাৎ দেশ কাল পারে বিবেচনা করে চলিতে হয় কি না। সোমরস পান, আবে বন্যবয়াহ কুরুট মাংস ভোজন এ বিষ্তে অধিবাঞ্চ ব্যবস্থা দিয়ে বৈচন।

বাঞ্জা। আমি মশার অভ ফের খোর বুরিছে পারি না। যিনি থে ধর্ম-মত বিশ্বাস এবং প্রচার করিতে চান তদস্সারে তাঁহাকে চলিছে ছইবে, নতুবা তাঁহার কণার কোন ফল হইবে না। ইলা আমার প্রথ বিশাস।

কুড়া। সেত ঠিক কথাই বটে। তবে কি ভাবেন, আপাততঃ ছেপ্রের ছেলেঞ্চপ স্থর্ম ছেড়ে না যার, কোন রক্ষে তাদিগকে আটকে বেঁগে রাধা। এই আর কি। আপনি তো সকলই বোঝেন। কালমাহান্মাট। মান্তেই হয়। বাহা। আটকে রাধ্যেন কি দিয়ে?

क्षा। (कन, हविमणात्र अधि मश्चारि चानवण नार्व एत, वड़ वड़ विख

জনেরা বস্তৃত। করেন। সেই বস্কৃতার পরিকার রূপে বুরাইরা দেওরা ছইরা থাকে, বে আমাদের প্রাচীন আচার বিধির বৈজ্ঞানিক তাৎপর্বঃ আছে। তদাচরণে দেহে বিহাৎ সঞ্চারিত হইলে স্বাস্থ্য ভাল হয়, তাহারঃ সঙ্গে রেচক প্রক কুম্বক প্রাণায়াম যোগ সমাধি আপনা আপনি মনের মধ্যে

খনশ্যাম বাবু ইংরাজিশিক্ষিত নবীন হিন্দু, তিনি বলিলেন, ''আমরা হিন্দু-শান্ত শিধাইবার জন্যএকটা বিদ্যালয়ও স্থাপন করিয়াছি। দেখানে বালক কাল হইতে হিন্দুসন্থানেরা ধর্ম্মশান্ত শিক্ষা করিবে এবং ইংরাজি বিদ্যার পরীক্ষা দিয়া সুপাত্ত হইবে।

वाञ्च। देश्वाक्षित मरङ्ग हिन्तृभारक्षत्र भिक्ता मिनिरव कितरल १

ঘন। ত। মিলিয়ে নেওয়া বাবে। আবাজ কাল শিক্ষিত ভন্ত স্থাভ্য আনেকে হিন্দু আচার ব্যবহার রক্ষা করিতেছেন। অবশ্য একটু পরিবর্তিত সংশোধিত আকারে এ সব হবে।

বাল্বা। তাহইলেইত আপনার শাস্ত্র উল্টেরেল। সে কথা বাক্, বিখাস জন্মাইয়া দিবেন কিরু শে ?

কুড়া। বিশাস নাই বারইল, কাজতোহবে । ফ্রিয়া কলাপ ওলতো বজায় পাক্বেঞা বিশাস ফিখাস এ যুগে কারই বা আছে, বাইরের ঠাট মাত্র সকলে বছায় রাখে।

বালা। কাজই বা কৈ কে করে ? লুকিরে সব রক্ম চলিবে, অবচ শাক্ত এবং কর্মকাণ্ড লইয়া বাহিরে আড়ম্বর, ইহাত বহু দিন বাকিতে পাঙ্ল না, এ যে বিজ্ঞানবিরোধী, সভাববিকৃদ্ধ কার্য।

খন। সে কথা অবশ্য সভ্য, কিন্ত উপায় কি গু সেই জন্যইড আপ-নাকে বলিডেভি, আপনি এসে সব ঠিক করে দিন।

বাঞ্ছা। আমাকে ঠিক করিতে গেলে হরিসভাটী সর্ব্যাপ্তে উঠাইরা দিতে ছইবে। ইহার পরিবর্ত্তে দাতব্যালয় বিজ্ঞানমন্দির প্রতিষ্ঠা করুন অনেক উপকার হবে।

কুড়া। ও ! বটে বুঝিছি, বুঝিছি। তুমি সকটাচরণের ফাঁদে পড়েছ। মুসলমানের কাছে হিলুর কথা বলাব্ধা। ভারা হে! ভার থেওছ কি, আছেইবলে যথের চেঁকি কুমীয়। ভোষার একটুকি চলুপজ্জা নাই । আষর। ভোষার বাড়ীতে এলাব, আর ভূষি আমাদিগকে অপ্যান করনে ?

বাঞ্জা। আপনারা কৃপিত হইতেছেন কেন । বিশাস্বিহীন ধর্মকর্ম নিক্ষ্য এবং অন্থায়ী দেটা কি মানেন না ।

খনশ্যম বাবু বিখবিদ্যুলন্ত্রে একজন উপাধিধারী কুডবিদ্যু ব্যক্তি, ভিনি নবীন হিন্দু হইরা এজনে মাধার টিকি রাধিরাছেন, হাতে মাহুলী ও ভারা পরিরাছেন, বোষক্ষারিত লোচনে বাঞ্বারামের প্রতি কটাক্ষপাত করিরা ভিনি বলিতে লাগিলেন, "তুমি ইংরাজের উচ্ছিউভোফী পরব্রাহী বিদ্যান্। আমাদের শাত্রে যে কি আছে তাহাত জানলে না, পড়লে না, দেখলে না, অবচ পৈতে পুড়িয়ে ভগবানু হয়ে বসে আছে!

কুড়া। ওহে ভাষা, কেন আরে বুগা বাকারার ? বিবাহে পণ শ্রমা বধন ওঁর মতে পাশ, ওধনত উনি একবারে আবংপাতে গেছেন। তুমি নিশানাথ পুড়র ভিটেয় বাস্তামুশু হয়ে বদে আছে। তিনি আহ্নে, ভার পর এ সব কথা হবে।

বাঞ্জা। মহাশর, অনর্থক কেন জোধ করেন, আমি আপনাদিগকে অপ্যানত কিছু করি নাই। বাহা ঠিক তাই বলিতেছি, জোধ সংবরণ করুন।

খন। কেন ক্রোধ সংবরণ করিবে গুডোমা হতে আমাদের কি উপ-কাংটা হল বল দেখি গুড়মি হিন্দুর খবের পাণ্ড, বাড়ের পোবর।

বা। মুশাই বাই বলুন, পেসাদারি কি দোকানদারি ধর্ম আমার ভাল লাগে না। এ আর ভ বারইরারি পূজা নর ?

কুড়া। কি চ্রাস্থন। এত বড় আফরার কথা ? তুই তো প্রক্রেগা খ্রীরান, ডোর মামাও নাস্তিক পাবও। কোনো দিন দেবলাম না বে বাড়ীর মেবেরা একটা ব্রত করলে, কি দশ জন ব্রাস্থ্যকে খাওয়ালে। ডোদের হত্তেই ডো আমাদের সোণার আগ্রিহার্ম উচ্ছের পেল। ডোদের মুধ্ খেবলেও পাপ হয়। বলি হিল্পুর হর্মশাসন সামাজিক আচার না মানিস্, ডবে প্লার পৈতা কেন ? আমাদের সঙ্গে গোলে হরিবোল দিরে মিশেই বা থাকা কেন ?" পরে অন্য দিকে বুধ কিরাইরা বলিতে লাগিলেন, "কপট পাষ্ঠ ব্যাটারা বুকে বলে দাড়ি উপড়াবেন !" পরে ক্ষরকাল নীরব থাকিরা "হার ! হার ! এমন উচ্চ বংশে লয়ে ডোরা চণ্ডালের অধন হলি ! আহা ! আর্থাসন্তানধিধের গড়ি কি হবে ! এই জন্যই কি তাঁরা দেহ পাড় করে সর্কার জলাঞ্জলি দিয়ে খান্ত বিধি রচনা করেছিলেন !"

অনত্তর কুড়ারাম এবং খনশ্যাম উভরে পৈতৃক ধর্ম্মের বিলোপ, দেশীর সদাচারের উচ্ছেদের কথা কহিয়া বিলাপ ও রোদন করিতে করিতে নিরীহ বাহারামকে রালি পাড়িতে লাগিলেন।

বাধারাম না রাম, না গ্লা, কোন কথারই উত্তর করিলেন না পরে অতি বিনম্ভ ভাবে মৃত্ করে বলিলেন, "মহাশর, আপনাদের এটা বে জ্লোব অভিমান বিলাপ ক্রেন্সন এবং প্রুষ বচন ইহা আমার নিকট শুভি বাতব পাতের শব্দের মৃত বোধ হইল, কিছুই ইহার সারত্ব বা ভা অমূভব করিতে পারিলাম না। ঠিক খেন আপনারা চুই কনে গ্যাভিনর করিলেন!"

পাওাছর তথন হাসিয়া কেলিলেন এবং বাস্বারাম যে এক স্কুচত্র সারবান্ লোক তাহা ব্রিতে পারিলেন। তথন খনশামের বিবা জ্ঞানের উদর হইল। তিনি বলিলেন, "ভাই, এ সংসাররজালতে কলইত অভিনর । আচহির এই বে, আভিনর জানিয়াও তাহাকে সভা মনি করি। কেই অভি গস্তার ভাবে মহা তর্জন গর্জনের সাহত উপদেশ দিতেছে, কেই অনোর দোষ দেখিয়া নিলা করিতেছে, কেই বা দেশের হুর্রাভর কথা বর্থনা করিতে করিতে ভাবে গদ্ গদ্ হইয়া কাাদ্তেছে, কেই বা খ্লাভির হুংখের কাহিনী বলিয়া বক্তৃতার তেকে পরন কালাইতেছে, কিছ তুমা নিশ্ব আনা উনিশ গণ্ডা অসভা কপটভা অবাস্তবিক্তা মকারি হামাগিলম্। কথার যে বা বলে কাজে ভার বিপরীত আচরণ করে। ভা না হইলে সংসার চলে কি । এ সব কালের দোব, মান্তবের কোন দোব নাই।" শেষ বাস্তারামকে ভলাইতে না পারিয়া বালনেন, "ব্রাহার, তুমি পাঁচটা টাকা আমাদিরকে ভিলা ঘাও," মো খবের বছলে যেকাছটা বড় ডাাম্পা হরে বেছে, আম্রা সকল সভা

মিলিরা আজ লৃচি পাঁট। ধাব। আমাদের ছরি বড় পাঁটা ভাগবাদেন।" পরিশেবে দলটা টাকা লইরা তাঁহার। ছরিসভার গ্রম করিলেন।

বাস্থাবাম খনশ্যামের শেষ কর্টী কথার প্রভাক্ষ প্রমাণ ছাতে ছাতেই পাইলেন। পৃথিবীর সাম্প্রছারিক ধর্ম্মাড়ম্বরের মধ্যে অধিকাংশই যে হাম্মাণ্ আরু মকারি আন্তিয়েল্ ভাষ্টা স্পৃতিই বুঝিলেন।

একাদশ পরিচ্ছেদ।

রূপে গুণে মাথামাথি।

সন্ত্রীক নিশানাথের ভীর্থগমন, সভোষিণীর সাংখাতিক পীড়া এবং শাঞ্চারাম কর্ত্তক ভাহার সেবা, মহামারী ও ঝড় ভূজানে পড়ির। উভয়ের বিপদ্প্রস্ত হওয়া, ইত্যাদি ঘটনা সকল এই দুই স্বায়কে ক্রমে ক্রমে জ প্রেমবন্ধনে বাঁধিরা ফেলে। প্রেম বড় চতুর। এখন আর সভোষি^{টা} কছু-ভেই মনে স্থান দিতে পারেন না, যে বাঞ্চারাম তাঁহার ভাবেং ভাবুক महत्त्व । वक्काछ: (चत्रभ खावखात क्रिक्ड निवा हेर्डादा চनिवः ागिरणन ভাহাভালবাসাও আব্দুগতা বৃদ্ধির পক্ষে বিশেষ অসুকৃল। शहित नातिन, मत्स्वायिषेत्र हत्क वाक्षात्राम क्षण्डे विश्वपूर्णन । हत्वितित्वापन हिंहा काशित्वन । फाँहार भएनथ हहेर्ड म्हादिन किन भर्गास. व्हारक অক প্রত্যক্তিলি তিনি চাহিয়া চাহিয়া ছেধিতেন আর বিমোহিত হই-ভেন। আনুমনে ভাবিভেন, "আহা। বে ভাল, ভার কি সকলি ভাল। হাত দুই ধানি কেমন সুক্ষা, সুকোমল, যেন পল্লের মূণাল তুল্যা। স্তল্পী কেছন প্ৰশ্ৰস্থ । নয়ন হয় কেমন শান্তিরসাত্র, গ্রীবা এবং সংগ্রেছণ কেমন সংলভ ।" বৰকের লাডিবেলিফ হীন আহ্মণ পণ্ডিভের মত পরিকার मृब बानि, এवः উজ्জ्ञन निर्दान लुख भरोदती वह शुर्सिट छ। हाद सम्बद्ध অধিকার করিং।চিল, একাণে গুণের সৌন্ধর্যো উল্লাকে একবারে ব্য করিয়া ফেলিলা। বেমন গুণ তেমনি রূপ। সভোবিণী এ সক্ল বঙই ভাবিত, তওঁই প্রনৃত্ধ হটত। সমত ভাগং সংসার ভাছার নিকট বিল্পুর ছটার পিরাছিল। এম অব না হইলে ভাহার বিষ্টভা বাকে না, কিন্তু টহা অভ্যাসভিতে পরিণত হইলে এই কেব আবার কড বিপদ। কেন, এড ভালবাসিবার প্রয়েজনটা কি বাছা ? আছো না হর ভাগই বাসিলে, এও বোহ কেন ? মামুব বৈত নর, জরা মৃত্যু আছে, অবস্থার বোডে পড়িয়া বিছেপ্ত ঘটিতে পারে। হইলই বা স্কলিছস্থার গুণবান সুবা প্রুম্ব, কোন বিবরে বাড়া বাড়ীটে ভাল নর। প্রথমে ঘে যত ভালবাসা দেখার, খেবে ভাহাবের বেড়া ডাড ভাল নর। প্রথমে ঘে যত ভালবাসা দেখার, খেবে ভাহাবের এল ভার বিবনমত্বে মন্ত নর নারীর গুল্র বড় তরল চঞ্চল। ভাহারা সচলাচর বড় আজ্পুর্বিভঙ্ক হয়। "অত্তর্ব বলি ভন, ভ্যাক্ষ বড় তরনাগুণ, সভ্যেক্ত কা প্রতিব পরিভাণ।"

মত্বাকে ভালবাসিয়া বহি জেমের আকর ভগবানের প্রীতি না পাওরা ৰায়, তবে বে সকলই ভাৰ্থ হইল। অনন্ত বিনা শান্তি কোণায় ? অনন্ত centicus बाबी कुछ मकोर्प मानवीत cen कृत्य कि आवस शांकरन ভাহার আশা নিবৃত হয়? কিক অবলং কুলবালা এেমম্বং যুবভীরা ভালাবৃথিতে পারে না। বে উপায়ে উদেশ্য সিদ্ধি হয় তাহা অবশ্য আছর এবং ভালবাসার সামগ্রী সন্দেহ নাই, কিন্তু বে উপার উদ্দেশ্যকে एलाहेश दिश जार्गन ममञ्ज जिन्दा कतिश वटम टम मात्र। छित्र जात কিছুই নছে। তৎপ্রতি অধিক আসকি অন্মিনে পরিণামে পরিভাগ উপস্থিত হয়। সভোষিণী বাঞ্চারামের সাধুগুলে মোহিত হইঃ।।এলেন बर्छ, किछ त्म शुन्धाम क्रनटक चाद्या लाचछकोनक कतिया जुनिवाहिल। वखानः थम व्यत्भा क्रापन्न विषक्षे अध्यक्षः लात्कत्र हान्हे। त्वभी इतः; কারণ, লাভ কাডকে অভাভাবে সহকেই আপনার ছিকে টানিয়া লয় : তৎসকে यन जानमानि जाकृष्ठे हरेश भएड़, वह जना मर्सछात्री उन्जानी (बाबी-शक करण्य वाकर्षन महत्त्व व्यक्तिम कतिरण भारतन ना । करण्य महा-পুরুষ্থিপের পা খরিছা টানাটানি, প্রসাদ নইয়া কাড়াকাড়ি করে কেন ? বাহ্য अवस्थान देवीनरमञ्ज्ञात्रका जकनरकरे नरेटक रहा। आर्थ कड छात्र नत्त्र (क्यम : यख्नाया नात्र परेश नाटक देक्यतात्र यात्र नाय करता

হৈহিক বিকার না যুচিলে আব্যান্ত্রিক সক্ষয়ের মিইডা কেব অসুভব করিছে भारत मा । अहेकछ धरमत भक्तमाछी चाकुछकुक्की द्वाबीझ विकृति बारेट हाट्य मा। कार्य, चानाचिक मात्रवक मरकानरे खाँशहरूत गका। तन हारे कि ताम हारे १ रेजियनविक्रित, मा बाबाकिक मरबाक आर्थनीत १ अ थानात विहास कतिए साराता भागम पाराता महत्व विभारक भएए। अर्थन जाशासा (अमानकि एवं बन्ध बिडे प्रहेटक পারে, কিন্তু তাহাতে আকরিক প্রেমণিপাসা পুর্বরূপে চরিভার্ব হয় মা: অধিকক মতুৰা ক্লপের বোহে বাহিরে পিয়া পড়ে, ভিতরে বাইতে পারে ना। अथे छात्र मान जात्र अमि निकट मान हर अकेटिए मुख क्टेंटल चलत्रिए मुख क्टेटल क्टेंटन। प्रखनार महस्त्रिकी বাপ্তবোষের রূপসাগরে দিন রাত্তি সম্ভরণ করিতে লাগিলেন। ভাছার নিজের উপর খেষে আর কোন কর্তৃত্ব বহিল না, চথক খেন লোছকে भवत्न चाक्रवं करिए लाक्षित । अक सन ताक चात अक सन्दक विक कानवामिवात कन भागत्मत यक वत, थान यन मर्दाय आहारक मधर्मन ক্ষিত্তি চায়, তাহা হইলে গে কি আসর বেশী দিন ভাষার প্রতি উলাসীন থাকিতে পারে ?

সজ্যেদিশীর প্রপাঢ় ভালবাসা প্রেমাসুরাপ থেকিয়া বায়ায়ায়ও ভাষার বিকে পূর্ব্বাপেক্ষা আরে একটু অপ্রসর হইরা পড়িদেন। করা এবং স্নেম্নক জাকর্ষণ কইলেও, তাহার অপোচরে কাহাকে কোন সংবাক না কিয়া খভাব আপনার কার্য্য আপনি আরম্ভ করিল: ক্ষেম্বভাবের মূলে ব্রীআবেষণকারিণী এক নৈসর্গিক ভূর্জের লক্তি আছে, বে শক্তির প্রভাবে
নরনারী মিলিও ক্ইরা পৃথিবীতে পরিবার গঠন করিবাছে, সেই লক্তি বায়ারামের অভ্যরে এও কিন পরে আগিয়া উঠিল। ইতঃপূর্ব্বে নানা কার্য্যের উপলক্তে অলক্ষিত ভাবে ইহা পেথা কিয়াছিল, একণে কিছু স্পত্রীকৃত হইল।
সভোগিণী মৃর্জিমতী স্ত্রী, হইলেনই বা বায়ারাম বিচারনিপ্র জানী প্রপতিত ক্লারীপ্রকৃতির ভিতরে ব্রহ্মাণ্ডেশ্বরীর বে মোহিনী মারাশক্তি আছে ভাষা
কি তিনি একবারে অগ্রাছ করিতে পারেন গু এই কারবে নারীপুরাপছতি
ভাষার ভাল লাবিও, তায়াতে একটু আনমন্ত অনুভ্রব করিবেন। চিকাভারে

আক্রান্ত অধ্যয়নশীল নীরস জীবনে গ্রীভিরস সঞ্চারিত হইলে মানুষ বছা সুৰী হব, এবং সেই স্ববোধ ভাহাকে অধিকতর স্ব শান্তি অবেবণে প্রবৃত্ত করে। কিন্তু বাঞ্বারামের ইহাতে জ্ঞানতঃ কোন মোহ বিকার উপভিত্ত হয় নাই; কেন না,তিনি সভোষিণীর রূপ অপেকা ওপের প্রভি বাৎসল্য ভাবে আকুই হইয়াছিলেন। সংব্তমনা চিন্তাশীল ধীর প্রকৃতির লোকের মনের গতি অহমুখি বাইতেই ভালবাসে। বিশেষতঃ তিনি নারী সভাবকে পবিত্ত ভাবে সন্তম্ম করিতে জানিতেন।

এক দিন বাস্তাবাম ক্ষেত্পরবশ হইয়া সন্তোষিণীর অধান্তি নিবারণের জনা শাক্যম্নির নির্দ্ধাণপ্রাপ্তি বিষয়ে কথা আরম্ভ করিলেন। জগন্থানী নরনারীগণকৈ প্রজ্ঞলিত বাসনানলে দক্ষ হইতে দেখিয়া তাঁহার মনে ফে মহাবৈরাগোর উদয় হয়, এবং সেই বৈরাগাবলে পরে তিনি ষেরপে নির্দ্ধাণজনিত পরম শান্তি লাভ করেন, আমুপ্র্কিক সেই বিষয় তিনি বলিতে লাগিলেন। কথা কহিতে কহিতে গাঁহার মুখ্যগুলে এবং নয়নযুগলে যেন শান্তির জ্যোংলা কুটিয়াইটিল। শাক্ষের সেই মহানির্দ্ধাণের কণা বাস্থান্তাম ভিন্ন করিয়া আর কে বর্ণন করিতে পারেণ তিনি নির্দ্ধাণের আস্থাদন পাইয়া শাক্যারিত্রকে যেন নিন্দ্ধ চরিত্রের সঙ্গে মশাইয়া কেলিয়াছিলেন। প্রেমবিকারগ্রস্ত চঞ্চলমতি দগ্ধকৃদ্য মানবের কর্পে বাস্থাবামের বর্ণিত কাহিনী বাস্তবিক শান্তির জ্যান্তবি শ্রম্বিণ স্কল্প মানবের কর্পে কার্যান্তবিক শান্তির জ্যান্তবি শেই সকল মহাবাক্য ভাগেক করিতে করিতে মূহ গস্তীর নিনাদে ধীরে ধীরে সেই সকল মহাবাক্য ভাবিনীকে শুনাইতে লাগিলেন।

বাহাকে ভালবাসা যায়, সে বাহ। কিছু করে তাই মিট লাপে; কেন না, তথন ভালবাসায় সমস্ত জীবন মজিয়া অভিশন্ধ স্মিষ্ট হয়। বাঞ্লাবামের কঠাব, তাঁহার কথা কহিবার প্রশালী এবং তৎকালীন তাঁহার মুবের ও চক্ষের ভাব ভল্পী এমনই মনোহর বোধ হইতে লাগিল, বে ভাহা ভনিতে ভনিতে যেন এক স্বপ্রস্থমর শাস্তির রাজ্যে গির। সন্তোবিণী উপনীত হইলেন। বাঞ্লায়ামের ম্থারবিশ্বিগণিত গভীর অর্থমুক্ত নির্মাণতত্ত্বের নিগৃত তাৎপর্য্য অব্যাতিনি বৃত্তিতে পারিলেন না, সে কিকে মনভ গেল না, কেবল নয়ন ভরিয়া তাঁর শাহিপ্ মুখ ধানি তিনি দেখিতে লাগিলেন, আর কান ভরিয়া ভরিয়া তাঁর শাহিপ্ মুখ ধানি তিনি দেখিতে লাগিলেন, আর কান ভরিয়া

সেই বীণাবিনিক্ত বাণী পান করিতে লাগিলেন। বাছারাবের মুখবানি তথক বসত পূর্ণিয়ার অয়য়। যাখা চাঁদ থানির মত শোভা পাইতেছিল। সেংশাভা ছাড়িয়া সভোবিনীর স্থালোভী ক্ষরচকার কি নির্কাশের পভীরতার মধ্যে তথন যাইতে চাহিবে । না চাহিলেই ঘাইতে পারিবে । সভব নহে। সুল ছাড়িয়া স্ক্ষে জড় ছাড়িয়া চৈতনো কয় জন লোক বাইতে চায় । যে বায় সে বাউক, রূপয়য় নমন, প্রেমপিণাপ্ ক্লয় সহজে সেদিকে যাইতে চাছেনা, পারেও না। শক স্পূর্ণ রূপ রুম গজে ভাছার গভিরোধ করিয়া কেলে। শাকোর নাায় তত্ত্তানী হইয়া বিচার করিতে না পারিলে কার সাধ্য সে বাজোর দিকে এক পদ অগ্রসর হয় ।

অতঃপর কলা প্রবণ করিতে করিতে সভ্যোবিণীর সর্বাণরীর অবসম্ব প্রায় इरेबा व्यापित, हकू निखालात (यन खांक्रिया পड़ित, म्कामालात नावि ननारहे विन्तृ विन्तृ (यन वादिएक नातिन। काला स्माह, कलाव प्राप्त हक्क कर्ग (यम म जिवारचारत विरक्षात इरेश हे किए। सहसा स्वन अर्थात प्रवासायन धता-তলে অবতীৰ্ণ হইয়া অলোকিক স্নেহ সান্ত্ৰনা স্বারা আগ্রদাবভাতেই ভাঁছাকে শ্বম পাড়টেয়া রেলেন। ভাষাতে সম্মেষিণীর প্রানের অভ্যক্ত এলটিয়া পড়িল। ক্রমে শান্তির ত্কেমেল ত্থশ্যার প্রেমানেশে অবশাদগ্রন্ত চইয়। তিনি শয়ন করিলেন। নিজাও নহে, চেত্তনাৰ নহে, নিজাইৎ সংন্য মিলিড এক ব্যুণীয় অবভায় উপনীত চইয়া সপ্লেব নাায় কি এক অংশৌকিক শোভা-ময় দুখা দেখতে লাগিলেন ৷ তাঁহার বোধ হইতে লাগিল, যেন কোন দেবভোগ্য অনেক্ষম্য অনুভের রাজ্যে তিনি লাঞ্চাবামের কোলে মাধা দিয়া শুইয়া রহিয়াছেন, এবং তাঁহার শ্বেহ আদরে একবারে গলিয়া জলবছ ত বল হইয়া গিয়াচেন। সেই জল ক্রমে প্রসারিত হইয়া অসমীয় সমুদ্রেব ন্যায় প্ৰতীয়মান হইতে লাগিল। কিন্তু তাহাতে একটীও তর্জ নাই, ছিব প্রশাস্ত। অতি সুক্ষর সুপস্তীর সে দৃশা। কোথাও আর কিছুই দৃষ্টিগোচর इंड ना, (करन फेर्ड्ड मिन्न खनाणी चनक स्नीन नगन, नित्य श्रमाकनक শ্বির নীর্নিধি; নীল সুরাশি নীলাস্বের সৃহিত মিশিরা একাকার হুইর। প্রভাছে, ভাষার মধ্যে বাহারামের শাস্তিরস্বাঞ্চ মুধ্মণ্ডল বজাতরঞ্জনে বিভূবিত হইরা পূর্বচন্ত্রবং দীপ্তি পাইতেছে, এবং ভাষার প্রভিবিদ্ধ দেই क्षमबहोत लक्ष्यित्रकृत्व विकोत हत्यमञ्जन तहना क्रियार । कि. इ. हत्य, व्यक्षारक हता. छेगार जुनीन श्रंत, निरम्न चननीन महामुख, मार्श जुनिवन भाषित्रशीवन मृत्र मन्त्र गरिए वरिया वाहेएएए, जात जाहात मरक মনমুদ্ধকর মধুর করে শান্তিরূপিনী দিলাকুনার্ণ শান্তিনীত পান করিছে। (क्न। कान गेरखकना नारे, विकाद नारे, विक्ल नारे, खान। खाना कालका নাই, অভাব নাই। সেই শান্তিসমূজশায়ী সুধম্পূৰ্ণ সমীরণে শাল্তির বিশ্ব পরিমলরাশি নিরম্ভর ভাসিয়া যাইতেছিল। এবং তাহার শান্তিপ্রদ মধুর আদ্রাণে চিত্ত মোহিত হইরা প্রতিক্ষণে অনতের পভীরতার ভিতরে অব-তরণ করিতেছিল। মাউক্তোড়ছ শিশুর ন্যায় সুখে নিজিত ধাকিয়া এই অপূর্ব্ব অপ্লবং প্রতীয়মান নির্ব্বাণানক সভোষিণী সম্ভোগ করিতে লাগি-লেন। নিজার খোরে দূর হইতে সমাগত সঙ্গীতের স্বর বেমন মধুর বোধ ছয়, স্বপ্লের প্রেমালাপ বেমন প্রগাঢ় সুমিষ্ট, বাঞ্লারামের উক্তি স্কল ষ্ঠানার কর্বে তেমনি বোধ হইতে লাগিল। তথ্ন প্রেমবিকার্নিপীডিড लिशामाकाण्या मर्खाविगोत माखिरोन समय बरेक्टल आताम शाहेय। सरक **করিডেছিল, ''আর আমার∙ আমোদ মৃত্তার কাল নাই। আমি আর** * দীলালহরীময় প্রেমসমূল্রে আন্দোলিত হইয়া ক্রীডা করিতে চাহি না। এই অবস্থার অন্তত্ত বোগনিজার খোরে, চিরনির্বাপের শীতল বলে আফি বেন ঘুমাইরা থাকি। আমি বেন এই শান্তিদেবীর শীতল ছারাতলে চিত্রকাল এই ভাবে বিশ্রামুখ্য সভ্যোগ করিতে পাই।" ইছা ভাগিত ভাবিতে সেই মহা নির্দ্রাণসাগরে সহস। আবার ভরত্কর তুকান ইটিল, মোহমেৰে চারি দিক্ বেরিলা ফেলিল, মহাবেরে বাসনাবাছর প্রবাহ ছুটিল, णव्याक्षितारण विश्व विश्विश हरेन, मत्नावृश्वि मक्न **ऐ**त्रास्त्र नाम ছদ্ধার করিতে লাগিল, সুধের স্বপ্ন, শান্তিনিস্তা ভালিরা পেল। তথ্য নিজোবিতের ন্যার ভর্বিভাতচিতে সেই অবলা দশ দিক শুন্য रमध्या कांक्रिक मात्रिम । (यन रिम्बाइश्वाह कि এक प्रत्येत माम्बी পাইরাছিল তাহা হারাইরা ফেলিরাছে; বেন অণক্ত বন্ধ পাইবার सना सारात व किक क किक वाहिएएएइ; कि स्वन वास, सबक शाह मा ह মনের ভিতর কও কথা আছে, অবচ কিছুই বলিতে পারিতেছে না; জেন

অবের সুধী হৃংধের হৃংধী এক জনকে বুঁলিয়। বেড়াইডেছে; কবা কর ভাষার সম্বন্ধ বুরা বার না; চাহিরা আহে, অবচ বেন কিছু কেবিছেছে না; ঈর্ণ প্রেযোয়ালিনার বেশে সজোবিনীকে ধর্বন বাল্লায়ার স্বেবিলেন ভবন ভাষারও অব্বর্ধ প্রতির কল্রবন উৎসারিত হইল। তর্বন জাহার সেই অবাভকল্লাত ছিব তুল হল্য চিরপ্রশাস্ত চিত্রেও কিছু কিছু ভাবের ভরক উঠিল। বাহা কর্ম হর নাই ভাষা হইল। একটু বেন প্রেম্মালকভা ভিনি অমুভব করিছে লাগিলেন, বুকের ভিডরটা বেন কেম্মালকভা ভিনি অমুভব করিছে লাগিলেন, বুকের ভিডরটা বেন ক্ষেম্মালকভা ভিনি অমুভব করিছে লাগিলেন, বুকের ভিডরটা বেন ক্ষেম্মালকহাত লাগিল। সজ্যোবিলীর চাঞ্চল্য নিবারণ করিছে গিয়া শেষ নিজের মনকে ভিনি কর্মাকিভ বিচঞ্চল করিয়া ফোলিলেম। নির্ম্মাণ মর্মাণ ছইল, উভরের অভ্যার প্রেমার অনল জলিয়া উঠিল। বাল্লায়ারেয় মন এড দিন আর্জ বাটের মত ছিল, সম্বোবিলীর প্রেমাণ্ডি ভন্নরের ব্যাহাইয়া বেণ্ডায়াইয়া এড দিন পরে ভাষাকে ছাজ্মান করিয়া ভূলিল। মানুব বে বিবরে প্রাণ মন ভালিয়া দের, ভাষাতে সে কুডকার্য্য হর এটা বুব সত্য কণা।

বারারাদের অ্বরাজ্যের সীমামণ্যে স্তোবিণীর প্রেম্বন্যার অল এক্ষণে কিছু কিছু প্রবেশ করিল। অজ্ঞানতার আচার শিবিল এবং জার্গ হইরা সেল। পরিশেবে বারারাম বেধিলেন, তিনি এত কণ বে সকল সার তত্ত্বকথা কহিছে ভিলেন তাহা জ্ঞানর মনে প্রবেশাধিলার প্রাপ্ত হর নাই। সম্প্ত স্মাটা স্ত্যোবিণী একাক্ষ ভাবে উচারেই মুবপানে চাহিরাভিল, এক-বারও অন্য বিকে নম্ন ক্ষিয়ে নাই; সে চৃষ্টিতে উরাক্ষের লক্ষণ কিছু কিছু প্রকাশ পাইয়াছিল। তিনি বেবিলেন, ক্ষমীর নম্মন্ত্রণ প্রেম্বাপে রঞ্জিত ইয়া তাহার লোহিত বর্বে নাসা ও প্রতক্ষলকে প্রতিবিশ্বিত করিরাছে। ভিতরে বেন অধি লাগিরাকে, ভাই সেই অধির আভা নম্বনের প্রজ্ কাচ এবং গভাহনের বেত চন্দ্রবিরণ ভেল করির। বহির্গত হইতেছে। স্কর্জ্ক ছডাশন ক্ষেব্র বেন নির্বাণের কথা শুনির। মহাক্রোধে জলিরা উটিয়াছেন, আর চুইটা প্রেম্বিজ্বল ভাবরসোম্মন্ত্র পত্ত ভ্রব্রের বিভৃত্তি ভ্রাহিতেছে।

দ্বাদশ পরিচ্ছেদ।

যুগলমিলন ৷

প্রেমরাজ্যের ভূমি আছতি মহণ, একবার তাহাতে পদার্পনি করিলে কোথায় গিয়া মামুষ যে পড়িবে তাহা সে কানে না। সজোষিণী লজ্জা ভয় সক্ষোচ পরিত্যাগ করিয়া বিশ্বস্ত চিত্তে এই পত্র থানি বাল্লারামকে লিখিলেন।

"शिव काका,

আমি ভোমাকে দাদা বলিয়া ভাকিতে ভালবাদি। কিন্ত এই মধ্ব সংখাদনে সচরাচর বে ভাব প্রকাশিত হয়, তদপেক্ষা অনেক প্রকারের অবক্রে মধ্ব ভাব আমার ইহার ভিতরে আচে। এক কণার সে সমস্ত বাক্ত হয় এমন ভাষা খুঁলিয়াপাই না। তুমি আমার প্রাণের ভাই, ভাবনের বয়ভ, হলবের সথা, আয়ার আজায়। আমি ভূমিবিলুটিত নিরাপ্রার লতা, তুমি আমার আগ্রয়। আমার কে ভাহা জানি না, এবং কে যে নও ভাহাও বলিতে পারি না। আমার সকল অবহার সকল ভূমি, আমি ভোমার দাসী। হলবের মধ্যে সমুদ্র সমান ভাবরাশি উথলিয়া উঠিয়াছে, আর ভাহা চালিয়া রাখিতে পারিলাম না। দিবা নিশি ভাইবের তরকে পড়িয়া হাবু তুবু থাইভেভি। আমি অবলা অনাথা জ্ঞানহীনা, যাহাতে আমার কল্যাণ হয়, যাহাতে আমি মনে শান্তি পাই ভাহা-কর। আমি তোমার পদে দেহ মন প্রাণ সর্বহিত উৎসর্গ করিলাম।"

পত্র পাঠ করিয়া বাস্তারাম ক্ষণকাল স্তস্থিত হইয়া রহিলেন। সভোষিণীর ক্ষণরসিক্র একটা প্রবল তরক্ষ তাঁহার ক্ষণয়ের উপর যেন সবলে পত্তিত হইয়া ভালিয়া গেল। ঈদৃশ প্রেম তাঁহার চির অপরিচিত; কারণ, ইহা মধের ভালবাসা নয়, প্রাণ দিয়া প্রাণকে টানিয়া লওয়া; স্থারাং মনের ভিতর ভারি একটা গোল বাঁধিয়া গেল, চিত্ত মহাবেগে আন্দোলিত হইল। প্রথ এবং অমুধ, ভর প্রলোভন, লজ্জ- এবং দ্যা, চূর্ভাবনা এবং আকর্ষণে মিপ্রিভ

সে ভাব, না বুঝা যার, না কাহাকে বুরান যার। এই অপরিচিছ ভাবোদগমই সভোবিণীর পত্রের বর্ণার্থ উত্তর। বে অবস্থার ইবাঁরা এখন আদিরা
পৌছিলেন ইবা অব্যক্ত প্রেমরাজ্য, এখানে কোন রূপ ভাষা প্রচলিত নাই।
এখানে চল্ফ্ চল্ফের সঙ্গে কথা কর, মুখের মৃত্ হাসি হাসির কথার উত্তর দের,
আত্মা আত্মার সঙ্গে নীরবে আলাপ করে, ক্লবে ক্লবে মাখা মাথি হয়।
যদি সে প্রেম এক ওপ কথার প্রকাশ পার, সহত্র ৩৭ বাহিরে বাধা পাইরা
মূল প্রস্রবংগর দিকে পুনরার কিরিয়া আইসে। অবসর সমরে ভাষা আপনার নিকট আপনি বিজ্ঞীণ পুরাণ কাহিনী রচনা করিবে। বিধাতার
আশ্চর্য্য লীলা থেলা, তুইটা বিভিন্ন লাভীর সভ্তর প্রকৃতির মৃত্বাকে তিনি
প্রেমনহাজাবকে গলাইয়া থেন এক করিয়া ক্লেলেন।

পর দিন দিবাবসানে সন্তোষিণী একাকিনী নিভ্তে বসিয়া আশাভ্য মনে আপনার অসহায় অবস্থা চিন্তা করত বিষয় মুখে ভাবিতেছেন, "বুরি আমার মনের আশা মনেতেই মিলাইয়া গেল। হায় ! এমন করালু বিজ্ঞ জ্ঞানী পুরুষ হইরাও তিনি আমার হুংখ কেন বুরিলেন না। তবে কি আমি উপেক্রিত্ত হইলাম ? বিজ্ঞানের তত্ত্বস কি এতই মিষ্ট বে আবস্ত প্রেমরস ত্যাপ করিয়া তাহাতে মালুবের মন ভ্লিয়া থাকে ! বুরিলাম, ইহা আমার অনুস্টেরই ফল। হার আমার জীবন কি ভারবহ হইয়া উঠিল ! শুনিরাছি পাবাবেও বীল অস্কুরিত হয়, কিন্তু বাঞ্চারমের জ্বন্ধ কি পাবাব অপেক্ষাও কঠিন !

সভোষ্ণীর অভিমান করিবার অধিকার ইহা । মধ্যে অমিয়াছে কি
না তাহা বিচার সাপেক। তথাপি হংব বিবাদের সহিত অভিমানকে
মিলাইয়া তিনি বড়ই কেশ পাইতে লাগিলেন। এই ভাবে নিজ্জীব প্রায়
হইয়া শোক করিতেছেন, এমন সময় সহসা বাস্থাগাম তথায় আসিয়া দেবা
দিলেন। তাঁহাকে দেবিয়া সভোষ্ণীর নয়নে বারিবারা বহিল, তিনি চিত্র
পুত্রনিকাবং নিপ্শাভাবে হতায়মানা রহিলেন। বাস্থাগাম সে মুখের পানে
বেন আর চক্ষু চাহিতে পারেন না, ভরাভঃকরবে অন্য হিন্দে ভৃত্তি কিরাইকিন। কিন্তু তাঁহার প্রতঃব্রুতির হুহর হয় মেহে প্রিয়া পেন। অসফিত
অব্য ভাবে ভিতরে ভিতরে প্রেমের অনলভ ক্রিয়া উঠিল। ব্বন এইরপ

দশা ঘটল, তথন ইঠাৎ নিমেষের মধ্যে উভয়ের দেহ মনের অভাস্তরে খেল ভড়িতের প্রবাহ চুটিল। তাহাতে বাপ্পারামের সর্ব্বাঙ্গ কাঁপিল, অন্তঃকরণ আলোড়িত হইল, শিরা ও সায়ুমগুলে মহাবেলে শোণিত ধার। বহিল, छर्पाए यन धन भक इटेए नाजिन, कन्पिपात्राम कर्न एकारेन, नज्जा ভत्र हुः थ क्या साधा खालवानाम सिनिया सत्तत्र सत्या कि अकता सहा काल কারধানা হইতে কাগিল। আসল কবাটা এই যে এত দিন পরে ইটারা পরস্পরের নিকট নিঃশংসর রূপে পরিচিত ছইলেন। পরিচয়ের সমর উভয়ের জ্বরনদীর মিলনম্বলে যে ভয়ানক তৃকান উঠিয়াছিল ভাহা এক আনন্দিত হয়. ভাই এই সমারোহ। মেঘে মেঘে সংঘর্ষণ কালে যেমন विक्रली हमतक, जीमनार प्रभान शब्द्धन करत, এवः मिर्रे महा चाल्लालरन আকাশ মেদিনী কাঁপিতে থাকে, এই মহা প্রেম্মলনে তেম্বন একটা খোরতর বিপ্রব ঘটিয়া পেল, জীবনতরীর রুমা রুমি ছি'ড়িয়া একাকার হইল, বানের জলে যেন চুই জনকে ভাসাইয়া লইয়া চলিল। নাবিকলয় ভূম্ল সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইলেন, গুবং প্রতিকূল স্রোতমুখে দৃচমৃষ্টিতে ছাল धविशा मंद्राहरणम। এই जिल्लानिकशौ पत्राक्तमणानौ (अस सहावीदत्र সত্মে কর অন বাদ্ধা সংগ্রাম করিতে পারে ? তাহার চর্জ্রর শক্তি এক क्षप्र इट्रेंट यथन अन्य श्रामा अपात अविषे इत्र ज्यन वर्षे अपूरे पार्ट । देश শক্তির সমতা এবং সমন্বয় সাধন। বাস্তারাম সভোষিণী অনেক কর্ট্টে প্রথম ধাক্তা সামলাইয়া আত্মরক্ষা করিয়াছিলেন। তদনস্তর বেগ কথকি । सन्ही-ভত হইলে জভজামিনী সেই প্রেমতর ক্রিটার উচ্চেতিক মধুর হিলোকে ভাসিতে ভাসিতে উভয়ে উভয়ের মাধুর্যা রস পান করিতে করিতে প্রেম-সিধার অভিমুখে ধাবিত হন।

মহারসপ্রত্ত প্রগল্ভা প্রীতির বড় প্রভূত পরাক্রম; যেমন ভাহার ধ্রতর তেজ, তেমনি মিষ্টতা কোমলতা; বেমন বিস্তৃতি, তেমনি গভীরতা; প্রমনি ভয়ন্তর তেজ, বে সেই তেজে পুরুষ স্ত্রীতে, এবং স্ত্রী পুরুষেছে মিশিরা রুপান্তরিত ইইরা এক অভিনব স্ক্র মূর্ত্তি ধারণ করে। প্রস্পরের আহান প্রদান প্রস্পর বিপূল সম্পদ্ধানী ইইরা উঠে। উভরের আছার

নিজিত বৃত্তি সকল তথন জান্তত এবং প্রক্ষৃতিত হয়। ইছা একটা ন্তন বিধ বিদ্যালয়, এখানকার নিক্ষাপ্রণালীর তাবে পূর্ব প্রকৃতি মনুব্যত্ত্ব পূর্ণ বিকাশ লাভ করে। এই জন্য ভিকি রস্বিশারদ বৈক্ষব সাধুগণ প্রকৃতি প্রকৃষ্বের আধ্যাত্মিক মিলনের স্বর্ণীয় মহত্ত, অপূর্ব্ব মাধুগা রস বিবিধ চন্দোবদ্ধে প্রচার করিয়া গিরাছেন। অলমতি সূলদর্শী বৈক্ষবদল এবং ভাষ্ট্রীক এই সাধনের পক্ষপাতী, কিছা সিদ্ধিলাতে বঞ্চিত। উচ্চ নীতির অভাবে প্রিত্ত প্রণালীকে ভাষারা মূল্য বিষয় করিয়া ফোলিয়াছে। শিক্ষাব্যে ইহাতে অনেক কই। কোনু শিক্ষাই বা প্রস্থাম স্থাপ্তাদ হয় গুলিকা, পরীক্ষা, ভাষার গর স্থামান্তি।

সংস্থাবিদী ও বাঞ্চারাম প্রেমতন্ত শিক্ষার জন্য এত দিন পরে বিদ্যালয়ে ভিত্তি ইইলেন। এক জনের বহু বংসবের চেন্তা মন্ত্রে বিদ্যালয়টা প্রতিষ্ঠিত হইল । এখন কড দিন গরিয়া শিক্ষা করিছে হইবে তাহা কে আনে । সন্মুখে কড বাধা বিশ্ব অতিক্রম করিয়া মাইছে হুইবে তাহা কে আনে । সন্মুখে কড বাধা বিশ্ব অতিক্রম করিয়া মাইছে হুইবে তাহা কে বানতে পারে । তালবাসা স্বর্গার অমৃত, তাহা পান করিলে আন অন্য হয় এবং । চরমে পরমানক লাভ করে। কিন্তু হায় । এ পৃথিবীতে সে অমিশ্র নির্মাল প্রেম কোগার । প্রেম, তুমি কোগায় । বিবাহের লাভ পাকের ভিতরে কি । না বহুমুল্য বসন ভ্রবের মধ্যে । অবধা মোহাল ইন্ত্রিরাসক্রমনারীর হুলরে । কোগার ভোমার সন্ধান পাইব । অবধা তুমি অসার গৌকিক স্বেম মমতা, এবং মোহস্বলের অহাস্তরেই পুরুপ্তিত আছে। সেই ভান হইতেই আমরা তোমাকে টানিয়া বাহির নিরতে চাই। সভাবের ভিতর ভোমার জন্ম, কিন্তু স্বর্গের দিকে ভোমার গভি। সভাবন্ধাত লৌকিক প্রেম স্বর্গার প্রেমের আভাস, সাধনবলে ও ভরবংপ্রসাহে সভাবের অতীত ভেববান্ধনীয় পরিত্র প্রেম পরিপ্রমেমীর প্রতি প্রম পরিপ্রমেমীর প্রতি প্রম পরিপ্রমেম জীব প্রাপ্ত হয়।

এই অজ্ঞান্তসন্তৃত শুভবোগগন্ত্ৰপর সহজ্ঞ প্রেনের বাজ লক্ষণের সঙ্গে দ্বর্গীর প্রেমলক্ষণের ব্যবহার ও ভাবগত অনেক সৌনাদৃশ্য আছে। ইহা কোন নাসন বিধি বা মার্থসন্তৃত পদার্থ নহে; যথন চুইটা অপরিচিত বহিরঞ্চ কুর্বর পরিচিত অভ্যান্ত হইয়া প্রাণে প্রাণে মিনিল। যায় ভখনই কেবল স্বেল্ফ গোকে গোকে গেবিতে পায়। সামাজিক নিয়ম বন্ধনে বাহাপিগকে বলপুর্ক্তক

मना चिति, उश्न देशे निरमस्यत मर्गा छेजराव राष्ट्र मरनत चारा खारा दिन ডডিতের প্রবাহ ছুটিল। তাহাতে বাঞ্চারামের সর্ব্বাঞ্চ কাঁপিল, অন্তঃকরণ আলোড়িত হইল, শিরা ও সায়ুমওলে মহাবেলে শোণিত ধার। বহিল, শুংপিতে খন ঘন শক্ত হইতে লাগিল, অলপিপাসায় কঠ গুকাইল, লজ্জ। ভরু চু:খ দ্বা মায়া ভালবাসায় মিশিয়া মনের মধ্যে কি একটা মহা কাও কারখানা হইতে লাগিল। আসল কথাটা এই যে এত দিন পরে ইইারা পরম্পরের নিকট নিঃশংসয় রূপে পরিচিত হইলেন। পরিচয়ের সময় উভারের জদয়নদীর মিলনস্থলে যে ভয়ানক তুফান উঠিয়াছিল ভাহা এক ছাতীৰ আশ্চৰ্য্য ব্যাপার। মনের মাত্র্যকে পাইলে জীব বড় কুডার্থ এবং ভান ক্লিড হয়, ভাই এই সমারোহ। মেঘে মেঘে সংঘর্ষণ কালে যেমন विकली हमरक, जीमनारम अभिन शर्द्धन करत, এवर प्रिष्टे महा चाल्लामरन আকাশ মেদিনী কাঁপিতে থাকে, এই মহা প্রেমমিলনে ডেমনি একটা খোরতর বিপ্লব অটিয়া গেল, জীবনতরীর রসা রসি ছি'ড়িয়া একাকার হইল, বানের জ্বলে যেন তুই জনকে ভাসাইয়া লইয়া চলিল। নাবিকয়য় তুম্ল সংগ্রামে প্রকৃত হইলেন, এবং প্রতিকৃল স্রোতম্থে দৃচম্টিতে হাল ধবিলা দাঁড়াইলেম। এই ত্রিভুবনবিজয়ী পরাক্রমশালী প্রেম মহাবীরের সঙ্গে কয় জন যোদ্ধা সংগ্রাম করিতে পারে ? তাহার হুর্জিয় শক্তি এক का कृष् इकेट प्रथम व्याना श्रामा अधिक देश ज्यान धरेक्र भरे परहे। देश শক্তির সমতা এবং সমন্বর সাধন। বাস্থারাম সভোষিণী অনেক কটে প্রথম ধার। সামলাইয়া আতারক্ষা করিয়াছিলেন। তদনস্তর বেগ কর্থকিত মন্দী-ভত হইলে ক্রতগামিনী সেই প্রেমতরশ্বির উদ্বেশিক মধুর হিল্লোলে ভাসিতে ভাসিতে উভয়ে উভয়ের মাধুর্যা রস পান করিতে করিতে প্রেম-সিমুর অভিমুখে ধাবিত হন।

মহারসপ্রস্ত ধাবল্ড। প্রীতির বড় প্রভূত পরাক্রম; বেমন তাহার ধ্রতর তেজ, তেমনি মিউতা কে:মলতা; বেমন বিস্তৃতি, তেমনি গড়ী-রতা; এমনি ভয়য়র তেজ, বে সেই তেজে পুরুষ স্ত্রীতে, এবং স্ত্রী পুরুষেতে মিশিয়া রূপান্তরিত হইয়া এক অভিনব স্কুর মৃতি ধারণ করে। পরস্পারের আবাদান প্রসাবে বিশ্ব সম্পদ্শালী হইয়া উঠে। উভরের আবােয়ার নিজিত বৃধি সকল তথন জাপ্তত এবং প্রক্তৃটিত হয়। ইহা একটা ন্তন বিধ বিদ্যালয়, এখানকার শিক্ষাপ্রণালীর তাবে পূর্ব প্রকৃতি মনুবাত্বের পূর্ব বিকাশ লাভ করে। এই জন্য ভক্তিরসবিশারদ বৈক্ষব সাধুগা প্রকৃতি পূক্ষবেব আধ্যাজিক মিলনের স্বর্ণীয় মহত্ত, অপূর্ব্ব মাধুগা রস বিবিধ চল্মোবদ্ধ প্রচার করিয়া গিয়াচেন। অলমতি সূলদর্শী বৈক্ষবদল এবং তায়ীক এই সাধনের পক্ষপাতী, কিন্ধ সিদ্ধিলাভে বঞ্জিত। উচ্চ নীভির জ্ঞাবে পবিত্র প্রণালীকে ভাহারা ছবার বিষয় করিয়া কেলিয়াচে। শিক্ষারত্তে ইহাতে জনেক কর। কোন শিক্ষাই বা প্রপ্রমে সুধ্পাক হয় গ্লিকা, গরীলা, ভাহার পর সুধ্যান্তি।

সভোষিণী ও বাধারাম প্রেমতত্ব শিক্ষার করা এও দিন পরে বিদ্যালয়ে ভিত্তি ইইলেন। এক জনের বহু বংসবের চেটা ধরে বিদ্যালয় কাজিচ্চিত ইইল এখন কও দিন ধরিয়া শিক্ষা করিছে ইইবে ডাহা কে জানে । সালুবে কড বাধা বিছু অভিক্রম করিয়া ষাইছে ইইবে ডাহা কে জানে । সালুবে কড বাধা বিছু অভিক্রম করিয়া ষাইছে ইইবে ডাহা কে কালে । পারে । ভালবাসা পর্লীর অমৃত, তাহা পান করিলে জীব অমর হয় এবং চরমে পরমানক লাভ করে। কিন্তু হায় । এ পুলিবীতে শে অমিপ্র নির্দাল প্রেম কোলায় । বিবাহের লাভ পাকের ভিতরে কি । না বহুম্লা বসন ভ্রবের মধ্যে । অপবা মোহার ইন্দ্রিয়াসক্ষনরনারীর ভ্রবরে । কোগায় তিমার সন্ধান পাইব । অবশা তৃমি অসার লৌকিক স্বেম মহলা, এবং মোহার্সরলের অভাত্তেই পুরুপিত আছে। সেই খান ইইভেই আম্বা ভোমারে সালান বাহির ভূতিতে চাই। সভাবের ভিতর ভোমার কল্প, কিন্তু পর্ণের দিকে ভোমার গতি। সভাবেলাত লৌকক প্রেম স্বর্লীয় প্রেমের জাভাস, সাধনবলে ও ভাগবংপ্রদাহে সভাবের অভীত দেববান্থনীয় পরিত্ব প্রেম পরিণামে শ্রীব প্রাপ্ত হয়।

এই অজাতসভ্ত ভ্তবোদ্য মুংপর সহক প্রেনের বাজ লক্ষণের দক্ষে
দর্গীর প্রেমলক্ষণের ব্যবহার ও ভাবপত অনেক সৌলাদৃশ্য আছে। ইহা কোন শাসন বিধি বা বার্থসভূত প্রার্থ নহে; যুবন ছইটা অপরিচিত বহিরক্ষ জ্বর পরিচিত অজ্ঞরক হইরা প্রাণে প্রাণে মিশির। বার ভ্রমট কেবল সে লক্ষণ লোকে দেখিতে পার। সামাজিক নিয়ম ব্রুনে বাহাদিগ্রেক বল্পুর্ক্ষক বামী ক্রীক্রপে প্রবিত করে, তাহারা নাচার হইরা অন্য উপার না দেবিরা ভাল বাসিতে বাধ্য, নত্বা তাহাদিগকে রাজবারে দণ্ডিত, সামাজিক বিচারে অপমানিত হইতে হয় । উনি আমার স্থামী, ইনি আমার ক্রী, অভএব আমাদের ভালবাসা উচিত; এই উচিতবোধ প্রথমে পরস্পারকে দাস্পত্য বন্ধনে আবন্ধ করে। এক দিকে উত্তম বসন ভ্বণ, ধন সম্পদ স্থা সচ্চস্পতা প্রদান, অপরদিকে মিষ্ট বচন, সেবা ভক্রার, মেহাম্পতা, প্রেমব্যবহার প্রতিদান; ইহা দ্বারা এবং অন্য পাঁচ প্রকার পীড়াপীড়িতে এক সঙ্গে বসবাস করিতে করিতে, কালক্রমে অল্প অল্প নরনারী স্থামী ক্রীক্রপে পরিণত হয় । ইহাকে বৈধ প্রেম বলে। বিবাহের প্রথম সংস্কারটা একরূপ হাতে বড়ী দেশুরা, তার পর কার কত বিদ্যা হইবে মা সরস্বতী জানেন। বাল্যবিবাহ আর বৌবনবিবাহ, এ চুইটী কেবল আটির গাছ আর কলমের গাছ আমাদের মনে হয় । কোন্টা টক কোন্টা মিষ্টি, তা ফলেন পরিচীরতে । প্রোহিতের মন্ত্রণাঠ আর সামাজিক আহার পান বাজনা বাদ্য, এই হইলেই বিবাহ হইয়া গেল। কিন্তু ইহার অনুরোধে প্রেম সর্ব্বত্ত লাবে।। তথাপু এ সকলকে প্রেম সাধ্যনের বাহ্ন উপকরণ বলা বাহুতে পারে।

আগে, প্রেম, তাহার পর বিবাহ, মুসভ্য এবং অসভ্য জাতির মধ্যে এই প্রথা প্রচলিত। অর্দ্ধসভ্য হিলুরা আগে বিবাহ করিয়া ভাহার পর প্রেম তৈয়ার করিয়া লয়। জিনিবটা প্রক্ত হইতে নাকি অনেক সময় লগে, তাই ইহারা বহুদর্শী বিজ্ঞের ন্যার আট দশ বৎসর বয়য়্কেনে প্রমের চাস আরম্ভ করে। যাহারা বেশী বিজ্ঞ তাঁহারা গর্ভন্ন সম্বর্দ্ধ করিয়া রাধেন। স্ভিকাগৃহে হুইটিকে বোদকলম বাধিয়া দিলে বাধ হয় আরো ভাল হইতে পারিত! য়াহউক, বাল্যবিবাহ প্রথাটা মন্দ নয়; কারণ, বাহাকে আমি বিবাহ করিব, মড়াই মক্রক আর চ্যান্নড়াই ছিঁড়ক, কাঁদিয়া হউক, হাসিয়া হউক, তাহাকে ভালবাসিতেই হইবে। ইহারা ছুই জন বেন সংসাররপ বাবসায়েয় জয়েট উক্ কোম্পানী বিশেব, এক সঙ্গে না থাকিলে ব্যবসায় চলে না। এ প্রেম অবশ্যাভাবী, না হইলে আর উপায় নাই। "ধরে বেঁধে প্রেম" ইহাকে বলিতে পার। কিন্তু প্রেম্মণক বিবাহ অপেকা বিবাহমূলক

প্রের বে একটা নিভান্ত গোকসানের কারবার, ফল প্রেবিরা ভাষ্য বিছ বেবি হর না। গড়পড়ভার লাভ পের প্রার স্বানই গাঁড়াইরা বার । কলতঃ স্বাধীন প্রের বচ্চ কুল্রাপ্য, ধরে বেঁবে প্রেরই পৃথিবীতে প্রচলিত। মুক্তপ্রের জনেক সমত বাঁধ ভান্বিরা দর্শ লিকে ছুটিরা প্লার। বাল্য-বিবাহসিদ্ধ অধীন প্রের নিরাপদের সামগ্রী, বেন বালকটো নদী; অল আচে, ভাষতে নৌকা চলে, কিন্ত ভূবিবার আগরা নাই। ইহাতে প্রেমের বেশী বাড়াবাড়ি নাই, কিন্তু শান্তি আচে। অনিক আমোদ উল্লাস রস বিলাস না পাকিলেও নির্মিন্তে মীবন কাটাইবার বেশ স্ববিধা আচে।

এ মন্তব্যটা ভূনিরা কোন মহাশর বেন রাগ না করেন। পৃথিবীর প্রত্থানা উনিশ গণা তিন কড়া চুই ক্রোস্তি নরনারী যধন এইরপ প্রেম-वकरन वित काल चुदी हरेश आ नुशाह उदन मरन हरेएड शास्त्र. "कर्य কি আমরা ভতের বেগার খাটিতেছিং আমাদের সামী স্ত্রীরা ভবে কি कार्ड भाषात्व निर्मित ?" ना, ना, त्म कथा नग्न ; ज्ञाभनात्रा कृश्विज क्रवन ना। সেই জন্যই আবে থাকিছে আমতা বলিয়া রাখিয়াছি, আপনাদের অবছা त्वभ निवालकः। ज्वालनावा (वभ प्रत्यं व्याक्तिः। क्वालीवः। शृहत्वत्र लिकः हेराई विशालात नाशात्रम वाग्या धारा मणात्र विशास । यात्रा धारा धारा धारा मन ভাছা আপুনাদের আছে। বরং সভোষিণী বাঞ্চারাম এ বিষয়ে নিভান্ত দুর্ভাগ্য। আছা, যধন দম্পতিযুগণ একত্রিত হুইয়া সন্তানাদিসহ পানাহার, আমোদ অমোদ ধর্ম কর্ম গৃহকার্য সমধো করেন, ারন গিন্নী পানটী সাজিয়া কর্তাকে দেন, এবং কর্তাটী প্রেমিক কপোতের মত আহ্লাদে বৃক্ বৃক্ ৰক্ষ্ শস্ত করিতে করিতে তাহা চর্মণ করেন, ব্যাক্ষমা ব্যাক্ষমীর মত চুটীতে ষধন মুখোমুখী করিছা বসিয়া বাকেন, তথনকার শোভা দেবিয়াকোন विवादक्षाची नवनावीव मन मा व्यालानिक दव १ अक चान्हे विदाय (कांक्न थाक, ভাতে किছু बाद बारम ना। क्वी बहि कर्कनाविशे मिनवदशी পেতিনীর মতনত হন, কিছা খামী মহাশয় যদি ভগদত্ব পককেশ কুজপৃষ্ঠ ंबळ्लाइंट इन, खर्या छेल्एाव मार्या यक्ति वाद्धाव हलन (अमरकान वारक, खाश (प्रवित्रा (क ना शिश्मात्र मतिरव ? आमारणत विकेष वातूत क्लारण ভেমন একটা জুটিলে তিনি কুতার্থ হইতেন। কিন্তু আমরা না কি নহারস-কাব্যের পত্তন কেলিয়াছি, স্থতরাং এখানে দনীভূত মৃতিকান আদর্শ প্রেম প্রয়োজন। এই জন্য প্রচলিত বিধির বহিভূতি প্রাথম্ভ প্রেমের সঙ্গে সাধারণ প্রেমের ভারতময় এখানে কিঞিং আলোচন। করা গেল।

সে কথা এখন থাক, যাহা বলিভেছিলাম সেটা আমরা শেষ করিয়া नहे। हिन् खोता (यम लाक, (यन काशास्त्रत नगरदार्वे, अन्न कार्फ ना। তুমি খীষ্টান হও, সেও খীষ্টানী হইবে। ছাতি কুলে জলাঞ্জলি দিয়া বান্ধ হও, সেও গলালান শিবপূজা বত উপবাস ত্যাগ করিয়া ব্যক্ষিকা হইয়া তোমার সজে সজে চকু বুঁজিবে। আহাবার **যদি তুমি প্**নরায় প্রায়শ্চিত্ত করিয়া আর্কহিলু কি পূরে। হিলু, অথবা না হিন্দু না মুসলমান হও, সেও ঠিক তাই হইবে। অর্থাৎ তৃমি বে দিকে বাবে, দেও পাছে পাছে সেই দিকে বাবে। ভোগেতে ছথেতে कीवरन মরণে পাপে ধর্মে বিধর্মে অধর্মে স্বর্মে নরকে কোন অবস্থাতেই তাহাকে তুমি অতিক্রম করিতে পারিবে না। বিলাতে গিয়া হ্যাট কোট পরিয়া যদি ভূমি সাহেব সাজির। দেশে ফিরিয়া আস, রাতারাতির মধ্যে তোমার স্ত্রীও গাউন পরিয়া त्मम माकिशा (जामात महत्र (तमालुम मिनिश शादत, हिनिशन बाना बादत, বোড়ার চড়িবে। (পড়ে হাড পাটা না ভাঙ্গে এখন এই প্রার্থনা।) মোদ। তুমি বিলাতে গিয়া যাহা না পারিয়াছ, সে দেনে থাকিরা ভাহা অপেক্ষা এক কাটি বাড়াইবে। বিলাডী বিবিত্ত ফালারেরe সাধ্য নাই বে তেমন করিয়া চলিতে পারে। বলিহারী বাস্থালীর মেয়েকে ! কিছুতে পিছ প। নয়। হিদৃত্বানের এ প্রেম বড় মজার জিনিক। ৰদি মরিতে বাও, স্ত্রী ভোষার সঙ্গে মরিতেও রাজী আছে। তৃষি মৃত্যুর পর পুড়িবে, সে ভীয়তে পুড়ির। মরিবে। তার নাম এই জন্য महर्शार्मिनी। कांग्राटनत व्याप्ती, (अत्राकृत्नत कांग्रात मण जात तथा । তুমি ইহাতে জালাতন হও, আর দন্ত কিটিমিটি কর, আর আজল কামড়াও, সে ভোমার ছাড়িবে না। বিলাভফেরত দাহেব বাবু, ভূমি বে মনে ভাবিতেছ, কোন বুকুমে পৈতৃক ওল্ক অধিক্ষিত নেটিভ স্ত্রীটাকে विहेति क्रिया कात बकते। त्या विवास कतिहात छ। वड़ स्टाइ मा! सिक

আর পাঁচটা সভীন আসির। ভাহার প্রেম ভার বসার, তবু সে ভোষার একটা পা লইরা টানাটামি করিবে। কিন্তু হার । সে ক্ষরের দিন ক্রমে চলিয়া গেল, আর বর না। বজাত: হিলু ত্রী বেন ছিনে জোঁকের মত নাছেড়বালা। চাকরীর স্থান হটতে ছই চারি বংসরাজার একবার আসিরা বদি দেবা লাভ, ভাতেই সমন্তী। মিউই লাগুক আর ডেজই লাগুক, ভাষার হাত এড়াইতে পারিবে না। যদি উদাসীন হটয়া নির্কাক থাক, সে ভোমার পারে মাথা খুঁড়িবে. নাকে কাঁদিবে, অবিস্লাস্ত বকিবে। যদি জ্যোব অভিমান করিয়া উপবাস কর, মে ভোমার মূখে ভাল ভাল থালা ঘালাব অভিমান করিয়া উপবাস কর, মে ভোমার মূখে ভাল ভাল থালা খালাব করিব। "না দেখলে রইতে নারি, দেখলে করে চুলাচুলি।" সংক্ষেপে এই সে প্রেমের লক্ষণ। ভাল কি মল ভাষা ভোমার কণন বিচার দিয়োজ কর, কিন্তু পত্রী পেন্তীর মত চির কাল ভোমার সলে সঙ্গে কিরিবে। যদি সে আলে মবে, ভবে ভোমার বাড়ীর চারি ধারে কোজালা ইয়া ঘুরিয়া বেড়াইবে আর বলিবে, "আমি ঠোমার কিছুজেই ছাড়ব না। ভূমি বেখানে ঘাবে আন বলাবে সামি ভোমার কাঁচা ঘারে গরে

কিছ ভূচ সংযোগে যথন পুক্ষের জ্বর নারীজ্বরের স্থিত স্থিতিত ছবু তথনই উপর উল্লিখিত মহার্মের লক্ষ্য কৃষ্টের। থাকে। পোলীসংশ্ব স্ক্ষেনা কি ভূনিতে পাই কৃক্ষেং প্রেম এইরেশ ছিল। স্ত্যামিখ্যা গোলিক জানেন। ফলতঃ এইরেপ মহাগোমের ভিতর বিধাভার বেশ দীলা থেলা আন্তে।

এক বে বে প্রেমর কাহিনী আমরা লিখিডেছি তাহা গরলমিল। বধন এই গরল মন্তনে অমৃত উঠিবে, তথন পূর্ব প্রীতি ভরকে পরিহার করিয়া সেই অনস্ত প্রেম্মিক্ডে পিরা মিলিবে। যে মহাবীর প্রেমিক আস্থা এই হলাহল জীর্থ করিয়া তাহাকে অমৃতে পরিণত করিতে পারেন, তিনি মহাযোগী শকরের ন্যায় নির্জিকার চিত্তে মহামতী পৌরীকে উকুদেশে বসাইরা নিত্যকাল নিত্যানক রম পানে কুতকুতার্থ হন। আমাদের প্রেমিক পণ্ডিত বারাবাম এখন গরল হইতে সমৃত উভারের অন্য সাধন আর্ভ করিবেন। এ সাধন মহা মহা বোগী তপসীধ্রেষ্ঠ অসাধ্য । জনেকে এ পথে পদার্পণ করে না, কারণ বারুদের সঙ্গে আগুনের বন্ধুতা ছাপন ইহার উদ্দেশ্য। সচরাচর লোকে বৈধপ্রেমের জাত্তনের বন্ধুতা বাঁচাইয়া ইচ্ছামত জীবন বাপন করে। জাইনে তাহাদের সাত খুন মাপ। কিন্তু হরগৌরী, কি রাধা কুফের প্রেমের উপমা দিরা, আধ্যাত্মিক প্রেমের করা মূরে বন্ধেও আবার জনেকে; কাজের বেলার কার কত দূর উচ্চ পরিক্রতা রক্ষা পার তাহা কেবল অন্তর্যামী পুরুষ জানেন। ঘাহাই হউক, ঘর্ণন
নীতির নির্দ্মিল ভূমিতে নির্ম্মাণের বিশুদ্ধ সমীরণমধ্যে এই প্রেম আপনাপনি
অন্তর্গিত হইরা পড়িরাছে, তথন লামরা ইহা হইতে পরিণামে অবশাই
মোক্ষ কলের আশা করিতে পারি। সাধু ভক্ত পাঠকগন ধৈর্ঘ্যসহকারে
আরে। কিছু কাল অপেকা করুন, সর্বে মেওয়া ফলিবে। পৃথিবীতে বাহা
সচরাচর দেখা যার না, পবিত্র চরিত্র জ্ঞানী বাঞ্বার্যামের জীবনে তাহা
আমরা দেখিতে পাইব।

তৃতীয় খণ্ড।

প্রথম পরিচেত্র।

गरश्वाम ।

বে দুর্ভিক্রমণীয় শক্তির প্রভাবে বাস্তাবামের মত কঠোর নির্মান নিলেহ ধীর গস্তীর চিত্ত বিচঞ্চল এবং প্রেমোন্মত হয় তাহা সামান্য শক্তি नटर। देशांक माधार्माक व्यविना वल, छात्रा व्यवनार्थ वल, ब्याब कानकहे গরলই বল, যে কোন ছুবাহ নিশ্বনীয় শলে অভিহিত করিছে চাও কর. কিন্ত পৃধিবী ইহার চুৰ্জ্জর প্রতাপে সর্বাদ। সশক্ষিত এবং ব্যতিবাস্ত। ইহা ু আন্নং হইয়াও কাৰ্য্যতঃ সংক্ৰপে প্ৰকাশিত হয়। এমন কি. মাঘাবালী मध्नाभी वा होशिकशिताब नाम विकेष वश्त कर्कन शत छोड छाराव খাহারা ইহার খোষ খোষণা করে, ভিডরে ভিতরে এপিকিউরিয়াণের মৃত ভাহার।ও ইহার সেবার আমোদিত হয়। এমন লোকও আছে,বাহারা নিশা কুংসার ছলে অন্তরে নিকৃষ্ট কামন। চরিতার্থ করিয়া লয়। বাঞ্চারাম ড বাস্তাবাম, কত কত মুনি ধৰি বোপী তপখীৰ বহু বংসবের কঠোৱা সাধন, দুশ্চর তপস্যার ফল এই মায়াশক্তি প্রভাবে বিনষ্ট হইরা বিরাজে। ইছার অনিষ্টকারিতা পণ্ডিত নিতাস্ত অনবপ্রত জিলেন না। সাম্বিক মোহ-বিকার প্রেম নামে স্চরাচর গৃহীত হয় ইহাও ডিনি বুবিতেন। এই অন্য তিনি এখন সভোষিণীর প্রেমের গভীরত। এবং সারবতা নিরূপণ করিতে विज्ञालन ।

কোন কাৰ্যই ৰাঞ্চাৱামের জ্ঞান বিজ্ঞান ছাড়া নয়। বৃদ্ধি যুক্তির শতীকু দয়ে ভাবং বিষয় বঙা গণ্ড করিয়া দেবং চির অভ্যাস। প্রেমিক ভাবুক ছইয়াও ভঞ্জুস্কানস্পৃহা কমিল না, বসং ভাহা আবে। সুরস এবং উজ্জুল হইল। থেমসজ্যের অপেকা প্রেমের বৈজ্ঞানিক তত্ত্ব অধ্যরনের প্রতি আহার আরেং অধিক অধিন। একানে তিনি এক নবীন মৃত্তি ধারণ করির। আর এক নৃত্ন পাবে চলিলেন, নৃত্ন আলোকৈ নৃত্ন চলে অপংসংসার কোবিতে লাগিলেন। মধ্র প্রেমাসুরালে নয়ন অসুরঞ্জিত হইল। সে মাছ-মুর আর নাই, সে পৃথিবীও আর নাই, সমস্তই একবারে খেন রূপান্তরিত হইরা পিরাছে। বাস্থারাম মাহা ভানেন, নাহা দেখেন সব খেন কেমন এক-প্রকার নবতর অমিষ্ট এবং অতীব রম্পীর বলিয়া বোধ হয়। অপতের প্রত্যেক পদার্থ প্রত্যেক জীবকে ভালবাসিবার জন্য তাহার জনম উথলিয়া উঠিল। এক ব্যক্তির প্রেম্বাভ করিয়া তিনি মানবজাতিকে ভালবাসিতে লাগিলেন। এই জন্যই বোধ হয় সম্বন্ধীকে লোকে এত ভালবাসে। সমস্ত ভূমগুল একটী স্থরমা প্রমোদ কাননের ন্যায় তাহার চল্কে প্রতীয়মান হইত্তে লাগিল। সকলি মধ্ময়।

অনস্তর তিনি সেই নবজাত প্রেমস্থাপানে বিজ্ঞার হইরা নিশানাথের शृह्मश्लक्ष छेलवनमार्या व्यूटिंग कतित्तन अवर शृक्षतिगीत दाँथ। चाटित সোপানের উপর বসিলেন। বসস্তমমাগমে প্রকৃতি নবীন বেশ পরিধান করিয়াছে। নান দেশ দেশাস্তর হইতে বিচিত্র বিহল সকল আসিয়া জুট-शाह्य। छाहारतः अधूत कृष्णनश्यनिष्ठ छेल्यन कुञ्जकानन श्यनिष्ठ हहेर छहि। (यन याजाक्रान्त (क्रान्ता हातिक्रिक क्रजारेग्रा गीज गारेरज्हा मत्मीव নির্মাল সলিলের উপর দিয়া ধীরে ধীরে দক্ষিণ বায়ু বহিয়া অঞ্চে লাগ-তেছে। কামিনী ও গোলাপকুঞ্জে ভ্রমর ভ্রমরী ও মন্দীকাগণের মহামহোৎসব লাগিয়া গিয়াছে। চ্যুত্মুক্লের মধুগলো চারিদিক আমোদিত। বাঞ্চা-রামের জ্পারে মধুর প্রতাবণ উৎসারিত, বাহিরে বসন্ত ঝ চুর শোভার প্রকৃতি ত্বজ্ঞিত সঞ্চীবিত। সরস কৃষ্পতাবলা, কুত্মিত ভরুকুঞ্জ, মুকুলিত চাত-শাখা সকল শ্যামল সৌক্ষা এবং বিপুল ঐশ্বহাভাৱে মলর মাকুতের মৃত্ হিল্লোলের সঙ্গে ধেলা করিভেছে, সরসীর স্বচ্ছনীরে তাহার প্রতিবিশ্বিত ছার। আন্দোলিত হইতেছে। বাস্তারাম সেই নববসন্তের প্রেমালিক্সনে আলিঞ্চিত হইয়া কুত্মপরিমলবাহী সুধম্পর্শ সমীরণ সেবন করিতে করিতে একাকী ्यन माध्या क्रमभानत प्रविद्या साहेर अधितन। क्षोवतन वह व्यासनी

জাহার পক্ষে বড়ই পুৰকর হইরাছিল। এইজাবে কিছু কাল আনুল সংস্থার করেন মনে বড় ইছো। এছ দিন পরে এই বিভাগ ধরাণামে একজন ছবের ত্বা জুংবের জুংবী জুংবের জুংবী জিনি পাইরাছেন, কিছু কাল প্রবাধার করুন এটা আমাদেরও ইছে।। আহা! ভত্তসন্তান বড়া মনংপীছা পাইরাছে। জাহার বিজ্ঞানদর, শোকসন্তপ্ত নীরস ক্ষরে একটু প্রেমায়ত বর্ষিত হউক! বেবল কি "অগরাইট্ ব্যাকিউ" বনির। বেড়াইকে প্রাণ বাঁচে! অভতঃ একজনও ভাবের ভাসুক চাই। আফ কালের দিনে ভূইটা লোককে অক্তন্তিম প্রেমে মিলিতে দেখিলে মনে আশা হয়। তাঁবের দেংসর জীবনসহ্চর অভাবে মত্যা বড় কই পায়, পুরিবী বেন ভাহার পক্ষে অবশাভূমি।

কিন্তু মানবের অনুষ্ঠ চক্র নিরস্কর ঘুরিভেডে; অদ্য পুর্কিন্দ্রের কমনীয় জ্যোৎলার স্তৃত্ব ক্রিয়াল কর্মান্তর। সে অমানিশার ঘার অম্বর্ধর অবর্ধে ভূত ভবিষাৎ বর্ত্তমান সমাজ্য । সে অম্বানের হাতের খেলার সাম্প্রী। ভগবতী মহাবিদ্যার ক্রোড়ন্ত শিক্ত সন্তান। অনন্তর্ক পিন্তী নীলামরী মা ভাহাকে লইয়া প্রভিক্ষণে নব নব রক্ষে ক্রীড়া করিতেচেন। কথনো হাসাইতেছেন, কথনা কাঁছাইতেছেন। ঘোর বিপদাক্ষকারে কেলিয়া কথনো ভ্রম্বে খেলিয়া কর্মনা ভর খেলাইতেছেন, কথন কুপালোক দেখাইর। আশা আনক্ষে পুল্কিড করি-ভেকেন। ভাহাকে উচ্চ আকাশে ভূড়িয়া ফেলিয়া ছিয়া আবার কোল পাজিয়া লুডিয়া লইতেছেন। এইরুপে ভিনি গাদা পিটাইয়া ছোয়ার কোল পাজিয়া লুডিয়া লইতেছেন। এইরুপে ভিনি গাদা পিটাইয়া ছোয়ার কোল পাজিয়া ভাহার ছিয়ভালের রোয়। মা আমাবের পালালনী উন্মাছিনী। বাল্পারাক্র ভিনি গংসারচকে ক্রমানত ঘুরাইলেছেন। ভাহার এই স্বধের আরক্ত একং শেষ। অবরা উচ্চতর মগভাব সাধনের জন্য বাহার জীব্স, পার্থিব স্থাবে স্থী ইইলে ভাহার চলিবে কেন গুইছেটাবন ভাহার সাংগ্রাহিমান বার জনা। মা আনক্ষমরী বলা সমরে ভাহাকে লাজি ছান করিবেন।

ৰাপ্তাৰাম উল্যান্ত স্বসী ওটে বসিয়া আছেন, সন্তোধিশী ৰাড়ীর এ কর ও বর ছাল বারাঙা নানা আন অবেষণ করিয়া কোণাও না পাইয়া শেষ ঐ আনে উপস্থিত হইলেন। প্রেমবজ্ঞের বাবতীর উপকরণ সংগৃহীত হইল। বাপ্তারাম ব্যিক্তাসা করিলেন, "আছো বল দে" সন্তোধিশী, কেন ভূমি আমার এছ ভাল বাদিলে ? আমিত হতভাগ্য গৃহবহিক্ষ পুস্তকের কীট,
নীরল পাষাণ সন্তুদ; না আছে রপ গুণ, না আছে ক্ষমতা দক্তি; আমার
নিমিত্ত তোমায় এত বাাকুলতা কেন জমিল ? আমি নিঠুর কঠোর অপ্রেমিক, নারীর মর্যাদ। আমিত কিছু আনি না। নিজের হুংখ বহন করিতে
আমি ভীত নহি, কিক আমার জন্য এক জন হুংখ পাইবে এটা
বড় অসহ। বিজ্ঞানোমাদের হাতে পড়িয়া দেব কি কট্ট পাইবে ? আমার
মন সংশ্ব আধারে আরত, কি ত্রী কি পুরুষ কাহাকেও আমি কোন
বিষরে সহজে বিশ্বাস করিতে পারি না। কিন্তু তোমার ভালবাসার আমি
বড় পরিত্ত হইয়াছি। তোমার হুংখে আমার প্রাণ নিরন্তর কাঁদিতেতে,
কিছুতেই বারণ মানিতেতে না। আমার এ জীবন বদি ডোমার জোন
কাজে আসে তাইছ্ আমি উৎসর্গ করিয়া রাখিলাম। তুমি সুখী হও, সদ।
হাস্য বছনে নির্ক্ষিকার মনে প্রীতি প্রভুল্ল চিত্রে কাল যাপন কর ইহাই
কেবল আমি স্বেধিতে চাই।"

বে বাঞ্চারামের সাত চড়ে কথা বাহির হইত না তাহার কঠে খেন দেবী সরস্বতী আবিভূতি হইলেন। একটু বিলক্ষণ মন্ততার সহিত তিনি হালয় কুলির। কথা কহিতে লাগিলেন, প্রাণট। যেন সমস্ত তাঁহাকে ঢালিরা দিলেন। মাতৃবিরোগ অববি ভালবাস। কি সামগ্রী তাহা এত দিন জানিতেন না, পৃথিবীতে সচরাচর যে ভালবাস। দেখিতে পাইতেন তাহাতে ও লোভ জমিত না, এক্ষণে সম্ভোবিণীর সরল মধুর প্রেমণীমূষ পান িরা মত ছইরা উঠিলেন। ভাবোক্যমের বিরাম নাই, কবারও শেষ নাই, নবান প্রেমিকের প্রেমকাহিনী কিছুতেই আর ফুরায় না। সে দিন ভাবের আবেশে বাঞ্জারাম কত কথাই যে বলিয়া ফেলিলেন, তাহা আর লিখিয়া শেষ করা যায় লা। তোমার আমার পক্ষে সে সব কথা ভালও লাগিবে না, ববং বিরক্তিকর বোধ হইবে। প্রণারীদিনের পরস্পার গুচু প্রণয়ের অফুরস্ক কথা কেবল ভাহাদেরই ভাল লাগে। তাই আলাপ করিতে বনিলে আর তাদের জ্ঞান প্রকেন। আমারা গৃহী জীব, থাটিয়া খাই, ইহাদের প্রেমকাহিন। করি।

खनस्य बाहाबाम किल्लामा कतित्वन, "এই यে जानवामा, खर्थाए साख-

সমর্পদের ভালবাসা ইহা কি ভোমার একটা সামন্ত্রিক উত্তেজনা ? ইহা বে উক্ষ্ডোং "ল ফেনপুঞ্জের ন্যায় নারীসভাংস্থাভ ভরণভার পরিচর নর ভাহা আমি কিরপে বৃথিব ?" ঘটালে দেবছি বিপদ! অকৃত্রিম প্রেম্ কাপট্যের বিশ্বমান্ত অভিযোগ অসহা, অবচ অভ্যাত প্রেমের ভিতর অভ্যাত কপটভা প্রকাহী। বাকে। কিন্তু এরপ প্রশ্ন বৈজ্ঞানিকের উপযুক্ত ইইলেও, সভ্যোমিণীর বন্দে বেন শেল সম বাবিল। তিনি বাবিভ অভ্যাতরে বিশেষ, "সামন্ত্রিক কি ছারী ভাহা আনি না, কিন্তু বহবৎসরের পোষিত, আত্মকর্তুত্বের অভীত, অবস্থ এবং ফলাফল নির্পাক্ষ এই মান্ত্র ভানি। বিচার ভর্কের হার। কি আমি আমার আত্মরিক ভাব ভোমাকে বৃথাইতে পারি ? সভাবের কটি পাধ্যের প্রীক্ষা করিয়া দেব।"

উত্তরটী জ্লারের তাবে তারে বাজিল, ডাগাতে রাকার উঠিল, সে মধুর কবিনি প্রাণে প্রাণে মিলিল। গেল।—্যেনন বীণার ক্ষার আকাশে মিলাইলা বার। তথন বারোবার আফ্লোলিত চিত্রে বনিলেন, "আফ্রা, আমার দেহ বিদি ককাল মাত্র অবনিত্ত হইলা বোলনবাার মূহবৎ পতিত থাকে, বাক্য বক হইলা বার, অনুত্তিক ভাব প্রকাশের সমস্ত উপার বিন্ত হর, সে অবস্থা-তেও কি তোমার এ ভালবাদা রক্ষা পাইবে ?"

উত্তর। আমার প্রেম অধি মাংগোর উপর নর, কিছে তাহা হার: ভোমার সমস্ত অজ অভ্যক্ষ ব্যবহার আচিত্রশ সুমিষ্ট হইয়া গিয়াছে।

চিন্তাখীল বিজ্ঞানী পণ্ডিতের। সচরাচর কিছু ২াপজানহীন নির্পোধ হর, সেই জন্য আম্রা বাঞ্জামকে এ যাত্রা ক্ষমা কবিলান। এরপ অবিশাস-বিজ্পুতিত কথা পুনরায় যদি ঠার মূপে বাহিব হয়, তাহা হইলে পণ্ডিডকে আমরা স্মৃতিত হওবিধান কবিব।

সংস্থাবিশীর আড্দু/বিহীন সংল প্রজ উর্ব্য প্রবণ করিয়া বাল্লারাম একটু অপ্রতিত এবং লক্ষিত্ত হলৈন এবং জন্মন্তার উন্বাটনপূর্বক বলি-লেন, "সে বাহা হউক, আমার প্রাক্তিকত ইহাকে বড় মিট্ট বোধ হই-ভেছে। ভোমার মধুব ভাব আমাতে সংক্রোমিত হইয়া আমাকে বড় সুধী করিয়াছে। এবন ইচ্ছা হইডেছে একবার ব্ব হাসি। ভোমার চিত্ত-বিনোদন উন্যাদকর হাসির সহিত হাসি মিলাইয়া প্রাণ বুলিয়া হাসি। ছাসিটে কি অপূর্বে সামগ্রী । ইগর ভিতর কত গভীর বিজ্ঞানই বামি পাঠ করিতে ছি। বড় বড় বিজ্ঞান হর্শনে এত রস পাই নাই। মহুংসার 'ছাসি বেন সেই অনজের প্রেমইল্যানের একটী মাধুরীমার প্রকৃতিভ কুম্ম। দভোষ্ঠ ব্যতীত আরো কিছু নিগৃঢ় বিজ্ঞানরহদ্য ইহার ভিতর প্রভাগিত আছে সন্দেহ নাই। কিন্তু সামগ্রিক মন্ততার তর্গপ্রেমক ছাসি, আর ছারী বিশাসের হাসি এ উভয়ের মণ্যে বোধ হয় অনেক প্রভেষ

বৈজ্ঞানিক প্রেমের সন্দেহ মিপ্র বাক্যালাপ প্রবণে সন্তোধিণীর কোমল ছলর বারস্বার বড় বাধা পাইতে লাগিল। তিনি একটু অভিমান এবং বিরক্তির ভাবার তথন বলিয়া উঠিলেন, "ভোমার বিজ্ঞানবিচারের জ্ঞালায় আমার হাড় জালালন হইরাছে। কি কট বে তুমি আমাকে লিয়াছ, তাহা জ্ঞান না, যদি জানিতে ভাছা হইলে কথন দিতে পারিতে না। আমার ভালবাস। উফ চ্যের কেনার মত, কি ঠাণ্ডা পাথরের মত তাহ। আমি জানিনা, কেবল জানি বে তুমি আমার সর্কবিদ।"

্বাঞ্জামের অবদ্য হইতে বিজ্ঞানের ভাঁটা সম্পূর্ণরূপে এখনে। সরিয়া বার নাই; ভাটার টান থাকিতে লাকিতে ভাহাতে প্রেমের জোরার দেখা দিয়াছে, মাগার উপর দিরা এক দিন একটা কোটালে বানও ডাকিরা গিয়াছে। এরূপ ছলে দুই একটা সন্দেহের কথা শুনিয়া সম্ভোষিণীর কিন্ধ বিরুদ্ধে হওয়া উচিত নয়। সংশারবাদী বিচারপ্রিম্ব লোকদের এ রপই দ্শা। বাঞ্জামা বিজ্ঞানের বৌকেই এখনো কথা কহিতে লাগিলেন।

তিনি বলিলেন, "তোমার কথার আমার বিলুমাত্র অবিখাস নাই। তকে মানুষ কি না সচরাচর বড় ভাবপ্রবন, বিশেষতঃ স্ত্রী লাতি, সেই জন্য একটু আলোচনা কলিয়া দেখিতেছি। আর যতটা বেশী মনে করিতেছি, পরিমাণে তোমার তত প্রেম আছে কি না সেটাও জানা আবশাক। কেইই আমরা আত্প্রতারিত নাহই এই ইচ্ছু। রপদনিত মারা আর প্রেম এ চুইয়ের মধে গভার পার্বক্য আছে।"

সংস্থাবিণী এ সকল কথা শুনিয়া একবারে ঘেন বিশ হাত জ্বলের নীতে পড়িয়া গেলেন। ভাবিলেন, "এত কালের চেষ্টার ঘাহা হইল, তাহা বুলি শেষ বিজ্ঞানের কঠোর বিচাবে নামপ্ত্র হইর। বার।" কিচ আমরা বলিতেছি, সে ভর করিবার আর ধরকার নাই, ঠিক আরপার বিষা লাগি-রাছে, পুক্ষবের পভাবে প্রকৃতি মিশিয়াছে। বাহারাম বাধা বলিতেছেন, ভাষা ভানিয়া বাক। পাঠক মহাশ্ররাও অবহিত চিত্তে ভাষা প্রবণ কর্মন। প্রভাপ্রেক ইয়। প্রবণ করিলে চরমে পরম পদ প্রাপ্তি হইবে।

বাস্থানাম বলিতে লাগিলেন, "আমি ভাবুক অেবােমন্ত কলনা প্রিল্ল আবৈজ্ঞানিক লঘুচিত লােকলৈগকে বড় অপলার্থ আনে করি। সেই কারপে কবি কাবাকার কাবাপাঠক, কিন্তা বাহারা নাট্যাভিনর করে, বা দেখে, বাহারা গান গার, নাচে, বেখী হাসে, ফুলের মালা গলার দেব, পানভারা রসগোল্লা থার, ভাহাদের উপর আমার প্রশ্বা হর না। সেলী, বাইরপ, গেটে, মর্ক্র ইলিয়ট, কালিলাস সেক্রপিরার ইহাদিগকে আমি প্রশংসাকরি না। বাহাদের রচিত প্রত্বের আগা পোড়া সমস্ত মিবাা, ভাহাদের কলর এবং মালিক নিশ্চয়ই কলনাবিকারপ্রস্তা; এ পকল লােকের সারবকা কিছুই নাই। ইহার। ভাবে গলিয়। সভ্যের প্রতি অভ হয়। কবিকলনা অপেলা। কি বৈজ্ঞানিক সভা অথক আশ্বালাকন নহে হ স্থাপারী আর ভাবুক এ তুই ভূমি সমান আনিবে। বেটা স্পর্ট আনিভেছি সভা নয়, ভাহা পাঠে লােকের আন্যাদেই বা কেমন করিয়। লেম্মু আমি বুর্নিভে পারি না।"

"কতক থালি মিপ্যা কপা সাজাইয়া কেছ ছইলেন কৰি, কেছ ছইলেন কাব্যকার । একট কথাও সত্য নয়, অপচ এমনি রচনা যেন লেখক সব নিজচক্ষে দেখিয়া লিবিয়াছেন আছে বাপু, ভূমি কি অস্তর্গামী, না সর্স্যকর্মী । ত্রী পুক্ষ কে কোধায় গোপনে কি কথা কৰিয়াছে, কি ভাব জন্ধী প্রকাশ করিয়াছে, ভূমি তা জানিলে কিসপে । তাহায়া কি ভোমাকে মনের মধ্যে বসাইয়া প্রকালাপ অর্থাছিল । না ভূমি গ্রন্থ লিখিবে বনিয়া ডোমাকে কাছে ডাকিয়া লইয়া গিয়াছিল । পড়িলে মনে হয় গ্রন্থকার বেন বহুস্কা। ব্রু চতুরালী বর্টে, বেশ ক্ষমতা। কিন্তু সব মিধ্যা। আপনিই ডিনি এক সময় গ্রন্থী, অবার অপর সময় আপনিই প্রণারিণী। কথন তত্ব, কথন সংগু; কথন অপরাবী, কথন বিচারপতি। আপনিই



ভাস্ছেন, আবার আপনিই কাদছেন। কি এ সব ছেলেমার্থী !ছি ! ভাল লাগেনা।

সজোৰিনী। ডাভাই আমোকি করিব বল। আমি ত কাব্য লিখিডে কাহাকেও বলি নাই, নিজেও লিখি নাই। কলনাকে সভ্য বলিয়াও কথনোবুকি নাই।

বাঞ্চানম হাদিয়া বলিলেন, "আনকে মাই ডিলার লেডি, এই বল্ছি। মিখ্যা লইয়া এক বাড়াবাড়ি কেন ?''

সজে। তুমি বে দেখছি গান ভান্তে শিবের গাঁত এইতে বসিলে।
ভাদের সঙ্গে কামার সংশ্রেব কি ? আমি কি ভোমার কাছে কবি, না কাব্য-কোবক পণ্ডিত ? আমার ভালবাস। কি তুমি কবিত্ব কলন। মনে কর ? অত বাচাই করিলেভ আর বাঁচা বাল না!

বাঞ্ছা। না, না, ভা কেন কর্ব। এর মানে এই বে ভাবার প্রণরী
আবার কবি এরা এক জাতীয় লোক। ইহাদের মধ্যে ফিলোজফিকেল্
সিকোয়েকা আছে।

সস্তে। এরপ জ্ঞান না হইলে আর তুমি আমাকে এত কট দাওঁ।
কত দিন বে তুমি আমার কাদাইয়াল, ত। আর কি বলিব। চুই একটা স্থা
ছংবের কথা বলিব মনে করিয়া কাছে দাঁড়াইলাম, আর তুমি কেতাবে মুখ
তাজিয়া বদিয়া রহিলে। যেন বাজ্জান লোপ হইয়া গিয়াছে। এক
এক বার এমনি রাগ হইত যে বই ওল সব টেনে ছুড়েদ্র করে পুকুর কলে
কেলে দিই।

পুনরায় বাঞ্চারাম বলিলেন, "তুমি যে অংমাকে এত ভালবাসিতে তাহ।
আমামি কিছুই জানিতাম না।"

এ কথা ভনিয়া এবার সজোবিনীর হৃদ্ধে অত্যন্ত আঘাত লাগিল।
তিনি চমৎকৃত হইলেন, এবং বিস্মাবিক্লারিতলোচনে বলিলেন, "আমি
বে তোমাকে আবাব চৌল বংশর হইতে ভালবাসিয়া আসিতেছি, বরং
বেশা হবে তবুক্ম নয়; তাহা কি ত্মি জানিতে না । কেন আমি তো
আনেক সময় আমার ভাবের স্মার উত্তর তোমার নিকট পাইয়াছি; তবে
জানিতে না তাই বা কিরপে সন্তব হইতে পারে ।"

e :

ইহা শুনির। বাঞ্চারাম একটু চুঃবিত এবং তুটিত হইলেন এবং মৃত্ সংৰ বলিলেন, "আমি কিছুই বুবিতে পারি নাই। বলি পারিতাম, তাহা হইলে এত দিন আমি আবো সুধী হইতাম। আমার মন এত দিন এ পৃথিধীতে ছিল না, বিজ্ঞানচিত্তার আমি তুবিরাছিলাম।"

সভোষিণী। সে কি ! আমি এ কথা বিধাস করিতে পারি না। আমি বে পরিফার বৃত্তিরা আগিরাছি, আমি বেমন ভালবাসি তৃমিও ভেমনি আমার ভালবাস। তৃমি হয়তো আমার সঙ্গে তামাসা করিতেছ।

वाशाः ना मटणाविषे, जामामा काहाटक वटन आमि किहूरे शानि नाः

সংস্তা। তাইত, কিছুতেই বে আমি ইছা মনে করিতে পারিতেছি
না! ছই এক দিনের কথাও নর, প্ন: পুন: বে আমি ইছার প্রমাণ পাইরাহি। চকু কর্ণ বৃদ্ধি জ্ঞান সকলেই কি তবে আমাকে উপহাস করিয়াছে ?

বারা। তাসভব। আমি এক জন সে বিবরে জুক্তভোগী। কত বিধ মত বিধান জান সংস্থার এই জন্য আমাকে পুন: পুন: বছল করিছে ইইরাছে। বাতাবিক সমরে সমরে পুদ্ধিরতি এবং কর্মেন্তিরণ মানুবার প্রবক্তন। করে। তা না হইলে আমি কি সহজে সংশ্রবাদী হংগ্রা রহিরছি প

সংস্থা। যা হউক, বড় কৌড়কের বিষয়। আমার মাধার ভিতরটা খেন কেমন গোলমাল বোধ হইভেছে। কোন্টা সভ্য, কোন্টা মিধ্যা ঠিক করিতে পারিতেছি না। ভোমার ভূল হয় নাইত ?

বাঞ্চা। ডাই বা কি জানি, আমিত এই রোগে চিরকাল ভূপিডেছি। এখন যাহা বলিডেছি বা বুঝিডেছি ডাহার ভিতর কত ভূল আছে না আছে কে ঠিক করিব। দিবে গু সত্যা নির্দ্ধারণ করা বড় কঠিন কাল। কিন্তু এ কৰা বলিলে লোকে এখনি পাগল মনে করিবে। সাবে কি মানুষ পাগল হর গু কে বুঝে, কেই বা বুঝার গু বে বুঝার সেই বুকো; হুডরাং লে বছি ভাজ বিকৃত হয়, ভাহা হইলে সমস্ত জগৎটা কেবল ভাজিবই বিলাস। বীক, আর ও সব ভাবিতে পারি না, এখন প্রেমের মিইতা একটু উপভোগ করি।

সজোষ্ণীর এই সকল পরিতাপের কথা শুনিয়া ক্ষণকাল চিন্তার পর বাঞ্বালম নিতান্ত ভীত ও সম্ভূচিত মনে বলিলেন, "তাইও, তবে কি তৃষি তৃলক্রমে অপাত্রে প্রাণ সমর্পণ করিয়া এখন কন্ত পাইতেছ ? বান্তাবিকত এটা তুলই বটে। ভালবাসা কি তবে এখন আবার ফিরাইয়া লইবে ? আহা এক্ষণে তবে উপায়! অন্যের প্রাণা আমি কেন লইলাম ?" নির্দোষ্টিরির সরল হাদয় বাঞ্বালমের নিলার্থ ভাবের কথা শুনিয়া সম্প্রোন্থি মহা আহ্লাদে গভীর হাসি হাসিয়া ফেলিলেন। হাসিতে হাসিতে চক্ষে ভল বাহির হইয়া পড়িল। পূর্কের সমন্ত তৃংথকাহিনী স্মরণপথে জাগিয়া উঠিল। ক্রন্সনের অশ্রু শুকাইতে না শুকাইতে সেই মুখে আবার হাসির জ্যোৎস্লা দেখা দিল। বাঞ্বারামের ঘটে যদি একটু কাব্যরণ থাকিত, তাহা হইলে তিনি হাসি কালা এক সক্ষে দেখিয়া বলিয়া ফেলিতেন, "রোদ হচ্চে জল হচ্ছে শেলাল কুকুরের বিয়ে হচ্ছে।"

পরে সন্তোষিণী হাসিতে হাসিতে বলিলেন, "না, না, ফিরাইয়া আর লইতে হইবে না, সে জন্য তুমি কুক্তিত হইও না। আমি ঠিক পাত্তেই প্রাণ্
সমর্পণ করিয়াছি, আসল কাজে কোন ভূল হয় নাই; কেবল মনে বড় একটা গ্লানি অমুভূব করিতেছি যে এত ভূল আমি কেন বুঝিলাম গৃত্ই একটা ঘটনাত নয়, শত শত ঘটনা কথা ব্যবহার; সে সমস্তই কি তবে কলনা?"

বাঞ্রাম মাণা চুগকাইতে চুলকাইতে ভালা ভাল। কথার বলিতে লাগি-লেন, "ভা কি লানি, কিছুইত বুঝিতে পারিতেছি না। হয়ভো তুনি ভাল-বাসার প্রমাণরশে যাহ। যাহা দেবিয়াছ ভাহার মধ্যে কতক কভন্ন সভ্যও থাকিতে পারে। কিন্তু আমার কিছুমনে পড়িতেছে না। যা হইবার হই-য়াছে, এজনা তুমি আরে আমার কোন অপরাধ লইও না।

সংস্থাধিপী পুনর্বরে অন্ত হাসি হাসিয়া বলিলেন, "ভোমাকে পুলিসে দিব, যাবে কি গুনা জেলখানায় পাঠাব গ অপরাধের কথা হইডেচে না, আমি বে কি নির্বোধ মূর্থ ভাই কেবল ভাবিভেছি।" পুর্বের কথা মনে করিয়া একটু দুংধ হইডেছে, আবার হাসিও পাইডেছে। পরে বলিডে লাগিলেন, "কি আশ্চর্য্য এড ভূল। আমি মনে মনে জানিতাম, আমি ধুব বুঝি, আমার মত চতুর কেহু নাই, আজ সে অহক্ররটা চুর্ব ইইয়া গেল।

সে কথা থাকু, এখন ভোমায় সৰ বুলিয়া বলিতে হইবে। আছে। ওবে সে সকল কথাৰ মানে কি ৮

বাঞ্ছা। ভূমি বল আমি শুনি।

मरका। ना, कृत्रि चारत रत।

বাস্তাবাম আর কি বলিবেন, মুখ হাঁ করিয়া বোবার আনক্ষের হাসি হাসির। ভাবিতে লাগিলেন, "আমি কিছু টেব পাইডাম না, আর উনি ভিডরে ভিডরে এড কাল এই কাও কারধান। করিয়া আসিরাডেন! আছে। আয়ি আর একটু গভীর ভাবে চিন্তা করিয়া দেবি।— বাস্তবিক এটাছ বড় মিইপ্রেম! করুল্ল হওয়া দ্বে পাকুক, একটা প্রস্তাত্তব ছিতে পারি নাই, অধচ ইনি আমাকে এড ভালবাসিয়াছেন! গুপ্ত প্রেম! স্কুরিত প্রেম! আহা বড় উপাদের! মতোবিনী ধবন সংগোপনে আমাকে ভাল বাসিতেন, তবন আমি লোপনে লুকাইয়া যদি ভাষা দেবিভাম, তাহা হইলে বোষ হয় ভারি আমোদ হইত। অব্যক্ত প্রেম বড় গভীর এবং মণুর, কিয় আর।জকে কুরিবার জন্য এক বার ভাষা বাহির হওয়া আবিশাক। এখন আমি ওপ্ত এবং প্রকাশ চুই প্রকার প্রেমেই আবাদন পাইডেভি।"

এইরণে তিনি ভাবে গণিয়া প্রেমের নিগৃচ তর আলোচনা ও সভোগ করিতেছেন, আর সভোবিধী দির ভাবে তাঁহার প্রেমচিন্তা-বিকসিত মুধ পানে একদৃষ্টে চাহিয়া আছেন, এখন সমর বাঞ্চারামের জদৃষ্টে এই স্বর্গীয় প্রত্যাদেশ হইল,—"আনার প্রেম এইরলা মিষ্ট জানিবে। তুমি আমাকে ছাড়িয়া কখন পাতিতাের অভিযানে অভ থাকিতে, কখন বা আমাকে জবিধাস ও অবজার সহিত উপেলা করিতে, কখন নিশা করিয়া বেড়াইতে; কিন্তু আমি ভোমাকে জদহের মধ্যে অভি সহে ধরিয়া যাধি-ভাম, ভোমার পাচে পাছে কিবিভাম; কবে হোমার মন কিরিবে, কবে তুমি আমাকে ভক্তি করিবে ভাল বাসিবে, তাই ভাবিডাম।"

এই প্রভাবেশে বাধারামের জ্বরে একবারে বিবাজান, মহাভাব, এবং ইন্ত বিবাসের বীল এক সলে অজুরিত হইয়। উঠিন, জীবনের পূচ্ রহয়র বুলিয়া পোল, মানবীর ও প্রতীয় প্রেমে প্রাণ প্রমত হইল। ভঙ্গনস্তর সংস্থাবিণীর মনে বর্ধন ধে বউন। উপলক্ষে যে ভাব উদয় হইরাছিল, ভারিবায়ে হান কাল অবহা সমস্ত বর্ধন করিলেন, বিশেষ বিশেষ কথা
পর্যান্ত উল্লেখ করিলেন; কথার মিলিল, কাজে মিনিল, হান কাল অবহা
আনেক মনে পড়িল, কিন্ত ভাবে মিলিল না। সম্ভোষিণীর এ বিষয়ে ভগানক
ভ্রম হইয়াছিল, সে কথা আমরা পুর্নেই বলিয়াছি। তথাপি প্রাজাতিহুল্ভ অভিমান ও লজ্জা বশতঃ তিনি সে ভ্রম হীকার করিতে যেন তত
প্রস্তুত নহেন।

আমাদের বোধ হয় এ সহকে উভরেওই জ্ঞানের এবং অজ্ঞানের কিছু কিছু তুল ছিল। নত্বা কি এক হাতে কখন তালি বাজে ? হঠাং না বৃথিয়া রাতারাতি কি এত ভালবাসা কখনো জন্মে ? বাঞ্চারামের তখন প্রবাল জ্ঞানত্কার সময়; তথান্দ্রানের দিকে বেশী ঝোক থাকাতে এ ভাবটা তত বাড়িতে পায় নাই। যাহা হউক, এ জন্য সন্তোবিশীর আর হংখিত হওয়া উচিত নহে; মনের ভিতর যেমন সজ্ঞানে, তেমনি অজ্ঞানেও অনেক কার্য্য হয়। বাঞ্চারামের হুল্বের নিভ্ত হানে এত দিন কি ভাবে প্রেমের কার্য্য চলিয়াছিল তাহা কে বলিবে ? আমরাও আর দে অব্যক্ত অকুট প্রেমের মধ্যে প্রবেশ করিতে চাহি না, সেসকল মনেনবিজ্ঞানবিদ্ পণ্ডিতের অধিকৃত রাজ্য।

সভোষিণীর প্রীতির্তি অপ্রেই বিক্ষিত হয়, এক্সণে ভাষার সহামুত্তি পাইয়া তিনি শান্তি ও তৃপ্তি লাভ করিলেন। কিন্তু বাঞ্বায়ম হঠাং ধেন প্রকাণ্ড সাহারা মক্ষত্মি হইতে একবারে প্রশান্ত মহাসাগরের ক্ষণে পড়িলেন। অবশ্য সে কল লবণাক্ত, পান করা বার না, করিলেও পিপাসা মিটে না, কিন্তু শীতলভাতে ভাঁহার প্রাণ আপাতভ: ঠাও। হইল; ভাই এত ভাবের উচ্ছাস, ভাই এত প্রেমের মত্তা। পণ্ডিত এখন নৃতন চক্ষে সন্তোষিণীকে দেখিবেন, নবামুরাগের সহিত পূর্বের কথা ভনিবেন, নব ভাবে ভাহার সঙ্গে কথাবান্তান করিবেন ভাহা আর ব্রিতে পারিলেন না। চুই দিক হইতে হইটী প্রবল প্রলোভন ভাঁহাকে সবলে আকর্ষৰ করিজেলারিল। বাহিরে হর্শনিশান্ত ভিতরে বিজ্ঞানতত্ব। ভাই ভাঁর ক্ষরসমুরে

আৰু এত তুলান উঠিরাছে, তরকের পর তরক উথলিত হইরা সার স্থাধিরা চলিতেছে। বেন এক অতলম্পূর্ল পতীর প্রস্তব্য হইতে ভাবরস উৎসারিজ হইতেছে। ভারি আনন্দ। বড়ই উন্নাস। একপে জানী ভাবুক হইলেন, বৈশান্তিক মারাবাদী পোরাণিক প্রেমিক হইলেন, সর্বজ্যাগী বৈরাদী পারিবারিক সুধের আখাদ পাইলেন।

আর সংস্থাবিধী । তার মনের ভাব এখন কিরণ । কেবল মূহ মূহ্ হাসি, আশাবিকসিত প্রাণভর হাসি। মুখে বেশী কথা নাই, বাংচাঞ-লার কোন চিহ্ন নাই, আপনাকে জীবনবল্লতের হাতে সমর্পণ করিয়া একবারে তিনি নিশ্চিস্ত হুইলছেন। আর প্রেমের বিবিধ রঙ্গ পেথিতেছেন। তিনি যে বনবিহঙ্গের বিচিত্র শোভা পেবিরা তালাকে ধরিবার অস্ত এত দিন বনে বনে কিরিয়াছিলেন, ভাহাকে এখন তিনি বিশ্বরে বীথিয়া কেলিয়াছেন। আর সে উড়িয়া যাইতে চাহে না; নদীর অলে বনের ফলে, প্রমুক্ত আকাশের মুক্ত বায়ুতে আর তাহার বাসনা নাই। একা নির্জ্জিন গাহে বসিরা আর সে পুক্তক পড়িতেও ইচ্ছা করে না।

উপ্তাসের উদ্দেশ্য প্রেমের উৎপাদন এবং নায়ক নায়িকার মিলন;
কিন্তু আমাদের এ উপত্যাস সেরুপ নহে।
 এত অংশ পরে মোহপরণ
উৎপত্তি হইল, ইহাকে মন্তন করিয়া অনুতে পরিণত করিতে হইবে।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

खान मायक्षमा।

সর্দ্রমংশরী চিত্ত বাঞ্চারাম এত দিন যে ভ্রান্ত প্রণালীে জ্ঞানামুশীলন করিতেন তাহা দ্বারা কথন এক দিক কথন অন্য দিকের উমতি হইত; এক্ষণে প্রেমপ্রভাবে তাঁহার জীবনের সমস্ত অংশের বিকাশ এবং সামঞ্জমা হইল। তাই এত আনন্দ। বাদাযন্ত্র যতক্ষণ তান লর বিভ্রমনা হয় তত ক্ষণ তাহার স্থার কানে ভাল লাগে না, যাই সমস্ত তারগুলি ক্যরে ম্বরে মিলিরা বার অমনি প্রাণ আহ্লোদিত হয়; মনোরাজ্ঞার বৃত্তি সমুদার তন্ত্রাপ। বাঞ্চান্যের জীবনবীণা এখন মধুর স্বরে বাজিতে লাগিল।

যত দিন মনুষ্যমনে জ্ঞানের উপতা অধিক পাকে তত দিন একটার সক্তে আর একটার জমাট বাঁধে না। কেন না উত্তাশের ধর্ম বিয়োগ; ইহাতে ঘনীভূত পদার্থ তরল হয়, অধণ্ড খণ্ড খণ্ড হইয়া যায়. সংগণ নিও বে পরিণত হয়, সে সময় ধরিবার ছুঁইবার আর কিছু থাকে না; সমস্তই আকাশ সকলই নিরাকার, অবিশেষ। তদনস্তর প্রেম ভক্তির রস সঞা-রিত হইলে উফডা ও শৈতোর সামঞ্জস্য হয়। তথন প্রেম নির্গুণকে সত্তণ, সাধারণকে বিশেষ, সৃক্ষকে মূল স্পর্শনীয় এবং তরলকে খনীভূত করে। বালারাম এখন শক্তির বিস্তীর্ণ অসীম রাজ্য হইতে ব্যক্তির নিকট পৌচিলেন, নির্ত্তণ নিরাকার তত্ত্ব ছাড়িয়া সত্তণ পুরুষের চরণ ধারণ করি-লেন। বিজ্ঞানত্মগতে একতা দেখিবার জন্মই তাঁহার আত্মা এত দিন ভিন্ন ভিন্ন পথে ঘুরিয়া বেড়াইতেছিল, কিন্ত ভাবরসের অভাব হেতু একটার मत्त्र जात এक होत रहान मन्त्राहन कहिटल शादत नाहे, चुलता मर्खावहर-সম্পন্ন পূৰ্ণ সভ্য আংশিক বিজ্ঞানালোকের সম্মুখে কিব্রুপে প্রকাশিত হইবে ? ভাবময়া রসলায়িনী সস্তোষিণী হইতে সে অভাব এখন পূর্ব হইল। প্রেরর মভাষত সকল পরিবর্তিভ হইয়া গেল। ইচ্ছা প্রীতি জ্ঞান পরস্পরি भवन्यदिव भया गायन कविला।

যসত্ত্ব আমে বকেবর এবং মকেবর সিত্র নামে চুই ভাই বাস করিভেন। বকেবর মাধাশাগ্লা রকমের গোঁড়া ছিল্ আর মকেবর সেকেলে
শিক্ষিত সিনিয়ার স্থলার। বকেবর বকিয়া বকিয়া আচার বিচার করিয়া শেষ
পাগল হইয়া মরিয়া বায়। মাসের মধ্যে পনর দিন ভার আহার ছইত না।
নির্ক্রোধ অভবিশাসী হইয়া আল চাল কাঁচা কলা থাইয়া উপবাস করিয়া
করিয়া ভাহার রাগ অভ্যন্ত রুদ্ধি চইয়াছিল। কেহু কথনো ভাহার মুখে
হাসি লেখে নাই। কেবল বকিড আর লোককে গালি দিত। মকেবর
ইহার বিপরীত। ভিনি সংশয়বাদ স্থলের ছাত্র। পড়িয়া পড়িয়া এফথে
তাঁহার চুইটি চক্ষু অভ হইয়াছে, বয়:ক্রমণ্ড প্রায়্ম আশির উপর চইবে।
প্রের্ম ইহার সক্রে বায়ায়ের অনেক সময় বিজ্ঞানবিবরে করে।পথনব
হইড, ভাবে ক্রিডে জ্ঞানবিচারে উল্লের মধ্যে বিলক্ষণ সন্তব্দয়ভা ছিল।
মকেবর বছ শান্ত অধ্যয়ন করিয়াছেন, রোম গ্রীশ ইজিপ্টের প্রাচীন ইভিহাস সকল তাঁর মুখ্য বলিলেই হয়।

বাস্থারামের হৃত্য যথন প্রেম্বসাভিবিক্ত হইল, এবং ওজারা জ্ঞানের বিকার চুটিরা গেল, তথন তিনি মকেববেরর সক্ষে বাতারাত বন্ধ করিলেন। অনেক ছিন তাঁহার দর্শন না পাইর। মিল্লার মনে বড় কৌচ্ছল দ্বালা। অন্য কাহারো সক্ষে আলাপ করির। তিনি হুব পান না। এক ছিন লাঠী ঠক্ ঠক্ করিতে করিতে বাস্তাবামের বাটাতে আসির। উপস্থিত। "কি ছে নাতি, আর দ্বো পাই না কেন, ভূলে সেলে নাকি ? এই দেব তোমার জন্য আমি পথ ইংজড়াইতে ইংজড়াইতে আসির। উপস্থিত হইলাম। প্রভাবর চর্চ্চা চলিতেতে ত ? আমিত অন্য মাসুব, এবন তোমার উপরেই আমার ভ্রসা। নৃত্য পুস্ককাদি আর কিছু বাহির হইরাছে কি সংবাদ রাব ?"

ৰাঞ্যায় বেন একটু ঠাওা, কণা: উত্তর দিলেন, কিন্ত নিভান্ত কওঁবাামু-রোধে। "কৈ নৃত্ন পৃত্মকাদি ও আর দেখি নাই। আপনি আবার এত কট্ট ক্রিয়া কেন আসিলেন ৭ ভাকির: পাঠাইলেই ও হইত।

• তাঁহার কথার সূরে এবং ভাবে মকেশ্বর বুবিশেন, এ লোক সে লোক নয়। বস্ততঃও ডাই বটে: এখন বাধারামের জ্ঞানের ফুচিও পরি- বর্ত্তিত হইয়া নিয়াছে। এখন তিনি যোগ ভক্তি বৈরাগ্য বিষয়ে আধানি আিক জ্ঞানের অনুরাগী হইয়া গীতা, ভাগবত, যোগবাশিষ্ট এবং প্রাচীন পুরাণালি অধারনে মন দিয়াছেন। এই দকলই এখন তাঁর খুব ভাল লাগে। মিত্র মহাশয়কে অস্পাই সুবে বলিলেন, "আমি আর বিদেশীর তত্ত্ব শাস্ত্র বৃড় পড়িনা, কেবল বাইবেল মাঝে মাঝে দেখি, আর প্রাচীন আর্ঘাদিগের যোগ ভক্তি ব্রহ্মজ্ঞান আলোচনা করিয়া থাকি। আমাদের অধিরা বড় চিন্তানশীল গভীরদ্দী লোক হিলেন।"

মিত্রজার জ্ঞানচর্চার প্রভাবে চর্মাচকু আরু হইয়ছিল কেবল তাহা নহে, সম্বচ্জুও ভিতরে কেবল জাধার দেবিত। বাঞ্ছারাম পুর্বের বে আনিশ্চর সংশয় জ্ঞানের পক্ষপাতী ছিলেন ইনি এখন ঠিক তাহাই আছেন। জাবনে ক্থ শান্তি কিছু নাই, কেবল ক্থের মধ্যে জ্ঞানাভিমান। একট্ বিরক্ত হইয়াতিনি বলিলেন, "ভোমাদের মত চঞ্চমতি সুবার এই দশা তা জানাই আছে। এত কাল পরে গাঁজাখোর ঝাম্পিরের কল্পনারহস্যে ভোমার মন মজিল ? হায় হায় হায়! এতে ভোমার বৃদ্ধি কি চরিত:র্থ হইয়াছে ?

বাস্থারাম। আছে বৃদ্ধি চরিতার্থ হোক না হোক প্রাণে বড় আরাম শান্তি সম্ভোগ করিডেছি। ইয়োরোপীয় বিজ্ঞানের আলোচনাতেও আমি আমার মনকে এত দিন নিঃসংশয় করিতে পারি নাই, কেবল আলা া চিল ছুড়িতাম। ভক্তিমিপ্র জ্ঞান বড় মিষ্ট এবং শান্তিপ্রদ। সামঞ্জ , ২ প্রকৃত জ্ঞান। একটি হরিভক্ত রাহ্মবদ্ধু "বহ্মগীতোপনিবং" নামক চুই প্রকৃত প্রস্থা পড়িতে দিয়াছিলেন তাহা পাঠে আমি বড় সাংখ্যা পাইয়ছি। তাহাতে যে সকল সাধনতত্ত্ব লিপিবছ আছে, অতি পরিকার, যেন স্থর্গর সোপান।

মকেশর পর্বিত ভাবে হাসিয়। বলিলেন, "হুর্গ আবার তুমি ইহার মধ্যে কোধার পাইলে ? কি ভান্তি! একবারে তবে গেছ বল! এ কালের এম, এ, বি, এ, ডোমরা, নিডান্ত যেন এডুকেটেড বোর। ছি! বড় অপদার্থ। এই জন্য আমি এ সকল লোকের সঙ্গে কথা কহিছে ইচ্ছা করি না। ভোমাকে একটু বৃদ্ধিমান বলে জ্ঞান ছিল, তাও এখন দেখছি সব ভূল।

যালারাম। কেবল নেপেটিভ জ্ঞান আর সংখ্য দাইরা কি প্রাণ বাতে ?
মকেবর। তাহারই জন্য একটা কলনার প্রস্কাব করিতে ছইবে না
কি ? কি বিপদ ? তুরি যে নিহাত মূর্বের মত কবা করিতেছ দেখি।
একটা লোকও লেবা পড়া জানে না গা, কি আশ্চর্যা। অথচ সেতেশ
মুলিরে, হড় পরে, টাইটেল্ নিয়ে জাঁক করে বেড়ার।

বাছারাম। জীবত প্রত্যক্ষ জ্ঞানে বর্ধন নিশ্চর আনক্ষ সভ্যোগ করি-তেছি তর্থন আর কলনা কিরপে বলিবেন ? জ্ঞান অপেকা জ্ঞানস্বরকে অধ্যরন করা বড় সুধ্যের বিষয়।

মকেবর এ কথা ভানিয় একবারে কোবে অভিযানে অধি অবভার ছইলেন। "কি ! আমার সকে পরিহাস!" একে কানা মানুহ, তাহাতে
প্রাচীন বরস, অধিকত্ত জানপর্কা, অবিখাসাতিমান, ভিনি চটিয়৷ ইুলিড্
কুল মেল্কাউলিউডেড্ ইত্যাদি কটু বচনে বাস্তারামকে ভিরুদ্ধার করিলেন এবং রাগভরে লাঠা ঠক ঠক করিতে করিতে জ্বপত্তে গৃহাতিমুকে
চলিলেন। ক্রোধান্ধ কানা মানুহ চলিডে পারিবে কেন ? সর্কার
চৌকাঠে ঠেকিয়া চিডপাত হইয়৷ পড়িয়া পেলেন। এমনি পড়িলেন ফে
একেবারে মৃতপ্রায় অচেডন। তর্গন বাস্তারাম ভাড়াডাড়ি ধরিয়া ভূলিলেন, চথে মুখে অল দিলেন, বাতাস করিতে লাগিলেন। পাড়াপ্রভিবাসীরা চারি দিকে হেরিয়া দাঁড়াইল। নাড়ার গতি অভি জ্বীল, আজে
আজে এক একটু কর্থা বাহির হইতেছে, জ্ঞান বিষয়া পুলি বিলোপ ছইয়া
গিয়াছে। বাস্তারাম ক্রিজাস। করিলেন, 'ঠাছুবর্গলা, এখন কি মনে
ছইতেছে গ্

মকেশর। আর ভাই মলাম, বড় কট, প্রাণ হাঁপ করিতেছে, কিছুই ধরিতে ছুইতে পারিতেছি না, সব অধকার, সমস্ত অকৃণ পারার। আমি কোবার বাজি বলিতে পাব ? আমার ত্রী পরিবার সব কোবার ? উ: বড় কট্ট। কেবল অধকার ! বেন অনস্ত অধকারময় মহাসমূল্যে ডুবিয়া বাইতেছি।

বাঞ্জারায়। আক্কারের ভিতরে জ্যোতির্মায় শত্য পুরুষ আছেন বিধাস
 ভক্তির সহিত তাঁহাকেই দেখুন।

মকেশর। আর ভাই দেখা ভনা। সব ফাঁকি, কেবল কট আর আঁবার। যেন কয়লার খনির মধ্যে নামিছেছি। বনের বাড়ী বাইবার পথে কি ছাই একটা প্রদীপ নাই! যাক, বাঁচা গেল, বোকা ধার্মিক ব্যাটারা মরণের ভয় দেখাইয়। ভজাইতে আসিক। এইড মরছি। এনাইহিলে-সন্টা মক্ষই বা কি! পরকাল নাই বা বৈলং ইহকালই কাটে না, আবার পরকাল!

বাঞ্চারাম বৃদ্ধের তুর্দিশা দর্শনে নিডান্ত তুংখিত হইরা ভাবিলেন, "ভাবোড় ভগবান আমার উপর কুপা করিয়াছিলেন, নৈলে আমারত এই দুশা ঘটিত।" অনন্তর তিনি বলিলেন, ঠাকুরদাদা, "ভবকর্ণবার দ্বাল শ্রীহরি সচ্চিদানন্দ্র বলিয়া ডাকুন। তিনি বড় পতিতপাবন দ্রাময়। ঐ আক্ষারের ভিতরেই হিনি লুকাইয়া আছেন।" বাঞ্চারাম এই কথা গুলি এমনি ভক্তি বিশ্বাসের দৃঢ়তার সহিত বলিলেন, যে তাহা শ্রবণে পাষাণ হুদ্র গলিয়া বায়। মকে-খবের কিন্তু কিছুই হুইল না। তিনি সহজেই পশুর ন্যার নিশান্দ হুইলেন।

মকেখরের এই শোচনীয় মৃত্যুতে বাস্তারাম অনেক শিক্ষা লাভ করেন। ইহাতে তাঁহার বিখাস ভর্জি ভগবন্নিষ্ঠা বাড়িল, ঈখরের সহিত বাজিগত ঘনিষ্ট সম্বন্ধ অমৃত্যুত হইতে লাগিল। নান্তিক মরিবার সমরেও বে নান্তিক ধাকিতে পারে ইহাও তিনি দেখিলেন।

তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

देवतादगामग्र ।

মিত্রজার এই অপবাত মৃত্যু সংশয়াস্থা ভগবন্তকিবিহীন অবিধাসী-ছিগের পক্ষে একটা বড় ভয়কর শিক্ষা। বাঞ্চাহামের মবতেমের মন্ততার উপর ইহা এক প্রবল্ডর বৈরাগ্যাবাত। তিনি এমনি জাগ্রভ হইরা উঠি-লেন যে শ্ববাহক্দিগের সঙ্গে সংক্ষাতীরে আ্শান্থাট প্রভি গিয়াছিলেন। বছনী অন্ধাৰম্বী, মেবলুন্য আকালে অপন্য নক্ষত্ৰপুঞ্জ কান্মল কৰিভেচেঃ তুই বাবে বিস্তৃত ভাল সৈকত ভূমি, মধ্যে নীলকান্তি মীৰ্মূল
ডটিনী প্ৰবাহ শুমক বায়ু ডাড়নে অনস্ত ক্ষুদ্ৰ বিচিমালা উত্তিত কৰিব।
ক্ষুল কুল নাকে চলিয়া বাইজেছে, ততুপতি ফলজক্তপ্ৰ এক এক বাব মাধা
ডুলিয়া কেবিডেছে আবাব ডুবিডেছে। অতি ভীবন রম্মীর স্থান। ডাবকামালা বচিত শুনীল গগনের ছবি বানি ভাগীন্ধীর স্বজ্ঞ্ নাবে পভিত হুইবা
ডবঙ্গাল্যক সহিত ধেন নুহা করিভেছিল। নক্ষত্রালোকে উট্ছ রক্ষত্র্যর
বাল্কাবালি মৃত্যুত্ দীপ্তি পাইডেছিল। নাকে মানে ক্ষলহংকের কলববে
খাশানের নীরব আকাশ ধ্বনিত হইডেছিল। ক্ষন বা চুই এক বানি
নোকা পাল ভূলিয়া বাইডেছিল এবং ভাহার নাবিক্লিগের সন্ধীত্বৰ কৰে
আসিডেছিল।

बाक्षाबाम चाटि जिल्ला (एशिएनन, फिजस्त्रवाली अक्रकांत्र मध्या पृत् করিয়া একটা চিভানল অলিভেডে, তাহা হইতে পুঞ্জ পঞ্জ অধিফ লিখ উড়িয়া পড়িতেছে, শ্বভোগী সুল কলেবর কৃক্রের: দলে দলে ঘুরিয়া '(बड़ाइरडरक, चारहेब हाविक्रिक छुँड़ा काँबा, नहा माइब, कारे। वालिम, পোড়া কাঠ, সরা কলসী, মড়ার মাধা ও অভিপঞ্জ ইতস্তভঃ বিশিপ্ত; ভাতার মধ্যে এক ভীষণাকৃতি পুরুষ মাধার গামছ। বাধিয়া, ছাত্তে लका ७ बक रामक ७ नहेंचा मरतन मादद संग्रक धारा क्या भावत माहि-श्रंष्ट हुव कति एउट । अपृत्त स्नन करणक लाक विभिन्न शामिएउट , ভাষাকু খাইডেছে, গান গাইডেছে, অটল্ল: ঃবিডেছে, আৰ প্ৰাছে क्षाणावाषित वावणाणे। किञ्रल इहेर्द छाइ। छाविट्डाइ। मार्क मार्क टेक्टर गर्ड्स न "श्रव श्रव रण ! श्रव राण !" विशव हो देवा विश्वा উচিতেছে। त्म लामश्यम छोवन रविन्तिन खबरन बाहाबादमब लान काॅलिल, फ्रिक्ट निरुद्धिल, भरपाट्य रिक्टम हुना पर्नात किंख क्राक्कि ছইল। পরে তিনি ভনিলেন, দূর হইতে প্রনহিয়েলে ভাসিতে ভাগিতে নারীকঠনিনিংখত করুন খরের এইরুণ রোখন দ্বনি আগিতেছে :--ংখ্যাসার ফেলে তুমি কোধার চলে গেলে গোমা! স্থামি কোধার ধার. कि कृतियुषा (लामा) (छामात्र (कट्य बका चामि (क्यून कट्य पट्य पान

লো মা!" অংশ লোতের মৃত্কল নাদ, বাতাদের স্থন্ সংন্ধেনি, তৎসক্ষে বিরোধনাঞ্ক এই শোকের ক্রেমন রব এমনি এক প্রকার মর্মান্তিক কাতরতা ব্যক্ত করিতেছিল বে. তাহা প্রবেশ প্রাণ একেবারে উদাস হইরা বায়। বায়ারাম এখানে বায়া দেখিলেন, এবং বায়া ভানিলেন তায়াতে উল্লার নবীন প্রেমানুরারের সল্লে প্রতে বিরাগ্যানল জ্লিরা উঠিল।

শবদহনকারী ব্যক্তিদিপের আচরণ দর্শনে মুম্বাস্থ্যাব যে কন্ত দ্ব অসাভাবিক, বিকৃত হইতে পারে তাহা বাঞ্লারাম ব্রিতে পারিলেন। তাহারা শাশানে শবের পার্থে বিস্থা মদ্য পান করিতে করিতে র্থা সঙ্গীত গাইতেছিল। পরে আনিলেন তাহারা মদ্যের লোভেই এই কাজ করিয়া থাকে। আর এক ছানে জলের ধারে দেখিলেন, একটী প্রাচীনা মুম্ব্প্রায় জ্ঞীলোককে বালির উপর শোয়াইয়া তাহার আধ ধানা শরীর জলে ভ্রাইয়া কয় আন লোক বিকট পরে "ওঁ গলা নারাবণ ব্রহ্মরামাং" বলিয়া মহা চীৎকার আরস্ত করিয়াছে। বাঞ্লারাম কৌত্রলী হইয়া তাহাদিগকে তত্ত্ব জ্ঞিজাসা করিলেন। এক জন হাসিয়া উত্তর দিল, "জান না, পাট করা যাচ্ছে!" অর্থাৎ অন্তর্জনি করিয়া বৃত্তীকে শীল্ল যমালয় প্রেরণের উদ্যোগ হইতেছে। শাশান ভূম্মু দর্শনে পৃথিবী অসার অনিত্য বলিয়া বেধি হয়, আবার ইহা-দের পেশাচিক ব্যবহার দর্শনে নর আতির প্রতি ছ্লা জ্বো।

ভদনন্তর মিত্র মহাশরের মৃতদেহের সংকারের আরোজন ছইছে লাগিল। বাহকদিগের সঙ্গে এক জন ঠোঁটকাটা অকাল কুল্নগু গোছের লোক ছিল, মুধাগির সময় সে বলিল, "ও ভারা, ঠাকুরদাদার মুধে ভুধু আঞ্জন কেন দিছে, একটা চুহটে আগুল ধরাইরা দাও।" এ দলের ভিত্রেও আমোদ আহলাদ হাস্য কোঁতুক, মদ্য পান ভামাকু সেবনের ক্রেটি হর নাই। কোমল তম্ম ভদ্রসন্তানেরাছ এ সব কাল আল কাল পারিয়া উঠেন না, কালেই গুলিখোর মাভাল প্রভৃতি ষ্ঠা গোছের লোকের স্বরুবার হয়। সে কাল আর নাই. বে কেহ শবদহনকে সংকার্য মনে করিয়া পূব্য সঞ্চয় করিবে। মিত্রজার সন্তানাদি ছিল না, কয়েকটী ভাতুপুর ছিল, ভাহারা বিশ্ব বন্টনের কালে বাস্ত থাকার ঘাটে যাইতে পারে নাই।

मरक्षरतत मृष्टरण्ड मध्कात मञ्चल भरत खारमत मरना अकृत। कवा

উঠে य किছুতেই তাঁহার শরীরটা পুড়িল না। এক গাছি লোমেও আগন ধরিল না। যত কাঠ চালার ডডই রাশি রাশি খোরা বাহির ছয়, কোন मरखरे खात करल ना। (धातात धातात मरवत (लहेहे। कुलिता हाक इहेल, मूक थान विकृष्टे विक्षीयन मुर्जि धारन कतिन, ठक्का छाता कुरेके। लाग्ने लाग्ने करिया हारिया बरिल । (भव (बाँबाएँ) चाखरन अर्थ भरीर अर्थन काल ভূত হইরা উঠিল বে ভরে সে দিকে আবে ভাকাইতে পারা বার না। অবিখাসীর কষ্টের মৃত্যু, মূধ খানি আবেই কেমন একটা বেয়াড়। রক্ষ इरेबाहिल, जाद शद चालानद (शाबात काली युनिए अकराद दाकारमद মত হুইবা দাঁডোর। সে দিন বারটা ছিল শনি, তিথিটেও ভিল অমা-दक्षा जबस्पर्ग। जाहकादिवन महत्र वीकाद एउँ। इटेबा के मूर्छ प्रदन ছেথিলেন, তথন ছির করিলেন ইহাকে নিশ্চয় ভূতে পাইয়াছে। কেহ বলিলেন, "ঐ দেধ, দাঁত বাহির করিয়া হাসিতেতে।" কেহ দেখিলেন, মিত্তকা বাঁ পাটা উপরের দিকে আত্তে আত্তে তুলিভেছে। কেই বলিল, শ্র্র দেব দেব ! উ: বুকে ভাল ঠুকিতেছে ! চল ভাই এই বেলা পালাই। দলের মধ্যে এক অন বিজ্ঞাবাক্তি ভিলেন, তিনি সিদ্ধাস্থ করিলেন, "মকেইর বাব নাম্বিক ছিল, দেবতা বামন মানিত না, তাই চিলু জলিতেছে না। नाना जरन नाना मूछ बाद्ध कविरुद्ध, त्वर राजारमान कविरुद्ध, কেহ বলিতেছে "ব্যাটাকে ভতেই পাউক, আৰ ব্ৰহ্মণডিচেই ধ্ৰুক, আম্বাত পেট্ট ভৱে আৰু মূদ বাই। "এছে ভাই, মিডির কার শ্রীর বদি नाहे (পाएए, उटर अन बारत्भाए। बारन धानिक नित् बरमत कार्टेनि कता ষাক।" এইরূপ কথাবার্ত্ত। চলিতেছে, হঠাৎ শবদেকের পারের দিকের কাঠ-থাল ধ্যার পাড়িল, আর অমনি ভংক্ষণাং মাধাটা উপরের দিকে ঠেলির। উঠিব। बारे भव भावा हाड़ा विवाद, अमिन मकत्त चरत हाडे बाडे हाडे क्तिएक क्तिएक एक छूछे । "इ.एक धरानाद शाना । शाना । ताम ्त्राम त्राम !" (कडे व् काशाय, (कडेवा शायकार्कारय क्रूतिरखरक ; क्लीज़िस्क स्मिष्टिक काशास्त्रा काहांना चूलिया श्रम, काशास्त्रा लाहत्र हिं।हांने ·मातिल, काशास्त्रा हिकि काँहोत स्वार्थ अपनिता मास्त्र ! वानास ! बनाबद्ध । जदद त्रना छक्दित, त्रा (त्रद्भ, (त्रा (त्री न्यस (त्रोड ! दर्ग क्रिट পৌড়িতে এক জন আপথে পিরা বাড় মুড ভাষিয়া গর্তে পড়িরা মরিল, জনা এক জন আবার ভাহার গারের উপর আসিয়া পড়িল। গতেঁপছিত ব্যক্তি ভাবিল, এই রে এই বার বুঝি আমাকে ভূতে ধরিরাছে। ছাড়! ছাড়! ছাড়! আর ছাড়. হুইটাতে জড়ামড়ি ছড়াছড়ি মারামারি ঘলটা ঘলটি, ভরে কেছ কাহাকে ছাড়িতে চাহে না। আবার রাতে গরের মধ্যে উভরেই মনে করিভেছে, আমি ভূতের হাতে পড়িরাছি। শেষ দেখে যে সেটা ভূত নয়, সঙ্গের এক জন ইয়ার, তথন হাসিয়া মরে আর দৌড়ায়। এইরূপে উজ্লাখাসে সকলে পলাইয়া গেল, মুড দেহ সৎকারের যাহ। অবশিষ্ট ছিল, খাশানবাসা মিউনিসিপাল করপোরেসনের সভ্য শুগাল কুকুরের। দয়। করিয়া ভাহার। সমাধ। করিল। সকলে মিলিয়া ভাহার। সেই অর্জ দয় দেহকে উদরে খান দিল।

আসল কথাট। ভূতে পাওয়। টাওয়। কিছু নয়, সব মিথা।, দাহকায়ীয়।
নেশার ঝোঁকে কাঠ কিনিতে গিয়াছিল, কাৡবিক্রেতা সুযোগ ছাড়িবে কেন १
বত রাজ্যের কাঁচা কাঠিচালাইয়া দিয়াছে, কাজেই ধোঁয়। হবে নাত কি হবে १
শেষ গ্রামে প্রচার করিয়। দিল যে মিত্রজাকে ত্রস্পর্শে পাইয়াছে।

বাঞ্বাম এ সকল ভূতের খেলা দেখেন নাই, ভিনি শাশান ঘাটের অদ্রে এক বালির চড়ার উপর বসিয়া জীবনের অসারতা বিষরে চিস্তা করিতেহিলেন। সন্তোবিণীর প্রতি নবোচ্চ্বাতি প্রেমতরক্ষ তথন এই প্রচেও বৈরাগ্যের প্রভূত ঝঞ্জা বায়ুতে ছিল্ল বিচ্ছেল্ল হইয়া গিয়াছিল। পাইই ভিনি কার্ভুত করিলেন, হরি ভিল্ল সকলই মিথাঃ। সমস্তই মারার ধেলা। যে শাশানে কালে, সেই আবার ক্ষণ কাল পরে বাড়ী গিয়া হাসে। জ্বং সংসার শুনা দেখিয়া, নিরাপ্রের হইয়া অতিশর বায়ুল অভরে তিনি পরম প্রুষ স্চিক্লানন্দ হরির চরণে অংশ শমর্পন করিলেন। দৃঢ় ভক্তিসহকারে উাহাকে স্তর্গরে ধরিলেন। মিত্রজার মৃত্যু এবং শাশানের দৃশ্য দেখিয়া উাগার মনে এমনি বৈরাপ্য অন্থিল, যে তিনি বাড়ী আসিয়া মাথা মুড়াইলেন, লাড়ি গৌলত কামানো অভ্যাসই ছিল, এবার চক্ষের জ্র এবং পাডার লোম পর্যান্ত পরিকার করিয়া কেলিলেন।

চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

ভক্তিবিকাশ।

প্ৰথম বয়সে বাস্তানাম প্ৰকৃতিৰ শোভা পেৰিতে ভাল বাসিতেন, কিন্ত ভালার ভিতর কোন পুসুষকে দেখিতে পাইতেন না। ব্যক্তিত্বিছীন এক मर्क्त गाणी निक्ष न मक्ति माज अमू उर कांत्र एन। मानव श्रवाणित मानव সেই নিও পি শক্তির মারাময়ী ক্রিয়া দেবিতেন। পরে বর্বন ভাত ক্রে সংখ্যা-यिनोब (श्रम नो मृद वरम अन । विभाल उ एकेल, उपन रम हे (आरम स मर्था अक জন অবিভার্য্য সত্তপ বাঞ্চিকে ভিনি ছেখিতে পাইলেন। সে ব্যক্তি খিষ্ট মিষ্ট कथा कह, छीहात सूध माश्वि चानल वर्षात्र सना (5है। करत, फीं हां इ करा बाक्ल हहेबा छाटा, कछ बाकाटा छानवाटम । ब मकल कांग्र কৈ লগ্ধ শক্তিপ্ৰসূত লাক্ষ্মিক ? এই প্ৰশ্ন মনে উঠিল। তথন সেই প্ৰেমের মিষ্টভার ভিতরে প্রেম্মর পরম পুরুষের ম্পষ্ট আবিভাব ভিনি পেবিতে লাগিলেন। ভাবিলেন, এ মধুময় জ্বন্ধানক্ষর প্রেম নিও প পঞ্চি ব। জড় পরমাণুর ফল নয়, অদৃষ্ট চক্রের বা প্রভৃত্তের বড়বল্ল নয়, এক জন সুবসিক সুনিপুন সুক্ষর মহাজ্ঞানী পুরুষ ইহার ভিডরে আছেন। ভিডরে লুকাইয়া ভিনি বছবিধ লীলা প্রদর্শন করিতেছেন। মভাবতঃ আপেনা খাপনি এই জ্ঞান ক্ষমিল। তখন আপনাকেও সভ্তম এক জন ব্যাক্ত বলির। विश्वामहत्य श्वित्य भावित्नम । अन्यव्य अञ्चात्म खरण्य परिमात्र अक লীলামর পরম পুরুষের বিধাতৃত্ব ক্রিরা ঘধন ডিনি এইরপে স্বর্ণ করিলেন, তন্ত্ৰ ভাৰার দৃষ্টিতে সমস্ত স্থাত্য জন্ম চরাচর বিশ্ব পশু ও মানব এক স্থাবি-सर पुष्पत मुर्खि পরিপ্রত করিল। धेशानि तृत्रकृत्य नाना विश्व कृत कृष्टिका ছহিরাচে, তাহা ছেবিরা বাস্থারাম মনে করিলেন, সেই অনক্ত ওপাকর ছিব্য পুকুব कृत कृते।हेत्र। छानि माबाहेत्र। कृत्तत्र शामित्व शामि बद्द शत्व पृत्रव विश्वादिया आगान पदर शांत्रिएएएन। एएएए अपरे छात दम डेक्ट्रिफ

ছইয়াছে যে তিনি বৃক্ষের শাখা ফুল ফল পক্ষী প্রকাপতি মক্ষিকা ভ্রমর এবং भगोत्रत्व प्राप्त चालान करिएक लाजिएलन। विलालन, "कि एर एउम्बर क्यन चाह श्रेषायातक एक चित्रा हामिट छ किन १ (ह नवीन छक्न मटच ! আমার আহলাদে আহলাদিত হটয়া কি তুমি নাচিতেচ ? এস এস, আজ ভোমাদের সকলকে আমি আলিজন করি। ভোমরা আমার শৈশবের বদ্ধু, নির্জ্জনের স্বা। ভগ্নী মাধবী, ছংখী ভাতার স্থাবে তোমরা কি আল বড় चूबी दहेबाह ?" वमराख मधु माळ छ दिल्लारन भूनकिए हिन दहेबा छिनि ভাবিতেন, সেই পুরুষ আমার অঙ্গে চামর বাজন করিতেছেন। শীতল জলে **च्यरशादन क**तिश मेशीत वसन चित्र (बांध दरेख, खसन विधः) कतिरखन (सहे পরম পুরুষ জননী বেশে আমাকে কোলে লইয়া আমার তাপিত অঙ্গ জুড়াইলেন। জলের শীতলতা আর কিছুই নয়, সেই মায়ের স্নেহবিগলিত अमृष्ठ व्रम । आकारमध ठाँदमव महामा बन्दन मारबब (सहस्था, नकी-দিগের সঙ্গীত রবে মায়ের শ্রীতি সংখাধন, সৌলামিনী শোভিত মেখমালার সৌন্দর্য্যে মারের মুখের হাসাতাতি; আবার বজ্রের গভার নির্দোষে, নদীর ভীষণ কল কল্লোলে, প্রবল প্রভঞ্জনের প্রচণ্ড ডেকে সেই কননীর ছর্জের পরাক্রম প্রকাশিত; এইরপে ডিনি সমস্ত ভৌতিক পদার্থের ক্রিয়া অনুভব কবিতে লাগিলেন।

মন্ব্যসমাজ গৃহাপ্রম পরিবার শাস্ক্রে, বিপনীপ্রেণী বাবিজ্ঞানার সর্পতি সেই এক ব্রন্ধাণ্ডব্যাপিনী মহালক্ষীর প্রসন্ধ মৃত্রি তাঁহার দিবাজ্ঞাননেত্রে প্রতিভাত হইতে লাগিল। মাতৃহীন শিশু পথে পথে কাঁদির। বেড়াইরা এখন খেন মারের কোল পাইয়া কুডার্থ হইল। সমল্ত আকাশ, সমল্ত বায়্মণ্ডল খেন সেই জননীর অনত্ত বিস্তুত প্রেম কোল। বায়ারাম এখন আর তিলার্জ কালের জন্য মাতৃকোল ছাড়া রহিলেন না। ভোজন করিতে বদেন, চুই চক্ষের জলে বুক ভাসিয়া বায়। তখন স্পাইই কেখিতে পান, মা অরপুর্ণা সহস্তে মুখে অন তুলিয়া লিতেছেন। স্পাক কল ভোজন করেন, কেখন তাহার ভিতরে মাতৃক্রেই পরিপূর্ণ। দাস দাসীদিসের সেবার ভিতরে কেবল সেই বছরণিণী চৈতনামনী মারের আবিভাব। ব্রন্ধনতার, ভাতার গৃহে, শর্ম মন্দিরে খবা তথা মা লক্ষী বিরাজিত।

বিপ্রায়শব্যায় শরন করিছা ভাবেন, আমি মাছের শীতল কোলে শরন করিলাম। বন্ধু বান্ধব অপর লোকের ভাগবাসা মেহ মুম্ভার ভিডরে च्यांडे द्रिविष्ठित (महे प्रव पुक्रव शावमवा एरेडा बानव्द्वार मुकारेडा রহিরাছেন। শরীরের রক্ত সঞ্চালন, নিধাস প্রাধাস খাছা সৌন্দর্যা बनर देखिननात्व किनान मूल (महे (मनकादक नही बनर मंकि-রূপে কেথিতে লাগিলেন। রাজার রাজতে, প্রভুর প্রভুত্বে, মৃহতের बराइ बालाक परेनात (महे अक कनाकहे व्यक्तित भारतिन। बात সভোষিণীর হাসিমাধা মূধ, মধুমাধা কথা, ওঁছোর কৃত সেবা বড় শাদর মমতার ভিতর সাক্ষাৎ মৃত্তিমতী প্রকৃতি মহাদেণীকে দেখির। একবারে প্রেম ডক্তি কৃতজ্ঞভারসে ডিনি পলিয়া পেলেন। পুর্বেষ সর্বাহানে সমস্ত ঘটনার দক্ষ প্রার্থের অভাস্তরে বেমন এক অনস্ত মহাশক্তি দর্শন कतिएक, अकार एक नि कारण क विषय अक कन अक्रमकत नश्मकानी भुक्रवरक वाकिन्त्र छाट्य (एब्ट्रिक मानिस्मिन) व्ययस्य विस्मेत्र यायणीत्र चछनानुक (महे अक मनाविन्त मत्य भिनारेता नरेता विज्ञान व अकि-লিপালা চরিভার্থ করিলেন। এক জন ব্যক্তি স্প্রিক্সণ তাঁহার সঙ্গে সঞ্জেলালর সহচর হটরা আচেন এ জ্ঞানটী বড় উজ্জ্ব হইল। এ বিশাস বড় শালিএছ বিশ্বাস। বেধানে পূর্কো আপাডনুষ্টকে বিবাদ অসামঞ্জন্য বোধ ছইভ, এখন সেখানে গৃঢ় মিলন দেখিতে পাইলেন: এক আদিপুক্ষ হইতে সক-लाब केरलाक, काशाय ममुनारमव व्यवस्थित, अनर काशायक ममन्त्र शक्षित পুনার্থানন, এই মহাসভা দিবাজ্ঞানে প্রভাক করিছা তিনি অফীস্থাব অব-चन कतिरानन । अक रिकु श्वारम महाशिकु छेथानिया केनि । उक्षान रेनवात्रा ভক্তি তিনের সন্মিলনে মন্তিকের বিকার, জ্বতের অভ্ত। সমস্ত চলিয়াপেল। অভঃশর বাঞ্চারাম সেই অপুস ভাবে বিভোর হইছা কিছু দিন সভোষিধীর मृद्धः (कर्म ७ सुक्कार्त्मः आरम्छन्। कविर्णनः।

পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

গরলমন্থন।

প্রায় ছুই ভিন বংসর ভীর্থ পর্য্যানের পর সন্ত্রীক নিশানাথ যাড়ী ফিরিয়া আসিলেন। ক্রেমাণত তীর্থে তীর্থে ভ্রমণ, নানা ছানে মানা দেবমৃত্তি দর্শন, পাণ্ডা ঠাকুরদিগের উপদেশ বাক্য প্রবণ এবং সচ্চা টালিবের
দৃষ্টান্তে উত্তর্গ্র বেশ সান্তিক হিলুর আকার ধারণ করিয়াছেন। নিশানাথের
পত্নী নম্নতারা দেবী বাটাতে প্রবেশ করিয়াই গৃহদ্বার প্রাক্তন অপরিভার
দেখিরা একটু চটিলেন, ভদনন্তর বাপের বাড়ীর বে ঘটাটা হাত পা ধুইবার
ক্রান্য সচরাচর বাবহার করিতেন তাহার দর্শনাভাবে নিভান্ত ব্যাকৃল এবং
ক্রান্থ হইলেন। তীর্থে নিয়া কত কত ছিভুক্ত চত্তু র ষভ্তুক ঠাকুর
দেখিরা আসিয়াহেন, সেক্রনা কিছুই কন্ত পাইতে হয় নাই, তাহান্থের দর্শনবিরহৈ কোথাও কাঁলিভেও হয় নাই, কিন্তু এই ঘটা ঠাকুরের দর্শন না পাইয়া
চক্তে কল আসিল; সে ক্রন্য কত বকিলেন, কত কাঁলিলেন, কেহই সে গৃহদেবভার সন্ধান বলিয়া দিতে পারিল না। পথে আসিবার কালে লেগাভীতে নামিতে উঠিতে বোধ হয় ঘটিটা কোথার পড়িয়া নিরাছিল নিশাদাধে ভয়ে মড় হইলেন, পাছে ঠাকুরাণীর রালের ঝড় ভূফানে পড়িয়া
ভাহার জীবনভরী বানচাল হয় এই ভাবনার ভারে মণ্ড ভূফানে পড়িয়া

ঠাকুরাণী বরের ভিতরে বিশ্বা দেবেন, এ বরের সামগ্রী ও বরে, ও বরের সামগ্রী এ বরে বিশ্বালভাবে অবস্থিত। বহুদিন অবসর পাইরা কুজ মুবিক দম্পাতী পুত্র পরিবারের সহিত শরনাগারে গাঁদর ভিতর বাসা করি-রাছে, তাহারা বালিস ও তোষকের তুলা বাহির করিয়া দেখিবাছে, ঘরমর তাহা ছড়াইরাছে। জানালা দরকার উই ধরিরাছে। ঘরের কোনে কোনে আরক্তনা ছুঁচার বিষ্ঠা, বাক্স তোরক আলমারী মাকড্শার জালে ও বুলার চারা। রারাবরে বিয়া দেখিবালন, পুরাতন প্রিয় পাকা চুলাটী ভালিয়া

পিরাছে, ভাণার পৃচ্ছ চাষ্চিকার গছে এবেশ করা ছংলাব্য, ইাছি কলনী কোনটা ভয়, কোনটা অল্পান, খিল নোড়া ছুলা বুচনী যুগ্ৰালী যাথা, যেবের ভিডরে বড় ইল্বেরা যাটা তুলিয়া রাশীকৃত করিয়াছে।

धरे मकन द्रविश महन्याश मदन मदन रह ठिएनम, ना व्याश स्थार वरेन ना, शूनशारव निरम हे बाहा बहिरनन । अक शारक वाहि। अक शारक करनत कन्त्री, चात मूर्व बकूनि, त्क्वांबलत चन्नरवत बरन गृहवार्क्कना चाउच कतिरामा। कृष्टिकारे चक्रम रह कतिहा ममार्थ्यनी एएच चाउक-लाहरन र्यन जिनि व्यविकास विकास कारण करिएनन, धवर सरमञ् छेनत कन हानिया पर दार धाक्रमज़ीय श्राविष करिया क्लिनिन, ध्वन त्वाव इटेटल लाजिल त्यन भटाकाली वयुक्तननी व्यवस्थानिक वना. उन्तरक छेबा इहेन्। शृथिवीटक द्रमाञ्चल क्टिंड विमन्नाटकन । हेर्हाह (६८६ छम् छत्तव छेलानाम किछ अधिक लित्रमादन छिल। माखासिनी चार्या गृहकारमा मात्रीत चारतक त्राहाबा कतिल, हेवानीर धाम्रहे चनामनह ब्याक्ष विश्वा वाजा परतत एम। अदेक्षण प्रशिक्ष । कवी श्रेष्ट्राचे निक्ष्य (तमा बक्छे। कृदेछ। भवास यज्या चाहित्मन, खख्या बिह्मन। প্রিপ্রম্ক্ষন্য বত শ্রীর ক্রিই ও প্রাশ্ত হইতে পাগিপ, মনও ওত বির্শ্ खबर छेरखींबाछ इहेबा छेठिन ; स्त्रे श्रिमात्न मूच हहेरा अमर्तन प्रार्थक कारिनी वाहित हरेल। इरे जिन वर्णत रोवे भर्गाहित कछ बाब कहित्नम, कछ कडे प्रशित्मम, साम थान अध्यवस्थामन, स्मय देश अबच्य भुना छोर्ब्हात्न फिविया स्थल, द्य मःमाओं त्यहे मश्मानी हहेवा नुबद्धात्र जिनि चत्रकश्चात्र मन विटलन।

বাহা হউক, প্রতিবাসিনী বিধবা সধবা বাহার। কবন বাড়ীর বাহির হর নাই ডাহারা নরনভারতে ধন্য ধন্য করিতে লাগিল। তিনি কোন ডাইই প্রার বাকী রাধেন নাই, তৎসহকে লোকের প্রশানাবাদ শুনিয়। বড়ই পুল্কিড হইলেন। প্রসাদ মালা স্থলী হীরাবলী নামাবলী কুঁছমালী ডিল্কুখাটী রজের রজ কত কি সামগ্রী বিলাইলেন। কোন নারী ভিজ্ঞাসা করিল, "ইয়ালা বলি, কুলাবন মধুরা কি পিরাহিলেণ্" প্রম্ন শুনিয়। ভবন মুম্বভারা কেবী অভি বিনীত গভার ভাবে বলিতে লাগিলেন, "ইয়া মাছা, ভাষার ভাগে থাক্ ঐক্ মধনমোহনের কুণার সব দেখে ভবে এসেছি।"
আপর নারী জিল্ঞানা করিল, "বলি ই্যাপা, রাধাকুণ্ডে নেরেছিলে কি ?
ভার অল নাকি ভনেছি মিছরির পানার মন্ত মিষ্ট ?" নয়নভার। বলিলেন, "ওপো, পাপ মুখে কি সে সব কথা বলিতে আছে ? বার ভাগো
থাক সব হরেছে।" পরে ভিনি যেখানে বাহা করিরাছেন, বেধিরাছেন,
ভনিরাছেন, সমস্ত অভিরঞ্জিত ভাষার বর্ণনি করিলেন। স্ক্রেন বান নাই,
যাহা দেখেন নাই, বাহা করে নাই, ভাহার বিব্রেও বলিলেন। সব কথা
খুলিরানা বলিলে হরতো পেট ফাঁপিরা শীঘ্রই মারা পড়িভেন। তরুপাপ
মুখে সে সব বলিতে নাই! ভীর্থভ্রমণের ফলের মধ্যে এই টুকু শেব দেখা
পেল, বৈকালে মেরেমহলে প্রাটা খুব জনিত।

বছ্যা পত্নীর স্বামীর উপর বড় একাধিপত্য। নিশানাধ বাবু বার্জিত वृद्धि कानी हिम्मू ध कथात शतिहास शृद्धि नकत्व शाहेशाहन । सीवतन **जिनि এक** इं चजाहाती हित्नन; स्वयाद्य त्मवादन साहेत्जन, या जा बाहे-তেন, কাহাকেও মানিতেন না। নয়নভারা দেবীর চরিত্র তথন সমাক अक हिंख इब नाहे, कारकरे विनि शामीरक वड़ वान मानारेख शाबिरावन না। কিন্তু মনে মনে সে রাগট। ছিল, এক্পে ভাষার পরিশোধ লই-বার সময় উপস্থিত। নয়নভারা বাড়ী হইতে বাহির হইবার কালে নিশা-নাধ্বে প্রথমে বলিয়াছিল, "তুমি কেবল আমাকে সঙ্গে করিয়া সব দেখাইয়া আনিও, আর ভোমাকে কিছু করিতে হইবে না। তুমিত আর এ সব কিছু খান টান না, আমিই স্ব করিব।" এই বলিয়াত সে তাঁকে পথে বাছির कदिल, (अव श्रवाय (श्रीक्रिया विनया विमिन, "श्रामी खी अक मत्त्र ना इटेरन (कान कर्च शिक्ष एव ना।" अहे विलया मर्खाध्य (म निमानास्थव माथा मुखा-हेन. काँशटक निया श्रामीत था भूका कतारेन, विक्थाद शिश दम्भयारेन, नाना चात्नत्र भाग भुकृत्त प्रवित्त, हाई ख्या के कि बाखवाईल । व्यवस्थित গলায় মালা প্রাইয়া, নাকে ভিলক লাগাইয়া, মাধায় টিকি ঝুলাইয়া, গায়ে নামাৰলী অভাইয়া ছিব্য করিয়া পাঁজির সংক্রান্তির ব্রাহ্মণের মন্ত দালাইল। हा निमानाथ ! अकि कामात्र (बातात ? मूर्जि एशिया रव लाव केंक्सि केंद्रिएक । आत त्व कामारक किनिएक शाहा वाह ना ? हात हात हात हा ।

শেষে ঠাকুরাই উাহাকে বেখানে যাছা করিতে বলিয়াজেন নিশানার নিরাপরিতে ভাষা করিয়ারেন । বুর বর্সে আভিচ্যুত হওয়ার তর প্রহর্পন করিয়া, পরলোকে সক্ষতির লোভ দেখাইয়। সামীকে ভিনি হল্পত করেন । "বরে মরিয়া ফুলে ঢোল হইয়। পাড়য়। থাকিবে, প্রভিবাসীরা কেছ ছেঁবে না, শরীর পাচে গছ হবে, পোক। পাড়িবে, চিল শকুনিতে ঠোকরাবে," এ বলিলে কার না মনে ভয় হয় ৽ তার্থবাত্তীর হল ও পাও। ঠাকুবেরা এ কার্য্যে বিশেষ মহারভা। করেন । হলচক্রে ভগবান্ ভূত। কুসংভায়াছ অধিক্রিতা বয়নিকরী সকলা ত্রীর পায়ায় পড়য়। নিশানাব বিহা। বৃত্তি হায়াইলেন, ভায়ার ন্যায় ত্রীর অনুপ্রন করিলেন। আর কিছু ছিল এইয়েশে সঙ্গে বেড়াইলে তাঁহার চেহারা পর্যান্ত নেয়ে মায়ুর হইয়। বাইত।

এই खरचाप्रछ जिनि राष्ट्री चात्रितन । अवन वर्ष चर्मचा अवस्थित क्विोरे कांत्र व्यक्ति। शाह्य प्रदिश्य मुक्कारन अवा ना शान, चर प्रविद्या পড়িয়া থাকেন, এই ভাবনাডেই প্রাণ আহুল হইও। ভয়ে ভয়ে সন্থা व्याद्विक शृक्षा स्थाय अञ अकालभी क्षत्राहेशीय छेलवात्र कविरायन। भारक कान (एवडाव ट्याब एव, बहे बना वही माकान नकानम (पंट्रे मधनह औ श्वनारकतो भीजना मनमा भीत भागपद द्वारत देव आमा रावका दिन मकन्द्रके शृक्षः विष्ठतः निष्ठाश्च (मृद्रकृति अक्षित्रामी श्वी गुक्रस्था बाहा विवा क्रमाश्वात विनश वह शृद्धि काष्ट्रिया विवादक खारा । जिन मानिए बाइक कदिलान । शूर्व्य रथन रथन क्लिकाओं दकारेट वारे-एकन, छस्त (नागरन कर्याना शांडेक्री, क्याना (शांडिलाड फडकांडी हेजाहि (कांकन करिवाहित्तन। (म ममश्र बदन करेवा आवश्र कव नाहिन, कि कानि (म मकल (कर (हेर शारेश) यकि कारिकाल करत अरे आरमान मुख्याद इरेटनन । अमृद तृतिहा चन्दिरणात वन दन्दा दिन । ख्यम खुष ences अधिए विदाम अधिन, यहारविक्य व कान नामं वृति करी। পুরাণে বর্ণিত আছে সম্ভইস্ত্য বলিরামানিতে লাগিলেন: অনুষ্ঠের निवासक अद्भावत कृष्टित अना दुस्य प्रकारन आहरे कतिएकन। * . এবিছিলের এণীত শাত্র সমন্তই অল্রান্ত, তাঁহারা বে বিধি ছিরাছেন छात्रा प्रवर्णनिरवानी एटेल्ल छात्रा अध्यापन कता बारेटल शास्त्र मा. बहे

সংস্কার জারিদ। সংস্কৃত ভাষার যাতা কিছু লিপিবছ আছে, সমস্তই তাঁর পক্তে এখন শাস্ত।

নিশানাথের এই স্কল মৃতামত এবং আচার ব্যবহারের সঞ্জিত ভাগিনের वाक्षात्रास्यत किछू मण्डिम मंग्राहेम। जिमि विश्वक क्यारिक महिण विश्वक किक (श्रायत मामक्षमा माधन कतिताहन; **चत** ভाবুক[®] नारे, ७६ कानमृत्र नीवम कुष्टर्संत धर्म । जिन मारनन ना, काटकर कि कुमः हात কল্পনা উপধর্শের সহিত কোন সহাযুক্তি ছেথাইতে পারিকেলানা। সামা ভাগিনার সম্বন্ধটা পূর্বের মত আর তত মিষ্ট রহিল না। ভদ্ধানীক নিশা-ৰাবের অনুপশ্চিতে বিষয় কার্য্যেরও কিছু বিশুখলা বটিয়াচি 🐃 প্রজান দের নিকট আদার পত্র রীতি মত হর নাই, যাহা ছইয়াছিল ভাহারও পরি-কার হিসাব পাওয়া যায় না, যাহা কিছু পাওয়া যায় ভাহা ঠিকে ভুল। বাস্থারাম একে ভূলো লোক, এখন আবো কেমন খেন হইরা পিরাছেন। चार्त्र भए। अनात कछ चाँहे हिल, এখন भूछक हुँहै एउ छाट्न ना। লাইবেরির ঘরে আলমারিতে ধে সকল ভাল ভাল দামী বই ছিল ভাহার কোনটার মণাট ছেঁড়া, কোনটার কতকঞ্চল পাতা নাই, কোন কোন বই अक्वाद्वरे षाञ्चक्षान करेबाटक। निभानाथ एक विष्टनन, बाक्षाबाम (यन निक्षं भगरम्ब नाम भिवित हाराश्व । कान कवा किछामा कविट्या । हात ম্পৃষ্টি উত্তর পাঞ্চরা বার না। কর্মচারীরা অবসর পাইস্বা কয়[া] বৎসর ক্রমাগত ঘুমাইয়াছে, আর দাবার বড়ে টিপিয়াছে। বাঞ্চরামের ইপানী-ছন এ সকল কাজে বড় একটা মনোবোগও ছিল না, সুতরাং সমস্তই গোল-मालः। हेर्दारणत छेखन्न करे शृहकार्या स्वयत्नारतानी धवर शत्रम्भारतत काणि षा बक्क रहिंदेश कर्छ। तिश्वी विद्रक इट्रेलन। न्लेष्ठ किছू विलिएन ना, किछ ৰুব ভার করিয়া থাকিতেন। ইহাতে ব্ঞারাম ও সভোষ্ণীর প্রণয় ব্রত माध्यमत विक वाशिष कामान। किलाद किलाद मोत्रव मालाविशेष धान क्षणन करत, बाक्षाबाम निर्द्धात विषय विषय वर्षात छारवन ।

নিশানাথ বাবু উদার জন্ম, স্থানিকিত ব্যক্তি, প্রেম্মাহাক্সা অনেক অব-গভ ছিলেন। বাজ্বায়া ও সভোবিণীর মধ্যে বে নিগ্টু প্রেম্ম সঞ্চারিত ছই-রাছে ছাহা মুরাতে পারিবেন। একান্য উচ্চার মনে বছ হয়। হইল। বিশু বিধ্বাদিশের অতি জাঁহার সভ্যবন্তা পূর্বে হইডেই ছিল। মর্নে মনে ভাবি-লেন, "বে বাহাকে পাইলে হুখী হইবে মনে করে, ভাহাকে ভাহার পাওরাই উচিড। কি করিব, আমার বে কোন ক্ষরতা নাই। ত্রী ব্যেরপ প্রগল্ভা প্রভাব শুনিলে এখনি সম্বার্জনী লইরা আসিবেদ। আমার বিদি সাহদ খাকিড, ভাহা হইলে বিধ্বা বিবাহ আইনজমুসারে ইহাদের চুই অবকে পরিণর প্রজে আমি প্রথিত করিডাম। আপনা হইডে বে প্রেম্ন উৎপত্ন হুল ভাহাতে বাধা দেওরার মত মহাপাপ অগতে আর কিছু নাই। বাউক, আর ও সব ভাবিব না। শেষ আবার কি সমাজচ্যুত হইরা ব্যের

পিলবাবত পক্ষীর ন্যায় সভোষ্ণী ও বাঞ্চারাদের মূদ **ভ**ট ফট করিতে चक्रत ध्यमासूतारात डेक्ट्रान डेक्ट्रिडाइ, वाहिरत श्रविवाड পাইয়াভাহা ভিডরে বিয়া মহা দৌরাভা আরম্ভ করিল। কোন কালে वन नारत्र ना, चाराव निखात युव नारे, (नाकम्राक विनिष्ठ किया निर्द्धान थाकिए, किछु उरे छेरमार अस्य ना। पारा हाइ जारा পার না, বাহা পার ভাষা চার না। আশা ছাড়িতে কিছুমাত্র ইচ্ছা माहे. जाहा हित्जार्यतक छेलाह माहे। श्राप्तक नव वस स्वित्राक मन निर्वालकार्श किरिया आंत्रिएक চाट्ट मा। मरक्षियित अर्थन शर्ट्सव মত তেমন উদ্বেগ অণাতি নিরাশ তুর্ভাবনা ছিল না, বাঁচার পরে আজ্বমর্প্রের জন্য ডিনি ব্যাকৃল চিলেন তাঁছালে সর্কাপ্ত অর্পন ক্ষরিতা নিশ্চিত ভ্রত্তিন। তাঁহার দায়িত এখন বাল্লামের ক্ষতে চালিয়া বলিল। স্থাবাং নবালুবাগসভাত অপরিভৃপ্ত পোমভবজের আবাত অভিদাতে তাহার জ্বর ভর চূর্ব হইল। কিন্ত উভরেই ইহাতে বিশেষ শিক্ষা পাইতে লাগিলেন। ছঃখের শিকা পরিণামে वक कलानिश्रम, विव क्ट्रेटिंड अयुड छेडिट्र कारांवरे अना ब निका। বিষাভার চক্তে প্রিত হুইয়া উভয়েই আধ্যাত্মিক নিভাম এটাতির नृत्व शहेबात सन्त शांविक हरेतन। क्षण्य बाहित हरेरफ किछत्त. " কণ চটতে ওবে, ইব্রিয়গ্রাম চইতে অতীব্রির দাভির রাজ্যে অমৃতের चारवय क्तिएक इटेरव । विश्वातात पूर्वात मानात वाक्षा करेता कारा-

ধিগকে বেই থিকে অনিচ্ছার সহিত কিরিতে হইল। বিধাতা বিকারী বোলীর জন্য খেন বিবপ্রবোগের ব্যবস্থা করিলেন। ইহাতে অবখ্য এক থিকে আছিরিক পিপানা আশা কামনা বাসনা উত্তেজনা অনুরাগ, অপরদিকে বাহু প্রতিবন্ধক শাসন ও প্রতিকৃগ অবস্থা পরস্পার দৃই থকের মধ্যে মহাসংগ্রাম বাঁধিল। অন্তর্জগতে কাটাকাটি মারামারি রক্তপাভ আরম্ভ হইল। এই শোণিতে নব্জাবনের অস্কুর বাহির হুইবে।

यर्छ পরিচ্ছেদ।

সামাজিক উৎপীডন।

নিশানাথ তীর্থ হই তে আসিয়া নিষ্ঠাবান্ হিল্ব নায় কাল্যাপন করেন ও কথা গ্রামের মধ্যে শীন্তই রাষ্ট্র হইল। হরিসভার সভাগণের পক্ষে এটা বড়ই মঞ্চলের কথা। সভার প্রধান উল্যোগী সেই কুড়ারাম ও লন্যামি ফ্রেরার ব্রিয়া অবিলম্বে নিশানাথের সহিত দেবা করিতে আসিলেন। এবার আর আদ্বেরর সীমা নাই, নিশানাথ আত্তে বাস্তে উঠিয়া পাড়াইলেন, এবং সন্ত্রমেরর সহিত পাল্য অর্থ আচমনীয় দিয়া হুই অনকে বসাইলেন। তাঁহুরে সান্তিক বেশ ভ্রা ভক্তা কর্দন, বিনম্র বাহা প্রবণে গাণ্ডারের আহ্রাদে প্রকিত হইয়া শত মুবে ওকীয় ওগ্রামের ব্যাখ্যা করিতে লাগিলেন। বাস্ত্রারাম কৃষ্ণভক্ত, প্রবাধে হরিসভার নব্য হিল্ সভা মহাশ্রগণ থমন শিস্ত শান্ত বিল ব্যক্তির উপর আন্বিপত্য স্থাপন করিবনে নাত কি করিবেন ? নিশানাথের এইটাই বড় তয়, পাছে তাঁহার পূর্ম জাবনের অভন্যা ভক্তবের কথা ব্রিয়া কেহ পাড়াপাড়ি করে। কিছ ভিনি বাহাবিগকে ভর করিতেছেন ডাহাবের মধ্যে আবেকে প্রাইরা অধ্যান নক্ষমীন কোচমানের আভ্যাবোলে মূর্গ্র আগ্রামিত্ব থাইয়া বিলেন। কিছ ভাহা বলে কার সাব্য ? বিশেবতঃ নিশানাথকে এখন

নামাজিক তর বিভীবিকার হত্যীর্য্য তীক কাপুক্র করিয়া কেলিরাছে, তিনি আপনার অপরার তাবিরাই শশব্যস্ত, অনোর কোই গোধবার বা বলিবার সাহস নাই। তথ্যতীত তাগিনের বাঞ্চানের খাধীন আচার ব্যবহারের জন্য ঠাহার একটা ভাবনা আছে।

কুড়ারাম বলিলেন, "বুড়, জাপনার উপর সমাজের ভন্তবোক সকল বড় চটিরাছে। ডাহারা জাগামী কল্য বৈকালে সভা করিব। জাপনাকে জনেক কথা কিলামা করিব। বিশেষতা বাধারাম সম্বন্ধ আপনি কি জানেন ছাহা আপনাকে বলিডে হইবে। শুনিরাছি সেনা কি সক্ষটাচরণের বাড়ীতে জন্ম গ্রহণ করিবাছে।" কথা শুনিরা নিশানাথের এক শুকাইরা সেনা তিনি নিডান্ত ভীত এবং সন্ধুটিত হইরা বলিতে লাগিলেন, "বাপু, আগাম এখন ডোমান্তের শরণাগত, ভোমরা আমাজে গলা দিও। ভোমরা যা বলিবে ভাই আমি করিব। এক্ষণে একটু জন্প্রহ করিছে হইবে। যাদ দয়। করে আমার বাড়ী পদর্লি দিলে, একটু জন্প্রহ করিছে কর।

কুড়ারাম ঘনশ্যাম মহা আছেলাছিত চিতে এট হাসি হাসিলেন, এবং জলখোনের প্রজাব শুনিয়া খেরুল সৌজন্য করিবার প্রথা থাছে ভারা করিবান। নিশানাথের বড় ভঃ ছিল কেহ তাঁহার বাড়াতে জলগ্রহণ করিবেন। সেই জান্য সন্ত্রাক বিশেষ যথের সাহত চুই জানকে জলখোগ করাইলেন।

নিশানাথকে নবাস্থ্যাবী কৃষ্ণতক দোখয়। গ্ৰামান নবীন ভাবে কৃষ্ণ-চারিজের কিছু প্রসঞ্জ উত্থাপন করিলেন। তেনি ালেনেন, "প্রকৃষ্ণই পূর্ধ-ব্রহ্ম ভরবান্, তিনিই জীবনের সর্কাশ্বস্থলৰ আদর্শ, তাঁহার পথ অনুসর্ব ব্যাতীত এই পাওত হিলুজাতের আর উলাত গাভের কন্য উলায় নাহ।" কৃষ্ণক্ষা প্রবশ্ব নিশানাপের তুই চক্ষে অলধারা বাহতে লাগিন। পদ্পদ্কতি সাক্ষেন্য ক্ষানাপের তুই চক্ষে অলধারা বাহতে লাগিন। পদ্পদ্কতি সাক্ষেন্য ক্ষানালি বালতে লাগিনেন, "আহা, বাবাক্ষের সুগল মুক্তি কি মনোহর! ভাই দুর্শন করেরাই ও আনি আবহিংস মংস্য মাংস পত্তি-ভাগেপ্রক ভাকমার্গ অবলম্বন কার্যাহ। শহা! কবে বুজাবনে বাব, নার্ধকার মেক্ষে বাব, নির্ধিব সুগল মুক্তি।"

क्छि ब कथा छनित मरण श्रमानात् नता मना यननारमत तक महासू-

ভূতি হইল না; তাঁহান্ন মডে নিশানাধ এক জন আক্বিখাসী ভাত ক্সংস্থারী ভাতুক মনুষ্য। নিরামিষজেক্সী শ্রেমভাজিলিপাস্থ সে কেলে বক্ষের রেগিড়া বৈক্ষর হারা ভারত উক্কার হইবে না এটা তাঁহার দৃঢ় বিশ্বাস। নবান হিন্দুর নবহিন্দুধর্মের সক্ষে যদি আধুনিক সভ্যতার বোপ না থাকে তাহা হইলে উহা কেই লইবে না, ইহা তিনি বিলক্ষণ বুরিভেন। এই জন্য প্রচলিত ধর্মে বে কিছু আশু স্থব স্বিধা আছে তাহা বোল আনা বজায় রাবিরা বৈদেশিক সভ্যতার আঠার আনা ত্ম্য স্বিধার সক্ষে ভাহাকে মিণাইয়া লইয়া নৃতন হিন্দুশাস্ত্র এবং আচার ব্যবহার তাঁহার। প্রবর্ভিত করিতে চাহেন। ইহার জন্য কোন একটা ঠাকুর দেবতা প্ররোজন, নত্বা কেবল স্ক্রিভান স্বিধার দোহাই দিলে জাতিসাধারনে তাহা মানিবে কেন; ডাই হিন্দুক্বমান্দরের ভিতর হইতে ক্ষ্ঠাকুরকে বাছিয়া শওয়। ইইয়াছে। নিহাত পিলেরোগা ভ্যাবা গল্পারামের মত ভাল মানুষ ঠাকুরের হারা পতিত ভারত উক্কার হইবে না, যুক্বিদ্যাবিশারদ, বুক্মান্ চতুর ঠাকুর চাই; অতএব ষতুকুলপতি জ্ঞীমান্ কৃষ্ণচন্দই সেকাইগার উপযুক্ত পাত্র।

পরে কুড়ারাম ঘনশাম বিদায় হইলে নিশানাগ বড়ই ভাবিতে লাগি-লেন। প্রকাশ্য সভায় দাঁড়াইয়া কি বলিতে কি বলিয়া ফেলিবেন এই ভাবিয়া তাঁহার প্রাণ আকৃল হইল। সে বিষয়ে গোপনে গৃহিণীর সৃক্ষে আনেক রাত্রি পয়স্ত জাগিয়া কন্ত সুক্তি পরামর্শ করিলেন। শেখ শ্বির হইল, পুরোহিত্তের দ্বারা গ্রহবৈশুলা বিনাশার্থ হোম স্বন্ধায়ন আদি কিছু দৈবক্তিয়া এবং ব্রুদ্ধভোজন করাইবেন। এই সঙ্গে এটাও দ্বির হইয়াছিল, সভোবিণী ও বাল্লায়াকে বাড়া হইতে বিদায় দিবেন।

নয়নতার। অনেক ক্রিয়া কর্ম তীর্থ ধর্ম করিয়াতেন, সামাজিক দণ্ডর, পৌরছিতোর অত্যাচার হইতে কিরপে সহজে মুক্তি লাভ করিতে হয়, কোথার কি ভাবে কত পরিমাণে উৎকোচ দান করিলে শাস্ত্রীর বিধি নিয়র রক্ষা করা বায়, এ সমস্ত তর তিনি বিশক্ষণ অবগত ছিলেন। তাঁহার সাহম ভরুসাও যথেপ্ট। ওয়ে ভাত নিশানাথকে জিনি বুঝাইয়া সাজ্বনা দিলেন। নিশানাথ বার্ ইতঃশুর্কে বেশ লেখা পড়া আানিতেন, বুদ্ধি বিশেচনা, সং-

লাখদ বেশ ভিল. স্ত্রীসংসর্গে তার্থে দিরা অবধি কেম্বন বে মনে একটা বিষম ভয় চুকিরাতে, কিছুতেই আর সে ভরের হস্ত ছইতে ভিনি উর্জাণ চইতে পরিলেন না। তরে অভিভূত হইরা স্ত্রীকে বলিলেন, "বিষম সম্পতি বাহা কিছু আছে সব হবিসভার ভানপত্র লিখির। তেওয়া যাউক, আমাদের আর কেই বা আছে, আর কেই বা লোগ কবিবে। ভাহা ছইলে প্রামের প্রান্থেণ সজন সকলে আমাদের প্রতি সম্বন্ধ থাকিবে। আর তুমি এক কর্ম্ম কর, এই এক শত টাকার নোট আছে লও. লইরা কলা সভার আগে বাহাতে সন্ত্রায়ন প্রভাবণ হর ভাহা করিও। প্রোহিত মহান্ধ্রকে ভারাইরা আনাও।"

कही है। कवानी मकन नियरपंडे लोका सीम् :लोक, बर्च शारत शनिवा किया ভয়ে নীত হটয়া সহসা যে কিছু বেশী বায় কবিয়া ফেলিবেন সে প্রকৃতির লোক নতেন। নিশানাপ দধাপরবর্শ হতীয়া কোন বৈক্ষব ভিধাতীকে বলি কিছু দান করিতেন, ঠাকুরাণী আবার ভাষার ভিতর স্বস্তরি কাটিভেন। ু বিনঃ প্রিপ্রয়ে ঠাঁলার নিকট হইতে কোন ফকীর বৈকার যে কিছু লইরা घाटे राज (प्र प्रण किल ना। व्य कार्य (ठना, ना व्य कान प्रणा के प्राना-স্তুর করা, কিন্তা পুরাতন কানালা দর্ভার আলকাত্রা মাধা, ইহা ভিন্ন এক নৃষ্টি ভণ্ডল কেছ কাছার নিক্ট পাইভ না। বাড়ীতে রাজ্মিল্লী किल में मुद्र वर्षन वर्षन कारण मानिल, छात्रास्त्र निक्षे देवेट (रमी কাল আদার করিবার জন্য ভিনি কাল্পেত্র বলিভেন, "ভোকে কাপড় ব্রুসিস দিব।" কাগেকেও বলিভেন, "ভেতেক বুব পেট ভবিষ্ঠা ফলার ধাওয়াইব।" মজুবল্প হাবিয়াবলিড, "আহো। মাঠাকুৱাণীর কি শ্রার শ্রীল। কেবল ক্জে লইবার জনা তুমি লোভ (দ্বাঙা নরন্তার। তাহ-লিগকে বঞ্চিত করিতেন মা। কালাকেও উত্লি যুক্তি ছেঁড়: কাপড় পান, কাহাকেও প্রা কাঁটলেটা আন্টা দিতেন। ভাষা পাইরা কুলি মন্ত্রপ্র নানা বন্ধ ভবুক ঠাটা ভাষাসা কৰিও আৰু হাসিয়া বলিও, "মা ঠাককুৰ দো, ৰডড ৰেছিছেও ! পাটে বেন ফেটে পড়ছে! এবস্থুত প্ৰকৃতি বে নম্মনভাৱা ঁ ভিনি স্বামীকে বলিলেন, "ভূষি অভ ভয় পাইভেছ কেন १ কিছু চিন্তা নাই, আমি সৰ ঠিক কৰিব। শইব।"

অভে:পর পাড়ার নসিবাম ঠাক্রকে ডাকাইরা একধানা ছর পরসার জেলে কাচা, ছই পরসার মধুপক্তের বাটী, একটু সোনা, একটু রূপা, কিছু ভিল কিনিবার জনা সর্বাহ্তম বার জানার প্রসা বাজার করিছে দিলেন, বাকী চারি আনা পুরোহিতের দক্ষিণার জনা রহিল। বলা বাহুলা বে নসিঠাকুর সেই বার আনার ভিডর হইতে এ আপনার দৈনিক অহিকেন এবং ডস্য চাটের উপযোগী দামটা বাহির করিয়া লইয়াছিল।

পর দিবস প্রাতে রোগা রোগা গোটাক তক আধপাকা কঁটিলি কলা, ভকনা চুই চারি ধানা শশার কুচি আর সের থানেক বুকড়ি আতপ চাল, ছাহার উপর গোটা চুই চুর্ম গু দিরা গিয়া সহস্তে নৈবিদা সাজাইলেন, একটু ধূনার আগুন দিলেন; ঘরে লুচিভাজার জন্য ধানিকটা ছভ ছিল, ভাড়ের তলা চাঁচিরা তাই লোমের জন্য নাহির করিয়া রাধিলেন। পাছে সেই মুভ আবার প্রোহিত ঠাক্র চুরি করে কিয়া মন্ত্র কাঁকি দেয় এইজন্য ন্য়নতারা ভীত্র কটাকে, কাণ ধাড়া করিয়া সমস্ত সময় বাটনি দিয়া কাছে বিস্থাচিলেন।

ক্রিয়া সমাপনান্তে উপকরণ সাম্প্রী গুলির অর্থ্রেক পুরোহিভকে, বাকী অর্থ্রেক বাড়ীর বি চাকরদিগকে প্রদত্ত হইল। সময়ে সময়ে কোন সমানবোহ ক্রিয়া উপলক্ষে ঐ রূপ তুই চারি ধানি বেশী নৈবিদ্যুক্ত হইত এবং ভাহার এক থানি প্রতিবাসী বিদ্যাক্ত্র মহাশয়ের বাটীতে ভিনি পাঠাইরা দিতেন। কিন্তু বিদ্যারত্বের ভেলেরা সে নৈবিদ্যের কথা শুনিলে লার্ট্রিলইয়া বাহির হইত। ঈর্গ ক্রিয়া কাণ্ডে ব্রাহ্মণ ভোজনের ক্রন্য প্রায় কথন বাহিরে বাওয়ার দরকার হয় নাই, নিম্নের স্থামীকেই সে দিন গিন্মী ঠাকুরাণী ভাল করিয়া ভোজন করাইতেন। কোন ব্রভ নিয়ম জাঁহার বাদ্ধপড়িক না. কিন্তু মব কালেই তিনি এইরূপ মুক্ত হস্তা। পুরোহিত ও প্রতিবাদী গ্রামণ্ড লোকেরা একন্য বড়ই বিরক্ত ছিল। নর্মভারা বে কুপণ্ডাব-ভার ডাই সকলে জানিত। এবার কর্তাটীকে সকলে বিপাকে কেলিয়াছে, কিছু না ধসাইয়া ছাড়িবে না; কিন্তু নর্মভারা বড় শক্ত ঘানি, জাঁহার হাড দিয়া এক ফোট জল সবে না, টাকা ব্যরের ভার ভারের হাডে। তাহার ঘরের কোন দান্যোগ্য অভিরিক সাম্প্রী প্রিয়া গ্রিয়া গ্রেয়াভাহাতে

পৌকা নাপড়িলে আৰু ভাষা অপৰে পাইত না। সান বিভাৰটা সমস্ত বাড়ীর ভিতৰ এবং অতি নিকটছ আজীয়দিপের ভিতৰেই বছ ছিল। এই সকল দেখিরা ভূনিয়া নসিবাম ঠাকুবের মনে বড় বৈরাগোর উদয় ছইও। ভূপাপি সে অসমান স্বটা হাত্ডাড়া করিত না। মবিবার সময় বদি কিছু দিয়া বায় এই আখা।

নয়নভার। ঠাকুরাণীর এই বর্তমান দৈবকার্যা উপলক্ষে দেবতালিক্ষের সঙ্গি সাধন তত প্রয়োজন ছিলু না, গ্রামন্থ রাহ্মণ্ডিগকে চল্পগত করাই এলেজন, এই জনা বা ক্ষণ ভোজনের আংছোজন কিছু বাত্লারূপে করা হুইয়াছে। পাঠকগৰ অবশ্য এটা শ্বৰণ কৰিছে ভূলিবেন না, যে নম্বনভায়ার বাত্ল্য আছোজন। আহ্মণেরা মধাক্তে লুচি কচ্রি মালপুরা ভোজন করি-বেন বড়ই আনালের কথা। বেলা চুই প্রহর অভীত হটয়া চুইটার কাভে গিয়া উপস্থিত হইয়াছে। নিম্মিত্রণ কৈছ ভাষাকু ধাইভেলেন, কেছ ইট্র সল্পে পুষ্ঠদেশ গাত্রমার্জ্জনী ছারা বন্ধনপূর্ব্বক ক্লুগাল্পনিত নিডার অব-সম্ভইয়া ছুলিভেছেন। যাহার অমুপিত্তের বোগ আছে, ভিনি জঠোনা-মলের কঠোর ক্লেশ সম্ভাপ ভোগ করিভেছেন আর চটিভেছেন। পুচি চিনির ফলার বেশী চটিবার যে: নাই। সকলেই তীর্থের কাকের নাল্ল অতীক্ষা করিভেচেন,। অপেক্ষা ন। করিয়াই বা এছ বেলার যান কোবার १ বাড়ীতে গুলিণীরা চলোয় আগুন দেয় নাই ৷ এ কালের সভা সুবকেরা নহন-ভাষা সাক্রাণীকে চিনিত। ভাষায়া দিনের বেলায় বিমন্ত্রণে কোণাও যাইভেএ ৰ্ড চাছে ন।। বাধ্যবাধকভাৱ জন্য যে এই একটা গিয়াছিল ভাহাৰাও ফিরিছা ৰাড়ী পোল। অবশিষ্টেরা বাঁধা মার ধাইতে লাগিল। কুখার ছেলে ওলর मुन एकारेया तियाहि, महाव्यांनी छडेकडे किंदिएह, अमन समय "महा-শ্ররা গাড়লে আব্ন ।" এই শক্ত কর্ণে প্রবেশ করিল। আহা সে বেন क्टर्जर देववाने । सुनाई भक्तित नात्र आमात्रता "मा ! ताम नम, वैद्धा (श्व. ७र्रेट्ड ! द्वामा (म्रामा, वर्धना छ्ला मन्त्रःहे आमात काछ विमन्त ্ভাগে তুলিস, ভার পর ধাস।" (ভুলতে ভার ২ড় হবে না। নয়ন্ডারার পাছের দিকে চারিটা চকু) এই বলিয়া আহারে বসিলেন। নিশানার ভক্ত গড়বের ন্যায় এক পাশে দণ্ডারমান। আগে আপে ডিনি ধাইয়া বসিত্রা

ৰাৰিতেন, এখন বড় ভন্ন চুকিয়াছে, কাৰেই তাঁকেও উপবাসী থাকিডে ইট্যাভিল।

পাতা পড়িল, চারাধন শার্মা বলিলেন, "ওছে আমি দৃগি খাই না, পাতা টাভা বিবেচনা করিয়া দিও।" লবণ দিবার সমরেও ঐ কথা। তিনি দই ধাবেন না, ভাষার দাবি আর কিছুতে মেটে না। পাতা লবণ ছইতে আরক্ত করিয়া ক্ষতি পুরণ করিতে চাহেন। অপরাফ্রে ভোজন, পরিবেশক এবং ভোকা সকলেই ক্ষুধার বিটবিটে হইয়া আছে। গৃহকতী লুচি कहित माल्युश मिक्री है मत्त्रमा ममन्त्र हालुबाई (काकारन विस्थयत्वरण कत-মাইস দিয়া প্রস্তুত করাইয়াছেন। যথা সময়ে লুচি সকল ঠক ঠক শব্দে পাতে পভিতে লাগিল। ভার সঞ্চে ঘরে ভৈয়ারি ভেলের ভরকারি। ভাদকে পিঠের মত ভিতিভাপক মালপুরা গুলি এমনি প্রেমিক যে মুধবিবরে প্রবিষ্ট হইয়া দল্পকে আর চাডিয়া দিতে চার না। তাহাতে মিষ্ট অভি কম, ডায়বিটিসের রোগীর পক্ষে বিশেষ উপকারী দল্পশগুলি বেশ মজবুদ গাঁথনি, পাতে দিবামাত্র লাফাইয়া উঠে; জিলাপি ভাহার বিপ্-রীত, প্রেমরুসে ধেন তাহাদের অক্স প্রতাক্ষ এলাইয়া পড়িয়াছে। ক্ষক গ বিপ্রগণ অব্যক্ত কুল। বশতঃ তাহাই খাইতে লাগিলেন। কিফ পরিবেশনকর্ত্তাগণ এমনি সাবধানী লোক, প্রতি বাবে এক বানির বেশী लुडि लाए किरव मा। चुलता हैशएक लाकात्रवाद देश्रहण धवर বৈগাগ্যোদয় হইতে লাগিল। তজ্জনা কেহ ক্রোধকশায়িত খারে "ওতে ও লুচি, বলি ওতে ও হাঁড়িগতে। চকে দেখতে পাও না নাকি ? এই পাতে দিয়ে যাও !" শেষ লুচি সলেশে আবে কুলাইল না, চিড়া মৃড়ি থই পান্তাভাত কলা কাঁটাল খবে যাহা কিছু ছিল সর্বস্ব ব্রাহ্মণগণকে দিয়া গৃহ-স্বামিনী তাঁহাদের কুরিবৃত্ত করিলেন। যাহা কিছু বাকী রহিল ভাছা বচনে পুরাইয়া দিলেন। কেহ মনে মনে, কেহ প্রকাণ্ডে বলিভে লাগিল, "ও জানাই আছে পেট ভরিবে না। বেশীর ভাগ ঠোঁট মুখ ছিডিয়া বেল। একের নাম করিলে আর হয় না।" এইরূপ অনপ্রবাদ শুনা निशाल, (र आत्मक लात्कका चारातक शृत्स (कर नक्षनणात्राव नाम अर्व कतिक ना।

সপ্তম পরিচ্ছেদ।

দলাদলির সভা।

আমের মধ্যভালে কেপ: চণ্ডীতলার সভার ছান নির্দিষ্ট হইবাছে। পর দিবস অপরাহে গ্রামন্থ বিভা সভা ভাদ লোকেরা এক এক ক্রিয়া আ'সতে লাগিলেন। ক্রমে সভা লোকে পরিপূর্ণ চইল। সভাপত্তি পুরক্ষর ভক্⊹ঞু ভক্তঞু মহাশ্র বিদ্যা উপাৰি মান সম্ভ্রম ভাবৎ বিষয়েই শ্রেষ্ঠ, ভদ্তিম তাঁহার শৃত্তি খানি এ কাষ্যের বিশেষ উপযোগী। তাঁছার উন্তের দৈর্ঘ লড় এবং গভীরভার পরিমাণ আটে বর্গ হস্ত। তুই আন লোক না হইলে ভাষা আঁকিজিয়া ধরা যায় না। লোমবিলাভে সন্ধান্ত আঞ্চন। মুহাসমূদ্রবক্ষে যেমন দ্বীপ, তাঁহার মৃতিত মুপ্তকের মধাভাগে তেমনি শিধা প্রতিষ্ঠিত চিল। কৌকোর সেই সমুদ্রে প্রিড হইয়া সময়ে সমুদ্রে যথন বাড়ী আসিবার পথ ভুলিগ্র থাইত, তথন সে ঐ শিবার অবলম্বনে দিলু নিরূপণ করিয়া শইত। তর্কচঞ্র দীর্ঘ নামার অভাতরম্ ভিজ্বয় কাশীর নস্প্রভাবে অভিশয় বিস্তুত হইয়া আসিয়াছিল। যথন ভিনি উদব্রুপ সুমেক পূর্বাত উদ্ধে উত্তোলন করিয়। খাশ পা ১ডাইয়। চিংপাত হুইয়ানিদ্রাষ্ট্রেন ভ্রম সেই নাস। গহরুর হুইতে সিংহগর্জনবৎ খন নির্ভোষে প্রচণ্ড বেলে নিরাসবায়ু প্রবাহিত হইত। তাহার ঘর্ষর কর্মর রবে বাড়ীর লোকের খুম ভাঞ্চিয়া যাইত কেবল ভাষা নহে, প্রভিবাসীয়াও मगरत मगरत कालिया पंछित, ध्वर खकारण निद्वालक्ष्मनित ख्लाब বির্জিতে উত্তেজ্ঞ ত হইরা তাহার প্রতি সকলে মর্মাত্তিক অভিসম্পাত श्राम कृतिल, कृत्रेकारेवा वनिल्छ । कश्राम कर्ष्यकारवत अञ्चात नाम अने अन भटक, कश्रता राख्नुव नाम्न कछ कछ नाम्म, कश्रन कश्रन शक्रिनशृक्षविभौतार्थी केंद्रे कट्ढे बार्टिय नाव भड़े भड़े बर्च, क्यम वा बरमो धर्माटि छैहा वाकिए। 'এক একবার নিশ্বন থাকিছা আবাং ব্যঞ্জাবারু ক্রুন নতী ক**লোনের** ন্যায় ভীষণ শব্দ করিয়া উঠিত। গভীর রঞ্জনী কালে মৃতবৎ নিদ্রিত পৃথিবীর নীরৰ আকাশের ছির সমীরণবক্ষে সে শক্তরক্ষের লীলা লহরী কত বিধ রক্ষে যে ক্রীড়া করিত ভাহা স্থার বর্ণনা কর। যায় না। কিন্তু এত যে কোলা-হল আলোলন ভামগৰ্জন, নাসিকাখামী তাহার বিন্ বিসর্গ ৫ টের পাই-তেন না। নিজাভগঞানত কেশের কথা কেছ অভিযোগ করিলে, তিনি হাসিয়া বলিভেন, "আমার কি নাক ডাকে? কৈ আমিতো কিছুই শুনিতে পাই না!" সৌভাগ্যের বিষয় এই, ধ্রক্রের ধ্রক্রী অল বয়সেই প্রাণ-ত্যাপ করেন, স্তরাং তাঁহার সঙ্গে এক ঘরে শয়ন করিবার কেহ ছিল লা। কোন কোন্দলপরায়ণা বরাঙ্গিনীর সাহত বাদ হহার পুনঃপরিণয় হইত, তাহা হইলে আমরা শুনিয়া বড় আহলাদিত হইতাম। এরপ প্রবাদ আছে, যে নিডাকালে তর্ক চর্ত্তর নাসাকলরের ভিতরে ক্রীড়াশাল ক্ষুত্ত মুষ্ক শাবকর্ক অচ্ছকে প্রবেশ করিয়া আবার প্রমূক মুখগহর । কিয়। বাহিরে আাসিত। তাঁহার বঞ্চবিলাম্বত সুধ স্তন্দরের ানমন্ত্রে উদরবাজ্যের রোমা-বুত সামাত রেখা কুড তটিনার ন্যায় সেই বিশাল বপু পারবেষ্টন করিয়া-।ছল। গ্রীম সমাগমে উদরানহিত দবি মিটান, অন্ত এবং কটকী ফল-সঞ্জাত উত্তপ্ত বাপোলামে ধখন প্রতি লোমকৃপ হইতে স্মাবিদ্ সকল दृष्टिबाबत्र नाम প্রবাহিত হইড, ভবন জ্ঞান হহত যেন গঙ্গা ভাগারণা মহ। (बर्ल माश्रत्रकारमञ्ज भारत छूछिया याहरण्डका। त्म (करवाक मर्प) (प কত কত কুন্দ্ৰ কাট জন গ্ৰহণ কারত এবং জামায়া অকালে মরিয়া অৱশেষে (महंचारनहें भारत्रा वाकिष जारा क गणना कतिरव १

সভাপতির করীক্ষত্ন্য বিপুল ততুর উপথোগা বেতাসন জগতে এ পর্যান্ত প্র ইর নাই, এই জন্য এব বও বিস্তৃত ওক্তাপোষের তপর তাহাকে বদান হইল। পদ্মীপ্রামের দলাদালর সভা আর মেহহাটা কিছা এ বো পোস্তা তুহ সমান। সভার কার্য আরম্ভ হইল, সকলেই এক সঞ্চে কর্যা কাহতে লাগেলেন। দশ পনরটা বিভেন দলে ক্রা চালতেছে, কে কার ক্রা তানবে। অতঃপর অনশ্যাম বাবু দ্ওারমান হইয়া বাললেন, "নিশানার বিশ্যোপাধ্যামের ভাগিনা বাহারাম হিল্ম আচারাবরোধী ইইয়াছেন, তান মেছাল ভক্ষ করিয়ছেন, অভবব তাহাকে গ্রামবহিদ্ধত এবং আতিচ্যত করা

र्षेष्ठ ! खेनावा निधानाच बाबू जाशास्त्र नरेता अवाकी समासकूछ एरेवा चाकून।"

আহ্বান্ ভালিয়া নিশানাথ ভরে অবু থবু হইয়া পড়িলেন। গাঁড়াইডে যান, পা থর থর করিয়া কাপে। কথা কহিছে যান, ডো ডো করিয়া কথা আটকাইয়া বায়। বহু কটে কোন রূপে সাহসে ভর করিয়া যায়। বহু কটে কোন রূপে সাহসে ভর করিয়া যায়। বা গাঁড়াইলেন, কিন্তু কটির বসন শিবিল হইয়া কাচাটা খুলিয়া পেল; কাচা য়্টালিডে কোঁচা খুলিয়া পড়িল, সর্ব্বালে সর স্বর ধারে সাম ছুটিডে লাগিল, আরো কিছু ওায়ভর আরীরিক বাপোর ঘটিয়াছিল। নিশানাথ কাপিডে কাপিতে ভয় মরে বলিলেন, "আঁ—আঁ—আঁমাকে, গ—প—প—পসা বিভ। আঁ আঁমি বেন মরে রা থাকিনে।" কুড়ারাম নিকটে ছিলেন, ভিনি ভালাকে ধরিয়া ফেলিলেন, এবং বলিলেন "ভোমার কোন ভয় নাই, ছির হও, আময়া ডোমাকে বাঁচাইয়া দিব।"

(मरे ममन मकार माथा मम्बद्धलकाद्वालवर वक अक्टी न**ातान** छेकिन। वाक्षात्रास्मत्र नत्क रव पूरे अक क्रम किन जाशात्री धवरम शान তোলে, শেষ ভুতের বাপের আদ্ধঃ পরস্পার পরস্পারের নাম ধরিদ্ধা গুলা (छ। व. शाहितादिक हुनोंकि कनक (शायना आवश्च करिन। **छ**थन क्रांवण्ड কেহ ঘু'ষি উচায়, কেহ ক্ছ কিছে মিছি করে, কেহ চেঁচায়, কেছ টিকি লাডে, কেহ দাঁত খিচিয়ে গালাগালি দেয়, কেহ সভাপতির গায়ের উপরে আল্মিয়াপড়ে। চুই পাঁচ জান বাঁহায়া বিজ্ঞ পালি পায় শিষ্ট ছিলেন काँदाता ववातोषि वक्ष्णा कतिवात सना छेत्रिता मीश्वेरणन, एक समावन क्तिरलन, शलाइ मान क्रिलन, बृदे अक्षे। क्थां अवाद विश्वतन, किंकु क्रिहें **छाहा** छनिए नाहेन ना, बदावधालान मक्तन साखिहा छेडिन। সম্ভটাচরবের ল্রাভা বিকটবছন ও সভায় উপস্থিত ছিল। সে তথন হিন্দু-মুৰ্তি ধরিয়া ছিল্ভাবে কথা ক'ব্ডেচে আৰু বলিতেতে, 'বাঞ্ডায়ামতে কাভিচাত কর। উচিত, নতুবা আমাদের স্নাত্র আর্যাধর্ম क्या পাইবে ুনা। তিনি হিন্ধর্ণের বিক্ষাচরণ করিয়াছেন, আমি ভার সাক্ষা আছি। এখন আৰু অবিয়া ভাষাৰ সংখ্য কোন মডেই আছাৰ ব্ৰহাৰ সংখ্ৰ वाबिटफ नावि ना।" विकटित बळन देवबनियाक्तत्व अक्ट्रे कृतिन बक्ता

ছিল। সে সভোষিণীকে পাইবার আনশারাখিত। তার বিশাস যে সে বিভ গুণবান সুপুরুষ, বাঞ্চারাম নির্দ্ধে। পণ্ডিত অরসিক ব্যক্তি। কিন্তু ভাগার আখার চাই পড়িল, স্থতরাং হিংসার জ্ঞারিয়া কিরুপে কর্ণন বাস্ভারামের ঋদিষ্ট সাধন করিবে, তাহারই চেষ্টার ফিরিত। এক্সণে তাহার অবোগ छेनिछ इंदेशारह। छारे निर्ला जित्र नाम बिलाए कार्यावय (लान स्टेल। বিকটের চীৎকার কোলাহল অবলে কভিপর উদ্ধতপভাব যুবা ভাহাকে পাতিনেড়ে তৃষ্ট সরতান বলিয়া তিরস্কার করিল। মহা তল স্থল হটুগোল, কে কি বলিতেছে, তাছা গুনা যায় ন।। কেছ বলিতেছে, হরিসভার সভ্যেরা গোপনে ধবনের হাতে মুর্গিমাংদ খায়। কেহ বলিতেছে, সম্পাদক মহাশয় সভার হিসাব দেন নাই, তিনি টাকা চুরি করিয়াছেন। ভাহা ভনিয়া অপর এক জন বলিয়া উঠিল, চাঁদার টাকায় লুচি পাঁটা ধাওয়া হইয়াছে, আমি প্রমাণ করিয়া দিতে পারি। আর এক টীকিধারী কুতবিদ্য সুবা দাঁড়াইয়া বলিতে লাগিল, "হরিহর চাটুর্ফোর জামাই বিলাভ হইভে আসিয়া নোপনে খণ্ডর বাকীতে সে দিন থাইয়া নিয়াছে।" ডছে বণে নের-বাঁধা লম্বাটিকি তুলাইয়া ক্রেধিকম্পিড অধরে হরিহর বলিল, "কোন হারামজীলা এমন কথা বলে বে ৷ তার মাধার আমি তুশো জুতো ওলে মারি !" কিন্ত তিনি রাগ করুন আর ঘাই করুন, কথাটা সত্য আমরা জানি। মুর্গির ঠাং আব হাঁদের ডিমের খোলা প্রায় চাটুর্ঘো মহাশতে খরের কানাচে দেখা যাইত। যাহা হউক, সে কথা আর আমরা েশী বলিতে চাই ना। विनिष्ठा एक अर्थन वार्वामर कांत्र चत्र कतित्व ! शार्टक महास्वरस्त्र भर्या यक्ति (कर स्वानिटिक रेक्का करतन मनिवादतत त्रात्व कक् रहेल स्वना-স্থাসে জানিতে পারিবেন। অধিক আরে কি বলিব, এই মেজ ভক্ষা হিন্দর অবাদ্য (এক্ষণে সুখাদ্য) স্পার্শ করিয়া এক দিন মামাদিগকে পৌষ মাসের রাত্তে গলামান করিতে হইয়াছিল।

কুড়াগম ভাষাও এ গগুলোলে নিস্তার পাইলেন না। তিনি এক জন পুরাপায়ী সভা, পূর্ব্বে যধন গৈড়ক বিত্ত বিভব ছিল, তথন নিফ অর্থে মধ্যের হুল্ প্রস্তুত্ত করিয়া তাহাতে সাঁতার ধেলিতেন। এক্ষণে সঞ্চিত স্থাল নিংশেষিত হইরা গিরাছে, তাই রবেশ্ব হারে হারে ভিকাপাত্ত হাতে লইরা নামুক্রী মাজিয়া খান। শেবাবছার তিনি ভিটে মাটি সর্কার বৈচিয়া এক খানি মদের দোকান খুনিয়াছলেন। দোকান খুনিয়া হিসাব করিয়া দেখিলেন, তিন শত টাকার মদে তিন শত টাকা লাভ। মেই লাভের টাকার উপর নির্জ্ রবিয়া প্রায় অর্থিক মদ আবেই খাইয়া ফেলি-লেন। জননজর বাহা অবশিষ্ট রহিল তাহা বিক্রেয় কালে চালিয়া দিতে ভাড়ে পেলাসে বে টুকু লাগিয়া থাকিত ভাহা চাটিয়া খাইতেন। একবায় এক জন জনমাতোল সুবা মদের বোতল বগলে লইয়া রাজসমাতে বিয়াছিল, উঠিবার সময় অসাবধানতা জনা বোতলটি পড়িয়া ভাছিয়া বায়, এবং সুবা ভয় ও লজাবশতঃ প্রভান করে। কুড়ারাম ভাহার সক্ষে ছিলেন। মাচ দেখিলে যেমন পেরী পাছে লাগে, মদের বোতল দেখিলে ভেমনি তিনি পাছে লাগিতেন; ফ্রোগ পাইয়া সেই বরাপতিত মদ টুকু চাটয়া খাইলেন। অম্ল্য ধন মনকে কোগাও অপচয় হইতে দেখিলে কুড়ারামের সদম্ম বিদার্থ হইড। তিনি মদের দোকান করিয়া স্ক্রিখন্ত হইলা পের দেনার দাছে কিছু দিন কারাবাসও করিয়াছিলেন। এই সকল গৃঢ় রহস্যের কথা এক খ্যুক্তি সভার মাথে সমস্ক বলিয়া ফেলিল।

পরিশেষে সকলেই সকলের দেবে টানিয়া টানিয়া বাহির করিতে লাগিলেন। সভাপতি মহাশহের পরিবারমধ্যে কবে কাব নামে কি কলক্ষ রাট্যাকিল তাহাও প্রকাশ হটরা পড়িল। সমস্ত কার্যাবিবরল্টার শেষ সিদ্ধান্ধ এই যে, সভাত প্রত্যেক ব্যক্তিই কোন না কোন ওঞ্জতর পোষে দোষী, প্রতি অরেই কেই না কেই প্রেড্ডাই ভেন্ডান করিয়াছে, অভএব সকলেই আতিচ্যুত করে পতার্হ। অনত্যর মুগ্রেন সমাপ্রেং, মারামারির উপক্রেম হইল। সভাপতি,গোল ধামাইতে চেটা করিলেন, কেই মানিল না; অধিকক্ষ তাহাকে পাঁচ অনে পাঁচ ভিক্ হইতে নানা কৃট প্রশ্ন মিজ্ঞান্ধ করিয়া একবারে উত্তং কুত্রং করিয়া তুলিল। ছখন সেই সুল কলেবর বৃদ্ধ ব্রাহ্ম একবারে উত্তং কুত্রং করিয়া তুলিল। ছখন সেই সুল কলেবর বৃদ্ধ ব্রাহ্ম করিয়া একবারে উত্তং কুত্রং করিয়া তুলিল। ছখন সেই সুল কলেবর বৃদ্ধ ব্রাহ্ম করিয়া করি হত তুল্ভি হইয়া কি সব প্রলাপ বর্কিতে লাগিলেন। আবশেষে ক্ষিত্রশান্ধ হেবিয়া উঠিয়া দাঁড়াইলেন এবং হাত পা ছুডিয়া "কাভ হও! কাভ

আকাও কেংবানি এত কণ তজাপোৰের আনেক স্থান ব্যাণিয়া ছিল, বর্ষন তিনি উঠিয়া গাঁড়াইলেন, তবন সমস্ত ভার (ওলনে প্রায় সাজ আট মোণ হইবে) অল ছানে চালিয়া পড়িল, ভাহার উপর আবার হস্ত পদ সঞ্চালন, সলোরে চীৎকার, কুর্দ্দন, রম্পান, স্মৃত্যাং আর কড স্ফু হইবে; তজাপোর বানি মড় মড় শব্দে ভালিয়া পড়িল, ভাহার সক্ষে ভক্তপুর ইমনাক পর্বজ্জ সম দেহবানি পড়িয়৷ বেল ৷ তজাপোর ভঙ্গ এবং দেহের পতান কালে একটা অতি ভয়কর শব্দ হইয়াভিল ৷ সভাপিতি ভজাপোরের ভগ্গ ছানের মবের পড়িয়৷ ভূবিয়া বেলেন, ভাহার পলদেশ এবং মক্তকটা মাত্র জানিয়া রহিল ৷ ভদ্বহার বাবিষা ভ্রবিহ্রলচিত্তে প্রাবের লাবে কিংকবলিত বজ্গের নাার গাঁ গাঁ৷ শব্দ করিতে লানিলেন, আলাকে সর্ব্বাহের বিহুতে লানিল, তর্বন বোলমান বামিল এবং সভাও ভক্ষ ছইল ৷ পরে মোটা মোটা বামের সাঁই বাধিয়া ভাহার উপর চড়াইয়া প্রিন্দা জন বাহকে ব্বক্রকে বাটা লইয়া বায় ।

অফম পরিচ্ছেদ।

কর্ত্তব্য নির্ণয়।

বাছারামের মরা মালকে বেমন কুল কুটিল তেমনি তাভার সালে সাক্ষেতিকরে বাহিরে ভয়ানক ঋড় তৃফান উঠিল। বাহু প্রতিকুল অবস্থা তাঁছাকে অন্তরের অন্তর্মত দেশের দিকে ঠেলিয়া লইয়া চলিল। তথল তিনি বিশেষ অন্থাবনপূর্বক অন্তর্জিটিসংবারে দেখিলেন, "প্রেমবিকারজনিত তরক্ষ ভুকানের নালালহরী রক্ষ রস আশা পিপাসা অনুযার আনকলি বিনাস উচ্ছাল উত্তেজনা চাঞ্চল্য মন্তর্ভা একটা বিষম পরীক্ষা, অবচ প্রলোভনের বিষয়। ইত্তে বিচিত্র প্রতিক্রিয়া আছে। বিদিও তাহাতে অনেক মন্ত্রণা পরিভাগ অবশাদ, তবালি অভিনর লেভের সাম্ব্রা। এই অন্তই চিন্তালীল আননীয়া ব্যালে, ব্যালের পরিবাম ফল অবশাদ নিক্ষাবিভা। নির্মাণের রাজ্যের অবদ্ধ ক্ষণা

বিলাস বিকারও নাই, অশাভি নিরাশাও নাই, সেবানে কেংলই খাভি অংক আরাম :"

ষাহার। বলে "ফ্ৰের চেরে সোহান্তি ভাল," শেষাক্ত অবস্থা ভাহান্তের পরম প্রার্থনীর। কিন্তু মাহার। বর্ষার মহাবেগ্রুণ্ডী নদীর ভর্গান্দোলিত বক্ত বিদ্বাদী করিয়া ক্ততগামী প্রোতের উপর জলসিক স্লিপ্ত সমারণ সেবন করিছে করিছে জীবনভরী চালাইতে চার, প্রবল পরনভাতনে সম্পিত উভাল ভরশ্বনালার তর তর পতপত কল কল করিন ভানিতে ভালনাসে, সেই লীলারস-শিপাস্ প্রেমিক বীবের। নির্মাণের লাভি অবেষণ করে না। ভাহান্ত্রা শেশানিতলোভগ্লাবিত অগ্নিমর সমরক্ষেত্রে ভীষণ মৃত্যুর সম্মুণীন ছইরা রনহক্ষে নাচিবে, দৌড়িবে, মার খাইবে, হাসিবে কার্গিবে, অবশেষে প্রাণ্ডান করিবে, এই ভাহান্তের নির্মাণ এবং ইহাই প্রকৃত্তি। প্রকৃতিভেক্তে এই শান্তি এবং প্রেম্যন্তার কর্মির চাই হর।

বাস্থাবাম এখন প্রেমাবেশে হাসিতে এবং কাঁদিতে লাগিলেন। শান্তি ও প্রেম চ্ইরের কোনটাই ঠাহার পজে এখন আর উপেক্ষণীর নহে। নির্মাণের অটল শান্তি, প্রেমের রসবিলাস মত্তা পর্যায়ক্তমে মানবস্ভাব ভোগ করিতে চার এটা তিনি বিশক্ষণরেশ বৃথিলেন। বলিও প্রথমবান ডিল্লিটে, কিন্তু জানী বাস্থাবামকে একবারে ভাসাইশ্বা লইয়া ঘাইতে পারিতেতে না। প্রার্টের নদী প্রবাহমণে প্রোবিত বংশকও যেমন কাশিত হর, তেমনি সার চরিত্রের স্থিত ভূমিতে মূল বন্ধ করিয়া তিনি এক একবার প্রেমাণেশ কাঁপিতেছিলেন। তদবস্থার বিচার করিতে স্থানিলেন, কি করা করিবা তাহা ভাবিতে লাগিলেন।

"প্রেমটা বড় ভাল জিনিব, কটির সার পরার্থ। ইহাকে বিশুদ্ধ ভাবে আত্মন্থ করিতে হইবে, মারা প্রশোভনে ভূলিরা থাকিলে সে ক্ষেত্রপঞ্জ বন লাভ করিতে পারিব না, খাতএব সজোবিধীর সহিত বাহ্য সম্মন্ধ আগা-ভাতঃ একাক্ত পরিহার্যা।" সহসা এই সিদ্ধান্ত গ্রাহার মনে দ্বাস্থ হইল।

পণ্ডিত বিচার করিতে বলিলেন বটে, কিন্ত এ বিচার শারীর পরোক্ষ মুক্ত জানের বিচার নগ, ইং। জীবন্ধ প্রত্যাক্ষ প্রলোভন। তর কিন্তা প্রলোভন ববন ক্ষেন ক্ষমনার বিক্ষা হইরা বর দৃষ্টে অবন্ধিতি করে, তবন তার্হাকে জান- বিচার বলে পরাভত করা সহজ; কিন্তু বর্ণন ভাহ। মৃতিমান আকার ধরিবা স্মুধীন হয় এবং মনুষ্যের উপর সীয় প্রভাব বিস্তার করে তথনই বীরত্বের; পরাক্রম বুঝা যায়। বরং লোকে ভয় বিপদের বিরুদ্ধে দাঁত থামাটি করিছে-পারে, কিন্তু মনোমুগ্ধকর চিতোরাদকর প্রলোভনের সম্মুধে হালে পানি, পাইলাম না বলিয়া হাত পা ছাড়িয়া দিয়াবদিয়া থাকে। গৃহে বসিয়া जालनाटक अपनटक निवालक मान कविटल शादन, स्य अवस्था शिन शासन নাই দে অবস্থাকে তিনি অয় করিয়াছেন ভাবিয়া গর্কিত ভাবে আজু-পুরিমা প্রকাশ করেন, কিন্তু অসাধারণ পুরুষকার ব্যতীত পরীক্ষা হইতে: কেহ উদ্ধার হইতে পারেন না। এমন এক সময় **ভিল যথন বা**ঞ্জারাম नावीत (मोन्दर्गाटक व्यमात माया विनद्या व्यनावाटम উछारेया निवाहित्यनः তখন রূপের আকর্ষণ বা প্রেমের প্রলোডন তঁহার চক্ষু এবং জ্বরের ভিডর প্রবিষ্ট হর নাই। যে বস্তাতে লোভ জামে না, বরং বাহার স্মরণে মহা দ্বা विवक्तित छम्त्र दश, किन्ना चारमी बाहात माधुर्ग कानामामिक चाहि, विना সাধনে তাহা মানবমনে বৈরাগ্য আনিয়া দেয়। বাঞ্চারামের মাংস-পিশুবৎ চিরক্তমা বিবাহিতা পত্নী নিজ্পুণে সে বৈরাগ্য উৎপাদন করিয়া--ছিল, এ কথা সকলেই জানেন। পৃথিবীতে এরপ অবছার পড়িয়া অনেকে বৈরাগী হইয়াছেন, কিন্তু সে কেবল ছঃখের বৈরাগ্য। বিকটবদনের জীবনে তাহার প্রমাণ পরে সকলে পাইবেন। একে ভিনি আলা ভোলা। পণ্ডিত মানুষ, তাহার উপর আবার এই প্রেমের উৎপীড়ন, স্তরাং মুনের: বাঁধন, জ্ঞানের শাসন সমস্ত শিথিল হইর। পডিয়াছিল। আহা, বিজ্ঞানের পাগলকে কেন সভোষিণী প্রেমে পাগল করিল ! ইচ্ছা অস্থরাগ আশা পিপাসা धवर शार्षत्र ममञ्ज होन धक पिरक इंग्रिएड इ. इ.स्ट्रीन कर्ड गुख्यान छ। इ.स. পতি ফিরাইবার জন্য চেষ্টা ও সংগ্রাম করিতেছে। ইহা নিভান্ত জগ্রীতি-কর কঠোর কর্ত্বা। সহজে সহচ্চার কে ভাহ। করিতে চার १ কিন্তু প্রকৃত্ত বৈরাণ্য ত্যাপস্বীকারের যথার্থ পরিচয় এই ধানে। যে চিরকাল কষ্ট--महिसू, इःरथएउই य हिन्नामन काहे।हेन्ना आमिएउट्ड, छाहान कहे बहनक व्यक्ष्ण देवतात्मात्र निवर्णन वला यात्र ना। छत्रवान्तक छालवानित्र। छाहात्रः थ्यामत अपूरतार र वाकि गरून पर बनाशन किए शक्त वह. अत्रः

ক্ট বীকারপূর্বক ত্যাগসীকার করে তদ্ধারা স্বর্গীয় বৈরাপো এবং ভগবং-এমান্থ্যজ্ঞির দৃষ্টাক্ত আমরা দেবিতে পাই। দৈবলভিত্র বিশেষ সাহায্য বিনা ইহা কেহু পারে না।

वाञ्चात्राम मत्न मत्न अहेक्रल विठात चात्रच कतित्वन ;-- "त्रक मार्म चिन् ক্লেম্বিশিষ্ট করা বার্দ্ধকা মৃত্যুর এধীন বে শরীর ভাগতে কেন আমি কালুর হইব ! পুৰিবীৰ অসাৰ স্নেহ মনত। ঐতি সৌলনা সেবা ভক্তি ভাই ৰা কভ ক্ষণের জন্য ? এ জগতে বলি এক গুণ সভাব প্রেম কেবি, ভাছার সংখ সহজ্ৰ গুণ হিংসা ছেব নিষ্ঠ বড়া স্বাৰ্থপরতা কি দেখিতে পাই না ? অভ এব রূপও মিথ্যা গুণও মিধ্যা, সভা কেবল গ্রেম। ডাই বা কিরুপে বলিব ৭ এ পুৰিবাতে কাৰ সঙ্গে কত দিন প্ৰেম থাকে ৷ সভাসমাজে একদিকে বেমন কোটাশিপ ও হনিমুন সভোগের আড়স্বর, লপর দিকে প্রকাশ্য বিচারালয়ে ভাইভোসেঁরও ভেমনি স্মারোহ। রূপ যৌবনসভূত প্রেম, নীচ পার্বপ্রভূত ভালবাসার পরিণাম ফল দেধির৷ প্রেমকে আর প্রেম বলিতে আমার ইচ্চা ्रम ना, डेटारक ट्रेसियविकाउक्षनिष्ठ भारतीलाल विलाल है कि **रहा।** অবেশ্য অকৃতিষ নিধার্গ প্রেম নিভাবতে, ভাহা আমার প্রার্থনীয়, কিন্ত সে বস্তু কোথায় গ কোম ও অনেক ছলে সাময়িক বিকারমার। বে প্রেমে চুচুকে এক করে, যাহা মুরুমে মুরুমে পশিয়া মিশিগা চুই এক হুইয়া যাত্ত ষাহা প্রস্পরবিরোধী প্রার্থকেও মিলাইরা দের, সেই মিট প্রেম, অপার্থিব আধ্যাত্মিক প্রেম অংমি চাই ৷"

বাই তিনি এই কথা বলিলেন, অমনি তাঁহাব দেহপুৰ্নিগাসী বিপুণ পরিবাব সংশুধে দণ্ডারমান হবর। বলিয়া উঠিল, "কি এমন কৰা। তবে আমরা কি কেহই নই । আমরা কি কেবল মৃত অচুণিও মার।" ইজির-পণ মহ: ক্রোধে অভিমানে আফোলন করিয়া ভ্রানক তর্জন সর্জন আহন্ত করিল। প্রবৃত্তির অস্বমহলে মংকার। উঠিল; বহুপত্তিক কুলীন ফ্রান্ত্রণ মরিলে তলীর বিষ্বাপণ যেমন এক সম্প্রক্রণন করে নির্ভিত্ত কথা প্রথবে প্রবৃত্তিপণ এক সঙ্গে তেমনি চীংকার রবে এই বলিয়া কাঁণিতে লাগিল;— "হার, আংমান্তের সাধ পূর্ণ হইল না। পিপাসা মিটিল না। যৌবনে, প্রদান প্রিক্রিতে না ক্রিতে আমর। বৃহ্ণ হইলাম। পৃহ্ণপ্রালন, অপত্যান্ত্র মুখাবলোকৰ স্পৃষ্। চরিডার্থের পুর্বেই আমাদিপকে বৈরাণী বনচারী ছইতে হইল। বে জনা পৃথিবীতে মানবদেহে জন্ম লইরাছিলাম, ভাষার কি করিরা পেলাম ? এ তঃখত মরিলেও বাবে না। হার। হার। কি নিষ্ঠ্ রতা। পিশাসা উদ্দাপন করিয়া শেষ কি না মুখের মথে অমুরস ছালিয়া কেওয়া!" মালকজবাপেল্ড বোর মল্যপারী অহিকেন্সেবীর ন্যায় রিপু ছয়জন উন্নাছ প্রায় হইয়া মাথা খুড়িতে এবং চুল ছিড়িতে লাগিল। কেহ বলে আমি গলার ছুরি দিব, কেহ বলে জলে ত্বিয়া মরিব; কেহ আলে তন্ম মাথিয়া ক্লল পরিয়া মাথা খুড়াইয়া ফ্লীর হইতে চার, কেহ বলে করাঘাত হানে; এইরপে ভাষারা ক্লেল কোলাহলে গগন মেলিমা আছুল করিয়া তুলিল। যৌবন বয়সে এরপ বৈরাগ্য জনাসক্তি আজিবিক্ল, স্তরাং অধ্যা তুলিল। যৌবন বয়সে এরপ বৈরাগ্য জনাসক্তি আজীর বন্ধ কুট্ল কুট্লিনী জনেক, তাহারা সকলে মিলিয়া যখন হা ছতোহন্দ্র আর্ত্রনাদ করিয়া ক্লিতে লাগিল তথন বাহালাম বড় বিপদ্ব প্রত্বিদ্ধা

কিছ সেই বিষম কোলাছল পথাগোলের ভিতরেও মৃহস্বরে কাণে কাণে বিবেক বলিডেছে, "তুমি উহাদের পার্ত্তনাদে তুলিও না, এবং ওর্জন প্রজ্ঞাব ভীত হইও না। উহারা এইরুপে চিরকাল লোককে তুলায়। থানিক পরে আপুনিই এখন চুপ করিবে। এ সকল চুষ্ট বালকের হুই কুধার ক্রেক্তন্

বাস্থারাম আবার ভাবিতে লাগিলেন, ''শাভিও মিষ্ট, প্রেমও পুরার নীর বিবাদে রুপ সকার করিরাছে আমি তাহার সিমুভে কবে বাইব! তাহার কাছে পৌছিলে আমি নিংগু প্রেমানক্ষ সম্ভোব করিছে পাইব। পৃথিবীতে এমন সামগ্রী থাকিতে হায়, লোকে কেন এছ কষ্ট পার! কেনই বা হিংসা বেঘ কলহ বিবাদ ? প্রতি ক্রম্বরে ক্রমে ক্রমের ইছ অমুর্ব প্রেম্ম আছে! কেন তবে সমত ক্রম্বর এক হইবে না? আহা! ভামার বাহা ছিল না তাহা হইরাছে। সভোবিনী আমার প্রেমের ওক্ত, আহাকে ছাড়িরা আমি কেমন করিয়া একা থাকিব। বিবাভা গোপনে বনিয়া কি অক্রম্ম সুম্বভিমর প্রাক্ষরী আমার অন্য রচনা করিয়াছিলেন! এ স্বর্গীর স্থা। কি আমি পান করিবার উপযুক্ত ? তবু কেন ভিনি আমার দিলেন ?

্ নারীর প্রকোষল প্রকৃতির শীতল ছারার বসিরা আমার তাপিও গুড়ছ व्याताम मरखान कतिवारक, हेरा ना एकेरन व्यामात खोररनत अक्टी क्रिक छका-ইয়াষাইছে। পুরুষ অংকৃতির মিলন ভিল্লখন্ন সৃষ্টি রক্ষা পালুনা, তথন व्यक्त व्यक्त काष्ट्रियः व्यामि शांकिरै ता किल्लाल १ ज्लोबालित महत्र महिं, क्लाका-মল কুমিষ্ট বচন, সহার। জ্ঞানন, সরুর বাবহার, উল্লাসকর সহবাস ; ভাছার সত্তে একত্র উপবেশন, পান ভে,জন, কোতক বিহার, নৃত্য গাঁও, আমোদ প্রমোদ এটা উন্নত সুশিক্ষিত সভাসমাকেরও বর্বন প্রচলিত প্রথা দেবিতে পাই, তথন অবশাই ইহার ভিতর কোন নিগ্চ বিজ্ঞান আছে। বাল্পবিক স্ত্ৰীক্ৰাতিৰ সভাৱতাতে ইয়োবোপীয় সভা জাতিয়া এত ইল্লড কাৰ্যাক্ষম এবং प्रथो। डि:। बहा कि अल्ड मंकि। (व महाबोद निर्मालियानित सम्बद्ध সমরক্ষেত্রশায়িত শোবিতধারাবিগলিত লক্ষ লক্ষ মূত এবং কর্মুড সৈন্য আন্ত করিতে পারে নাই, ভীষণ মতার করাল গ্রাদে পড়িতেও বাঁহার মনে मका इरेफ ना, जिनि क्लाम्कारेन्स वितर खावन कविता खबीत हरेएजन। প্রেম্নজি বাস্তবিকই বজু বিদ্যুৎ জল বায় অধি অভৃতি ভৌতিক নঞ্জি অপেকামহাতেজ্বসিনী। জনস্মাদের প্রিচালক শক্তির মধ্যে এইটাই স্কলিধান। ইহার উপলক্ষে কড়ই রাজবিপ্লব, সমাজবিপ্লব হইয়াছে। প্রেম স্থবত কাৰ্য্যের প্রবর্ত্তক।

শারীসক্ষ যে চিত্তবৃত্তি বিকাশের গক্ষে সাহ্মকর উপায় তাহাতে আর সন্দেহ নাই। মিছে তর করিলে চলিবে কেন • ইছার কলোপধারিতা বুঝিরাই ইয়েরোপীয়ের। মুক্তভাবে নারীসমাজে বিচরণ করে,
তাহাজের সঙ্গে মনিউতর বস্কুভাবে মিলিও হয়। এই জন্যই ভালাদের
ভাল্পত্তা প্রেমণ্ড অকণ্ট এবং পরীক্ষিত,— প্রাচীরে খেরা নছে। সামাজিক
নীতি, পারিবারিক শান্তি কুশল প্রিক্রভাকে বীচাইরা উচ্চ শ্রেণীর অন্ত্র সমাজ এরপ খানীন ব্যবহার হবন প্রাণিতির রাখিলাছে, তখন এটা একবাবে হাসিয়া উড়াইবার কথা নয়। স্বসভা স্থাশিক্ষত নরনারীজিপের
সামাজিক প্রমৃক্ত ব্যবহারের ভিতরে নীতির শাসন ভিত্তিশ্রেছা মধ্যেই
ব্যবিত পাই। বাস্তবিক চিভ্নবেষ্য ইরোরোপীরভিবের আতীর মহব্যব বক্টী মহৎ কারণ। আমরা বাস্থালী হিন্দ্র এরপ নিক্ষালাভের আমাদের কোন উপায়ই নাই। এই জন্য আমাদের সামাজিক নীরি কঠোর অবাভাবিক হইরা রহিয়াছে। অবাস্থাকর প্রকৃতিবিরুদ্ধ শাসনে হিন্দুলাতি এক দিকে ধেমন বছভাবাপর, অপর দিকে ডেমনি শিপিল। কোন বিষয়ে আঁটা আঁটি নাই। হার! কবে আমরা স্ত্রীজ্ঞাতির মর্য্যালা বুরিতে পারিব। নিয়মনিষ্ঠার সজে সরস সামাজিক ব্যবহার না মিশিলে এ আতির উন্ধতি হইবে না।

"অপত্যক্ষের, পিতৃমাতৃভক্তি, ভাতৃপ্রেম, বন্ধুতার প্রণয় যদি দোষের না হয়, তবে নরনারীর সধাপ্রধন্ধ কেন দোষের হইবে ? বিজ্ঞানের তত্ত্ব বটে।
আমাদের কি সাংখাতিক নীতিসংস্কার! এ নীতির মূলে কি কোন অপরিবর্ত্ত-নীয় সভ্য আছে ? ইহা ত বিশ্বকানীন নহে, আপেফিক; দেশভেদে, কাল-ভেদে ইহা রূপান্তরিত হয়। অমূলক ভয় ইহার প্রস্তাী, বন্ধুন প্রচীন কুসংস্কার ইহার রক্ষক প্রতিপালক। সভ্যক্ষাতির অবলম্বিভ স্ত্রীসাধীনতা যদি দোষবিমিশ্র হয়, তবে কি হিন্দুর অবরোধ প্রথা দোষসূক্ত নহে ? এমন কোন্নিতিক নিয়ম আছে, পাত্রবিশেষে যাহার অপবাবহার না হয় ? তথাপি ক্রী পুরুষের সামাজিক সামিলন, পরস্পারের মধ্যে পবিত্র প্রেমালাপ, নির্দোষ আমোদ ও বন্ধুতা যে একটী কল্যাণকর এবং সাফাকর স্থাকর উপায় এবং আমোর কোন ভূল ভান্ধি নাই। অতথ্য এ কথা আমি সাহস্কে সহিত্ত নির্ভরে বলিতে পারি !"

বাঞ্রাম খেবের করেকটা কথা খুব জোরে জোরে বলিলেন। পুলার
ক্ষ এত বেশী হইয়াছিল, যে পাশের ধর হইতে নিশানাথ তাহা শুনিয়া
মনে মনে ভাবিলেন, 'কোকরা পাগল হইল না কি ৽' বস্তুতা তিনি যেন
বক্ষদেশকে সন্মুখে রাখিয়া খুব উৎসাহের সহিত একা একা বক্কৃতা করি-লেন। এইরপ নির্জ্ঞানে বজ্ঞা করিয়া করিয়াকত কত হিন্দুবা শেষ
আক্ষাদিরী হইলা বিয়াছে। বক্তৃতা বেগি বড়বিধ্য রোগ।

পণ্ডিত ৰাঞ্চারাম অংলক রকমের শাস্ত্র তার আননিডেন। উপ-স্থিত বিষয়ে তাঁহার কোন পার্থ বা পক্ষপাত আছে কি না ভাহাও বিচার করিশেন, কিন্তু সে সর কিছু খেবিডে পাইলেন না। কেবণ হিন্দু জাতির বর্তমান রীতিনীতির উপর একটুবিরক্ত হইলেন। কি করিবেন, মামুব সামাজিক অবহার হাস, এই ভাবিরা শেষ চপ করিয়া রহিলেন।

বাস্ত্রাম বছদশী স্থবিদ্ধান, এ স্থলে জামাদের কোন কথা বলা শোভা পার না। কিন্তু একটা কথা না বলিরা জামরা থাকিতে পারিডেছি না। পতিতের জ্ঞান অংশেক্ষা চাত্রিত্র ভাল, মত বিশাস অংশেক্ষা প্রফুডিটে বরাবর ই নির্দ্ধান এবং বিশ্বাসা।

অনন্তর তিনি শেষ এই ছিব করিলেন, "হিল্পুসমাল বধন ইংবাংনাপীর সভাস্মাল নর, তখন আমার প্রস্থানই একমার শ্রেহত্তব। অভরব রূপের ছারা আমার কলনানেত হইতে দ্ব হইরা ঘাউক। কেবল প্রেমের চিদ্বন মূর্তি, মধুর গৌলর্বা আমার আলার পান আহার হউক। আমি এমনি করিয়া যোগে ডুবিব যে ভাহার মন্ত্রার একবারে বিহ্বল হইরা থাকিব। আমি সেই প্রেমণামে প্রেমমন্তর প্রেমন্ত্র প্রিমন্ত্র প্রমন্ত্র প্রিমন্ত্র প্রমন্ত্র প্রমন্ত প্রমন্ত প্রমন্ত প্রমন্ত প্রমন্ত প্রমন্ত প্রমন্ত প্র

বত্ল তর্ক সুক্তি বিচার আনলোচনার পর ইরপ সিয়নকে বারারাম উপনীত ছইলেন।

নবম পরিচ্ছেদ।

বিদায় গ্রহণ।

বাপ্তারাম একাকী বদিরা বে দিছাত ত্বিত করিলেন, সভোষিণী নিকটে আকিলে তাহা পানিতেন কি না সন্দেহ। একাণে কিয়পে প্রস্থান করিবেন
ক তাহাই ভাবিতে লাগিলেন। একবার ভাবিলেন, "বদি দেখা করিবা বিদায়
"গইয় যাই, তাহা হইলে হয়ডে আবার প্রতিজ্ঞাবন্ধন নিধিল চ্ইবে, এবং
আবি মারাব্য হইরা পড়িব।" আবার ভাবিলেন, "না, ভাহাও ঠিক নহে।

এতই কি আমি তীকু কাপুক্ষ যে বাহা শ্ৰের বুঝিয়াছি তাহা কার্য্যে পরিণয় করিতে পারিব না ? গোপনে পলায়ন অপেকা সমুধ সংগ্রামে ক্ষত বিক্ষত হওয়া প্রার্থনীয়।"

भाउमीत माकागगतन अब अब मीखन वायू विहाउ एक, ७९ माल मनु-প্রক্টিত দিফালিকার মৃত্ সুগদ্ধ ভাসিয়া আসিতেছে। আকাশ অভি পরিকার, যে কিঞ্চিৎ তরল মেঘ ভাছাতে স্ঞিত হইয়াছিল, ইতঃপূর্বে তাহ। বাঞ্জিপে বর্ষিত হইয়া ধরাকে সিক্ত করিয়াছে। ভারাঞ্জি ক্ষ্ণ-পক্ষীর রজনীর ঘন অজকার রাশির উপরে গুনীল আকাশপটে চিক মিক করিতেছে, ছায়াপথে খেতাভ নক্তপুঞ্জ ফুদুরবর্তিনী শতকে নদীর ন্যায় শোভা পাইতেছে। গৃহপরিবেটিত উদাানের বৃক্ষ লতা সকল বৃষ্টির জলে গাত্র ধৌত করিয়া ক্রফ বসন পরিধানপূর্ব্যক দাঁড়াইয়া আছে; আরু ভুতুপরি অগণ্য খণ্যোতিক। উড়িতেছে বসিভেছে নিবিতেছে জলিতেছে। তরুশাধা প্রশাধা পুষ্প পত্র হইতে মধ্যে মধ্যে জলবিলু বরিয়া পড়িতেছে। সস্তো-বিণীর অবছাও ডজেপ। ভিনি গৃহছাদের উপর একাকিনী গভীর শোকা-ভারাক্রাস্ত চিত্তে নীরবে বিশিয়া কাঁদিতেছেন, আর এক একবার ভারকা-ৰচিত অন্ত প্ৰনাভিমৰে উদ্ধনেত্ৰে চাহিয়া চাহিয়া কেৰিতেছেন। তাঁহার মনের শান্তি বেন সেই উচ্চ আকাশের কোন অজ্ঞাত প্রদেশে গিয়া লুকাইরু। রহিয়াছে। এক দিন নির্বাণ ডল্বের কথা ভনিতে ভনিতে তাঁহার ম্বেং ধে ष्पपूर्व भाष्टितरमत वाविका एटेशाहिल छाटाटे स्वतं कतिया এका छिन भः সারসমূদ্রের চঞ্চল তরক্ষরাশির মধ্যে আলেকালিত ভটাতে ভিলেন।

এমন সময় মৃত্ পাল বিজ্ঞাপে বিজ্ঞোক্তিত মনে বাঞ্লারাম তথার উপনীত হইলেন। আল আর সে প্রেম বিনিময়ের স্থের দিন নহে, আর বিলারের দিন, মহা শোকের দিন। প্রথমে বাঞ্লারামের মৃথ দিয়া কোন কথা বাহির হইল না, কেবল চক্ষু দিয়া ললধারা বহিছে লাগিল। জিনি অন্য দিকে মুথ ফিরাইয়া নীরবে কাঁদিতে লাগিলেন। আথের পর্কতের অয়ি উলামের নাায় তাঁহার ভাবরাশি তথন চক্ষু নাসিকা এবং মুথ য়ায় দিয়া বেন উথলিয়া পড়িতেছিল। শরীর কণ্টকিত, মন্তকের কেশ সকল উয়তোম্বী, চিত্ত উভাত্ত। সম্ভোবির সেই অঞ্চবির্লিত মুধারবিক অব-

লোকন করিয়া আপনিও আঁপিনীয়ে ভাসিতে লাগিলেন। মহা লোকে व्याक्ति এवर वराकून रहेता डेव्य डेव्हत्त्रत श्रत्य मण्डक श्वाननपृत्तिक स्थवनान निःगत्क कॅनित्तन, উक्रायत महनकाल छेलाहत मश्चल छोरा बर পুষ্ঠবেশ অভিসিঞ্জি হইল। অনন্তর শোকাবের কবঞিৎ প্রশায়িত বাস্তারাম গদ্পদ করে বাষ্পাকৃদিত কর্তে বলিতে লাগিলেন, "(एथ সংস্থাবিণী, পৃথিবীতে আর সকল সংম্গ্রীই পাওরা যায় কিন্তু অকৃতিম সরল মধুর ভালবাস। বড়ই চ্ত্রাপা। কুখাতুরকে অল, ড্বিডকে भाभीय, बळशीनरक बळ, त्यांशीरक भया, खाछरक श्वामन बदर निवासक्र বিশন্ন ক্ষনকে আপ্রয় দিবার লোক এ পৃথিবীতে অনেক আছে; কিন্ত জদয়ের প্রেমণিপাস। কেহ চরিতার্থ করিতে পারে না। নিক্রের জন্য । আরে ডভ তঃধ করিত ইচ্ছা হয় না, তুমি অনাধিনী অবলা ভুট্মাত্রা-भिनो, (जामात अवद्या जाविया आमात क्षत्र कारिया बाहेरजस्य। (कामात তুখ শান্তিতে এখন আমার তুখ শান্তি। তোমার হাদিম্ব খেবিলে আমার মুধে হাসি বাহির হয়। হায় আমি তোমাকে প্রাণ ভরিষা আদির মৃত করিতে পারিলাম না! ইচ্ছা ছিল, সেবা করিয়া ভাল বাসিয়া ভোমার বত্দিনের স্কিত ভালবাসার ধণ কিছু পরিশোধ করিব, ডাহ: কৈ ছইল। কেনই বা তৃমি আমায় ভালবাদিলে গুৰদি ভালবাদিলে ডবে ষেম্ন ভাষা বছ বংসর গোপনে ছিল সেই ভাবেই কেন রাখিলে না ? ষ্টি বা প্রকাশ করিলে তবে বিধাত। কেন আবার ভাহাতে বিচ্ছেত ঘটাইলেন গু সেই প্রেমিক চতুরচূড়ামণির বুঝি এইরপই থেলা গু ডিনি CDI3टक बलान চুরি করিতে, आवार शृहश्चटक बटमन সাवधान हरेटछ ! व्यवता व्यामाहित्रक निवृत्ति मार्ल लहेवा याहेरात कना हेटा निवा এবং প্রীকা। বেশ। বেশ। তাই হটক। তোমার একাভিক ভাল-বাদা যে দিন হইতে আমি বুবিতে পারিয়াছি, সেই হইতে আমার हिछ छेवान्तर श्हेबार्ट, श्रायत खनल खिविने सामात क्रवात वृ वृ ক্রিরা জনিতেতে, ভাহা আর নিধিবে নাঃ সেই আগুনে আমি . অংশিরা পুড়িয়া বাক ছইব, মরিয়া ঘাইব, তাছার পর বর্থন ডোমার ঐ প্রেমবিশ্র সাহায়ে অনত প্রেমসিফুডে পিরা মিখিব ভবন সকল

জালা জুড়াইব; তথন নবজীবন পাইরা নিতাপ্রেমে তোমার সঞ্চে চিরবাস হইবে। তোমার মধুর ভালবাসা দেখিয়াইত আমি সেই প্রেমের সাগর অনস্থ গুণাকর রসিকচ্ডামনি ভগবান্কে চিনিতে পরিলাম। ভিনি যে কি স্পর রসময় তাহা তোমার উপলক্ষে শিধিয়াছি। এবং তিনি আবার কেমন হিতৈথী মঙ্গলাকাক্ষী শাসনকর্তা তাহাও এখন বিলক্ষণ বুঝিতে পারিতেছি। মামুষ গুলকে লইয়া কেমল থেনা করা! হটি ছিডি পালন কেবল কথা মাত্র, খেলাই উদ্দেশ্য। তা বেশ হয়েছে, তিনি যা করেন তাই ভাল। আমি কিছু বুঝি স্থাবা না, তিনি জ্ঞানী, তিনিপ্রেমিক, লীলারসম্ম, তিনি সব।

"কিন্ত এই যে ভোমার প্রেম, বে প্রেমের ক্ষন্ত দর্পণে আমি সেই অনস্ত প্রেমমন পুক্ষের অনুল ঐবর্য এবং ক্ষরীর সৌন্ধ্রীর আভাস পাইলাম ইহা কি অতীন্ত্রির আধ্যাত্মিক বিষয় নয়
 অব্দ্যাত্মিক শক্তি। প্রকৃত পদার্থটী যদি হইল আধ্যাত্মিক, ভবেত দেহ-বিচ্ছেদেও ইহ পরকালে আফর। ইহা সভোগ করিতে পারিব।"

সংখ্যবিশীর মূথে একটা কথাও বাহির হুইল না। তাঁহার উত্ম প্রস্রবদের ন্যায় চক্ষ্ হুইটা হুইতে নিরস্তর উত্তও বারিবিন্দু তবনও বাল্লরামের পৃষ্ঠ বহিয়া পড়িতেছিল। অতঃপর দেই রোক্ষদামানা বিরহকাতরা কামিনী স্কল্ন হুইতে মস্তক উঠাইয়া ছির সঞ্জলনেত্রে এক দৃষ্টে বাল্লারামের করি চাহিয়া রহিলেন। এত ক্ষণ যে সকল মহা বৈরাগ্যের কথা কানিলেল তাঁহাতে তাঁহার প্রেমসিন্ধু উছ্লিয়া উঠিতেছিল, এবং তাহার গৃঢ় অর্থ তীক্ষ্ লোহ শলাকার ন্যায় মর্মন্ধানকে বিশ্ব করিতেছিল। খেব ব্যন শুনিলেন প্রেম আধ্যান্মিক, দেহের অদর্শনেক তাহা ভোগ করা যার, তথ্ন বিজ্ঞেক্ষের ভাবন মূর্তি দেখিয়া ভিনি আর ছির থাকিতে পারিলেন না।

বাল্লারাম পুনর্বার বলিতে লাগিলেন, "ধদি আমরা পতি পত্নীর সন্থক্ষা বন্ধ হইল। চুই জনে গৃহাপ্রমে থাকিতাম, তাহা হইলেও নির্বেদ্ধ এই প্রেম্বত সাধনে সিদ্ধি লাভ করিতে পারিতাম কি না সন্দেহ। কারণ, তাহাতেও অনেক বিদ্ধ ঘটিবার সন্তাবনা ছিল। অত্যন্ত ঘনিষ্ঠতায় নিতাত প্রাধিনীয় বন্ধও পুরাতন নীরস হইয়া বার। প্রেম্বে ব্রহ্কে বিবাহ ক্রিয়া

নিভাষোপে হবী হয় গে পথের প্রভিবদ্ধক কেছই ছইতে পারে না। কেছবিমূক বুগল আত্মা নিকাম ভাবে পরস্পরের প্রাতি সংভাগ কবিবে, কেল কালের বাবধানে ইহার কোন ফরি নাই। সকাম প্রাণ্ড অপেক। এই নিকাম প্রীভিই বাস্থনীয়।"

এই সকল সারগর্ভ বচন প্রবণ কগত বহু হৃণ নীব্রে থাকিয়া সজো-বিবী বলিলেন, "বিবাহিত জীবনে প্রেম সাধনে যে বহু কিছু আচে বলিলে ভাহার অর্থ কি ৪ এক্রপ কথাত কর্ম ভাল নাই।"

বাস্তারাম হাসিয়া বলিলেন, "বিবাহ অবিবাছের কথা নয়; বিবাহও कानित्व कार्यकार्य कृत्व (अक्काहात्वव काना अक्की नाम। समात्कव सारात्वा देवम्बाद्य यद्वकाहात् महत्राहत् विवादस्य प्रदेशमाः व्याधान्तिक दश्चम माम्ब-क्रमा भार्थित प्रश्चात छा।ज कतिहा अ भट्ट पिनि हिन्द । भारतम जिनिहे মহাপুরুষ। किন্ধ সে পথে কে ষাইতে চার > বুদ্ধ বয়সে কি নিজান কালে কারো কারো সে ভাব হয় এই মার। কোন প্রকার পার্থির সুধ বাসনা থাকিলে আধ্যাত্মিকভার ব্যাঘাত করে এবং ভাঙাতে কালে মোহ উৎপর হইবার স্তাবনা। অগ্র বাজাবলম্বন ভিন্ন কিও অধাংক্র বিষয়ের ধারণা হয় না, ভাবরস ক্ষত্মে না, নিওঁণে প্রেম প্রকাইয়া বার: क्रफदार अलाद महासा वाजीक रुक्त अजी लाब क्रवरक अलाब बवा मगुरसाह প্ৰেফ অসম্ভাৱ। কেবল জ্ঞান ও ভাব উদ্ধাপন, আধ্যাভিত প্ৰেমজ্ঞির প্রকাশ জন্য প্রথমে ফুল স্পর্কনীয় বাছা পদার্থেই আবশাক, পরে ধরা সময়ে ভাহা হইতে উপকারিতা লইয়া মন্তর্ধে বে গমন কবিতে পারিল সেই বাঁচিয়া গেল। চিনার ব্রক্ষজান লাভের উদ্দেশে লোকে ৰাফ উপকরণ, বিধি নিয়ম গুরু আচার্য্য সাকার মৃত্তির আশ্রহ গ্রহণ করে, কি ফ অধিকাংশ বাজি সেই দুশামান মূল কড়ে অভিত্ত হইয়া পরে চৈডনোর রাজ্যে আর অক্সর হইতে পারে না। ১৯মনাধনেও ঠিক ভাষাই পটে। প্রকাভের मृत्त्र शुक्रुय मिनिए एवं तथम महालाव केलार्कात्मव समा, किंद्र (सर्व हेस्सिब-ৰাজ অভি মাংসের রাজ্যে আত্মহারা হইরা কালারা মূল উদ্দেশ্য ভূলিরা . বার। এই জন্য বলিতেছিলাব, এ পথে অনেক বিশ্ব আছে। আছে। वल दर्शन, त्थाम वड़ कि जल वड़ !"

সংস্থাধিণী। প্রেমই বড়। প্রেমেডেই রূপের প্রজি এত আবর্ষণ উপস্থিত করে। প্রেমের ওপে কুরূপও স্থার শেখার। তবে একটা কথা এই, রূপতৃষ্ণানিবারিত নাহইলে সাধারণতঃ প্রেমে ক'চ করে না।

বাস্তা। আমি কিন্তু ডোমার সেই প্রেমকেই সর্বাপেকা লোভের সামগ্রীমনে করি। দেহের উপলক্ষে সেই লক্ষ্য সিদ্ধ হয় এই জন্য ডোমার দেহও আমার বড়প্রদা এবং আদেরের সামগ্রী। ইহাবদি প্রীহীন রূপ ভগ ব্যাধিযুক্ত হয়, তাহা হইলে আহো স্নেহ মড়ের সামগ্রী হইবে।

এ কৰা ৰাঞ্চাৰামের কভ দূর সত্য তাহার প্রমাণ প্রয়োজন। প্রেমমোহে মোহিত এবং আগ্রপ্রবঞ্চিত হইয়াও মানুষ এরপ উচ্চ নিয়ার্থ ভাব অনেক সময় ব্যক্ত করিয়াধাকে।

সংস্তা। আমি প্রেম এবং রূপ উভর্ই ভালবাসি। আরাও চাই,
শরীরও চাই। সাকার নিরাকার চুইরেরই প্রয়েজন। ভরু নিরাকার মনে
ইইলে প্রাণ যেন হাপ হাপ করে। আমেরা মেরে মানুষ, অত স্ক্র জান
ধরিতে পারি না।

ৰাঞ্ছা। আমিও কি ভাষা অপীকার করিতে পারি । ঠিক কথাইত তুমি বিনিতেছ। "আবে সূল তার পর কৃষ্ম; আমের শরীর পরে আত্মা। দেহ ব্যতীত প্রেম নিগুর্ণ হইরা পড়ে, কেহ ভাষা বুনিতে পারে না। মাতৃত্তান, জাহার স্থাই ক্ষেহকোল, স্থাপার্শ বাহর্গল, মধুমাধা সাদর বচন, পেশা- লিক্ষন চুম্বন যদি না থাকিত, ভাষা হইলে মাতৃত্ব কি কেহ বুনিতে প্রাইত গ্নামাতৃতাক্ত জামিত ? মানবদেহ জড় অসার, কিন্তু সামান্য সামগ্রী নহে, দেবতার মন্দির, হিন্তির নীলাধাম।

সজোষিণীর এ কথার মুখে হাসি বাহির হইল। কিন্তু সে হাসি মেলা-বৃত চন্দ্রগোর ন্যায় মলিনতামিশ্র অনুভক্তন।

বাজারান বলিলেন, "আমর। বাহা চাই তাহা পাইয়াছি; কারণ, আমি তোমার হইয়া গিয়াছি, তৃমিও আমার হইয়া গিয়াছ, তবে আর বাকী কি আছে ? আমি তৃপ্তকাম হইয়াছি, বেহেতু তৃমি আমার আজহ। তৃমিও এইরপে তৃপ্তকাম হও, বে বেশে বিচ্ছেদ নাই সেই বোগের রাজ্যে বসিয়া চিরপ্রেম দজোর কর। এ প্রাণের গৃঢ় বোগ মরিলেও যাবে না, বিচ্ছেত্ত ভাঙ্গিবে না। বেধানে থাকি ইভরে একাল্মা এক জ্বন্ধ এক আৰ হইয়া সুৰ্বে বিচন্ত্ৰ করিব। দেশ কাল আমাদিগকে বাবধান করিয়া রাখিতে পারিবে না। বেধানে ভর বিকার শোক হংব জারা মন্ত্রণ কাল্লা। সেধানে আর ধাকিব না, চির জানলের অমর গামে জনত প্রেমন্ত্রের বক্ষে বাস করিব। কেমন, ইহা কি আজ্বোদের স্মাচাব নয় ।

সংস্থাবিণীর মুধ প্রজ্ল হইল, একটু সাহৰ ভরসা আবাদা উৎসাহের জ্যোতি জলসিকে নরনস্গলে দীপ্তি পাইল। ভাহা দেখিয়া বাজারাম আবার বলিলেন, "সেই পরম পিতা পরম মাতা পরম বস্কু প্রাণস্থাই আমা-দের চিরপ্রেম্মিলনের ভূমি। তাঁহার সঙ্গে মিলিড হইরা আমার। ঐহিক সৃত্ত্ব প্রক্রারে চিরবিদার লইব।"

"বিদার" শক শুনিবামার সহসা সম্বোষিণীর সেই সহাস চেন্তানৰ বিষাদের খন মেছে চাকিয়া কেলিল। মুখ খেন কালী বর্ণ ছইবা গেল। হস্ত পদের বল নিধিল হইল। অবশেষে ঘাড় ভালিয়া পড়িল। খেন মুভের ন্যায় মুদ্ধিত্তি হইয়া ভিনি শুইয়া পড়িলেন।

যথন এইরপ দুশা ঘটিল তথন বাধারাম কি কবিলেন । তিনি সীর ইচ্ছান্তিকে সংহত, দুনীভূত কবিলেনা এবং সেই ইচ্ছামর প্রমণ্কবের ক্ষণস্থ প্রভাব ধারণ করত একারা চিত্রে সম্বোধিনীর ঈ্যবাদামীনিত চন্দ্রের ক্ষণস্থ প্রভাব ধারণ করত একারা চিত্রে সম্বোধিনীর ঈ্যবাদামীনিত চন্দ্রের ক্ষিকে চাহির। তাঁহার মন্ত্রুক এবং পুঠে হল্পান্দিন কবিতে লাগিলেন। অভ্যাপর মহাশক্তির আপ্রিত তাঁহার সেই ইচ্ছান্সক্তির অণোধিক তেন্তে সম্বোধিনীর দিবা জ্ঞানের উপর চন্দ্র্যাপন করিয়া শেষ উন্মাদ্র্যাক্ষর হিলেন। মেখাছ্রের স্থানর নিবিছ অক্ষার প্রবেশ ব্যাদ্র্যাক্ষর হাস্য কবিলেন। মেখাছ্রের স্থানর নিবিছ অক্ষার প্রবেশ ব্যাদ্র্যাক্ষর বাধারামের প্রেক্তি আধ্যান্ত্রিক প্রান্তর মন্ত্রী তথন ব্রিক্তি পাবিলেন, এবং ব্রিয়া হাসিছে লাগি-লেন। নিজাবন্থার কোন কেবন্তে পাবিলেন, এবং ব্রিয়া হাসিছে লাগি-লেন। নিজাবন্থার কোন কেবন্তে আসিয়। বেন কাবে ব্রে সেম্বন্ধ্র হারাক্ষের ক্ষান্তর অর্থ তাঁহাকে ব্রাইর। বিরা সেল। বলিলেন, তাবে কি আমার সকল আশার ছাই পড়িল। চঞ্চল চণ্ডার জ্যোতি জনম্ব্রীরার ক্রিয়া পেল। ছবিকেন, ব্রিয়া পেল। ব্রিয়া পেল। ত্রিরা পেল। ছবিকেন, ব্রাইরা প্রান্তর ক্রেয়ার ক্রিয়ার প্রান্তর ক্রেয়ার ক্রিয়ার প্রান্তর ক্রেয়ার প্রান্তর ক্রেয়ার প্রান্তর ক্রেয়ার ক্রেয়ার প্রান্তর ক্রেয়ার ক্রেয়ার প্রান্তর প্রান্তর ক্রেয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার প্রান্তর ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্রি

शिक्षा (अंच कुनुदराभी त्यात कारानत्म श्रांत्रदाष्ट्रिक अवश कक्ष विकक्ष करेंग । মহাবেলে ছুটিতেছিল বে জ্লব্যের নদা তাহাকে কে বেন ভীমবলে ঠেলির। উৎসের অভাতরে প্রবেশ করাইয়। দিল। ফুকোমল প্রেমকুত্মকালকা বসভের সুবিমল সমীরণ হিল্লোলে, তকুণ তপুনের লিয় উত্তাপে ফুটিয়া উঠিতেছিল এমন শম্ম অদৃষ্টচক্রের নিদারণ প্রহারে ভাহাকে ভিন্ন বিচ্ছিন্ন করিয়া ফেলিল। এটা মুখ, না চুঃখ ? অথবা চুঃখেতেই মুখ ? ঠাকুর কভ नीलाहे (एशहेलन ! कृ:थ श्वकारतत जिलत कांत्र लोला एमें दिल वह यन নয়। আমি এবার ছঃধে স্থী হটব, আঁগারে আলোক দেখিব, ছোর বিপদের মধ্যে শান্তি সভোগ করিব, অবস্থাতরত্বের ভাষণ আন্দোলনে পডিয়া, ভয় নিরাশ বিরহ সম্ভাপে জর্জ্জিত হইয়া অনম্ভ নির্বাণে মিশিয়া ষাইব। মন, আরে তুমি অধীর হইও না। তুংপাঞার নির্মাণ দর্পণে লীলা-মুয়ের নবলীলা দুর্শন কর। এমন ফুলর রূপ আরে অনা সময় দেখিতে পাইবে না। পরীক্ষার কুর্জ্জন্ম আঘাতে হাদয় ভগ চুর্ণ করিয়া ঠাকুর কেমন ছাসিতেছেন ৷ আহা ৷ তবে আমিও হাসি ; হাসিতে হাসিতে কাৰিয়া क्लि. आवाद कांक्टिफ कांक्टिफ शामिया किता शिक्त, मानवकीवरन ষম্রণাও অনেক। কিন্তু যন্ত্রণার ভিতরে ক্যাবার তোমার অপরূপ লীলাও অনেক দেখিতে পাই।

"সভোষিণি, তুমি বড় অভাগিনী। এখনো কি ভোমার এ সংসারে সুখ-ভোগ করিবার ইচ্ছা আছে

 এখন অককারে বসিরা নিরাকার ভোজন কর, শৃত্তে উড়িরা বেড়াও। এই জন্যই বুঝি প্রভু আমাকে এড কাল মারাচক্রে কাঁধারের মধ্যে ঘুরাইরাভিলেন

 ভালবাসি কেন ডাও ডিনি বুঝিডে দেন নাই। ডিনিই সভ্য, আর তাঁর প্রেমই সভ্য, আর ঘাহা কিছু স্ব কাঁকি, যাত্ত্রের ভোজবালী। যা হউক, বেশ হইল, বাঁচা পেল। যাঁর ধন তাঁর কাছে কিরে পেল। আমরাও চল এখন সেইখানে গিরা ঠাওা হই, প্রাণ শীতল করি। এই লও ঠাকুর, ভোমার ধন ভূমি লও, লইরা যাহাইচ্চা হয় কর "

এই কৰা বলিয়া ছই জনে মন বুলিয়া বুৰ একবার হাসিলেন। ছুঃখ বিপাদে পড়িয়া এক প্রকার নুডন বিধ আমোদ অমুভৰ করিলেন। ভালবাসার লোকের সহিত চুংগ ভোগেও অনেক মুখ আছে। তথ্য মহাবৈরাপ্যের আনন্দে চিত্ত সবল হইল, জ্বর খাতি লাভ করিল, অসার
অনিত্য সুধলালস। মন হইতে চলিয়। গেল। এখন আর মনে লোভ নাই,
মুডরাং ক্ষোভও নাই; আখা পিপাসা নাই, ভরও নাই। অন্তর্বিকার বধন
চলিয়া বার, মন বধন নিস্পৃহ নিরাকাজক হর, তথ্য মমুবা মুখ চুংথের
অতীত পরম খাতি সভোগ করিতে থাকে। এই শাভিই প্রাচীন আর্হ্যবোগীদিপের স্পৃহনীয় ছিল। সভোগ্রণী এত ভিনে প্রদের ভিতর অমুভের আহাদন পাইলেন এবং মুহারাজা অভিক্রম করিয়। অমুভের শধে
প্রাপ্তি করিলেন।

এই রপে বখন জাহার প্রেমবিক্সিত বদনে মধুর হাসাম্বা স্থারিতে লাগিল এবং দিব্যক্তান প্রভাবে যখন ভিনি বীবনারীর নাার ঐ সকল উচ্চ বৈরাগোর স্থাই কবা বলিতে লাগিলেন, তখন আবার বান্তারামের স্থার শোক্ষিক্ মহাবেগে উপলিরা উঠিল। এমন জীবনসন্মিনীকে চাড়িয়া বাইতে হইবে, এই ভাবিরা তিনি অভিশ্র কালিতে লাগিলেন। অনস্তর প্রিঃস্থীর হাত তুই খানি নিজবল্লে ছাপনপূর্মক ব্যাক্ল চিয়ে বালকের ন্যার কালিতে কালিতে বলিলেন, "দেখ, আমি আমার স্পায়র উপ্লানি করিয়া সকল কবাই ভোমাকে বলিলাল। এবন আমার স্বায়র ইয়া মা আনক্ষরী বিব্রস্থিনীর প্রভাবে, বে ভূমি আমার সগর হইয়া মা আনক্ষরী বিব্রস্থিনীর প্রভাবে প্রাহাক প্রিয়ারিবে। ভূমি সেই অধিল্যাতার প্রতিন্দ্র্যক্ষা, তাহার প্রকৃতির মার্মুর্য রসের কপিকা ভোমার স্তর্গর আচে। ভূমি সেহের প্রভিমা, প্রেমের প্রথমনি ভূমি আমার উপরে সেই স্থীর মধ্রি সংক্রোমত করি-রাছ। আমি বাস্তবিক অকর্ম্বণ হইয়া পড়িয়াছ, চলিবার আর মন্তি নাই। ভোমার সঙ্গে মিশিরা অত্তে বেন আমি সেই প্রেমস্বৃদ্ধে পিরা পড়িতে পারি। আমির এ এইবন ভোমার হল্ড সম্বর্ণ করিলাম।"

সংস্থাবিশী তথন প্রকৃতিত ভিলেন, বালাগানকে স্থাই বচনে আখা-বাক্য প্রজান করিলেন, উচ্চ বিখাস ও বৈরাবোর কথা বলিলেন, সাত্স ভারসা ভিলেন, ব্যার্থ ধর্মবৃত্ব ন্যার কাল্য করিলেন।

দশম পরিচ্ছেদ।

বনপ্রস্থান।

বধন এক স্থানে বাকিয়াও ঠাঁহার। চুই জান বোগরাজ্যে অতী স্থিদ আগতে বাস করিতে লাগিলেন তথন উভরের প্রাণ পূর্ণ হইল। ভালবাসার সামগ্রী বত ক্ষণ বাহিরে অবস্থিতি করে তত ক্ষণ তাহার আংশিক সস্তোগ হয়, তদনত্তর আত্মন্থ এবং প্রাণম্ম হইলে আর বিচ্ছেদের ভর থাকে না, তথন উভরে তম্মত্বলাভ করে। এই বোগের অবস্থার চুই ক্লনে যখন অবভার করিলেন, তথন আপনাতে আপনি সভ্তই, একাখারে প্রকৃতি প্রুবের বিদ্যান ইইল।

মৃত্যুকালে বেমন লোকে সংসার ভাড়িয়। বায়, সেই ভাবে আত্মীর বায়ব পরিত্যাগ করিয়। বিবয়বঁশন কাটিয়। একাকী উদাসীন বেশে বায়ারায়্র বছরিকাল্রমের অভিয়বে চলিলেন। মনে কোন বিবয়ের জ্বন্য আরে এবন আশা নাই, অপেকা নাই; কুন্পুর্ব নিরপেক্ষ নিরাকাল্রম হইয়া চলিলেন। জীবনের প্রভ্যেক মৃত্র স্মিষ্ট স্থকর বোধ হইতে লাগিল। প্রাম নগর, পুর জনপদ, পথ প্রান্তর, নদী সরোবর, কানন ভ্বর, জড় উত্তিয়, পর্প পত্মী আকাশ অন্তর্গীক মানব মানবী যেখানে বায়া কিছু দেখিলেন ভায়তেই হাজ-রের ভার উর্থলিয়া উঠিল। একমাত্র এবন সক্ষয় বে, একটা নিরপেদ দিক্ষিক ছানে বিসয়। কিছু কাল বোগসাধন করিবেন। বে নিগ্ত প্রেমভ্যের মধুর রসে হাদর উদ্বলিত হইল ভায়তে সিক্ষকাম হইবেন এই বাসনা।

পৰে টেনে বেগাড়ীতে যাইডেছিলেন সেই গাড়ীতে একটা দেশহিতৈবী ভিৰাত্তী বাবু ছিলেন। তাঁহার গায়ে আলপাধার চোলা, নাকে আইগ্লাস, মাৰায় পিরাণীপাগড়ী, বুকে ঘড়ির চেন, মুধে চুরট এবং চাপদাড়ি; চেহারা বানি বেশ রকমসই। হাতে এক বানি কেতাব। মার্জ্জার বেমন মুখকের প্রভি লক্ষ্য করে, আড় চবে আড় চবে চাহিয়া তেমনি ডিনি র্ফেবিলেন, একটা গন্তীঃ মুর্তি ভন্ত সুখা ছির ভাবে অসন্য মনে গাড়ীর এক কোণে বসিরা আছে। তাঁর মিকট উঠির। আসিরা "হাবেণা! বিষ্টার বনার্জা, হাউ ডুইউ ডুই" এই বলিরা হাও বরিরা সজোরে এক সেকহ্যাও। বাপ্পারাম কেল ফেল করিরা মুধ পানে চাহির। অতি কুটির ভাবে বলিলেন, "মহামদের নামটা কি ।" "ও মাই ডিরার ফেও, আমাকে চিন্তে পার্লে না। সেই বে!" অর নামাইরা আন্তে আতে "ভোরবাগানে আমার বাড়া, আমার নাম অলীকচন্দ্র দাস বোষ, ইাইকোটের জন্ম অনারেবল ম্বারনানাথ মিত্র আমার অলীকচন্দ্র দাস বোষ, ইাইকোটের জন্ম অনারেবল ম্বারনানাথ মিত্র আমার অলীকভন্ত দাস বোষ, ইাইকোটের জন্ম অনারেবল ম্বারনানাথ মিত্র আমার অলীকভিন্ত হইতেন। আমি আন্দ্রের রাজবাড়ীর বোহিত্র সন্থান। আপনার বাড়ী, আপনার মাত্রনালর এ সমস্তই আমার জানা আচে। বসম্বন্তরর বোড়ীর মুক্ত্রি, তিনি আমার মামারভির। অনেক বার আপনালের প্রামে গিরাছি। সেবানকার ক্রমিণার বর্গাপ্রসর বাব্ আমাকে বিশেষ অনুগ্রহ করিয়া থাকেন। তিনি আমার ইডেন বালিকা বিদ্যালয়ের জন্য কিছু কিছু চাঁগাও বেন। (হাসাম্বে) অপনার সঙ্গে এক পার্টিতে কও বার যে আমি আমোন ক্রিছি। হার হায়। সব ভূলে গেছ ভাই।"

বাঞ্চারাম অববক্। একটুপরে তিনি ্**টি**জনাসা করিলেন, "মহাশরের বিষয়কথ কি কর। হয় গ"

অলীক বাবু হাসিয়া উত্তর করিলেন, "হঁ বিষয়কর্ম্ম ! বিষয়কর্ম আয় কি, জনসেব। ! ববের থাইয়। বনের মহিষ শাড়াই। পৃথিনীর হিছে সমস্ত জীবন অর্পণ কয় হইয়ছে। আপনার স্ত্রী পুত্রের সেবাত শেয়াল কুরুরেও করিয়া থাকে গা! স্ত্রী ব্যাটি কাশের কাছে লানে লান করে কেঁলে মবে, কত কি বকে, কিন্তু আমি বাড়ী গেলে ত! পথে পথে বিজেশেই কাটাইয়া ছিই। পরহিতে বছি প্রাণ না দিলার তবে আয় বাচায় স্থাকি? হায় স্বার্থপর বাজালী জাতি, কত ছিনে এয়া অলেশহিট্রী হইবে! মহালম্ম আমি ছেবিয়াছি। আপনার মত বিয়ান স্পত্তিত পরেশকালী ব্যাজিকে ছেবিলেও প্রা আছে। আপনার মত বিয়ান স্পত্তিত পরেশকালী ব্যাজিকে ছেবিলেও প্রা আছে। আপনার কি আয়ায় কটন্ শিল্প বিল্ঞান লয়ের করা তনেম নাই! সম্প্রতি এই নামে একটী ইণ্ডাইরিরেল্ স্থা

পোলা হইবাছে। ওনেছেন বৈকি, আমি বে আপনার নিকট ইইছে চাঁছা আছাত্ব করিবা আনিবাছি! (সার্কিব মিথা) আপনার মাতৃল বিংবা-বিবাহের এক জন উৎসাহদাতা বন্ধু আমি সকলই অবগত আছি।"

खनोक वातूत खिकारण कथाई खनोक, किन्छ छाहा ध्यमनि लाकत्र क्षक, শ্রুতিমধুর, আত্মগরিমা-প্রতিপোষ্ক বে, সহক্ষেই তাহাতে রাজা জমিদার ধনী ভোষামোদপ্রিয় ব্যক্তিরা টাকা বাহির করিয়া দেয়। বাবুর হস্তান্থিত পুछक थानि चात किहूरे नव, छाराएक ठाँमामाहनत्वत नाम निशिवक चाएक, खनः ठाँचात कुछ कीर्जिक्नारणत छेरम्मा विषयक मुख्यि **अपू**र्शन भेज आहে। चात्र के मध्यक यथन वाहात्र नात्म हेरताचि मर्वानभृत्व व्याग्रमा चुथाछि ংঘাৰিত হইয়াছিল ভাৃহ। সংগৃহীত আছে। উহা দেখাইয়া নামলুক নির্কোধ ধনীর নিকট চাঁদা আদায় করা হয়। টাদাদাতুগণের নামের মধ্যে ष्यत्नटक्ट होका (एव नार्ट, पिटव दि छात्रात कान कथा छ त्र नाहे, ख्वानि नाम चार्छ। खाश स्मिर्ण चर्ना होका मिरव। खिवाबी वातूब निष्यश्वरुखां पृष्टे शाँठी कना। यात्रा हिल छात्रामिशतक नरेश अकरन স্থ্যটী চলে। পারিতোষিক বিভরণের সময় তিনি বৎসরান্তর পাড়ার ছোট ছোট ঝলিকাদিগকে ধেলনা পুতৃল ও মেঠাই সন্দেসের লোভ দেখাইয়া একত্র বড় করেন। এ সকল ফাঁকির বাাপার স্থল ইনেস্পেক্টর বাবু একংর धवित्रा क्लियाहित्तन, त्मरे हहेत्छ शवर्गसालीत माहाया वक हहेत्य । প্রভারণার জন্য শ্রীখনে যাওয়ারও আয়োজন হইয়াছিল, ইনেম্পেইর বাবু कान बकरम वाँठा है बा (पन। छाहात शत हहे एक भाषात्र महाता বাবুর স্থূল চলে, অর্থাৎ তাঁহার সংসার চলে। নিঞ্চের সম্বন্ধী স্থূলের শিক্ষক আর কন্যাপণ ছাত্রী।

কটন শিল্পবিদ্যালয়টীও বেশ নৃতন প্রণালীর। তিথারী বাবুর শৈতৃক বাসভবনের সংলগ্ন কডকগুলি ছোট ছোট ঘর ছিল, তাহাতে ভাড়াটীরা কল্, মল্লরা, তাঁভি, ছুভার, কুমার, কামার, চামার, প্রণকার, ধোপা, নাপিত, দপ্তরী ইত্যাদি ব্যবসালা ব্যক্তির। বাস করিত। ধোপার ব্যবসাল শিক্ষা দিবার জন্য জ্লীক বাবু বিশেষ ব্যুমীল। ধোপারা বড় দ্মোকে, তাহা-দের একচেটে ব্যবসাল বাহাতে উঠিয়া বাল তাহার জন্য তিনি বিশেষ উৎসাহী। ইহারই নাম 'কটনশিলবিভ্যালয়'' ইংরাজের। ট্রাজে বেগিং বাবু বলিরা ডাকিড, ডাই আমরা ভিধারী বাবু শব্দে অসুবাহিত করিয়াছি।

বাবু টিকিট কিনিয়াঙেন তৃতীয় শ্ৰেণীয়, শ্ৰীয়ামপুর পর্যান্ত, কিন্ধ চাণি-श्वारक्षन विशेष त्वाष्ट्रिक क्षात्र कथात्र देख्यान विशेष कार्यिक क्षात्र कार्या ছিত। বাঞ্চরামকে ভাল মানুষ পাইরা বলিলেন, "মহাশহ, কামি বড় জুল করিয়াছি, আপনার সঙ্গে কথার কথার অনেক দূরে আসিয়া পড়িয়াছি, অতিরিক মাত্রল গুটিপাঁচেক টাকা আমার চাই। এখন আমাকে ধার ছিন, भटा भाष कविव " है।का भाउति नहेटनन, चारुविक छ।छ। चात्र किटनन ना. সেই টাকার আসানশোল পর্যান্ত আর একবান টিকিট লইছা কেলনাবের क्टिंटल हिकिन बाहेबा बाक्षाबाटमव ऋत्क शिक्षा शूनवाब अब कविटलन, अबर विनित्नन, (म " (भशावत्भात्नव वास्रवाफीएक अकवाव माहेटक स्टेटन। চলুন ভালই হইল, আজ আমার বড় ৩৩ দিন বে মহাপদ্ধের সঞ্লাই-্লাম, এক সক্ষে কডক দূর যাওয়া যাক।" যাইতে যঃইতে পথে বালি হইয়। গেল, বাঞ্চাবামের একটু তন্ত্র। আসিল, সেই অবসরে বেলিং বারু বাঞ্জারামের কুত উপকারের বিনিময়ে তাঁহার পোর্টমাণ্টিট লইয়া একটা ষ্টেদনৈ আত্তে আত্তে নামিয়া পড়িলেন। বারারাম মাগিয়া পেথেন সে বাবুও নাই, তাঁহার পোটম্যাণ্টও নাই। ইহা ছেবিয়া ভাঁহার হাসি পাইল। ভাবিলেন, পুৰিবী কি আংশ্চৰ্য্য দীলার ভাল। লোক ওল খেন নানা সাজে সাজিয়া যাত্র। অভিনয় করিয়া বেড়াইডেছে। দেশহিতিবশাত कोविकानिर्वाट्य छेशात्र एटेल ! लाकिछैः कि ठकुत ! कि वाहाल ! अञ्चल ভদ্রবেশগারী দেশহিত্তী বাবু চোরত কর্বন দেখি নাই! याक বেশ হই-ষাছে, ভার কমিয়া গেল, নিশ্চিম্ন ইইলাম।"

ভদনত্তর পরিধের এবং উত্তরার বসন রাম্বজের মাটাতে বজাইর। দাড়ি পোঁক নথ চুল রাখির: সয়াসে বেশে গমাজানাভিদ্ধ থ তিনি বাজ। করিলেন। সহজেই তিনি নির্দ্ধ সংসারত্যাগী ভাহার উপর বেগিং বাসুর এই দৌগাল্যা, ইহাতে বাঞ্চামের চিত্ত আরও উদাস কইর। পেল। মারাবদ্ধ কীবের তুর্গতি দুর্শনে তিনি একটু আমোধ্য অমুভ্র করিলেন।

একাদশ পরিচ্ছেদ।

विष्ठिम यल्या।

মামুষ ষতই কেন জ্ঞানী চিস্তাশীল তত্ত্বশী হউক না, ক্ষেহ থাকিতে ক্ষেত্র ধর্ম অতিক্রম করিয়া কেবল নিরাকার লইয়া সফট থাকা ভাহার পক্ষে বড়ই কট্টসাধ্য বাপোর। এমন জ্ঞান্ত বিখাস কর জ্ঞানের আছে বে, ভাহারা নিরাকার চিমায় অভীন্তিয় প্লাপ্কে সাক্ষাং প্রত্যক্ষ আত্মীয় বাজির ন্যার স্পষ্ট অমুভব করিতে সক্ষম হইবে ৷ বিশেষ স্ত্রী জ্ঞাজি; ইহারা যোগধ্যান তত্ত্তিয়ার জ্ঞান স্ট হয় নাই। নিরাকার ভজিতে গিয়া কভ কত জ্ঞানী পুক্ষও শেষ অভ্যাদী নরোপাসক হইয়া প্রাণের পিপাস। মিটাইভেছে।

সভোষিণীর সেরপ প্রেয়েশত চা উচ্চ বৈরাগ্য অধিক কণ রহিল না, ভাহা থাকিবার নয়। আশার সামগ্রী নিকটে উপস্থিত থাকিলে পিপাসা . বেশী পাকে না, কারণ মন তথান জানে যে সে যাহা চায় তাহা পাইয়াছে, আশে ঠ্নণ্ডা আছে; সে অবস্থার অনেকেই কল্যকার জন্য না ভাবিয়া মর্কট ্রেরাশী হইতে পারে।

লাভাবিদ্ধী প্রিয়তমকে বিদায় দিয়া এক্ষণে চারিদিক শূন্য দেখিতে লাগিকোন, বিষাদেক খন অন্ধনারে উছার জীবনকে আচ্ছর করিয়া ফেলিল,
কালে ছ ত্ করিছে লাগিল, হৃদর খালি হইয়া গেল। বাস্তু রামের স্বর্গীর
ক্ষিত্র প্রভাবে এবং ভদীর ডব্রোপদেশের গুণে চিত্তে যে বৈরাগ্যের
ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র এবং ভদীর ডব্রোপদেশের গুণে চিত্তে যে বৈরাগ্যের
করাল মৃত্তি দেখিরা তিনি কাদিতে আরম্ভ করিলেন। বলিলেন, "আমি
বোনী বৈরাগীর ন্যায় কেবল আত্মত্তর লইয়া নিরাকার ভাবিরা কি স্থতির
থাকিতে পারি ? বাহু সাহায্যে অন্তির জ্ঞানযোগ সাধনের কথা যে তিনি
বলিয়াভিলেন ভাহা মানি, কিন্তু ভাহা কি ছই চারি বৎসরে সিদ্ধ দুরু প্র্ণেটের ছেলেকে মা যদি অন্যভ্রে না দেয়, কোলে পিঠেন। করে, সে ছেলে
মা বলে না, কাছেও আন্যে না; সে মাণ্ড ছেলেকে গ্রহ ম্মতা করে রা।

শিতার ধ্রেমানিকন বাৎস্ব্য না পাইকে পুত্র কি পিতৃত্তি লাভ করিতে পারে ? মাতৃ পিতৃভব্দি, ভাতৃপ্রণয় বেমন, প্রেমণ্ড আধ্যাল্লিকভাবে পরিশঙ ছইবার পূর্ন্দে তেমনি ছেখা ভন। দেব। ভলাবার উপর নির্ভব করে। এ সক-লের সাহায্য কি আমি বধা পরিমাণে পাইগ্রাভিণ হার। আমি তাঁর কাচে বসিয়া, পুন: পুন: জাঁহাকে চক্ষে দেখিয়া ভুলিয়া পাঞ্জিম, এখন আমাকে কে জুলাইরা রাখিবে १ চকু কর্ণের লালস। বে এখনো আমার চরিভার্থ হয় নাই। ইচ্ছা হইতেছে পাৰীর মত উভিন্ন তাহার কাছে বাই, গিয়া একবার দেখিয়া আসি, ছুইটা কথা শুনিয়া এবং বলিয়া আাদি। ভাবনা চিন্তা তৃঃখ সন্তাপে ৰুদ্দি মুডপ্ৰায় হই, কৰে এ কঠোর সাংনই বা করিবে কে १ সাধন করিতে হইলে যে একট উৎসাহ অধ্যবসায় চাই, ে আমিত সে টুকুও দেখিতে পাই না! যদি ভাকাইলা মতিলা গেলাম ভবেত भवरे बार्थ इन्ता कर्छात जक जननमन दाता जननमानित्य गतीश्रक ক্লেশ দিতে পারি, স্থ বিলাস ত্যাল, করম ভোগন, ভূমিশ্যায় শ্যন, जामाना अर्थन वजरन कोवन शावन अपाया नरह; किन छाहार अन्य . यक्ति भाषि आदाम ना भारे, उटव ८४ (कशन कक्षे तहनहें भाव हरेटत । आप (य कामात वर्ष वालि वालि (तान रग्न । अन्ध्रिति मुना पश्चिम उरिधाटक, कोवनविरुक्त कामात कार्याय (कान् एमर्ग উड़िया (तन । राय ! मकनरे चारक. एकरल এक वन नारे।

"আহা। কি মিট কথা গুলিই বলিয়া গেলেন। কথা গুলি ভাল, কিছু মুখ খানি কৈণ দে হুজর মধুর অখর, সে হুবামছ কর্মনিনি কৈণ বে দিবাকান্তি শান্তপূর্ব আনল মৃতিটি কৈণ কৈ দে প্রশাস উজ্জ্বন নরন ছটী কোথা পেলণ বে পালপল খ্যান করিয়া আমি পূব্য সক্ষয় করিবাম সে পদস্বই বা কোথা রহিলণ পড়িবার বর, উদ্যান, ছাল সকলই শুন্য পড়িবার বহুরাছে। আহা! সে নির্দ্ধোর শিক্ত্বায় বছন কমলের হাসি আরে এ ত্বিত চক্ল কি দেবিতে পাইবে না! দেই অনিত্য ভাষাত্ত বুবিলাম, কিন্তু প্রাণ ভাষা মানিল কৈণ শারীর নাই অবচ মামুব আছে, এটা কিছুতেই ধরিতে পারিতেছি না। কিন্তু খিনি আমাকে ভাল বাসিনিত্য ভিন্তু খারীর নহেন আছা, তবে আছা বারা তীহাকে ভাল না বাসিরা

শারীর দ্বারা কেন আমি শারীর বুঁজিরা বেড়াই ? হার আমি কাদিবই বা কার কাছে ? কে আমার চলের জল মুছাইবে ? ভগ্নী ভাজার বিগ্রহে, পুত্ত পিতা মাজার বিচ্ছেলে বাাকুল হইয়া কাঁদিলে সকলে আহা বলে, কিন্তু আহি ভীবনসর্বাধকে হারাইরা কাঁদিতেছি, তথাপি আমার প্রতি কাহারে।ভ দ্বা হইবে না!

"বিদার কালে তাঁহার কাছে গিয়া হার আর একবার প্রাণ ভরির। কেন
কাঁদিলাম না! অন্ধনরে আনকারে অনুশাভাবে ক্রেম তিনি অন্তর্হিত
হইলেন, শেব কেবল গুটি কডক বাক্য মাত্র কর্ণে প্রবেশ করিয়াছিল।
বহি দেখা সাক্ষাৎ না করিয়। অন্ধরণে বসিয়া কেবল কলা শুনাইতেন তাহাক্রেম আয়রি প্রাণ প্রবেশ মানিত। বাহিবের ক্রিয়া সমস্ত বন্ধ হইলে
আয়রিক প্রণম প্রমাণ অভাবে দে শুকাইয়া যাইবে। কেবল বিশ্বাসের
উপর নির্ভির। বৃদ্ধানী কর্মা।" কৃতিন বটে, কিছ তদ্ভির দে প্রেম তাহা
বিক্রুতি। বিশ্বাসই প্রেমের জীবন। সম্বোবিশী পুনরার বলিতে লাগিলেন, "আহা কোলার পেলেন, কি করিতেছেন, কিছুই আনিবার উপায়
নাই। পত্রাপত্র লিধিবার ঘদি নিয়ম করিয়া দিতেন, তাহা হইলেও মনকে
কতকটা সাত্রনা দিতে পারিভাম। সকল পথই দে বন্ধ। ব্যা বন্ধীর নাায়
কারাবন্ধ হইয়া রহিয়াছি। যথন আমি মনে মনে পোপনে তাহাকে ভাল
বাসিতার, সে অবহা যে আমার ইহা অপেক্যাছিল ভাল।

"আহ। প্রিয়ত্যের কি বিনম্র অমারিক ভাব ! কি লয় মার ! আমি
লামান্যা অনাধা অশিকিতা চু:ধিনী নারী, আমার প্রতি তাঁর কত মর্গ্যালা সন্ত্রমই না প্রকাশ পাইত ! আমার পার্থিব জীবন ভেল করিয়া অমরত্বের শোভা
ক্ষেত্রিক, তাই দেখিয়া এত সন্থান করিতেন, ভাল বাসিতেন । আমি কত
সময় চঞ্চলতা প্রকাশ করিয়াছি, কিত্র উছার ব্যবহারে কোন দিন অসারতা
বা চাপল্যের চিত্র দেখি নাই। বিশার কালের সে মৃর্ত্তি, এবং বেলেজিল
মরণ করিতেও আমার প্রাণ ফাটিয়া বাইতেছে। কাড়িয়া লইবার জন্যই
কি বিধাতা তাঁহাকে মিলাইয়া দিয়াছিলেন ৽ তাঁহার কোনে সে বার
সেই সাংঘাতিক রোগে কেন আমার মরণ হইল না ৽

এইরূপ বেদ ও বিলাপ করিতে করিতে বিরহকাতরা সভোষিশী প্রান্ত

হইর। পড়িলেন। এমন এক জনও বাধার বাধী চুংধার্জভাগিনী সুধ্ববর্জন-কারিণী নাই যাহার নিকট মনের চুংধ বলিতে পারেন।

অতঃপর উন্মালপ্রার হইরা তিনি উপ্রন্মধ্যে প্রধ্যে করিলেন। তথার গিয়া আরো প্রাণ জলিয়া উঠিল। সেই চাপাপাছ, সেই পুকরিণীর বাঁধা चाहे. (त्रहे हारमणीकुक ममञ्ज खाँदात खानमशास्त्र मातन कताहेश किएड लाजिन । मट्डाविनी खर्थमण्डः निर्द्धन वनम्या मानवी-कृत्व जुकाहेश जनस्त्र লোচনে প্রাণভবিষা জনমন্ত্রার উদ্যাটন করিয়া খুব খানিক কানিলেন। তাঁহার আলুলান্বিত রুক্ষ চুলেরগোছা পৃষ্ঠে, কপালে, স্কল্কে ঝুলিরা পড়িয়াছে, সমীরণ হিল্লোলে ভাহা উড়িয়া উড়িয়া ফুলের গাছে লাগভেছে, তজ্জল ভির পত্ত কুন্তুমলল ও পরাগ কেশর সকল ভাহাতে বিজ্ঞভিত হইয়াছে, নয়ন হয় পঞ্ স্থল অশুজনে অভিষিক্ত, মুধ ধানি শোকে মলিন, প্রেমবিরতে পাগলিনী গ্রায় আজুবিমুত হইয়া যথেচছা ভ্রমণ করিতে করিতে তিনি বলিতে লাগিলেন, হে চম্পক তক্ষ, হে আমার প্রেমভীর্থ, আমার জ্বধনাধকে কি আর তৃষি দেশাইবে না ? ভোমার পুঞাপরিমল সকল বায়ু প্রোতে নানা দেশে গমন করে, ভাহারা কি আমার প্রাণেশরকে আমার ছঃখের কল। বলির। খাইতে পাৰে না ৪ হে নিৰ্মাণ সৱসীনীৰ, ভোমাৰ জ্বয়দপৰি আমি যে কত বাৰ ভাঁহার ফুলর মুধ নিরীক্ষণ করিয়াছি, আনজ এক বার সেই মুধ ধানি আমায় দেবাও না! লোকসমালে আমার জুংবের জুংবা কেছ নাই, ভোমরা কি আমার ব্যথার ব্যথী হইবে নাণু হে প্রেমিক বিহল্পল, ভোমগাত দেখিতেছি পূর্বের মত গীত গাইতেছ, আনকে নাওর। বেড়াইতেছ, আক একবার আমার সঙ্গে কি কাঁদিবে লাং তোমরাওত অনেক দেশ দেশা-অংবে, পর্বতি, অরণো ভ্রমণ করিয়া লাক, আমার জীবনবকুর সংক্ষ কি ভোমাদের দেবা সাক্ষাৎ হটবে নাং যদি হয়, ডবে এই অভালি-ীঃ তুর্দ্দার কথা তাঁহাকে বলিও :

সংস্থাবিশী দেখিলেন, কেহ ভাঁহার কথার উত্তর দিল না, কেছ

• কাঁদিল না, আহা বলিল না, বরং ভাহারা চিরকাল বেমন হাসে নাচে খান

• করে অন্তান মূখে ভাহাই করিতে লাগিল। তদর্শনে হঙাশ হইয়া তিনি

কোলাশ প্রিতে পিয়া উপস্থিত হইলেন। ভাহাদের মারে কাঁদিয়া

বলিলেন, "ভন্নীরণ, হে আমার বালাসধী সকল, তোমরাও আমার ক্রন্দর্ম কি ভনিবে না ? ভোমাদের সেই প্রাতন সহচরীর আলে কি দশা ছইয়াছে একটী বার দেখ, দেখ ! আহা ভোমরা বে আমাকে বড় ভাল বাসিতে !"

কৈ, কেহইত কাদিল না। তাহারা হাসিয়াবন আলো করিয়াবসিয়া আছে, চারিদিকে মধুগক ছড়াইতেছে, বায়ুভরে নাচিতেছে, রবিকিরণে দীপ্তি পাইতেছে, ভ্রমর মক্ষীকা, প্রজাপতি ও পক্ষীদিগকে লইয়। আহিলাদ আমোদে মহা মহোংসব করিতেছে।

ইহাদের ভাব গতি দেখিয়া শুনিয়া সম্ভোষিণীর কিঞিৎ চেতনা হইল. মোহ নিজা ভাঙ্গিয়া গেল, শোকাবেগ কমিয়া আদিল। তথন বুরিলেন, এই क्रपर वृद्धि विधित्र विधान। (य शांस एमरे यास, (कह काशांद्रा बना काएन ना, কাঁদিয়া কিছ করিতেও পারে না। তুলর গোলাপটী দিবদে ফুটিয়া হাসিয়া খেলিয়া মুবভি বিভরণ করিয়া রাত্রিতে ঝরিয়া পড়ে, আহা। তার জন্য কে এক কোঁটা চক্ষের জল ফেলে ? শামল পত্রদলে শোভিত তরুলভাগণ শীর্ণ कीर्ग रहेश काल एकारेश शींब, तक जारात ममाठात शहन करत ? न्छ পক্ষী কীট পতক্ষ কে কোথায় মরিতেছে, মেঘের পশ্চাতে মেঘ, জলজোতের প"চাতে জলত্রোত, সমীরণের প"চাতে সমীরণ তরক আনস্ক কাল ছটি-তেতে, কে কাহার সংবাদ লয় ? এ সকল অনস্তের লীলা। অনন্ত কাল অনুত্ত সকলেই চিরপ্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে। তাই ইহার। কাঁদে না, শোক করে না। বালক বালিকা যুবক সুবতী হইতেছে, তাহারা আবার বৃদ্ধ বৃদ্ধা হইয়া মরিয়া যাইতেচে; পুনরায় তাহাদের স্থান বালক বালিকা যুবক যুবভী বৃদ্ধ ব্ৰদ্ধা আদিয়া পূৰ্ণ করিতেছে। এই রূপেই পৃথিবী চলে, কেহ কাহারো জন্য চিরকাল ভাবে না। তবে কেন আমি ভাবিয়া মরি ! এইরপ চিস্তা করিয়া শেষ আপনাকে আপনি তিনি বুঝাইলেন,- "আমার জাদরসধার প্রেমত স্থান কালে আবন্ধ নয়; তাহাওত অনস্তে প্রতিষ্ঠিত, অনস্তের অত্নীভত, তবে তাঁহার ভালবাসা যে আমাকে ধান করিতে বলিয়াছেন ভাহাই করিয়া দেখি পারি কি না। জ্ঞান প্রেম ইচ্ছা যাঁহার প্রকৃত অস্তিত্ত, আত্মার মধ্যে তাহাই দেখি। বাস্তবিকতো তিনি শরীর নহেন, তিনি প্রেমময় আত্মা। কট হুংবের ভিতর পড়িয়া ভাই ভাবি, ভাবিতে ভাবিতে

তাঁহোর নিকটবর্তী হই। মরিরা মরিরা তাঁহাকে ভাকি, ভাকিতে ভাকিতে ভাঁহার প্রেমরসে গলিরা এক হইলা বাই।"

সংস্থাবিধী এইরপে এক একবার আপনার মনকে প্রবোধ দিয়া ধৈর্য্যাব-লম্বন করেন, আবার ভবিষ্যজ্জীবনের নিগ্রাশা ও কঠোর বৈরাপ্যের ভীষণ মূর্ত্তি দেখিয়া অদ্বির হইরা পড়েন। নির্দার বিপদের দানব বেন ঠাহাকে লইরা প্রতি ক্ষণে ক্রীড়া করিতেছিল। মদমন্ত করী যেন বিশাল পদদলনে কোমলালী নলিনীর সুকুমার বপু একবারে পঞ্চুতে বিলীন করিয়া দিতেছিল।

মহা ত্র্তিবনা মর্মবেদনার অধির হইরা কাঁদিতে কাঁদিতে প্রিশেষে অবসর মনে ভগ্নজ্বরে ঘ্রাইয়া পড়িবেন। পুনরার হঠাং গভার নিশার কালে সে ঘ্র ভাজিয়া গেল। তথন নিজালসোভারাক্রায় অসংখত মন আবার প্রিয়বিরহের প্রচণ্ড অনলে জলিয়া উঠিল। এ সকল নিদারণ মর্মপীড়া কি ব্যাইলে ভূলাযার গুবরং ঘ্রের ঘোরে আবেও তাহা প্রবশতর হইয়া উঠে।

আপনার এই বিষম যন্ত্রণাত ভোগ করিতে লাগিলেন, ডংসংক্ষ বাধারামের অবছা মান্ন করিয়া তাঁহার প্রাণ আবের ব্যাকুল হইল। "আহা, কে তাঁহাকে সাজুনা দিবে, কেইবা আদর যত্র করিবে দু হয়তো অনাহারে পথলান্তিতে, বৈরাস্যের কঠোর ব্রতাচরনে কোবার গিয়া প্রাণ হারাইবেন। তবে কি এটা আমার মৃত্যুবিরহ! জাবদ্ধার সূত্রশাক আমাকে তোগ করিতে হইল!" এই বলিয়া ভয়ানক শোকে আছেম হইয়া কিনি কাদিয়া বুক ভাসাইলেন। আহা, সে ক্রন্তর ধনকে হাল্য বরিয়া তিনি আবহান চক্রের ভুজিয় গভিম্বে মৃতপ্রায় পড়িয়া রহিলেন। এইনও শেষ হয়্মনাই, মানসিক ভুক্রিয় ক্রেশের সক্রে বাহিরেও নির্যাত্রন আত্যাচার আরম্ভ হইল।

म्राप्त शतिरुष्ट्र ।

তুফানে তরণী।

সজ্যেষিণীর এত কন্ত, এত যন্ত্রণার কারণ কি ? অক্রিম বিশুক্ত প্রেমক্রমধ্যেও মোহগরল পুরুণারিত থাকে সেই জন্য এত যন্ত্রণা। "সতীর পবিত্র প্রেম তাও মনিনতা মর হে, বিদি সে প্রেমকনকে তব প্রেমমনি নাহি অভিত রর হে।" এটি বড় খাঁটি কথা। বাস্তবিক এ পৃথিবীতে অমিশ্র খাঁটি জিনিফ কিছুই নাই, সকলই সত্য অসত্যে পাণ পুণ্যে অভিত। স্বতরাং অমিশ্র শান্তি স্থও এখানে নাই। তাই এখানে আনক্ষ উৎসবের অক্তরালে শোকের বিলাপ, প্রিরজন স্থিলনের ভিতর বিচ্ছেদের অগ্রি, স্থেবর মধ্যে তুঃখ, হাস্যের ভিতর ক্রেমন, অমুতের সঙ্গে গরল প্রজ্মভাবে অব্যন্তি করে। নির্দোর স্থ সভোগই হউক, আর বিধিসঙ্গত স্থাভাবিক তৃষ্ণ। চরিভার্থের ক্রবাই বল, যাহা মারা তাহা মারা। এ ক্রণতে যাহা স্থেবর কারণ তাহাই আবার তুঃথের জনক। বিষয় ভোগে রেগে জন্ম,—যোগে বিয়োগ ঘটে, স্বতরাং ভাহার জন্য কোন না কোন সময়ে যাতনা পাইতেই হয়। অভ্যাসের ফল বা কর্ম্মকল অবশ্যস্তাবী। কিন্তু শিক্ষা ও উন্নতির জন্য ইহা-প্রারাক্র, এবং ইহাকেই ভগবানের লীল। বলা যায়।

বাল্লারামের প্রস্থানের পর নিশানাথের সজ্ঞানে গঙ্গাঞ্জাপ্তির আর আশক্ষা রহিল না; তজ্জন্য তিনি এবং তদার পরী নরনভারা দেবী একট্ নিরাপদ হইলেন। সভোবিদীর প্রতি মায়াটা কিছু বেশী ছিল, অথচ সে অধিক লেখা পড়ার চর্চা করে, স্থানীনভাবে চলে, এটাও ইচ্ছা করেন না। সমাজের ভরে শাসনে উৎপীড়নে ডংপ্রাডও ক্রমে তাঁহাদিসকে কিছু নিষ্ঠুর হইতে হইল। প্রতিবাসী গ্রামন্থ লোকের নিন্দা, জ্ঞাতি কুটুরুপণের প্রেষ বচন ক্রমে অসহ্য হইয়া উঠিল। সজ্ঞোধিশীর প্রাণ একে শোকে জর্জারত, ভাষার উপর এই সকল গ্রানি গঞ্জনা নির্দিয় বাবহার; অগত্যা ভিনি মুক্তির পথ দেখিতে লাগিলেন।

शीष्ठिशन मधनीए मिरमम् शनकात नात्री बकी खातिका कितन, তিনি रेफिन्टर्स स्नेलारे कुनन अञ्चि निवारेगात कमा निर्णानात्वत ভবনে আসা যাওয়া করিতেন। তাঁহারই মন্ত্রণার এবং সাংবাবে সভোষিণী একদা নিশাবসালে গৃছের বাছির ছইছা পড়েন। কিন্ত খ্যী টিয়াল পলী মধ্যে ভিলি ভিটিভে পারিলেন না। একে জনা-চার, মদ, মাংস. পৌরাজ, রহুনের চুর্গত্ব, ভাহাতে আবার পুরুষ-(एत (क्तीताच्या, तकु दिश्यल्वरे शिक्ष्यल्वत । शाक्त्री ख्लान धक्तात वाहे-বেল পড়াইডে আঙ্গেন, ক্যাটিকিষ্ট টিমবি বিশাস আদিয়া উপবেশ দেন, যুবকদল চারিদিকে উকি ঝুকি মাবে, কেছবা ছঠাৎ গবে প্রবেশ করিলা বলে, "কি সো, কি কোচচণু" কেছ হাসে, কেছ গান গায়; স্বাধীনভাবে উঁাহার স্ত্রে আনাপ করিবার জন্য অনেকেই আনাগোনা টানা করিতে লাগিল। শীঘ্রই ব্যাপ্তিয়া হইবে; সমক্ত আবোজন ছইয়াছে, মণ্ডলীমধ্যে মহা আনকংধনি উটিয়াছে, এমন সময় ু কালান্তক ধ্যকিল্কর স্তর্প মালকোঁচামারা বড় বড় বাঁশহাতে টিকিমাগার আর্য্যসভা ওরফে হরিসভার হিন্দু মুধার দল এবং টোলের ছাত্রগণ হঠাৎ ভাহার মধ্যে পড়িরা দালা করির। সভোষিণীকে কাড়িরা শইরা থেশ। **७**थन পानतो खतान् रउख्या हुरुरेन्ना श्रष्टोबखार्य शनकालना कविरणन, ভাড়ি চোমলাইলেন, আজুল কামড়াইলেন, আপেন মনে ডাম রাম্বেন নেটিভ নিগার বলিয়া গালি পাড়িলেন, পরিখেবে ছানীয় বিচারালয়ে মোক্দমা উপস্থিত হইল। কিফ হিন্ধা তিল বংসর বছর। সংস্থো-ষিণীকে অপ্ৰাপ্ত বয়স্থা বালিকা বলিয়া দিব্য প্ৰমাণ করিয়া দিল, স্তরাং ভগানের মোকজন। কাসিয়া পেল। কেবল ইছাজেও তিনি নিফুতি পাইলেন না, যাহাদিগকে ভিনি সচরাচর "হে ছিলু মুবডী বালকপণ !" বলিয়া সম্বোধন পূৰ্ব্বক পৰিমধ্যে উপদেশ দিতেন, তাহ:দের হাতে এক দিন ৃত্ই পাঁচটা চপেটাৰাভও ধাইলেন।

শ মোকদম। মামলাত মিটিল, কিন্ত এখন সংস্থাহিত্ব থাকেন কোৰাছ।

কোভিত্ৰন্ত হইয়াছেন, আরতো হিলু সমাজে ছান পাইতে পারেন না। তবঃ
দলপতি সমাজপতি গোষ্ঠাপতি ভটাচার্য্য অব্যক্ষ সকলে মিলিয়া এই সিছা

করিবেন, "বরং রাজজানীর হাতে ছাড়িয়া দিব, তথাপি খ্রিষ্টান বাটোবের দলভূজ্য হইতে দিব না; অতএব সঙ্কটাচরণের হত্তে উহাকে সমর্পন করা ছউক।" খ্রিষ্টানদিপের উপর কোধ বিষেষ হইলে এক্ষেদের সজে হিন্দু দের এক প্রকার ছুট্ট সহামুভূতি হয়। যাহা হউক, শেষ এইরূপ ব্যবস্থা হইল।

बसारन मकरित शृष्ट आवात मिरे विकरियन मूस सानान कतिहा ৰসিয়া আছেন। তিনি এক্ষণে বিড়াল তপসী, বছ দিনের অনাহারী জীব: বিবাহের উমেদারি করিতে করিতে চুল পাকিয়া গিয়াছে, দাঁত পড়িয়াছে. পারে কোমরে বাতে ধরিয়াছে, এখন গলাঘাতা করিলেই হয়। তথাপি তিনি আশ। ছাড়েন নাই। বিবাহের জন্য অনেক দিন হইতে খীষ্ট ও ব্রাক্ষমমালে চেষ্টা করিয়া আসিতেছেন কোন স্থানে পাত্রী সংগ্রহ করিতে পারেন নাই। বহু চেষ্টায় একটা বারবধ্র সহিত একবার সম্বন্ধ ছির করিয়া-हिल्लन, त्म ७ डाँहात रिनामिशा एक्षिया स्मय शिहाहेया याय । विवाह বিবাহ করিয়া বিকট কিছু দিন পাগলের মত হইয়া গিয়াছিল। যাকে তাকে বিবাহ করিতে চাহিত, সধবা বিধবা কুমারী স্ত্রী পুরুষ প্রভেদ বুঝিতে পারিত না। এ জন্য একবার বড় বিপদেও পডিয়াছিল। কতকগুল চ্যাকড়া দল व्यात्मत बक्टी हाता शाता व्याप्तातमा (हाँछाटक त्यदम् मानाहेम् ाहात সক্ষে বিকটের বিবাহ দেয়, এবং ভাহার সঞ্চিত সম্বল হার। লু ান্দেশ थाय। विकृष्ठे भट्ट वशा समास समास कांकि होत भारेया महन वड़ कष्ठे भारेल। अविश्विस भाँठ कात्रान अक्तारा विकटे वातूर मान खाउँ मह दिन्हा-लात छेनम् रहिमाटल । जाहे भाष कीवत्न किती नहेत्वन मत्न कित्री এইরপে তিনি খেদ করিতেছেন ;---

(5)

"ভাই হে, বুথাই জনম গোঁৱাইনু।

না পরিত্র কোট হুট

নাকরিজু চিট্চ্যাট্

মিশে বিবি যুবতীর দলে;

ना धारेच कांग्रेटन हे

দেশিখান কেলারেট্

ना वैधिय (नक्टोई शता।

(1)

হার হার জনমির। (কন না মরিমু।

পাইতু পাপের দণ্ড, না দেবিসূ ইংগও,

निराधाम नजन नजही:

পড়িয়া চরণপ্রান্তে, নাভবিতু খেডকাতে,

অত্তে কি হইবে ভেবে মরি।

(0)

करव स्मात करव एक किन !

माजिया हेरबाज माज्ज, ल ७न ननवी मार्स,

লেডীর সমাজে বিহরিব;

टिम्म नशीव छीत्व,
तक्ष्मिव शीत्व,

(अमानत्म চूत्रहे हे।निव।

(8)

অধ্যের ভাগ্যে তা কি হবে গ

वाहित्त प्राक्षित प्रशः किन्द भागः। काल तरः,

(माटि कि कथन मिन बादि १

(0)

হায় ভবে বিফল দে আশা!

লান করি গলাজলে, ছেঁড়া কাঁথা বাঁং পলে,

পরিয়া কৌপীন বহিবাস:-

ৰাই আমি বৃন্ধাবনে, রাধাকৃষ্ণ দর্শনে,

दिक्टरवत्र मत्त्र कत्रि दान।"

মহাতুঃৰে হতাৰ মনে এইজপে ধৰন ডিনি চুক্তর বৈরাস্যের পাধা গাইতেছিলেন, সেই কালে হঠাৎ সম্বোধিৰ ঠাহাদের বাটাছে আব্রয় লইলেন। বুড়ুক্ম ব্যান্তের মূধের সন্মুধে ধেন একটা হুঠ **পুঠ অলা নিড** 'আসিয়া উপস্থিত হইল। বিকট বিবাহের আশাত ছাড়েন নাই, সুটিয়া 'উঠিল না, वतः क्रम दवनी रहेत्रा পण्डिताहित, कि करतन, काटबरे देवाना नशोज शाहरजिल्लान। সভোবিশীৰ আগমনে সেই समानद्वत्र है छ। আবার আগিয়া উঠিল। মনে ভাবিলেন, "এড দিনে বিধাত। বিবাহের কুল ফুটাইলেন। আমি আনি, সজোষিদী আমাকে অনেক দিন হই তে ভাল-বাসে, কেবল বাধারামের অন্য কিছু করিতে পারিত না।" তথন আর এক বার বেতো পারে ভর করিয়া তিনি বাঁড়াইলেন, এবং ইতন্ততঃ দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলেন। অনাধা আগ্রহীনা সজোষিদীকে দেধিয়া চিত্ত বায়কুল হইল। সকটেরও ইচ্ছা, যদি ঘটেত ঘটিয়া যাউক, একটা পরিবার রুজি হইবে, রাক্ষসমাজ জাঁকিবে। সজোষিদী সিংহের হস্ত হইতে মুক্ত হইয়া ব্যাত্রের হস্তে পড়িলেন। বিকট তথন ভাহার ছাভাধরা পচা পোর্টম্যাণ্ট খুলিয়া, পুরাতন পোষাক চুই একটা বাহা ছিল রৌজে ভকাইয়া, ছারপোকা বাছিয়া অক্ষে চড়াইল, চুইট দ্বারা মুধান্দি করিল, পাকা চুল ফিরাইল, ভাঙ্গা হারমনিরমের বেলয় স্থবে গান গাইল, একটু ইংরাজি মথন পড়িল, ছুই পকেটে চুই হাত ছিয়া নানা রক্ষ ভলে উঠানে বেড়াইতে লাগিল এবং ছিয় কর্ণটি সোলাটুপির দ্বারা ঢাকা দিল। কোর্টনিপের জন্যও অনেক চেষ্টা চরিত্র করিল, কিন্তু বড় হুবিধা হইয়া উঠিল না।

বিকট পূর্ব্বে কাদস্বরী শকুস্তলা কিছু পড়িয়াছিল, সাধু ভাষার সৃষ্ট চারিটা বাধি গ্রীং আনিত। সেই অব্যর্থ বাণ সম্প্রোধিণীর প্রতি এক্ষণে নিক্ষেপ্ করিল। বালিল, "অরি, কুবলনরনা, মধুবভাষিণি, তোমার ঐ প্রফুল রাজীব সদৃশ মুখ্যগুল বাত্ত্রাস্ত চক্রের ন্যায় কেন ব্বাদে আচ্ছন হর্টা রহিল্যাছে ! স্থন্দরী, তোমার এই অনির্ব্বেচনীর রূপরাশি কি বাঞ্চাবানের ন্যায় রুসহীন মানবের উপযুক্ত ? কথনই নহে। তুমি আস্তরিক আমার ভালবাস তা জানি; এত দিন কেবল সেই হতভাগ্যের ক্ষম্রণায় ভোমাকে বাধা দিল্লা রাথিয়াছিল। এক্ষণে শুভ দিন নিকটবর্ত্তী, প্রজ্ঞাপতির নির্ব্বের কেথাক প্রতি গরেহ হৈ অনিন্ধিতে, ভত্তে, আর কেন মৌনাবলম্বন কর, কথা কপ্ত। এক বার সহাস্য আনননে মধুর স্বের কথা কপ্ত।"

বিকটের কবিত্ব শক্তি বুলিয়া পেল। সে মনে মনে আক্রাণিত হইরা ভাবিতে লাগিল, "আমার স্থালিত বচনে সজোবিণীর হুদ্র নিশ্চর গলিয়া পিয়াছে সন্দেহ নাই।" ভাহাকে পাগল মনে করিয়া সজোবিণী দৃরে দ্বে কিরিতে লাগিলেন। অভঃপর বিকটের স্ক্বিধ ভজ উপায় বধন ক্রপ হইল, তথন সে নানা বক্ষে উৎপাত আরন্ত করিল। কাছ ঘেঁলিরা হাঁড়াছ, পথ
আটকার, বৃধ্ব সিন্ধের, কাবে, গারের বন ছিটাইর। দের, হিহি করিরা হানে,
দেকভাও করিবার জন্ম হাত বাজার। সজ্যেবিদী সহাবিশন হেবিরা এক বিব পোপনে গোপনে সে ভানও পরিত্যার করিলেন, এবং ছারীছিবের সঞ্জে মিশিয়া কালীগানে চলিয়া পেলেন। তবার জাঁহার এক প্রাচীনা কিলিফা ছিল, খুঁজিয়: খুঁজিয়া শেষ তাঁহার আলত্ত উপভিত হন। তাঁহার আন্ত-জানে বিকট বাব্ও পোকে গুংগে জিড্বন আঁথার হেবিরা বেদ করিয়া বলিলেন, "হার, আ্যার তিন কাল সিরাছে এক কানে ঠেকিয়াছে, এই অসার অনিভ্য দেহ বারণ বুধাই হইল। মনের আলা মনেতেই বিলাইয়া গেল। তবে আর এ জীবনে ত্থ কি গু আ্যার সরণই রক্ষণ।" এইরপে অনুভাপ করিয়া বাসনাগরল পান করিতে করিতে হঠাৎ এক বিন দাঁত মূব সিটকা-ইরা, চলু উনটাইয়া পঞ্চত্ব পাইলেন। পরল হইতে আর অনুত উদ্ধার করা হইল না।

ত্রয়োদশ পরিচ্ছেদ।

তীর্থে ধর্মনাশ।

আমালের এ পর ভূনিতে ভূনিতে কেহ থেন বৃষ্টিয়া না পড়েন। একনো অনেক ভাল ভাল কথা আছে।

সভোষিণী কাশীবামে পৌছিরাই কেবিলেন, বাটে বাটে বাটে ব্র পুরুষ কল বাঁহিরা গলালান শিবপুরা ওরিতেছে, মলিবের মাবার মাবার ধ্বজা উড়িতেছে, অলি গলিতে বেবানে সেবানে শিবের মঠ, কেবার মওল। মেবানে বত বা শিব, ভত বা বাঁড় এবং তত সরাাসী। পরে পরে মহারাত্রীর আবিদ্ধী সারস্বত তৈলসী মেবিলী কলানী হিল্পানী শ্রামারী উড়িয়া বালালী আন্ধানে অনতা, সকলেই বেন হর্মের জন্য বাাক্ল এবং উন্ধান এই রম্বনীয় দুখ্য সূত্রা অববোকন করিরা সভোষিণীর বর্ম্মার প্রাক্তিব প্রজ্ঞান

হইয়া উঠিল। কাশীবালী লোকদিগকে তিনি কত সুধী সোভাগ্যশালীই ख्यं ने बेटन कहिरलन । (एरम्बिन मकरल निव्रष्टव र्वनार्वन एनाएन चर्छ। ৰাজিতেছে, যেখানে দেখানে পাঠ কৰ্মকতা চণ্ডীর গান হইতেছে, প্রো-हिट्छता मञ्ज পंডिएछहि, छीर्थरादिश्व कुछाक्षान शूटि शननशिक्षछत्।तम ছতায়মান রহিয়াছে, কেই মালা অপিতেছে, কেই ধুলায় লুটিতেছে। সুবর্ণ-মণ্ডিত বিশেষরের মন্দিরে সন্ধ্যাকালীন আর্ডির শোভা দেখিয়া, তথায় খত সহত্র যাত্রীর কঠনিঃস্ত হর হর ব্যোম ব্যোম ধ্বনি তাবণ করিয়া मरश्चायिनीत भाक्षण क्षम् । अपन अपूर्व एक्षिणार्वत हेम्द्र वहेम । अपनक কষ্ট নির্যাত্তনের পর তিনি একটু থেন আরাম পাইলেন। ভাবিলেন, "কভ कु:चिनो विश्वा এখানে निवा निमि धर्षकर्त्य, (पवनर्गतन, भूग छेनार्ब्जतन মনোনিবেশ করিয়া স্থে কাল হরণ করিতেছে। ইহাদের সংসার-**हिन्छा । नाहे. विष्क्रमविकादिय (कह मक्ष हहे एउट्टा ना, ममानम आक्टर**ाय बहारकरवत नौनाधारम मकरल है महानक हिन्छ। चाहा है हारहत कि निर्छ। ঋশের জন্য কি প্রগাঢ় অনুরাগ । পাও। বাবাজীরা কেমন আদর ষড়ের সহিত বাত্রীদিগের সেবা করিভেছেন! স্বর্গত্ল্য স্থান, আমি কি এই ° পুৰাধামে স্থান পাইব।"

নগরমধ্যে, গঙ্গাতীরে, দেবমন্দিরে, রাজমার্গে এই সকল দেখির পরে নগরপ্রান্তে সর্নাদী দণ্ডীদিগের আশ্রম, নির্জ্জন বন, উদ্যান সরসী াচীন কীর্ত্তি গুহা গহরের দর্শন করিলেন। সেধানে দলে দলে দণ্ডী পরমহংস পরিব্রাক্ষক সন্ন্যাসী ত্রিশৃলধারী ভৈরব ভৈরবী অবােরপত্তী বানপ্রস্থ উদাসী যোগী কটাধারী সকল বাস করিতেছে। কেহ কটিভটে গৈরিক বসন আঁটিয়া, মাধায় বুটি বাঁধিয়া নন্দরাণী বশোদার ঘোলমন্থনের ন্যায় মহাবিক্রমেয় সহিত সিদ্ধি ঘুটিভেছে। কেহ মৌনব্রক্ত লইয়াছেন, তাঁহাকে করা কহিছে নাই; কিছ ভিনি হস্ত পদ সঞ্চালন, চল্লু ও মুখভত্তী হারা মনের সকল প্রকার ভাব রসই প্রকাশ করিয়া থাকেন। কেহ বড় বড় কাঠের কুলে। মড় করিয়া ধুনি জালাইয়া, গারে ছাই মাধিয়া, জটা এলাইয়া মৃদ্ধিভ নরনে গাঁলা ফুলিভেছেন, এবং পাছে একটু মাল লোকসান হয়, ওজ্জনা সমস্ত গোঁয়া বিলিয়া গিলিয়া চল্লু মজবর্গ করিয়া ভুলিয়াছেন। কেহ

বা সেই আগুনে মোটা মোটা রুটী, স্বোল গোল লিট্টি বানাইয়। মনো-বোগপূৰ্ব্বক তাহাতে বি মাধাইতেছেন। বিনি উৰ্ছবাহ তিনি নৰ চুল বাড়া-हैता विजय आहिन। (कह निवधत मृद्धि बितवा विमवीशास्त्र नर्स नर्स कि त-তেছে, কেহ চুই চকু ক্ৰোৰ দিকে চাহিলা দৰ্শকদিগকে চৰংকুত কৰি-एउट. (कर नकांत्रित जारन क्या विक्या प्रदेखात. (कर वा वृद्धक जारन विनिष्ठितः ;--- जाशात भवदत की छ हरेता जाश करेला तक तक विद्या পড়িতেছে এবং শিষোরা গরম লল দিরা ভাষা ধুইরা দিভেছে। আর अक श्वारन व्यक्तिन, अक वाकि छेन्त्रश्च नाछी प्रकल वाहित कतिहा छात्र। ধুইরা আবার উদরে পুরিতেছে। কেছ মুধ দিরা নিবাস ফেলিতেছে। কেহ কৃত্তক বোগে উপরের দিকে ঠেলিরা উঠিতেছে। কণালে দীর্ধ (फाँही, नगरहिंभता मन्नामीत कार्छ कार्न थन भारत पारत (बड़ाई-তেছে, ভুখা সাধু বলিয়া ভিক্ষা মালিতেছে। আবার কোন এক चारन (एचिरलन, ठाउँ फिरक खन छारात मर्था माठा वासिया अक सांशी क्षु क्रिट्डिक्न, व्यात (प्राणे। श्रीत्रा पूर्वक याजी शाकाशेटि एकन। (क्र পুত্রভান্তরে দিন রাত্রি ধ্যানে মধ্র, কেই বা শিষাদিগকে বেদ বেদায় অধ্য-म्रान निमुक्त । व्यापात (कर वा दर्शमृत्य के स्वापात कर्तना करिकार हम। কেহ চেলা দারা গা হাত প। সর্বান্ধ টিপাইতেছেন।

সভ্যাবিণী কাশীধামে আসির। বাং কিছু নরনগোর করিলেন, সমস্ত ধর্মের পরিচ্ছেদ, ধর্মের কার্য্য, ধর্মের আচার ব্যবহার। কাশীহার্থ বেন ধর্মামর। এই সকল দেবিরা তিনি বিমোহিত হইলেন, এবং মনে মনে প্রির করিলেন, "অবশিষ্ট জীবন আমি এই পবিত্র ভানে সাধুসঙ্গে অপ ডাপে বালি ভিয়ার অভিবাহিত করিব।" এই সকল কবিয়া বিভিয়ারের নিকট আইকেন। কিন্তু বত বিন বালতে করিব।" এই সকল কবিয়া বিভিয়ারের নিকট আইকেন। কিন্তু বত বিন বালতে লাগিল, ক্রমে ভত লোক বিলোহের বিত্তর ব্যবহারের পরিচয় পাইলেন। শেষ ব্রিলেন, পাণ্ডার। ভাকাত, সয়াসীর। চোর, প্রেমিইতেরা পঠ ধূর্ত। আনেক ত্রী পুত্র বাহিবে বেমন ভিতরে তিন ক্রিপারীত। ধর্ম কর্ম বাহাড্ডার অধিকাংশই বাণিজ্য ব্যবসার তুলা।
সরল বিশ্বানী সাধুচরিত্র মুমুক্ল লোকও আছে, কিন্তু তাহার সংব্যা অতি ভর্মা

লোকের কণটাচরণ কুব্যবহার দেখিরা সন্তোধিণীর উৎসাহ আশা ক্রম্থে ডক্ল হইতে লাগিল। বে বাড়ীতে ডিনি থাকিতেল ডপার ঠাহার দিদিয়ার আপ্রিডা ভাড়াটিয়। কোন এক স্থানী নারী বাস করিছ। লক্ষ্মীর মন্ত ভাহার প্রী সৌলই। বেশ বিন্যাস করিয়। যথন সে বারাঙার হাঁড়াইড, তথন বোধ হইত যেন আকাশের বিজলী স্ত্রী মূর্ডি ধারণ করিয়া নিবিড় জলদ জালস্থ্রপ কুন্তল রাশির সন্মূর্ণে বিহার করিতেছে। কিন্তু ভাহার মনটা অভিশার বক্ষম। কি পুরুষ কি নারী সকলকে কাঠ পুন্তলিকার ন্যায় সে নাচাইতে পারিত। ভাহার চক্রে পড়িয়া ছই একটা খুন অধমণ্ড হইয়া গিয়াছে। রূপমুর্ঝ যুবকদিগকে ঠকাইয়া তিনি বেশ দশ টাকা উপার্জ্জন করিয়াছেন। গায়ে একটী গা গহনা। ঘরটী রাড় লঠন পাধা খাট পালফ আয়না ছবি ঘারা বিলক্ষণ স্থমজ্জিত। বিছানা কাপড় চোপড়ে আডর গোলাপ ডডিকলম ল্যাবেডারের গন্ধ। এক সেট কাঁটা চামচ ছুরি ডিস্প্রেটও আছে। খুঁজিলে ছুই পাঁচটা ব্রান্ডি বোতলঙ্ক না পাওয়া যায় এমন নয়।

বে কার্য্যালয়ের বড় ছইতে ছোট প্রভাক কর্মচারী উৎকোচপ্রাহী সেখানে এক জ্বন সভ্যবাদী ন্যায়বান কর্ত্তব্যপরায়ণ ধার্মিক লোক প্রবেশ করিবে সে বেমন বিপদে পড়ে, নির্মাল চরিত্র। সন্তোমিণীর পক্ষে কানীধাম ডক্রেপ ইইয়ছিল। আর একটা আশ্চর্যের বিষয় ডিনি এই দেখিলেন, অধর্ম ছুরুর্মকে লোকে ধর্ম বলিয়া প্রচার এবং আচরণ করে। উপাইউক্ত জ্রীলোকটা তাঁহাকে সেই রূপ ধর্মে দীক্ষিত করিবার চেন্তা। পাইল। লোকদিগের মধ্যে বিষদে বাধাইয়া অন্তর্গলে বিদায় সে হাসিত। পাইল। লোকদিগের মধ্যে বিষদে বাধাইয়া অন্তর্গলে বিদায় সে হাসিত। গালাগালি, ভালাভালি, ইহার কথাটা উহার কাবে, উহার কথাটা ইহার কাবে, এই ভাহার প্রধান কাব্দ। মনটা কু অড়ামিতে বেন পরিপুর্গ কিন্তু নিক্রে সে মন্টারিক। মন্টার কাবে লোভ দেবাইয়া পালে মন্তাইয়া পারীকা প্রলোভনে কেলিয়া আমোদ অন্তব্য করিত। ভাহার হাতে পড়িয়া কড কত চক্তমতি যুবক একবারে পারল ইইয়া অয়ণ্যনে বিল্লেন "দিদি, আমাকে বিষ্ণাত লাইয়া চল না।"

কনক। কথকতা শুনিবে ! কত দকিবা দিবে বল, আমি খবে বিগিয়াই ভোমায় কত কথা শুনাইতে পারি।

সভো। কেন দিলি ঠাটা কর, আজ আমি খিবচতুর্দশীর উপবাস করিয়া আছি, কিছু ভাল কথা শুনিতে বড় ইচ্ছা হইতেছে।

কনক। উপবাস করে আছে ! ও মা ! কেন গা ! কাশীতে কি উপ-বাস করে ! ভাতে যে বাব। বিশেশবের অকল্যাণ হবে !

সভো। তবে এবানে কি করিতে হয় ?

কনক। একটু হাসিয়া, এখানে বাবা বিশেশবের উপর সব পাপের ভার শিল্পা নিশ্চিন্ত মনে আহলাদ আমোদে থাকিতে হয়।

সন্তোষিণী ধর্ম্মের জন্ত পিপাত্ন হইয়া যত বাক্লেতা এবং পান্তীর্ধ্যের সহিত কথা কর, কনক তত্তই হাসিয়া ঠাট্টা করিয়া বলে, "বোন, ভোমার এ বরসে কি এত ধর্মা কর্মা ভাল দেখার! বিশেশরের উপর সব ভার ঘাও।" সেনারী ধর্মাবিশাস সম্বন্ধে চার্ম্মাকের শিষা, ভিতরে ভিতরে বর্মকে কেবল বৃদ্ধাস্কৃত্ত দেখাইত। কিন্তু সে সন্তোষিণীকে কিছুতেই টলাইতে পারিল না। শেষ রাগিয়া চটিয়া হিংসায় জলিয়া তাঁহার নামে এমনি এক মিধা। কলক রটাইল যে একবারে তাঁহাকে দেশভাড়া করিল। এমনি মিট্ট মিন্তী করিয়া বাাক্ল ভাব ভঙ্গাতে মিধা। কথা গুলি সালাইয়া বলিড, যে ভাগা কেচ বিশ্বাস না করিয়া থাকিতে পারে না। সম্বোধিণী তক্তন্য লক্তির। অপুমানিতা হইলেন, লিদমারের কান্তে কত লাভ্রা গ্রুল খাইলেন, পাড়ার নত্ত গুত্তী পুরুষের। নিলা উপহাস করিল, হাসিল, টিট্কার্য দিল, ম্মাভেলী কথা বলিল, অগভ্যা তিনি শেষ কাশীর্যান্ত পরিভ্যার ক ইত্তে বাণ্য হইলেন।

চতুর্দশ পরিচ্ছেদ।

ধর্মের আশ্রয়।

वर्षाकाल, खावन मान, त्याव निभीय नमग्न, विन्यु विन्यु वात्रि वर्षिक इहे-ছেছে, আকাশ ঘন মেঘে আছেল, দিল্পগুল আলোকিত করিয়া এক একবার বিচাতের ছটা চমকিতেছে, মধ্যে মধ্যে রাত্রিচর অন্তগণের রব শুনা यारेएउएइ, निकार कालानिनी जाजीत्रथी कन कन जत जत नाएन जीत त्वाल ছুটিয়া বাইতেছে এবং তাহার উন্মত্ত उक्ष সকল উপকৃল আকুল করিয়া গস্তীর শব্দ উথিত করিতেছে। একটা ভারকা কিংবা একটা খদ্যোতিকার चालाक । त्रशास नाहे, कवल भवभारत भागान चार्ट हिलाधित मिथा ীদূর হইতে দেখা যাইতেছিল, এবং জলস্রোতের উপর তাহার উজ্জ্বল কিরণ জলিতেছিল। চারিধারে ভিমিরময় মহাসমুদ্রবৎ বিস্তীর্ণ প্রান্তর. ভাহার মাঝধানে রাজপথের সেতৃর উপর বসিয়। সভোষিণী একা-কিনী রোদন করিতেছেন। জীবন যায় সেও ভাল, তথাপি পাপসং দর্গে অসং জনসমাজে তিনি বাস করিবেন না এই প্রতিজ্ঞা ্রয়া বাহির হইয়াছেন। চক্ষের জলে গওছল ভাসিতেছে, বুষ্টি 🖟 জলে পরিবের বদন, মাধার চুল ভিজিয়াছে। বিষয় বদনে, সাঞে নয়নে, रखाम मत्न कालानिनीत् नाम ताक्रभाष रिमा कैं। पिटल एक्न। कृः रश्त যেন অবতার। সেই ভয়করা কাল রজনীর অন্ধকার মধ্যে বরং विद्यारण्य चारणाक चार्छ, किन्छ ठाँशात छित्रमुख्कीवर्त्नत अक्षकात अक-বারেই অবিমিশ্র অন্ধকার, তাহাতে ক্ষীণজ্যোতি আশাখল্যোতিকাও একটা জলেনা। অনাথা অভিভাৰকহীনা যুবতী স্ত্রীলোকের পঢ়ে পঢ়ে শত্রু, নির্জ্জন প্রান্তরত বেমন বিপজ্জনক, সজন নগরও তেমনি; যে ভালবাসা (न्थाय, प्या करत (मध मत्क। काशीय शहरतन, क शान पिरंत, बहे ভাবিয়া আকুল চিত্তে তিনি কাঁদিতেছেন। যাহার দয়া করিবার কেহ নাই, फारांत कल्पानत अध्यक्षातिल् (यन अधिक्षा मृत्याः वाहिद्वत अक्षकात

অন্তরের অন্ধনারের সক্ষে মিশিরা অতি ভীষণ মৃত্তি ধারণ করিয়াছে। সে কুঃসময়ে তথার জনমানবের গতি বিধি নাই, প্রাম নগর পব কিছুই চ্টাইনগোচর হয় না। কিন্তু ভগবান নিরুপারের উপার। বধন মান্তবের বৃদ্ধি ক্ষমতা পরাস্ত হর, পৃথিবীতে কোন দিকে আর আশা ভরসা থাকে বা, বাহিরের আলোক সমস্ত নিবিয়া বার, তথন সেই মর্মবাাণী বিপশ্জনন দেবতা বিপদাক্ষকার ভেদ করিয়া নিরাশ্রম ছাবকে কলা করেন, এমন উপার্ম দেবাইয়া দেন, যে তাহা গণনার অতীত।

যে সমন্ত্র সংস্থাবিধী এইরপে পথে বসিদ্বা কাঁদিতেছিলেন ওৎকালে একটা পথিক দৈববটনা ক্রমে তথার আসিরা উপন্থিত হন। তিনি দূর হইতে বামাকঠবিনিঃতে কাতর ক্রেলন ধ্বনি প্রবণ কবিরা গমনে ক্ষান্ত হলৈন এবং অনুন্র গাঁড়াইরা রোগন শব্দ তুনিতে লাগিলেন। এক একবার চঞ্চণা চপলার আলোকে তিনি সেই রোফ্রামানা হুংথিনা নারীকে দেখিতে পাইতেছিলেন। সম্মোষিণী অধাবদনে বসিরা কাঁদিতেছেন, মহা হুংথের অনজ্ব পারাবার যেন তাঁহার চারিদিকে ভৈরব গর্জনে আফানন কবি-তেছে, আর তরঙ্গনিক্রিপ্ত কুমুমুমানীর ন্যান্ত্র লি আন্দোলিত হইতেছেন। আগত্তক পাথিক ক্ষণকাল চাহিয়া চাহিয়া শেব নিকটন্থ হইরা বিজ্ঞানা কবি-লেন "মা, তুমি কে গাং কেন ক্রমানীকরী বারা হিরাছে গ্রাক্তি আমা বারা কোন সাহায়্য হর বল, আমি আহ্লাদের সহিত তাহা কবিব।"

সভোষিণী অংশশে এবং কাশীধামে লোকচাইতের বেরণ ভরানক নিছশনি সকল প্রাপ্ত ইইরাছিলেন ভাহাতে সাহস হইল না বেংকান কথার
উক্তর দেন। কেবল এইমাত্র বলিলেন, "মহাশর। আমি পথের কালালিনী হইরাছি, দ্রা মায়া করিবার আমার আর কেহ নাই। আমার ও হৃঃধ
কট্ট বোল হয়্ন মানুষের ছারা দূর হইবে না। ফীবনাঞ্চই আমার
ভূংবের অস্তু।"

শ পথিকের মাধার একটা ছাতা ছিল এবং হল্তে কতক গুলি পুঁটে এবং
.কিছু স্বত মরদা। ভিনি নিকটছ কোন গুহাবাসী সাধুব দেবার্থ দেই গুলি
লইয়া বাইডেছিলেন। তিনি এক অন বাঙ্গালী কন্তলোক, ধার্ম্বিক এবং

প্রোপ্রারী রাজ্মণ। সভোষিণীর উত্তর ভ্রির। তাঁহার হাল্য বড় ব্যবিদ্ধ ছাইল। বলিলেন, "মা. ত্মি কেন বৃষ্টিতে ভিজ্ঞিরা কট পাইতেছ এই ছাডাটী রহিল. আমি শীঘ্র আসিতেছি।" এই বলিয়। তিনি জ্রুত্ত পদ্ধে সাধুর আগ্রমে চলিয়া গেলেন। সেই স্থানের অন্তি দ্বে একটী ক্ষুত্ত নগর, তথার সেই ভক্ত রাজ্মণ বাস করিতেন। তাঁহার পরিবার পুত্র কন্যা ছিল। নাম তাঁহার সেবানল শর্মা। অতঃপর সাধুর ভাজ্যে সামগ্রী রাধিয়া আসিয়া সজ্যোধিগাকে তিনি নিজগৃহে লইয়া চলিলেন, এবং তথার অভি ষত্ত্র সহিত তাঁহাকে রক্ষা করিলেন। বাড়ীর গৃহিনীও তাঁহার প্রতি মাতৃবং স্থে প্রকাশ করিয়াভিলেন।

সম্ভোষিণী নানা স্থানে উৎপীড়িত অভ্যাচরিত হইয়া এই ব্রাহ্মণগুঠে কিছু দিন নিরাপদে শান্তিতে অবস্থিত করেন। গৃহস্বামীর চরিত্রটী বড়ই ভাল। তিনি পরের তুঃখ শুনিলে কাঁদিতেন। ধর্ম্মের কোন আডম্বর বাচা-লত। ছিল না। বাড়ীতে পূজা পার্কবের বেশী ঘটা জাঁক জমক দেখা যাইত ना, किन्छ कीरव मन्ना, जर्गवारन कहना जिल्ल हिन । পरिवत मर्था (क (काबान কোন অল খঞ অত্র পঞ্জ বিজ কাজাল অনাহারে নিরাশ্রয়ে পডিয়া রহি-য়াছে তাঁহাই তিনি অবেষণ করিয়া বেড়াইতেন, এবং কাহারো দেখা পাইলে বধাসাধ্য সাহায্য দান করিতেন। যাহার। হাতে তুলিয়া খাইতে পারে না, গলিত কুঠ রোগে মৃতপ্রায় পড়িয়া আছে, তাহাদিগের মুখে সহস্তে তিনি আহারসাম্প্রী তুলিয়া দিতেন। কাহাকেও রাহা ধরচ, কাহাকেও বস্ত্র. কাহাকেও থাদা দান করিতেন। কেছ একাকী রোগশব্যায় ঘরে পড়িয়া আছে, একট জল দেয় এমন লোক নাই, মরিয়াছে কি বাঁচিয়া আছে ভাহার কোন সংবাদ কেছ লয় না, ভাহার রোগশ্যাপার্শে বসিয়া রাত্রি জাগিতেন, বাডী হইতে পথ্য প্রস্তুত করিয়া লইরা ভাছার সেবা করিতেন। এ সকল সেবার কার্য্য ভিন্ন অন্যান্য সংকার্যাও তাঁহার অনেক ছিল। কাহারে। বাডীতে কেহ মরিলে সর্বাত্তে তিনি গামছ। কাঁধে লইর। তথার উপস্থিত ইইতেন এবং মৃত দেহের সংকার করিয়া আসিতেন। মূথে একটা কৰা নাই। বৃষ্টি পড়িতেছে, অন্ধকার রাত্তি, প্রতিবাসী অলম যুবকগণ বলিল, "काका महासंघ, वह बिरम (अरब्रह्म, किन्न का बाहे।" विना वाका वाद्य শ্বন্ধনি দেবানক ছাভাহাতে বাজারে চলিকেন। কেই বলিল, "কোঠা মহাশর,
"আমি কাল কন করেক লোককে খাইতে বলিয়াছি, একটু সাহায্য করিতে
ছইবে।" সেবানক রাত্তি প্রভাত হইতে না হইতে নিয়া হাজির। নিজেই
রাধিতে লাগিলেন। এ সম্বন্ধ প্রিয়াপ্রিয় শক্র মিত্র আত্ম পর ভেদজান
ছিল না। কোন বিধি উপবিধির সক্ষে তাঁহার সংকাগ্য মিলিভেছে কি না
ভাহাত তিনি বুঁজিয়া বেড়াইভেন না। যিনি গোপনে দেবিয়া গোপনে এবং
প্রকামেন্য পুরস্কার দেন তাঁহার দৃষ্টিতে আত্মণ এই সকল সাধুকাগ্য করিতেন।

এই সুখী পরিবারে সভোষিণী সুখে বাস করিতে লাগিলেন। গৃহ-খামীর পরোপকার জনহিতৈবণা তৃঃধীর প্রতি দয়: মুমুডা দেখিয়া, তাঁহার বিন্তু মধুর বচন শুনিয়া এবং তাঁহার পরিবারত্ব সকলের সরল মধুর বাব-হার প্রত্যক্ষ করিয়াতিনি অভ্যত মোহিত ও প্রীত হইলেন। এই শাতির পরিবারের শীতল ছায়া প্রতিবাসী নরনারীগণের জুড়াইবার ছান ছিল। কেছ কাহারো সঙ্গে বিবাদ করিলে, কিন্তা কোন পরিবারমধ্যে গৃহবিচ্ছেদ ঘটিলে এই সাধু বিপ্র সপরিবারে ডাহাদের হাতে পারে ধরিয়া কৃতা-্ঞ্বলি করিয়া সমস্ত পণ্ডপোল মীমাংস। করিয়া দিতেন। তিনি ব**জ**্ড। করিয়া কিম্বা ভূরি ভূরি শাস্ত্রীয় বচন ব্যাধা৷ করিয়া, অধব৷ উপদেশ ছারা লোকের ক্রোধ বিছেষ হিংসা প্রবৃত্তির চিকিংস। করিছেন না, ভাহ। আনিজেনও না; কেবল আপেনাকে ভূলিয়া পরের দুংধে দুংধী হইয়। কাঁদি-(छन, मूद थानि काँ हू माहू कित्रहा शाकरशास कितरफन, ताल मा खाई काका সম্বোধনে তৃই একটী কথা বলিজেন, দাদের মত মাটী ছইরা লোকের পদসেবা করিতেন ভাহাতেই সকলে একবারে নরম ছইয়া ষাইছ। ভাল মৰ সংখী বিংখী পাপী সাধু ইত্যাদি ভেৰবুদ্ধি পরিত্যাপপূর্মক বাহাছে লোকে উপকৃত হয়, ছংধ চলিয়া যায় সেই সকল কাৰ্য্য করিয়া তিনি পরের स्य स्थी हरेएउन। उनीय बासनी अवर পूब कनात्रन अरेकन मरकार्या চিরসহকারী ছিলেন। স্থামী স্ত্রী হুই অনে মিলিয়া ব্যন ঠাছার। ছঃ**থী**ৰ * সেবা করিতেন, ডাহা দর্শনে পাষাণ জদরেও ক্ষেত্র দকার হইও। খোর . অংকারী মহাকোষী বাজিও সেবানকের মূবের বিনয়কোড়িড কেবিয়া ভাল মানুষের মত জাত্তে জাত্তে কথা কহিত।

সাস্তোধিনী তাঁহার গৃহে থাকিতেন আর এই সকল স্থানীর ব্যবহার
মীরবে বসিরা স্থির লৃষ্টিতে শেধিতেন। বত দিন বাইতে লাগিল ততই
ভিনি রাহ্মণের আচরণে অধিকতর মোহিত হইতে লাগিলেন। দেবিরা
ভিনিয়া মনে ভাবিতেন, "প্রকৃত ধর্ম্ম যে জনসমাজে মানবপরিবারে আছে
তাহা এত দিনে আমি ব্রিলাম। এ স্থানীর কুস্ম তার্থহানে, পতিতের
চতুপাঠীতে, সন্নাগীর আশ্রমে প্রকৃতিত হয় না।" সজোধিনী রাহ্মণকে
বড় ভক্তি করিতেন এবং তাঁহাকে পিতা বলিয়া ডাকিতেন। এইরপে
তিনি গৃহের কন্যার ন্যায় আশ্রীয় পরিচিভা হইয়া রহিলেন। সেবানন্দের
সেবাকার্য্য সহায়তা করিয়া তিনিও আপনাকে কুতার্থ বোধ করিতেন।

এই গৃহবাসী নিরীহ ধর্মাত্ম। বিপ্রের উপর এক জন সাধু মহাপুরুষের ছায়া পড়িয়াছিল ভাই তাঁহার স্বভাব এত সুন্দর সুমিষ্ট। গুহাবাসী সাধুর সেব। করিয়। ইনি তাঁহার বিশেষ কুপাপাত্র হন। তিনি বেমন বিনয়ী প্রেমিক প্রশাস্তাত্ম। ওরু, ইনিও তেমনি তাঁহার অনুরূপ শিষা। বাহিরে কোন আড়ম্বর সমারোহ লাই, অথচ মভাবতঃ তাঁহা হইতে ধর্ম্মের শীতল জ্যোতি বিকীৰ্ণ হইয়া পড়িত। তিনি জানিতেন না কেমন তিনি ধাৰ্মিক। এক দিন ≪থায় কথায় ব্রাহ্মণ বলিলেন, "মা, তুমি ষেরূপ ধর্মের জন্য লালা-রিত দেখিতেছি, যদি আমাদের বাবাজীর নিকটে এক বার যাও, ভাহা হুইলে বড়ই শান্তি লাভ করিতে পার। আমাদের বাবালীর এমনি **প্রস**র मृद्धि, श्वात अमिन छाटात मिष्ठे कथा एर निरमत्यत मरना मकन लेकात छव-ষ্দ্রণা চলিছা যায়। কড বিধবা পভিপুত্রবিহীনা অনাথ। তাঁহার কথা ভূনিছা শান্তি পাইয়াছে। তুমি যদি তাঁহার আন্তায় গ্রহণ কর, বড়ই কডার্থ इहेर्दा छाँशात पर्यान ममतीरत पर्य लाख शत व्यात व्यक्ति कथा कि विलय । জামি সেই স্বামীকীর চরণ গ্রসালে পরিবার মধ্যে থাকিয়াও শান্তি সভোগ कदिएकि। जिनि लोकपक शांत्ररे करतन ना। क्लाहिर बारमत बरश তুই একবার বাহির হন, অবশিষ্ঠ সময় গভীর নির্জ্জন গহরর মধ্যে খ্যানে মগ্ন থাকেন। তিনি কাহাকেও শান্তও শিখান না, উপদেশও দেন না. किक अमिन शामन चात्र मिष्ठे मिष्ठे कथा बतान य जाशाय है मुख्याद-আশার সঞ্চার হয়। উঁহোর হাসিমুধ ধানি বেদ বেলাভ পুরাণ ভারবত

অপেকাও গভীর অর্থযুক্ত। তুমি দেখিলেই সব বুকিতে পারিবে। আকৃত তাঁহার চরিত্র, একাকী অক্ষরর মধ্যে গত পাঁচ বংসর কাল মহাধোগরত সাধনে নিযুক্ত ছিলেন লোকে মনে করিত তিনি অস্কান হই হাছেন, কেহ বা বলিত গর্ভের ভিতর তাঁহার শরীর পচিয়া মাটীর সক্ষে মিশাইয়া গিরাছে। পাঁচ বংসর পরে সম্প্রতি হঠাং তিনি দেখা দিয়াছেন। দেশ দেশান্তর হইতে কত কত সাধু মহন্ত তাঁহাকে দেখিবার অন্য আসিতেছেন। আমাকে তিনি বড় কুপা করিয়া থাকেন। যদি ইচ্ছা হয়, আমার সক্ষেত্রিম চল, আমি দেখা করিয়া ধিব শ

রাহ্মণের মুখে বাবা জীর অন্ত ওণকাতিনী শুনিয়া সভোবিশীর শরীর রোমাঞ্চিত হইল, চল্লে জলগারা বহিল, অন্তরনিহিত ওলগত ফ উচ্ছ্ সিত হইয়া উঠিল। তিনি যে কিরপ মহাপুরুষ তাহার আভাস রাহ্মণের পরির উদার চরিত্র দেখিয়া সভোষিশী কতকটা বুঝিতে পারিয়াছলেন। তদলজর নিতান্ত ব্যাকুল হইয়া গৃহস্থানীর পায়ে লুটাইয়া বলিলেন. "আশিন যদি আমাকে তাঁহার নিকট লইয়া যান বড় কভার্থ হই। আমি বড় ছাখিনী, শোক সভাপে আমার প্রাণ নিতান্ত ব্যবিভ আহত, একপে আশানার কথা ভানিয়া মনে আশা হইতেছে সেই সাধু মহাজনের কুপায় আমারও ভাপিত হলয় শাস্তি লাভ করিবে। চলুন, আমি অনাই আপনার সঞ্গের, আর বিলম্বে প্রয়োজন নাই। আপনি যে আমাকে পব হইডে তুলিয়া আনিয়াছেন, ইয়া ভগবানের বিশেষ কৃণ্ড আমি এখন বুঝিতে পারিলাম।"

পঞ্চদশ পরিচ্ছেদ।

অন্ধকারে মাণিক।

গলার গাবে একটা অতি স্বর্ম্য নির্জ্জন স্থান, চতুর্দ্ধিকে প্রশস্ত শস্য-কেল, মধ্যমূলে অর্থ নিম্ব এবং অনুবুক্তের বাগান, ডাহাতে বিচিত্র বিহল্পকল নিবস্তুর কলনাদে সঙ্গাত করে। ভাগীরধীর সলিলস্তিক স্থিয়সমীরণ রাশি সন্মুখছ প্রান্তর পার হইয়া সেই ভকুকুঞ্জের পরিক্ষত ভূমিতলে সর্বান্ধ। প্রবাহিত হইত। এই বিকান ভান সামী সদানদের আশ্রম। ইহার প্রকৃত নাম হরভক্ষনভাস, কিন্তু আমরা স্লানন্দ বলিয়া ডাকিতে ভাল বাসি। একটী কুটীরের অভাস্তরে প্রকাও স্থড়ক আছে, তাহার ভিতরে অন্ধকার ওহা, त्मरेशात विश्व वावाको मर्खणा (वाश शात मध शातकन। **जिनि शार्थि** क्ष विलामित निक्रेटण क्तिकित्नत खना विकाश लहेशास्त्र, अनाशाम-লভ্য যে সভাবের উপহার তৎপ্রতিও স্পৃহা রাবেন না। প্রকৃতির নয়ন-রঞ্জন শোভা দেখিয়া চক্ষুকে পরিত্প্ত করিতেও কথন ইচ্ছা হয় না। কিন্ত এমনি তাঁহার তপ্তকাঞ্চনের ন্যায় তেজঃপুঞ্জ শরীর, প্রফুল পদ্মের ন্যায় मुबकाश्वित अमनि श्रममणा, (व जाहा (पश्चित माम्रायक कीर्यत जरवह आका निवातिष हरेश वाह । चिष (कामन श्रेकाव, कथा धनि वर्ष है महुत, विन-রের বেন একবারে অবভার। তাঁছার বে কোন গুণ আছে, বা ভঙ্কি প্রেম বৈরাগ্য আন্তে ইছা তিনি জানিছেন না। বৈরাগ্যের প্রতিও তাঁহার বৈরারা। একাল পর্যান্ত বাবাদ্ধীকে অত্যে কেছ প্রশাম করিছে পারে নাই। পুরুষকে পিতা, ব্রীকে মাভা এবং আপনাকে দাস বলিয়া তিনি সম্বোধন করেন। বে সময় জগতের লোক সকল নিডায় অচেতন থাকে खन जिन कानिया (मीठ काठमन सानानित कना वर्षित इन। शाधक ভদ্ৰ বিশ্ব বাবাজীৰ বড় অনুগত প্ৰিয় সেবক, তিনি এক দিন সভোবিণীকে সজে লইরা ঐ সমর আপ্রমে উপস্থিত হইলেন।

उथन उसनी भरतान थाइ रहेग्राट्ड, किस अवकात प्रकल अञ्चान करत

নাই; নিভ্ত কক্ষে, বৃক্ষান্তরালে ভাষারা প্রাণ্ডিত রহিয়াচে। উগার আলোকে পূর্যা দেবের সমাগম চিতু দেখিয়া নক্ষত্রশি একে একে একে ভবে পা ঢাকা দিতে লাগিল। প্রভাতভারকার জ্যোভিও সেই জন্য ক্ষান্ত্রভ দুইয়া আদিল। আকাশপালণ পরিজার করিবার জন্য পরন দেব নীরে নীরে চামরহস্তে বাহির ছইলেন, তাপস্দিগের কানে কানে কি বলিলেন, পক্ষান্তিরক জাগাইলেন। বিহলপরিবার কেই উঠিয়া বিসয়াছে, কেছ পালা মানি দিহেছে। এমন সময় সদানক্ষ পামী থার গল্পীর পাদ বিক্ষেপে কমওপ্রত্তিছে, কেই গাত্র কল্পান্তরার, প্রদীপ্ত ভ্রাক্ষরের নাম গল্পান করিয়া সম্প্রতিক ক্ষান্ত্রভাবির বাহিলেন। কে সেই দেবলী সক্ষনি ভরিয়া সম্প্রতিক বৃত্তান্ত্র বাহা বাহিলেন। কে সেই নারী, সেবানক্ষ ভাগার আলু-পূর্ব্রিক বৃত্তান্ত্র বাহা বাহা ভানিয়াছিলেন ভাষা বিলিয়া মানিশেব পরিচয় দিশেল।

আহা সেই বিজিতাত্বা সাধুর কি প্রসন্ন মৃতি ! শান্তি খেন মৃতি মণী মুখমগুল আনন্দে চল চল করিতেছে। খেন হাসির এক খানি চিএপট। খন মান বিলাস প্রশ্নতা লাভের হাসির মত সে হাসি নয়। ভোগ ফুখানক ইন্দ্রিশ্ব-পরিকৃপ্তা ব্যক্তি রুখা আমোদে আমোনিত হইর। যেমন হাসে সে হাসিও নয়। হায় রে আপ্রকাম সাধুর স্বর্গীর হাসি, ভোমান মত পবিত বস্তা অপতে কোথার পাইব। কাহার সঙ্গের বা ভোমার উপমা দিব! নির্দ্ধের শিশু সন্ধান জননীর কোলে জন্যপান করিছে করিতে হাসে তাহা খেবিয়াছি। প্রেম্বর প্রতিমা স্লেহের অবভার সভা নারীর প্রকৃত্ব আননের হাসিও খেবিয়াছি। শক্তে নির্দ্ধির হাসি বাহির হার ভাহাও খেবিয়াছি। ক্লেব হাসিও খেবিয়াছি। ক্লেব হাসি, চিলের হাসি, হেমকান্তি শল্যাক্তর বিস্তার্গ ভূভাগের হাসি, নবজলপ্লাবিত স্থাত-কল তরস্কৃত্বিত বর্ষাকালীর নদীর হাসি, তর্পাক্ষণের লোগিত রাপে অসুরঞ্জিত চিরভুষারারত ধবল পিরির হাসি, নবনীবদ্ধানে চক্তম। চপলার হাসি, সকল প্রবার হাসিই খেবিয়াছি; কিছ সিদ্ধ মহাজনের বোগ প্রভাবন্ধিয়াছি;

স্ম্বিত অটল শান্তির দিব্যহাসি যেমন কুলর এমন আবে কিছুই নাই। বিপুল কেশ বছন করিয়া, পৃথিবীর সকল সুথে জলাঞ্জলি দিয়া কৃপাসিত্ব সাধু পরিবামে অনত হাস্যময়ী বিশ্বমনোমোহিনী অধিল্মাতার নিকট এই হাসি পুরস্কার প্রাপ্ত হন। কৃত্রিম কৌশলে খাস প্রখাস কৃদ্ধ করিয়া কলিত चात्नाक त्निशा (य शांतित छेन्द्र शत्र, छाशाय सोन्वर्ग नारे। सानकरनती মদ্যপান করিয়া যে হাসি হাসে তাহাতেও কিছু রস নাই। যৌবনমদে অল্প, বস্তালকারে সজ্জিত, সৌন্ধাগরের গরিবত যুবক যুবতী এবং নবপ্রেমানুরারে উন্মত নায়ক নায়িকা বেরূপ হাসে ভাহাতেই বা প্রতিভা মাধুর্য্য কৈ ? এ ম্বর্গের হাসি, মর্গবাসী অমরগণের পৈতৃক সম্পত্তি। মানুষ ধর্মের জন্য কেন এতকট্ট স্বীকার করে, সংসারের কোন অবস্থাতে শাভি না পাইয়া পরিশেষে কেনই বা সে ভগবানের চরণে শরণাপন্ন হয় এবং ভাহার শেষ क्लारे वा कि, जाहा এই সমানन आभीत हात्रिमूच म्लाहे जात्रात्र विनशा पिएउ-ছিল। ইহা শরীরের ধর্ম নহে, যোগী আত্মার যোগপ্রতিভা, আনন্দময়ী জ্বননীর অনন্ত হাস্যের প্রতিচ্ছায়। ফল দ্বারা বেমন বৃক্ষ চেনা বায়, হাদি মুথ দ্বারা তেমনি সাধুর সিদ্ধত্ব লাভের পরিচয় হয়। তাঁহার অভারের বে সজিস্তা, বৈগোলুভূতি, বহ্মদন্তোগ, বিখাস ভক্তি প্রেমের দৌশর্যাচ্চটা लगारि, शुक्राल, नश्राम ଓ जायुगाल पराष्ठ अक्षेत्रारत वाल वरण व्यापनारमञ् ত্বরূপ মূর্ত্তি অক্ষিত করে, তাহাকেই আমরা হাসি বলিতেছি। ভাষার কিন্ত ছিব সৌলামিনী তুল্য চিরছায়ী। এ হাসি চিরশাভির পুণাভূমিজাত আনন্দের ফুটস্ত গোলাপ কানন সদৃশ। ষেন মেখোমুক্ত শারদীয় পূর্ব भगश्दात कमनीय कोमुनीत छेलत छोड विक्रलीत छलछ दाया। यनि कथन প্রেমের বিজ্ঞলী অন্তর্হিত হয়, তথাপি শান্তিচল্লমার ওল্ল শীতল জ্যোতি निर्वता हरेटर ना। छाँहात हित्रहातामुद (करल रेहारे दल स "पर्य कर्य সকলই মিল্যা, তুল তুল জীবন মরণ সকলই মিল্যা, কেবল হাসিই नতা।" হায় কৰে হান্যালোকপূৰ্ব অনস্ত চিলাকাশে এই ক্ষুদ্ৰ জীবাত্মা প্ৰমাত্মার হাসিতে হাসি মিলাইয়া মহাহাসি হাসিয়া হাস্যাপ্ৰে ডুবিয়া ষাইবে!

मरकारियो महानक सामीत ६३ हामामत्री छात्रवरी एक मकर्गन

অতিমাত্র প্রত্যাশাপর হইরা বলিলেন, "পিড: ! এই চিরছ: বিনী জনা-বিনীর প্রতি এক বার কুপাকটাক্ষ কর, আমি ডব্যন্তপানলে সর্ক্রণা দর হই-তেছি, আমার মুক্তির পথ বলিয়া দাও, আমি আর তোষার ছাড়িব না।" এই বলিয়া তিনি বাবাজীর পদপ্রান্তে দ্ওবং প্রিত রহিলেন।

সদানক ভদীয় প্রিয় শিষ্যের মুথে সেই স্ভগা ত্রকণা বরবর্থনীর ভাণের কথা সকল ভানিয়া বলিলেন, "আছে। তুমি অধীর হইও না, বাহা বলিভেছি এবণ কর। আমি কাহাকেও কখন উপদেশ দিই না, কেবল ভানি। তোমাকে দেখিয়া আমার জ্লয় বড় আর্ম্র ইইডেছে। কিছু কি করি, আমি পৃথিবীর নিকট যাহা শিধিবার ছিল বাহা শিক্ষা করিয়া এক্ষণে দেহত্যাগের অন্ত প্রস্তুহ ইয়া রহিয়াছি। পূর্কে মালাভে এক এক বার বাহির হইভাম, এবং লোকসল করিভাম; কিছু কাহাকেও পথের পথিক ভাবের ভাবুক পাইলাম না, তবে আর আমার অসার কুই-ছিভায় প্রয়েজন কিছু শীন্তই আমি আকাশে অনভের সঙ্গে মিশিব।

সভো। আমার একটা গতি আপনাকে করিয়া বাইতেই ছইবে।
আপনার নিকটে থাকিয়া দাসী ছইয়া আমি পদ দেবা করিব।

সলা। আমার কি বাড়ী লর আছে মা, ডাই নিকটে থাকিবে ! পছ-সেবাই ব। কিরুপে করিবে ? উহাত অচিরে মাটাতে মিশির। বাইবে।

স্তৈয়। আমি আপনার গুহার ভিতর থাকিব।

সদা। তাই বা আর কয় দিন, আমারত শেষ হইয়া আসিয়াছে।
●হার ভিতর থাকিবে যে বলিতেছ, আছে। মা, হুমি কি সংসারের মায়।
একবারে কাটাইয়াছ বলিতে পার ?

শভো। পিতা, আমার আর সংসারে কিছু নাই।

সন্থা। পৃথিবীর কোন ব্যক্তি কিন্তা প্রাথে কি আর ডোমার আসকি নাই ?

- ু স্তেষ্ঠা। কোন আস্তি নাই, কেবল গাহার পদে আমি আলুসমর্পণ করিয়াছি তাঁছাকে পাইবার জন্য গ্রাণ বড়ব্যাকুল হয়।
 - সভা। তিনি কি ডোমার সামী ? সভো। তছপেকাবেশী, তিনি আমার জীবনসর্কাস।

ন্ধা। যে রাজ্যে তুমি আনিয়াছ, এখানে পার্থিব কোন প্রকার সম্বর্ধাকে না। এখানে কেই কাহারো স্থামী বা স্ত্রী নহে, সকলেই সেই অনন্ত চিলানলের প্রতিবিদ্ধ সদৃশ। আচ্ছা বল দেখি মা, তিনিও কি বাসনাবিজয়ী মৃত্তিপিপাস্থ সাধক ?

সভো। আছেও হা। আমরা উভয়েই আধ্যাত্মিক প্রেমধারে সন্মিলিত।

সদা। প্রেমের বিকার কাটিয়াছে কি বলিতে পার ?

সভোষণী এ কথার পরিকার উত্তর দিতে সক্ষম ন। হওয়ায় বাবালী বিলিলেন, "কিছু কাল তপস্যা করা চাই। সকল প্রকার ইচ্ছাকে নির্বত্ত করিয়া ভগবান সচিদানলে আত্মবিসর্জ্জন কর, কেবল তাঁহারই অনস্ত ঐত্মর্থা দেখিয়া দিবা নিশি ভূলিয়া থাক। আমার এ আপ্রমে কাহারো বাস করিবার অনুমতি নাই, তুমি একটু দ্রে কুটীর নির্দাণপূর্বক ষ্থারীতি ভপস্যায় নির্ক্ত হও, পরে, য্থাসময়ে আবার দেখা হইবে।" এই বলিয়া তিনি গুহাপ্রশ্বেশ করিলেন।

তদনত্ত্বর স্থানীকীর উপদেশালুরপ আশ্রেমবাটীর প্রান্তভাগে অদ্বের উহিছে এক কুটীর নির্মাণ করিয়া দেওয়া হইল। সেই প্রপ্রেমিক দরালু ব্রাহ্মণই তপস্যার সমস্ত আয়েজন উদ্যোগ করিয়া দিলেন। তিনিই তাঁহার আহার সংগ্রহ করিয়া দিয়া বাইতেন। এইরপে সাধুর সাহাব্যে ভগবানের কুপায় সন্তোহিশী মুক্তির সোপানে পদার্গণ করি-লেন। যখন পথ পাইলেন, সঙ্গী ধরিলেন, তখন আর পম্য স্থানে পৌছি-বার অস্তরায় কোথায় ? বাবাজীর স্থগীয় যোগবল তাঁহাতে সংক্রামিক হইয়াছিল। ভাহার প্রভাবে তিনি মহাধ্যানে ময় হইয়া সংসারসমুক্তের ঘটনারাজীকে জলবুদ্ধের ন্যায় ক্ষণস্থাী অমুত্র করত ভগবৎপদার-বিশ্বে আস্থামমর্পনি করিলেন। আশা বিশ্বাসের হত্তে সিদ্ধির কল বাবণ করিয়া সাধনে নিযুক্ত হইলেন। স্তরাং সাধনের স্কে স্ক্রে ভাবণ করিয়া সাধনে নিযুক্ত হইলেন। স্তরাং সাধনের স্কে স্ক্রে অসম হইয়া উঠিল।

যোড়শ পরিচ্ছেদ।

नवजीवन ।

সজোবিদীরত এক প্রকার গতি করা গেল, বাঞ্চারামের সংবাছট। এখন এক বার লওয়া যাউক। তিনিত সেই বেগিং বাব্র হল্তে সংসারের উদ্দিষ্ট ধাহা কিছু সঙ্গে ছিল সমস্ত উৎসর্গ করিলেন। তার পর একাকা উদাসীন বেশে মন্ততার আবেশে পদর্জে বদরিকাশমে গিয়া ধ্বা সময়ে পৌছিলনা। তথার মহারণ্য পরিবেটিত নির্মাননাদিত এক ছাত ক্রম্য পিরিকল্পর তাহার তপোনিবাসের জন্য নির্দিট হটল। সমস্ত দিন রাত্রি তথার ধ্যান চিন্তা জপ তপে মর্থ থাকিতেন, কেবল দিনান্তে এক বার মাত্র ফল ম্বানিকাশ্ব সংগ্রহের জন্য বাহিরে যাইতেন। মহা একাগ্রহা এবং দৃঢ় নিষ্ঠার সহিত্ত অতি কঠোর তপ্যয়া আরস্ত করিলেন।

যোগীজন নিসেবিত প্রেচান তীর্থ বদরিকাশ্রম অতীব পবিত্র গণ্ডীর ছান। বৎসরের মধ্যে ছয় মাস ইহা ত্রারার্ড প্রাকে। ন্রে দ্রে ল্রে তাপসদিগের এক একটী নিভূত নির্জ্জন ক্টীর, নিকটে অপর মন্বার গভারাত্ত নাই, বিষয় বাণিজ্যের কোলাহল নাই। চহুর্লিকে মহোজ্জ শৈলমালা, জয়ধ্যে পর্বেতনিঃস্যানিলী তাটনী সকল রজতঃ রেধার ন্যার কুল কুল নালে বহিয়া ঘাইজেছে, আর ভাহার মৃত্ কল্পনির সহিত ছয় মিলাইয়। পার্মালা বিহুলগণ গীত গাইতেছে। উপরে ঘন নীল স্থনির্মাল অনম্ব গলন, নিয়ে নয়নরঞ্জন হরিছর্শ উরভানির তরুরাজা। শীভল আকাশে রিয়ে সমীবন, শান্তি শৈলে শান্তি সলিল নিরম্বর প্রবাহিত হইতেছে। শস্যভ্রাম্থিত উপত্যকা ভূমি সকল সোপান শ্রেণীর নাার গহরে হইছে উর্ছে শিবর ক্রেছেশ উঠিয়াছে, এবং তাহার পার্যে পার্বে শান্ত ক্রেছে। বায়ুর স্থন স্থন, তিনীর মৃত্ কলনার এবং প্রাণিপরের সমীত ধ্বনি ভিলারির ক্রিতে করিছে দশ দিকে ধারিত হইতেছে। বায়ুর স্থন স্থন শব্দ, তিনীর মৃত্ কলনার এবং প্রাণিপরের সমীত ধ্বনি ভিলারুর স্থা মিলাইয়। শান্তিবাহিনী শ্রম্বভিদেবী মহাবের মহিবাহের বিহ্না

পালে নিযুক্ত রহিয়াছেল। বর্ষাকালীন নিবিত্ত নীরদের ঘন কৃষ্ণছায়ায়্য বিশালবপু ভ্রবের সর্বাক্ষ ঢাকিয়া ফেলে এবং তাহার পঞ্চীর ঘন গর্জনে পিরিকলর সকল প্রজিবনিত হইতে থাকে, আর সেই সক্ষেক্ষরকাভিকা দামিনীর সকল করণে দিঅওল সমুজ্জ্বনিত হয়, তৎকালকার গাভীর্যা দর্শনে মন আপনা আপনি সেই অনম্ভ প্রশান্ত মহান্ প্রক্ষের কোলে গিয়া ঘুমাইয়া পড়ে। ত্বারকিরাটি নগেল্রপতি হিমালয়ের এই সকল গন্তীর দৃশ্য দর্শনে, এবং বিচিত্র সঙ্গীত ধ্বনি প্রবাদ, ভাহার দ্বিশ্ব বায়ু সেবনে এবং শীতল জল পানে চঞ্চল চিত্ত অবোগার আত্মাপ্ত বোগের শান্তি অন্তব করে। নীল আকাশের তলে, মুক্ত বায়ুর কোলে, তৃক্ব গিরির শিশরে বসিয়া, ভীমকান্তি অল্ডেল পানে চাহিলে আর জন্য কিছু মনে থাকে না, ক্ষ্ জলবিলু যেন অনন্ত মহাসিক্ষতে একবারে বিনীন হইয়া য়য়। অসীম চিদ্বিনাশে চিত্তবিহক্ষ যোগভরে যেন উজ্জান হইতে থাকে।

"মদ্রের সাধন, কিয়া শরীর পতন'' এই প্রতিজ্ঞা করিয়া বাঞ্চারাম বোগাসনে উপবেশন করিলেন। দিন রাত্রি মাস বর্ষ নিমেষ মৃত্রুর্ত্তর ন্যায় চলিয়া বাইতে লাগিল। আহার নিজা কেবল নাম মাত্র, পরম চৈতনোর ব্যানে চিত সর্বাদা নিময়। কিন্তু অত্রে শরীরের পতন, তার পর মদ্রের সঁতন। জেমে তপস্যার তেজে শরীর শীর্ণ চুর্বল শুক্ত হইতে লাগিল। শেব এমনি নিজ্জীব হইয়া পড়িলেন, যে এক বার বাহিরে গিয়া যে আহার অবেষণ করিবন তাহারো সামর্থ্য রহিল না। ক্ল্যা নিজার অধীন বলহীন পাঞ্চতীতিক তমু নিজবর্ম পরিত্যাগ করিতে চাহে না। জলের মীন জলেই বাঁচে, ভৌতিক বেহ তেমনি ভৌতিক পদার্থ অবেষণ করে। শুডরাং সেবার জভাবে শরীর কীণ মলিন ক্রম হইয়া পড়িল।

বাস্থারাম শরীরকে একবারে ককালমাত্র সার করিয়া ইক্রিরপদকে বেন পদছারা দলিত করিতে লাগিলেন। ইহাতে ভৌতিক দেহরাজ্যে রিপুপরি-বারমধ্যে মহাবিপ্লব উপস্থিত হইল। তখন অপরিত্তা শোণিত মাংস-্লোলুণ বাসনারাক্ষনী পশুপ্রবৃত্তি দৈহিক জীবনীশক্তিকে ডাকিয়া ব্লিক, "কেব, পূর্কে আমরা বে আখক। করিয়ছিলাম, তাহাই তো সভ্য হইল । এবার আমরা স্বংশে নির্কংশ হইতে বসিয়াতি, আর রক্ষা নাই, শীস্তই আমারের জীবন বিনষ্ট হইবে, ভোমরা শেবসংপ্রামের জন্য সকলে প্রস্তুত হও। আমরা মরিবার জন্যই জন্মিরাছি, প্রাণ ভো বাবেই, ভবে বিনা-মুক্তে কেন বার; প্রাণপণে সংগ্রাম করিয়া মরিব। ভোমারের বাহার বত টুকু শক্তি বল আছে, ভাহা লইয়। আমার পশ্চাতে আসমন কর। আমরা আজুরক্ষার জন্য সম্বে প্রস্তুত্ই।"

এই বলিয় কুবৃদ্ধি, কুবৃদ্ধি, কুক্লনা, নিরাশা, আবিধান, ভর আভবিক্লুজি সন্দেহ প্রভৃতি বাহারা ভরে ল্কাইয়াছিল ভাহাদিগকে সফে লইয়া নেই রণরিফণী ভীমদশনা বাসনা রণছলে দ্পাহমানা হইল। উহায়া সকলে মহা হজার গর্জন করিয়া বাঞ্রামকে আকৃটি সহকারে বনিডে লাগিল, "রে আজ্বাতী, ভাস্ক, গৃহাজমে অবস্থান কালীন মনে মনে বে সিদ্ধান্ত করিয়াছিলি ভাই পেবে কাজেও করিল। আমরা সকলে মিলিয়া এত বে বিলাপ আর্তনাদ করিলাম, কত সংপরামর্শ সক্রেম্ম দিলাম, তাহার প্রতি একবারও মনোবোগ দিলি না? আছে। ভোরে উপ্রক্রাম, তাহার প্রতি একবারও মনোবোগ দিলি না? আছে। ভোরে উপ্রক্রাম, তাহার প্রতি একবারও নানাবোগ দিলি না? আছে। ভোরে উপ্রক্রাম কিলা দিতেছি দাঁড়া?" অনজর তাহারা বাস্ত্রামের ওপোনিষ্ঠা, সাধনপ্রতিজ্ঞা, বৈরালাপ্রভাব, বোগামুরাগ সমল্ভ বিপ্রাল্ভ করিয়া তাহার উপর চাপিয়া বসিল। শক্রক্লের ভাবল আফালন পেবিয় অগতা। ডিনিও মহাসংগ্রামে প্রবৃত্ত হইলেন। যাহা কিছু গা সম্বন্ধ অসতা। ডিনিও মহাসংগ্রামে প্রবৃত্ত হইলেন। বাস ব্যান নামগান লগতপ্র প্রভৃতি রক্ষকগণের আপ্রর লইবেন।

ছির চিত্ত হইর। বাই নির্বাগানক সন্তোগের জন্য বাঞ্চাম একট্ আরোজন করিতেছেন, সহসা এলক্ষিতভাবে নিজ্ঞীবনের প্রেমনীলার বিচিত্র বর্ণের ছবিগুলি মানসনেত্রের সম্মুবে আসিলা উপছিত হইল। অমান্ মন সংসারের ছিকে মহাবেগে ছুটিতে লাগিল। আল্লহারভার কর্মের নাল ক্বিতে লাগিলেন, যেন সন্তোহিণীর কোলে নাবা ছিল। ভইরা আছেন এবং ভাবে গদগদ হইরা তাঁহার ঐতিজ্ঞা পান করিতেছেল। এড ছিল মহাবৈর্গাসের ফ্লভ তেমে লাণ মন করেও

উৎসাহিত ছিল, বিচ্ছেদ বেদনা অমৃভূত হয় নাই, এক্ষণে পূর্বের সমস্ত ভাব চক্ষের সমূধে আসিরা দাঁড়াইল। সভ্য বটনা, কলনা, সুবস্থ সমস্ত বেন স্রোতের ন্যার সারি সারি একটার পর একট। মনে উদিত হইরা কষ্ট দিতে লাগিল। ভাড়াইতে যান, ভুলিতে চেষ্টা করেন, কিছুভেই কিছু হয় ना; वदर चारता छाहाता मूच वाहित कतिया निकटे चारम, ठातिक्रिक ঘরির। বেডার। একটার পশ্চাতে দৌড়ির। যান, অন্য দ্বার দিরা আরু क्षणी चात প्राटब्स करता जुत ह। वरणन, (कह नएए ना; खत्र स्पीन, তাহাতে ভর পার না। আবার হাসে, মুধ ভ্যাংচার, উপহাস করে। ভৌতিক দেহ যত দিন দেবভাবে পরিণত না হয় তত দিন সে ভূতের অধীন। ষেন মত মত ভূত পেত্রী তাঁহাকে লইয়া খেলা করিতে কাগিল। একে অনাহারে অনিদ্রায় দেহ ক্ষীণ, ক্লিষ্ট অবসন্ন, তাহার উপর নিরাশা অবিধাস বিরক্তি মানসিক দৌর্বলয়, তাঁহার চিও নিমেষের মধ্যে ক্লিপ্তা প্রায় হইয়া উঠিল। এরপ উজ্জ্বল মোহময় রম্পীয় ঘটনা তাঁহার জীবনে ইতি পূর্বে कथन चटि नारे, अ रचन अकवादत अर्थाक्टर अक्रिड, श्रास्ट (यानिड, अन्धि मख्जात मुक्क धार्थिए। यहिन हेटा महाविकात्त्रत खरुष्टा, कन्ननात नीला, অবিদ্যার খেলা, কিন্তু জানিয়া শুনিয়াও কিছু করিবার ক্ষমতা নাই। অসংষ্ত্রমন, চুর্বল ক্লয় মন্তিক, সেই প্রপ্ন কলনা পান ভোজন করিয়া মুখী হইতে চার, কিন্তু শেষে জুংখে মরে। বিরহের অবস্থায় এ∻ার चर्रेनावनी आद्या महत्त्व ७० मत्नाहत्र ७वर स्थिष्ठे विनन्ना अवृक्त হইতে লাগিল। অনলের সঙ্গে পতকের কি যে নিগঢ় আস্থীরত। তাহাঃ विज्ञहानलक्ष क्षेत्रीहे (करले कारन।

"আচ্ছা, এক বার ধ্যান করিয়। দেখি, মনের গতি ফিরাইতে পারি কিনা"। এই বলিয়া তিনি চিত্ত সমাধানপূর্বক ধ্যানে মল্ল হইবার চেটা করিলেন। "তৃমিই সত্য, তৃমি সার, আর সকল মিধ্যা অসার। তোমাতে আমি, আমাতে তৃমি। অস্তরে বাহিরে তৃমি পরিপূর্ব।" বারস্থার এই কলা বলিলেন। ক্ষণ কাল মিস্তর থাকিয়া "এ কি বিপদ! ধ্যানের মন্ত্র আশিতে আলিতে আবার কোবায় আসিয়। পড়িলাম! পুক্র, বাগান, ফ্লের লাছ, 'শিবের মন্দির, রাসমঞ্চ, পুজার দালান, আটচালা, অটালিকার ছাদ, এ কে

"কিফু যাহাকরিতে বসিলাম তাহাত হইল না। এ বে অনতের পরি-বর্ত্তে সান্তে, বিশুদ্ধ হৈতবন্যর পরিবর্ত্তে অড্টেডেন্য আমিয়া পথ থেছে করিল। যাহাতে পিপাসা বৃদ্ধি হয় তাহাই পুনঃ পুনঃ পান করিছে। হার প্রেম কি ভয়ানক বিকার! ষাহাতে মনের শান্তি ভব করে, চিত্ত বিচলিত হয়, জ্ঞানী বোগীয়া ভাষাকে বিষয়ৎ পরিভ্যাগ করেন। সবইত বুঝিলাম, এখন মিধা৷ মায়ার হাত এড়াই কি প্রকারে : আহে৷ সভ্য ষদি শিখ্যার মত সহজে মিই লাগিত। ঠাকুর, যাহা অসার অনিতা তাহাকে (कन ज्यि এफ মোহিনী শক্তি किला १ विक किला चाला काजिला नहेर्द, তবে মন হইতে তাহার দাগ কেন একবারে মুছিলে ন। ? অংশ । সূত্র পার্থিক **अटलाज्य चामक रहेल एजमारक भावता वाल ना, बहे बना काल हरेल** ৰদি ৰঞ্জিত করিয়া থাক, তবে তুমি সদয় হঠয়। (কন ভোমার **৩৭** मोन्दर्श सामादक जुनारेबा अन ना १ वृक्तिनाम दृश्चि वड प्रेयाविक (प्रवत्ता, व्यन, काशीक कानवामित (जामात्र व्यात जाहा महा हव ना। व्याद्धा ु छ। श्रुविर्देष, अनामितक एटव आमारक वारेटछ मात्र . कन १ व्याननाव मिटक (कन डे|निया नश्नाश्रायः (द रेक्डा प्रकल कार्यायः मृत निक्, प्र • নিজেই ৰদি মালামুক হইলা পড়ে, তবে আমি কাহার শরণাপর হইব ় বিশু-शिरणत विवाद्ध वारण स्वयंत्र मन आण स्वर्कातिक हरेबार्छ। असन मंतिरण বদি প্রকৃতির প্রতিশোধ হয়, তবে না হয় আমার মরণই হউক ! হায় রে আমি ছই কৃল হারাইলাম ! বদি উচ্চ জ্ঞানের অনুমোদিত উচ্চ ব্রত না লইরা কোন রূপে সংসারে মাপা গুলিয়া পড়িয়া পাড়িয়া বাইব গুলা, মিথ্যাকে মিথ্যা জানিয়া তাহার আকর্ষণে কি আর ভ্লিডে পারি। কিন্তু আর সহয় হয় না, হলয় অশান্তির অনলে জলিয়া যাইতেছে, ভজন সাধনে কোন ফল ফলিল না। প্রবৃত্তি সকল যেন এক সময় মন্ত মাতক্ষণং দশদিকে ধাবিত হই-তেছে। হে রিপুরণ, হে প্রবৃত্তিসকল, আর আমাকে তুংগ দিও না, রক্ষা কর। আমার ক্ষমি চূপ হইয়ারেল।

এই রূপ বিলাপ আর্ত্রনাদের প্র বাঞ্চারাম সেই খানে মৃভবৎ পড়িরা বিছিলেন। এ প্রকার বিপদে একবার যে তাঁহাকে পড়িতে হইবে তাহা জানা কথা। কেন না অভ্যাতসারে যে মোহনরল তাঁহার জ্লুরে প্রবেশ করিয়াছিল তাহা জান হয় নাই, সুভরাং তাহার ফল অবশাস্তাবী।

বাঞ্ছারাম নিতান্ত ক্লান্ত ছইয়াঁ জপ তপ জ্ঞান কর্ম্ম ধ্যান যোগ সাধন
চিন্তার অভিমান ছাড়িয়া যথন জ্ঞান স্বরে এই বলিয়া প্রার্থনা করিতে
লাগিলেন,—"মা গো, তৃমি কোথায়! কাতর সন্তানের পানে মুধ তুলে এক
বার চাও মা, আমি বৃঝি এই বার মরিলাম। আমার ব্যথিত অকে তোমার
ক্লেহহন্ত ধানি একবার রাথ মা, তোমার শীতল কোলে আমি একট ধুয়াই।
একট চরণামৃত আমার মুধে দাও, শুক কঠ শীতল করি।" এই কথা বলিতে
বলিতে তাঁহার বাহ্য চৈতন্য বিলুপ্ত হইল। সেই অবস্থার এই মৃহ মধুর
ক্লৈবনানী প্রবণ করিলেন;—"ভর নাই, ভয় নাই, আশা পূর্ণ হইবে। পুরুব
আ্রা প্রাআ্রা পরমা্রায় বিরা মিশিবে। স্পরীরে বর্গারোহণ করিবে।
বোলিনী মাতার নিকট দীলিত হণ্ড, তিনি তোমায় সংপ্থ দেখাইয়া দিবেন।"

যথন এই প্রনীর আশাবাক্য প্রথম করিলেন, তথন ঠাছার ভক্ক বিশীর্থ মুখমওলে আবার কিঞ্চিং জীবনের চিত্র প্রকাশ পাইল। আপ্রমের অন্তর এক ঘোলিনী মাতা অব্ছিতি করিতেন, তিনি সেই সময় বাছারামকে অচেডনপ্রায় দেখিয়া তাঁহাকে কোলে ত্লিরা লন, এবং ক্মওলুইছইডে বিস্থিক্ থকা তাঁহার মুখে প্রধান করেন। তাঁহার বোধানক্ষরী ভত্তর प्रश्नाम प्रश्निम प्रश्नि व्याश प्रहेत्वन, बनः काहात म्थान हारिहा व्यानमात्क वर्षन कतिएक नानित्वन । बहे व्यानोकिक नहेना नर्नत कानप्रमुख्योग्नेप्रा प्रश्ने व्यानम स्थान के किन प्रभन वहे नरवाल निजटक व्यामीस्थाम कितित्वन । अतुन हरेल बज मिल व्यामीस्थाम कितित्वन । अतुन हरेल बज मिल व्याम के विश्वन हरेना ।

এই অমৃত প্রতি ঘটে, প্রতি ঘটনায়, প্রত্যেক অবস্থার মধ্যে পরবের সহিত মিশ্রিত হইয়া অবস্থিতি করিতেছে। প্রত্যেকের জাবনে, মান্থীয় প্রত্যেক সম্বন্ধের মধ্যে ইহা লুকান্বিত রহিরাছে। স্থ চু:ধ বোপ সুস্থতা, জীবন মরণের ভিতর অমৃত আছে। শক্রতা মিত্রতা, সংসার বৈরাগ্য, সুনীতি তুনীতি, ধর্মাধর্ম সকলের মধ্যে অমৃত আছে। খোর নরকের ভিতরেও আছে। তাই স্বরং মহাদেব ভূভারহারী ভগবান ইহা উদ্ধারের জন্য মঙ্গলহতে বিশাল ন্যায়দণ্ড বাঃৰপূৰ্ণকৈ পাণকপ্ৰিত এই বিস্তীর্ণ ভবসমূজ মন্তনে প্রবৃত্ত রহিছাছেন। ডিনি সকলকে এই কার্য্যে বোগ দিবার জন্য ডাকিডেচেন। যাহারা এই পবিত্র কার্যো সহকারী হয়, ভাহারা অভিমে গোলোকধামে বৈকুণ্ঠপতির পারিবদ হইয়। 'অস্বরগণসক্ষে নিত্য কাল অন্ত্রস পান করে। বেধানে ৰে অবছায় ষে কোন সম্বন্ধের ভিতর যিনি এক বিক্ প্রেমের আবোদন পাইয়াছেন, তাহাকে অবলম্বন করিয়া তিনি অসীয় প্রেম সাধনে প্রবৃত হউন। ধন্য ভাহার৷ যাহার৷ সংসার-গরল হইতে অমৃত তুলিরা লইতে শিবিরাছে ! কুর্ভাগ্য ভাহার। ষাহার। বলে, "আমর। গরলপানে ীবন শেব করিব, তাহা মন্তন করিয়া ভার অবমূতের অংশেকা করিতে পারিব না ভগবা-त्मत त्रारका निवास। नाहे। शतल महर्मत खनाहे मसूता खोरन अवर ভাহাতেই ভাহার কুভার্বতা। সে কার্মা ছাড়িয়া আর সে কিই বা করিবে 🕈 বাঞ্চারামের ন্যার দৃড় প্রতিজ্ঞ হইয়। স্কলে অনুতের অংবৰণ কর, निक्त्रहे माणि शहेरव।

मश्चनम शतिरुष्ट्न।

যোগশিকা।

অনন্তর সেই বিজ্ঞানবিদিনী খোগিনী মাত। শীর্ণদেহ বাস্তারামকে আজে ধারণপূর্বকি আপেনার আতাম-কুটারে লইরা আদিলেন এবং তথার মাসাধিক কাল তাঁহার সেবা ভজাবার নিষ্ক্ত রহিলেন। তাঁহার সেবা বছে সাধু বাস্তারামের স্বাস্থ্য বল ফিরিয়া আদিল কেবল তাহা নহে, তদীর বোগপ্রভাবে তিনি যোগসিদ্ধি লাভ করিবা পূর্ণকাম হইলেন।

এক নিভত গিরিসকটে গহন বনমধ্যে নির্বরতটে বোগিনী মাভার আপ্রম। তাঁহার মাত্মর্ত্তি বনদেবীর ন্যায় সেই বনস্থলীর চারিদিকে শান্তি প্রসম্বর্তা নির্ভর বিক্ষার্থ করিত। তাঁহার এমনি মহিমামর দেব-প্রভাবশালী क्रमनारमा, (र प्रिंबिटन क्रीं द्रेष्या यात्र ना रहः क्रम कछ। भरिन्छ निया-(पट्ट खरोगडी अ शाखोर्शात नक्तन पत्नी भाषान, अवह छाटा धर्य-र्षावरनत প্রফুল্লভা এবং কমনীর মধুর সৌন্দর্যো পরিপূর্ব। অটাভার-লম্বমান আলুলায়িত কৃক্ষ কেশবাশিতে পৃষ্ঠদেশ আচ্ছাদিত। স্বৈৎ লোহিত ৰাগরঞ্জিত শুদ্র অব্দ প্রতাক্তিনি গোলাপ কৃত্যের আভায় দীপ্রিশানী; স্কালে বিভৃতি, এবং উজ্জ্বল গৈরিক বসন, হস্তে কমগুলু, গলে কড়াক্ষমালা। তাঁহার অচকল কমল নয়ন বোগপ্রভাসমধিত, এবং ললাট ও গওছল অভি-মাত্র প্রসাদ-য়ণবিশিষ্ট ! বেতােজ্জ্ব দম্বশ্রেণী শোভিত মুখমগুল পরমানকে বিক্সিত। সেই সহাস্য আসে মৃত্ মধুর করে যে স্কল ক্রীয় বাক্যস্থা স্চরাচর ক্রিত হইত তাহা ভবদাবান্দ্র স্তপ্ত জনের প্রে অনুত সদৃশ ছিল। দেবী যোগসভোগে তৃপ্তকাম হইরা বৃক্ষতলে উপবেশনপূর্বক कन्याराज्य स्वनित्र महिल वीगास्वनि मिलारेश। मर्का मर्का वस्त्र मास्कृष्ट ভাষায় মধুর পঞ্জীর নালে দেবালিদেব ভগবানের স্তব পান করিটেজন, তথন (बार रहेज (बन समस्त्रन पर्न रहें एक जवाद स्वरोर्न रहेदा (महें मचीज स्वर्न করিতেছেন। সেই ভানলয়বিওর সঙ্গাত রব জ্বামে বনভূমি ছাড়িরা

থিরিশৃল্পে, নিবিশৃক অতিক্রম করিয়া আকাশে, আকাশ হইতে মহাকাশে স্তব্যে স্তব্যে প্রামে সম্প্রিত হইয়া প্রনহিল্লোলে বেন ক্রীড়া করিড, এবং লভাকুঞ্জ ডকুরাজীকে বিধৃত ও নির্মারবারি শৈশকদারকে প্রভিন্ধানিত করিয়া পুনরাম্ব আবার গাহিকার নিকট ফিরিয়া আসিত। তাহা ভনিতে ভনিতে বাঞ্জারাম যোগমগ্র-চিত্তে যেন ঘুমাইয়া পড়িতেন। তথন তাহার আত্মা আকাশবং ক্ষছ হইয়া চিশাকাশে মিশিয়া ঘাইত। স্বয়ং জপ্রবান যেন একাকী বিজনে বসিয়া সেই বামাকঠের মধ্য সহীত প্রবণ করিতেন।

ৰাঞ্বারাম কৃতজ্ঞরদে বিগলিত হইরা বলিলেন, "মাফ: আপনার শীতল বক্ষের সংস্পাধে আমার বাদনাঞ্জেরিত ভগ্নহেহ শাস্তি লাভ করিল, আমি বড় কৃতার্থ হইলাম। বাল্য কালে আমি মাড্হীন হইরা এক্ষণে আবার মাকে পাইলাম। এক্ষণে এমন দিল্প পথ দেখাইরা দিন বাহাধরিলে আর আমাকে ভবিষাতে পরীক্ষায়না পড়িতে হর।"

বোদিনী বলিলেন, "বংস. তৃমি বালক, অপক্ষতি, ভাবি সাহসের কার্য্যে ছাত দিয়াছিলে। অব্ধে চিত্তবৃত্তির নিরোধ অর্থাং সম দম বিচার শান্তি সাধনপূর্বক ভিতরে প্রবেশ করির। তার পর বাহিরে আসিতে হর, ইহাই বোলশাল্পের চিত্রপ্রসিদ্ধ বিধি এবং তপোধনদিনের অবলম্বিত পথ। তৃমি বাহ্ প্রমত্ততার সাহাযো আগ্যাত্মিক প্রেমে প্রবেশ করিতে গির। বিপদ্মত্ত ছইবাছ। যোপের অটল তৃমিতে প্রেমের বৃক্ক করে। আগে যোপে ভার পর প্রেমমহাভাব। বাহা কিছু হর ভালর জনাই হর, আর কোন কর নাই; কঠোর ব্রত সাধনে আর ভোষাকে ব্রতী হইতে হইবে না।"

তাঁহার ক্ষেত্পূর্ণ আশা বচনে ৰাঞ্যাম সাহস ভবস। পাইকেন এবং উৎফুল লোচনে ৰলিলেন, "মাতঃ বলুন দেখি, কেন আমার এমন চুর্ফশা উপস্থিত ছইল ? আমিত সমস্ত তাগে কবির। কঠোর এওচেবংৰ অবুর ইংক্তিলাম, মনে কোন বাসনাকেড ছান বিই নাই, তবে কেন আবার ছঃৰ পাইলাম ?"

সমাহিত চিজ নিভাবোগমহী বোলিনীর বোগবিদ্যা এবং বোগবদ উভয়ই কর্ডল নাজ হিল। পুনরণি ভিনি বলিলেন, "হাড়াটাইড ধর্ম নয়, সে ক্ষেত্রক মনকে বালি করা, ডৎসক্তে আবার সংপদার্থ বরা চাই। ভপবংক
সক্ষপের জীবন্ত লাবণা প্রেম্মার্থ্য জীবে প্রস্কৃতিত না হইলে শান্তি লাভের
আশা নাই। অনেক সাধক কেবল ছাড়ে, কিন্তু ধরিতে পারে না। তাহাদের
জীবনে চিদানন্দের জ্যোতি বিক্সিত হয় না। তাঁহার জ্ঞানে জ্ঞান,
ইচ্ছার ইচ্ছা, ভাবে ভাব, ফুচিতে কুচি, আননন্দে আনন্দ মিলিয়া এক হইবে,
ভবেত সিদ্ধত্ব লাভ করিবে। 'আমি স্থুপ বিলাস ছাড়িয়া বৈরাগী
হইয়াছি, এই জ্ঞানের মধ্যেও অহমিকা থাকে। ধর্ম্বেরই হউক, আর
বিষরেরই হউক, আমিত্বের একটুমাত্র হুর্গন্ধ থাকিলে ভগবান্ সে দিকে আর
অগ্রসর হন না। ধর্মাধর্মের অতীত নিক্ষাম ধর্মে ব্রতী হইলে ভগবচতরণারবিন্দ প্রাপ্ত হওয়া বায়, তহাতীত কেবল পণ্ড প্রম।

"ভগৰক্ষীতার শ্রীকৃষ্ণদেব বলিরাছেন "বোগস্থ কুরু কর্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত। ধনঞ্জর। সিদ্ধাসিদ্ধাঃ সমো ভূতা সমত্য বোগ উচ্যতে।"

হে ধনঞ্জয়, যোগছ হইয়া আসজি পরিত্যাগপূর্বক কর্ম কর। ফলা-ফলে সমান হইয়া যে মনের সাম্যাবস্থা হয় তাহাকে যোগ বলা বায়।

ছিনি আব্বো বলিয়াছেন, "কর্ম্মেলিয়ানি সংখ্যা ব আন্তে মনসা স্থান্। ইল্রিয়ার্থান বিষ্টান্তা মিধ্যাচার: স উচাতে।" যে ব্যক্তি সকল কর্ম ভ্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী হয়, অধচ অন্তরে কেবল বিষয় চিন্তা করে, সেই নির্কোধ মনুষ্যকে কপটাচারী বলা যায়।

ত্মি যে উপায় দ্বারা উদ্দেশ্য সাধন করিবে মনে করিয়াছিলে তৎপ্রতি তোমার ভিতরে ভিতরে অত্যস্ত আসিক্তি ক্ষমিয়াছিল, তাই তপস্যাতে এত বিশ্ব ঘটিল। অনেক লোক উপায়কে ভালবাসিতে গিয়া এই রূপে ভগবান্কে একবারে ছারাইয়া কেলে। তাহারা উপারের পূলা করে, উপায়কে যক পারে খুব বাড়ায়, সময়ে সময়ে ক্রোধ বশতঃ বৈরনির্ব্যাক্তরনর জন্য উপায়কে সংর্গ ভূলিয়া দের, অবশেষে ধর্মের ঘোহাই দিয়া লোকত্তর পাণাস্থকীনেও প্রবৃত্ত হয়।

বোগিনী মাতার অলোকিক বোগবলের পরিচর পাইরা বাঁরারায় তথন কাঁদিয়া অধীর ছইলেন, এবং আত্মগ্রানি সহকারে বলিতে লাগিলেন, "হায়,কোবায় আমি বিলুর সাহাব্যে সিমুকে পাইব, না বিলুর প্রলোভন

মারার প্রেমসিজু হরিকে ভুলিয়া পিয়ছি! আমার প্রাণের স্বা হরিকে আমি আদর বতু, ভক্তি শ্রদ্ধা করি নাই ! মামুমকে আমি তাঁহার প্রতি-বন্দী, প্রেমের অংশী করিয়া ফেলিয়াছি! হায় কি দুর্থ আমি! কি নীচাশয় কঠোর জ্বর আমি। যাহার প্রেমে মুদ্ধ হইর। এক সমর আমি शृथिवीए वर्ग मिथिशाहिलाय, छारात अछ छेटनका रुखारत छेरातीना ! অতো ! এ কি নিদারুণ মন:পীড়া ! আমার বড় অপরাধ চইরাছে । এমন প্রেমময় উদার কমাশীল চিরসুভূদ্কে আমি ভালবাসিতে পারিলাম না। ভবে আর আমি কোন্ অপকর্ম না করিতে পারি ? হায় মোহ, ভূমি কত রূপেট না মনুষামনকে বিপৰগামী কর ! হা ধর্ম, ডোমার মধ্যেও কেবি অংশব বিধ মারার ছলনা আছে। কি ভূজাগ্য আমার ! কি ভরানক ভ্রম ! ঠাকুব, ভোমার চক্র কে বুঝিবে ? আমি কি ভোমার অনস্ত লীলা বুরিরা উঠিতে পারি 📍 আহা এখন ভোমাকে ভালবাসিয়া ভোমার মধুর প্রেমে কিরুপে মজিয়া যাইতে পারি ভাই বলিয়া স্বাও। ভোমাকে ভালবাদিবার অক্স বে প্রাণ বড় ব্যাকুল হই ডেছে ! ভুলাইয়া লও, য়য় করিয়া ফেল; ডোমার প্রেমের জলন্ত দ্রাবকের ভিতরে ফেলিছা স্বামাকে বিগলিত কর। ঐ প্রেমের রং চক্ষে মাধাইরা দাও, সেই চক্ষে আমি সমন্ত জনং দেবি। আর আমাকে পরীক্ষার ফেলিও না, মারার মুদ্ধ করিও না। স্রামর, ডোমার চরণে মাধা দিয়া এই আমি পড়িয়া রহিলাম 🔭

জ্ঞানিক উর্ব্বা ভূষিতে উত্তম বীক রোপিত হইলে ভাগা বেনন জাচিরে জকুরিত এবং ফলফুলে সুখোভিত হয়, বোপিনী মাতার উপদেশাবলী বাঞ্চানমের চিত্ত-ক্ষেত্রে তক্রপ অচিরাং ফুকল প্রান্ধর করিল। তিনি বাঞ্চানিক পিরে 'সং চিং আনক্ষ' এই মূল মন্ত্র প্রধানপূর্বক বোগশকি করেছে। করি বিশ্বাস করিছে করিলেন। এই মূলমন্ত্র কল করিছে সংক্রোমিত করিরা ব্ধারীতি দীক্ষিত করিলেন। এই মূলমন্ত্র কল করিছে করিতে তাঁহার প্রত্যক্ষ ব্রহ্মগর্শন লাভ হইল। আহা সে কি অপুর্বা করিছে তাঁহার প্রত্যক্ষ ব্রহ্মগরিমল (আাভিতে প্রাণ একবারে স্থান্ধর অবস্থা! সচিক্ষানক্ষ প্রধান বিমান আনাভিত্র প্রধান করিপ্র ইইরা সেল। তথ্য তিনি সমন্ত্র আনাল চিছালোকমর ছেবিছে পারিপ্র ইইরা সেল। তথ্য বিল ক্ষেয়াভির সাগ্রের জ্যোভির তর্ম বিশ্ববিদ্ধর সালিকের স্থান করিলের স্থান্ধতে পরিপ্রান্ধিত, মুখ্য তল অনির্ব্বিচনীর শাভিরসে নর্মন্তর আন্মালিকে সালিকেরিলীর শাভিরসে

প্রকৃত্মিত, সর্ব্বাক্ত ছির, আছা প্রেমানক্ষাগরে নিমধ। ভগবানের প্রেমানক্ষাগরে দিয়া তিনি তৃপ্তকাম হইলেন। তথন ওকে শিব্য উভরে উভরের সহিত মিলিত হইরা স্বর্গভোগ করিছে লাগিলেন। এইরূপে যথন সব দিক জ্যোতির্মির আনক্ষার হইল, তথন বোগিনী মাতা "প্রস্কেন ষদি প্রেমধনং কোপিলভেৎ তস্য তৃত্ম্ স্কলম্। প্রেম্প্র বদি ভাতি ক্ষণমেকং ভ্রম্রে, সকলং হস্ততলম্।" এই প্রকাশত সঙ্গীত গাইলেন।

বাঞ্বানাম দ্বীবনে কথন গান করেন নাই, কিন্ত এক্ষণে তাঁহার এমনি ভাবাবেশ হইল বে তিনিও অজ্ঞাতসারে প্রের প্র মিলাইরা সেই গীত-তরকে তাবন ভাসাইরা দিলেন। পরে যোগিনী মাতা তাঁহাকে কোলে বসাইরা কঠে কঠ মিলাইরা অধিকতর উল্লাসের সহিত গান ধরিলেন। এমনি সে মধুর সন্ধাত, তাহা তাবণে হিমানিরঞ্জিত গিরিশৃক সকল ঘেন অবীভূত হইরা ভ্রোতসভীরণে বৃহিয়া যাইতে লাগিল, বায়ুমগুলের সহিত সমস্ত আকাশমণ্ডল মধুমর হইল, বিহলকুল বিপুল বংকারে মহাহরিদ্রাজীর আবন্ধ করিলে, লভাকুঞ্জ এবং পাদপত্রেণী নীরবে তাহা ভানিয় পুশার্টি করিতে লাগিল, চকিতনয়না কুর্জিনীগণ বিমারবিক্ষারিত লোচনে উৎকর্ণ ইইয়া দাঁড়াইয়া রহিল। বাঁকে বাঁকে মধুমন্ধীকা ও আলিকুল উড়িয়া আসিয়া পড়িল, সমস্ত বিশ্ব যেন সন্ধীতস্থাপ্রে তুবিয়া গেল।

ষোগদভোগ এবং সঙ্গাতের জনসানে যোগিনী বলিলেন, ''এক্সণে ভূমি দিওদেহ-প্রাপ্ত হইয়াছ, এখন গাফীপুরে গঞ্চাতীরে আমার ছক্তিভালন ধর্মবন্ধু প্রীমংসদানক সামীর আপ্রেমে গমন কর, তথার ছোমার নিজ্য-সংচরী জীবনসন্ধিনী সভোষিণীকে প্রাপ্ত ইইবে।'

অফীদশ পরিচ্ছেদ।

सर्गादाह्य।

জ্ঞান, বৈরাগ্য, বোগ, ভক্তি, প্রেম, পুণোর স্বর্ণীয় উপাদানে রচিত ভাগবতী ততু লাভ করিয়া বাঞ্জারাম পূর্ব্বোক্ত হৈববাদীর অমুদরণ করিলেন। चक्किविश्रामिक हिट्छ (श्रातिनी श्राण। अवर चाल्यस्वानी जानमश्रामोद निक्षे প্রণামপূর্বক বিদায় লইলেন। ইতিপুর্বে তিনি অবতের অভ্যেক ভৌতিক পদার্থ এবং মানসিক ক্রিয়ার মূলে পরম পুরুষ ভগবানকে পিতা মাত। भशाक्तरल चिक्तितात वर्गन क्षित्रा चक्तिवाभी दहेवाहितम, अ**क्ट**न स्वात-সিদ্ধি লাভ কৰিয়া অন্তর বাহা, ইহ পরকাল, স্বর্গ পৃথিবী, ভূত ভবিষাৎ সমস্ত হরিময় দেখিতে লাগিলেন। ইহাতে তাঁহার হুত্র বিশুল আনশো-চ্ছাসে আপ্লুড হইল, প্রেমরাপে রঞ্জি নরন ভক্তিলতে ভাসিতে শাধিন, ভাহার স্বচ্ছ দর্পণে বিশ্বক্ষাও ব্রহ্মজ্যোভিতে জ্যোভিত্বান্ হইছ। এক क्रपूर्व कानक्षाम तहना कहिल । अधाम निक्ष, छात पर मध्य, परिस्थर ওবায়ত লাভ। ইছোভাব আমান সমস্ত অনজের অক্লীভূত হইল। আচ্চ ইজিক, পর্বত নির্বর, আকৃষ্ণ বায়ু, চঞা স্থ্য, সমল্ল জাহার নিকট জীবল্লভাবে তখন কথা কহিতে লাগিল। জীব হবন প্রকৃতিছ 🔐 তখন প্রকৃতির পঢ় প্ৰকৃতি ভাৰণতি নৃত্য গাঁত আমোৰ কৌচুক কথাৰাউ। সমস্ব সে বুঝিডে পারে। যে নিওণি আধাাত্মিক অবৈতবাদের অন্তুর বারারাথের প্রথম যৌবনে অভাবতঃ উৎপদ্ন হইলাছিল, ডাহা একৰে সতৰ পৃক্ৰের সহিত মিশিয়া दिভাটিরভবাদের সমবং সাধন করিল। পূর্ব একো অপূর্ব জাবাত্মা, চিত্বাকাশে চিহিন্দ্, অনস্ত জনভাৱিশিখার স্বোতি কবিকা মিশির। গেল। ্ অতঃপর প্রকৃতির সঙ্গে আলাপ করিতে করিছে পর্কান্ডের অধিকাক। ভূমি ছাড়িয়া উপত্যক। ভূমিতে তিনি অংরোহণ করিলেন। ভাবে মত্ত বাস্তাবাম পৰিমধ্যে কখন কলভৱে অবনত তকুৱালীকে ভাই ৰণিঃ। অালিখন করিবার অসু ধাৰিত হন, কবন বা নবপল্লবার্ত বোচ্ন্যমান কুত্ব-

মিভ লভিকা সকলকে পবন হিল্লোলে ক্রীড়া করিতে ছেখিরা ভাচাদিগ্রক ভন্নী ৰলিয়া সংখ্যাৰন করেন। তিনি সর্ববিত্ত আপনার প্রতিরূপ নিরীক্ষণ ক্রিতে করিতে স্থানশের আশ্রমাভিষ্থে চলিপেন। মহাবে'গের আবৈশে প্রমন্ত হইরা শত শত ক্রোশ পথ অভিক্রেম করিলেন। বোগের বিচ্ছেত माहे, ভाবেরও বিরাম নাই। এইরপে নাচিতে গাইতে ছালিতে খেলিতে শুক্ষের গোলামীর স্থার বালকবৎ পরে চলিতে লাগিলেন। তাঁহার ক্ষিপ্তের न्यांत्र (वर्भ कृषा दर्शयमा नगर बनगरमत यानकान आह्य मृति निक्किन করিল, কেহ কটু বলিল, কিন্তু কিছুতেই কেহ জাঁহার শান্তি ভত্ত করিতে পারিল না। সমস্ত ব্যাপারমধ্যে তিনি কেবল ভগবানের বিচিত্র লীলা দেধিয়া হাসিতে লাগিলেন। ধর্মাধর্ম ভাল মন্দ শোক হর্ষ সূধ চঃধ স্তুতি নিকামান অপমানের অভীত অবস্থায় তথন তিনি পৌছিয়াছেন। ধিনি অনুভের স্ভান অভ্যাত্ম ত্বাং অন্তদেব তাঁহার অনুপান সুধ अच्लाहा वशामग्रदा वाक्षाताम नमा छात्न चानिया छेननी छ टहेरलन। नन ভ্রমণেক্র পরিশ্রম, দেশ কালের ব্যবধান কিছুই আবে অনুভব করিতে পারিলেন না; বেন যোগবলে অচিরকাল মধ্যে আপেনার স্বজ্ঞতীয় সম-প্রকৃতি সমভাবী আত্মীয় অস্করকের সঙ্গে আসিয়া মিশিলেন। তৎকালে আপ্রম-কৃটীর ছারে স্বামী স্বানলের স্মৃত্রে অজীনাসনে যোগস্মাহিত চিত্তে স্ভোষিণী বসিয়াছিলেন। স্লান্দের মুখের হাসি তাঁহার.মু ফুটিয়াছে, চিত্ত প্রসন্ন হইয়াছে, ভয় চুঃথ ভাবনার লেশ মাত্র ভাহাতে নাই। প্রাণ ধ্বেন প্রাণারামের শান্তিকোলে পরম শান্তি সন্তোগে তৃপ্তকাম ছই-স্বাছে। বস্তুতঃ উৎকালে স্বামীকীর অমিত যোগপ্রভা প্রচণ্ড মার্ত্তির ন্যার সন্তোষিণীর নির্দ্মল শুদ্ধদেহে বিভাসিত হইতেছিল। সে অপূর্ব শোভা সন্দর্শন করত বাঞ্জারাম পুনরার গাইলেন, "পুণাপুঞ্জেন বদি প্রেমধনং কোপিলভেং।" বোগরাজ্যে কেই কাহাকে আত্মপরিচর প্রদান করে না। व्यावधान हिन्न इटेल करन रामन कन, कारनारक आर्माक मिनिन्न गात्र, ঘটাকাশ বেমন মহাকাশে বিলীন হয়, তেমনি যোগীআছা সর্কলের পরস্পর মিলন। এখানে জ্ঞানে ভাবে ইচ্ছায় সমঞ্জাতীয়ত্ব।

वाक्षात्राम (बागरनरत ए बिरलन, मरकाविशीत शुरस्तत जीत मरक बबन

আর কিছুই ঐক্য হর না। বেছের আছি মাংস বেন বিস্তৃংবং তেজােমর,
চক্ষ্ হইতে বেন কমনীর চক্ররণ্মি অবিরক্ত রারিয়া পড়িতেছে। মূব ধানি
বেন সভাবিকসিত বেত শতকল পাল্রের ক্লার প্রফুল্লিত। মূভকের সেই কুঞ্জ
ক্ষকেশগুজ্জ এখন পর্পবর্ধ। অনজ্য ইহাছের ভিন ক্ষনের আনে আন, ভাবে
ভাব, ইচ্ছার ইচ্ছা মিলিয়া এক হইয়া অনত্তে গিয়া প্রবেশ করিল। মহাবােগসমুজে প্রেমমহাভাবের তরক্ষ উঠিল। তবন ভিন আনে মিলিয়া এক হাসি
হাসিলেন, এক নাম গাইলেন, এক তত্ত্ বৃথিলেন, এক ভাব ভাবিলেন,
এক লীলা বেছিলেন, এক মতে এক পবে মহামিলনের রাজ্যে চলিলেন।
ইহা জড় ভূতের মিলন নহে, পাধীন ইচ্ছাবিশিষ্ট আজার স্বেচ্ছা মিলন,
ইচ্ছামনের ইচ্ছার জ্বীনে তিনের মিলন। বিচিত্রভার ভিতর একডা এবং
একভার ভিতর বিচিত্রতা।

পরে স্বামী সদানন্দ দণ্ডায়্মান হইয়া বলিলেন, "হে বোগী অংআ্রয়, তোমরা পরস্প্রের হস্ত ধ্রেণপূর্বক আমার সন্ধ্র দণ্ডায়মান হও, এবং বল, জয় সচ্চিদানন্দের জয়! জয় সচ্চিদানন্দের ড়য়! জয় সচ্চিদানন্দের ড়য়! জয় সচ্চিদানন্দের ড়য়! য়য় সচ্চিদানন্দের ড়য়! বাঞ্জায়াম সভোবিনী স্বামীজীর সম্বেধ দণ্ডায়মান হইয়া উক্ত মহাবাক্র সমস্বরে বারজয় উচ্চারণ করিলেন। সেই প্রমি সমস্ব ভূবনে প্রতিপ্রনিত হইল। যংকালে এই প্রমুক্তাজ্ঞা বোগীত্র দণ্ডায়মান হইয়া সচিদানন্দের জয় গাল করিতেছিলেন, তথন তাহানের অসকান্তি চিশ্রুলারার্ড গিরিশ্বের নাায় চারিদিকে তার জ্যোতি বিকাশ করিছে। মহাবোপে এবং মহাভাবে রূপাজবিত হইয়া ভাহায়া রক্ষমভাতে দীপ্রি পাই-তেছিলেন। তদনত্র স্বামী উভ্সকে আশার্কাদ করিয়া বলিলেন, "ঐ বেশ গ্রুপারবে চড়িয়া অর্গদ্ভগণ ডোমাদিগকে লইতে আসিতেছেন। অমর ধামে গ্রুমা অন্তর্গণ ডোমাদিগকে লইতে আসিতেছেন। অমর ধামে গ্রুমা করিবার জন্য প্রস্তুত হও!"

(5)

অনম্ভ আকাৰে নীলাম্বর পৰে
দেবদ্ভগণ চড়ি পুস্পারধে
আমিল নামিরা গাইরা গাইরা
অমর ধামের মধুর গান;

গগনে গগনে ছুটিল সে ধানি, ধানিত করিয়া বিশাল ধরণী ;— বাহল প্রবনে, ভপ্নকিরণে, শুনিরা জুড়াল তাপিত প্রাণ।

(२)

র্শ্বেভ পীত নীল লোহিত বরণ স্থ্যাসিত যত কুস্থম রতন

গাঁথিয়া বতনে শ্বরবালাগণে

পিয়াছে পরায়ে রথের গায়;

অপরপ ভাতি কুস্মবিমান, উড়ে কত তাহে ফুলের নিশান,

করে ঝল মল

আকাশ ভূতল

প্ৰনে প্ৰনে শ্বন্থ জি ধায় !
(৩)

শ্বেত সুবিমল

त्रक्षणः উच्छ्रन,

হিমানি সমান ধ্বল কায়

ক্ষেত্রণ মূরতি মোহন শোভে সারি সারি বসিয়া ভায়।

(8)

মিশে প্রাণে প্রাণে, স্থললিভ তানে, ভগবৎ যথঃ সকলে গায়;

জয় জয় নাদে পরম আহ্লাদে দের স্বরূপ তাহাতে সায়।

(t)

বলে সব নরে সুগন্তীর স্বরে "আগার বুমারে থেক না আরে;

গরল মধির৷ অমৃত তুলির৷

হরিলেন হরি ভবের ভার।

অৰ্গাৱোহণ ।

(6)

সজোৰিশী বাস্থাবাম,

रुष्ट अस्य भूर्यकाम,

কুণমিখা সভানশে উঠিলেন রবে ; ভাগবভী ওফু ধবি, বছনে ব

वण्टन विश्वत्र एति,

(क्षमान्यक (बीटक इनिस्तन वर्धनस्य।

(1)

महायद मिरल मृदय,

QT QT QT T(4.

ताइल मक्त तीय बड़ी व निवारण,

সেই নামে ধণ মঠা

१३० चानत्य मस.

বাতিল জীবের আশা ছরির প্রসাংশ।

ৰল ভাই ছৱি হার.

चानत्य स्पन्न छति,

"গরণে অমৃত" এই ছিব্য উপাধ্যান;

ভক্তিভৱে গেই জন

कविट्यक व्यवासन,

को बम्ब इरव शास्त्र इतिशर दान ह





